CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अनुवाद-चन्द्रिका

तृतीय प्रकाश

अनुत्तरमुमाश्लिष्टमिन्दुशेखरमक्षरम् ।
निगमागमविद्यानां मूलतत्त्वमुपास्महे ।।

(१) वर्णनिरूपण

शब्द—

शब्दः सार्थोऽनर्थकश्च, व्यक्तोऽव्यक्तो निरर्थकः ।
सार्थो व्यक्तः, सोऽपि वर्ण-पद-वाक्यात्मकस्त्रिधा ।।१।।

कान से जो सुना जाता है वह शब्द है, शब्द कोई सार्थक (अर्थ देने वाला), कोई निरर्थक (अर्थशून्य) होते हैं । निरर्थक शब्द कोई स्पष्ट, कोई अस्पष्ट (केवल ध्वनिरूप) होते हैं । सार्थक शब्द वर्ण, पद, वाक्य तीन किसम के होते हैं ।

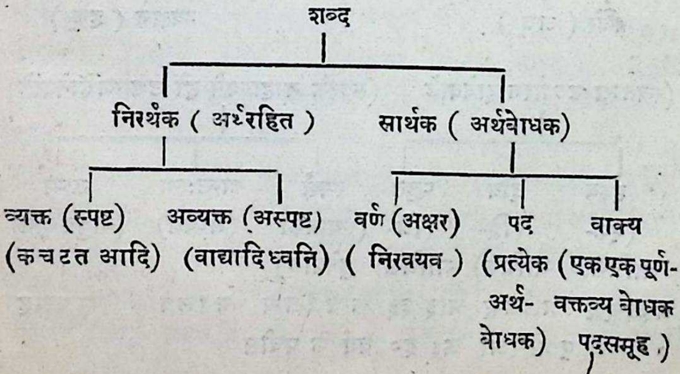

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विषय सूची

(पूर्वार्द्ध)	पृष्ठ
१ वर्णनिरूपण	१
२ पदनिरूपण	१३
३ नाम आदि के रूपभेद	२२
४ कृदन्त वा धातुसाधित	३३
५ तद्धितान्त	४४
६ स्त्रीप्रत्ययान्त	५८
७ समास	६२
८ नाममें विशेष	७७
९ सर्वनाममें ,, ...	८१
१० विशेषणमें ,, ...	८७
११ आख्यातमें ,, ...	९५
१२ अव्ययमें ,, ...	१०६

(उत्तरार्द्ध)	पृष्ठ
१ वाक्यनिरूपण	११६
२ कारक और विभक्ति	१२७
३ कारक व विभक्तियोंमें विशेष	१४४
४ वाक्यप्रयोग	१५५
५ लकारार्थ	१६५
६ विशेष काल व अर्थ	१७८
७ उद्देश्य विधेय	१८७
८ मिश्रितोंमें विशेष	१९५
९ वाक्यभेद	२०५
१० सङ्कोच और विकास	२१६
११ रचनासमीक्षा	२२४
१२ निर्वचन	२२९

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अनुवाद-चन्द्रिका

तृतीय प्रकाश

अनुत्तरमुमाश्लिष्टमिन्दुशेखरमक्षरम् ।
निगमागमविद्यानां मूलतत्त्वमुपास्महे ॥

(१) वर्णनिरूपण

शब्द—

शब्दः सार्थोऽनर्थकश्च, व्यक्तोऽव्यक्तो निरर्थकः ।
सार्थो व्यक्तः, सोऽपि वर्ण-पद-वाक्यात्मकस्त्रिधा ॥१॥

कान से जो सुना जाता है वह शब्द है, शब्द कोई सार्थक (अर्थ देने वाला), कोई निरर्थक (अर्थशून्य) होते हैं । निरर्थक शब्द कोई स्पष्ट, कोई अस्पष्ट (केवल ध्वनिरूप) होते हैं । सार्थक शब्द वर्ण, पद, वाक्य तीन किसम के होते हैं ।

- शब्द
  - निरर्थक (अर्थरहित)
    - व्यक्त (स्पष्ट) (क च ट त आदि)
    - अव्यक्त (अस्पष्ट) (वाद्यादि ध्वनि)
  - सार्थक (अर्थबोधक)
    - वर्ण (अक्षर) (निरवयव)
    - पद (प्रत्येक (एक एक पूर्ण-अर्थ-बोधक)
    - वाक्य वक्तव्य बोधक पदसमूह)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पदयोगभवं वाक्यं, वर्णयोगभवं पदम् ।
एकार्थप्रवणैर्वाक्यैः प्रबन्धग्रन्थकल्पना ॥२॥

अनेक वर्णोंके योगसे पद, अनेक पदोंके योगसे वाक्य, एक वक्तव्य पर झुके हुए अनेक वाक्योंके योगसे प्रबन्ध और ग्रन्थकी रचना होती है ।

वर्ण —

वर्णा निरंशा ध्वनयो, व्यञ्जनानि स्वराश्च ते ।
स्पर्शादीनि व्यञ्जनानि, ह्रस्वदीर्घादयः स्वराः ॥३॥

सबसे छोटे शब्द वर्ण कहे जाते हैं, वे स्वर और व्यञ्जन दो किसम के होते हैं। ह्रस्व दीर्घ प्लुत तीन किसमके स्वर, स्पर्श, अन्तःस्थ, ऊष्म तीन किसमके व्यञ्जन होते हैं ।

वर्ण

- **स्वर (अच्)** (स्वतन्त्र उच्चारण होनेवाले)
  - **ह्रस्व** (एक-मात्रिक) — अइउऋऌ
  - **दीर्घ** (द्वि-मात्रिक) — आईऊॠ एओऐऔ
  - **प्लुत** (त्रि-मात्रिक) — आ३ ई३ ऊ३ इ०
- **व्यञ्जन (हल्)** (स्वरके साहाय्यसे ही उच्चारण होंनेवाले)
  - **स्पर्श** (स्थानको छूनेवाले) — क-च-ट-त-प वर्ग के पचीस
  - **अन्तःस्थ** (मध्यम) — य र ल व
  - **ऊष्म** (वायुप्रधान) — श ष स ह

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्थानप्रयत्न—

वर्णाभिव्यक्तये[1] स्थानं कण्ठताल्वादिकीर्तितम् ।
स्पृष्टादिरान्तरो यत्नो, विवारादिर्बहिर्भवः ॥४॥

भीतरसे उठे हुए वायुका कण्ठ तालु आदि मुखके जिस भागमें ठोकर लगनेसे जिस वर्णकी उत्पत्ति होती है, वह उस वर्णका स्थान होता है। उसमें स्पृष्ट (पूरा छूना), ईषत्स्पृष्ट (थोडा छूना), ईषद्विवृत (थोडा हटना), विवृत (पूरा हटना) ये आभ्यन्तर (भीतरके अवयवोंका) प्रयत्न, और विवार (गल विलका फूलना), संवार (सिकुडना), श्वास (स्वरका रूखा होना), नाद (तीखा होना), घोष (घनघनाहट), अघोष (घोष न होना), अल्पप्राण (थोडा वायु होना), महाप्राण (ज्यादा वायु होना), उदात्त (स्थानके ऊपरके भाग में होना), अनुदात्त (नीचेके भागमें होना), स्वरित (मध्य भागमें होना) ये वाह्य (बाहरके अवयवोंके) प्रयत्न भी होते हैं।

१(क) किसी शब्दविशेषको प्रकट करनेकी इच्छासे प्रेरित होकर भीतरसे उठाहुआ वायु कण्ठनलिकाके स्वरयन्त्रमें संयोगसे ध्वनिरूप होकर, जिह्वा आदि मुखके अवयव(करण)विशेषके व्यापारोंके साथ कण्ठ तालु आदि स्थान-विशेषमें आघात होनेपर, स्पृष्ट (पूरा स्पर्श), ईषत्स्पृष्ट (थोडा स्पर्श), ईषद्विवृत (थोडा अलग), विवृत (पूरा अलग), संवृत (नजदीक) ऐसे भीतरके अवयवोंके प्रयत्न और संवार (कंठनलिकाका सङ्कोच), विवार (उसका विकास), नाद (अनुरणन), श्वास (फुसफुसाहट), घोष (घनघनाहट), अघोष (ऐसा न होना), अल्पप्राण (वायु की थोड़ी मात्रा), महाप्राण (उसकी बड़ी मात्रा) ये बाहर के अवयवों के प्रयत्न की भी सहायता से स्वर व्यञ्जन तत्तत् वर्ण को अभिव्यक्त करता है। वायु के आघात होने पर जो वर्ण जिस स्थान से प्रकट होता है उस वर्ण का वह स्थान, जिस

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्थान प्रयत्न		व्यञ्जन वर्ण								स्वर वर्ण	
स्थान	आभ्यन्तर प्रयत्न	स्पर्शवर्ण स्पृष्ट					अन्तस्थ ईषत्स्पृष्ट	ऊष्म ईषद्विवृत		विवृत	
	वाह्य प्रयत्न	विवारश्वास अघोष		संवार नाद घोष					विवारश्वा साघोष		
		अल्प	महा	अल्प	महा	अल्पप्राण		महाप्राण			
कण्ठ	कवर्ग	क[1]	ख[2]	ग[3]	घ[4]	ङ[5]		ह		अ	आ
तालु	चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	य		श	इ	ई
मूर्धा	टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	र		ष	ऋ	ॠ
दन्त	तवर्ग	त	थ	द	ध	न	ल		स	ऌ	
ओष्ठ	पवर्ग	प	फ	ब	भ	म				उ	
कण्ठतालु											ए ऐ
कण्ठौष्ठ											ओ औ
दन्तौष्ठ							व				

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सन्धि—

स्वरव्यञ्जनवर्णानां योगः सन्धिरनेकधा ।
नित्यः समासे, श्लोकार्द्धे, तथा धातूपसर्गयोः ॥४॥

वाक्य में पदों के और पद के भीतर भी स्वर व्यञ्जन विशेष वर्णों के योग होने में नियमानुसार कहीं वर्णों का विकार होकर, कहीं न

वर्ण की अभिव्यक्ति में भीतरी बाहरी अवयवोंके जैसे यत्न (व्यापार विशेष) होते हैं वे उसके आभ्यन्तर व बाह्य प्रयत्न कहे जाते हैं, कहा है कि—

आत्मा बुद्धया समेत्याऽर्थान्मनो युङ्क्ते विवक्षया ।
मनः कायाग्निमाहन्ति, स प्रेरयति मारुतम् ॥
मारुतश्चोरसि चरन्मन्द्रं जनयति स्वरम् ।
सोदीर्णो मूर्ध्न्यभिहतो वक्त्रमापद्य मारुतः ॥
वर्णाञ्जनयते, तेषां विभागः पञ्चधा मतः ।
स्वरतः कालतः स्थानात्प्रयत्नानुप्रदानतः ॥

(ख) स्वरवर्ण उच्चारण काल की मात्रा थोड़ी होने पर ह्रस्व, लम्बी होने पर दीर्घ, ज्यादा लम्बी होने पर प्लुत, नासिका के अन्तर्भाग का सम्बन्ध होने पर अनुनासिक, ऐसा न होने पर अननुनासिक, अपने स्थान के ऊपर के भाग से निकले तो उदात्त, नीचे के भाग से निकले तो अनुदात्त, मध्य भाग से निकले तो स्वरित कहा जाता है, ह्रस्व अ कहीं संवृत भी होता है ।

(ग) ये शब्द सबसे पहले अति सूक्ष्म परा अवस्था में, उसके बाद क्रमशः स्थूल होकर ज्ञानात्मक पश्यन्ती अवस्था में, फिर क्रियात्मक मध्यमा अवस्था में प्राप्त हो के कण्ठ तालु आदि स्थानों से सुनने के योग्य वैखरी अवस्था में प्रकट हो जाते हैं, ऐसा शास्त्रकारों का विचार है ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

होकर भी सन्धि (जोड़) होता है, वह सन्धि (क) पद के भीतर, समास के भीतर, आधे श्लोक के भीतर और धातु व उपसर्ग के योग में भी अवश्य करना चाहिए. (ख) गद्य वाक्य में एक पद का दूसरे पद के साथ योग में तो सन्धि करना न करना इच्छा के अधीन है।

(क) हरे + ए = हरये, सूर्य + उदय = सूर्योदयः, भवत् + छत्रं = भवच्छत्रम्, एवं निवेदितस्तेन राजोवाच स्तुवन्निमम्।

(ख) सः एवम् उक्त्वा बहिः गन्तुम् ऐच्छत् = स एवमुक्त्वा बहिर्गन्तुमैच्छत्।

सन्धि के सामान्य नियम ये हैं—

१. स्वरसन्धि[1] और प्रकृतिभाव—

(१) ह्रस्व वा दीर्घ अ इ उ ऋ अपने सजातीय के साथ मिलकर दीर्घ बनते हैं—स्व अर्थ—स्वार्थः, विद्या अर्थी—विद्यार्थी, दया आधार—दयाधारः, गौरी इव—गौरीव, लक्ष्मी ईश्वर—लक्ष्मीश्वरः, गुरु उपदेश—गुरूपदेशः, पितृ ऋण—पितॄणम्, इ०

(२) अ आ के साथ इ ई मिलकर ए, उ ऊ मिलकर ओ, ऋ ॠ मिलकर अर्, ए ऐ मिलकर ऐ, ओ औ मिलकर औ, पदान्त ए के साथ अ मिलकर ए, पदान्त ओ के साथ अ मिलकर ओ होते हैं।

नर ईश–नरेशः, महा ईश्वर–महेश्वरः, सूर्य उदय–सूर्योदयः, एक ऊन–एकोनः, देव ऋषि–देवर्षिः, एक एक–एकैकम्, महा ऐश्वर्य–महैश्वर्यम्, सर्व ओषधि–सर्वौषधिः, महा ओघ–महौघः, ते अपि–तेऽपि, गुरो अत्र–गुरोत्र, इ०

---

1. सू० अकः सवर्णे दीर्घः। आद्गुणः। वृद्धिरेचि। एङःपदान्तादति। इकोयणचि। एचो यवायावः। लोपः शाकल्यस्य। अदसोमात्। ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्। प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(३) विजातीय स्वर आगे रहने पर इ ई के स्थान में य्, उ ऊ के स्थान में व्, ऋ ॠ के स्थान में र् होता है।

यदि अपि–यद्यपि, इति आदि–इत्यादि, देवी उवाच–देव्युवाच, सु आगत–स्वागतम्, मधु ओदन–मध्वोदनम्, पितृ आज्ञा–पित्राज्ञा, इ०

(४) (क) अ-भिन्न स्वर आगे रहने पर पदान्त ए के स्थान में अ वा अय्, ओ के स्थान में अ वा अव्, ऐ के स्थान में आ वा आय्, औ के स्थान में आ वा आव् होते हैं, अ आ होने पर फिर सन्धि नहीं होती है, (ख) एक पद के भीतर तो जो कोई स्वर आगे रहने पर ए ओ ऐ औ के स्थानों में क्रमशः अय् अव् आय् आव् होते हैं।

(क) ते आगताः–त आ(या)गताः, सर्वे एव–सर्व ए(ये)व, विष्णो इति– विष्ण इ(वि)ति, तस्मै एव–तस्मा ए(ये)व, पत्न्यै अनुकूलः—पत्न्या अ(य)नुकूलः, इमौ अत्र– इमा अ(व)त्र, भूमौ उषितः—भूमा उ(वु)षितः

(ख) हरे ए—हरये, विष्णो ए– विष्णवे, नै अक— नायकः, पौ अक—पावकः इ०

(५) अमी अमू शब्द और द्विवचन के ई ऊ ए वर्ण आगे स्वर होने पर वैसे ही रहते हैं। अमू आहूय, अमी इह, अमू एव, हरी इमौ, गुरू एतौ, गङ्गे इह, पचेते एतौ, वर्तेते एव।

२' व्यञ्जन[१] सन्धि—

(१) नकार भिन्न तवर्ग के व्यञ्जन अपने आगे क ख त थ प फ स

---

(१) सू० झलां जशोन्ते। खरि च। झलां जश् झशि। यरोनुनासिकेऽनुनासिको वा। तोर्लि। नश्छव्यप्रशान्। अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा। ङमोहस्वादचि ङमुण्नित्यम्। मोनुस्वारः। वापदान्तस्य। नश्चापदान्तस्य झलि। अनुस्वारस्य ययिपरसवर्णः। रषाभ्यां नोणः समानपदे। अट् कुप्वाङ् नुम्व्यवायेपि। आदेशप्रत्यययोः। झयोहोन्यतरस्याम्। छेच। दीर्घात्। स्तोःश्चुनाश्चुः। ष्टुना ष्टुः।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

होने पर त्, ग घ द ध ब भ य र व ह और स्वर होने पर द्, च छ स होने पर च्, ट ठ होने पर ट्, ज झ होने पर ज्, ड ढ होने पर ड्, न म होने पर न्, ल होने पर ल्, बनते हैं।

सत् कार्य—सत्कार्यम्, तद् पर—तत्परः, भवत् सङ्ग—भवत्सङ्गः, तद् राज्य—तद्राज्यम्, जगत् ईश—जगदीशः, तद् चक्र—तच्चक्रम्, जगत् जय—जगज्जयः, भवत् ढक्का—भवड्ढक्का, जगत् नाथ—जगन्नाथः, क्षुध्-मुक्त—क्षुन्मुक्तः, जगत् लय—जगल्लयः, तद् लोभ—तल्लोभः इ०।

(२) पदान्त नकार अपने आगे ल होनेपर ल्ँ, च छ होने पर श्, त होने पर स् बनता है, पीछे का स्वर अनुनासिक भी होता है, आगे स्वर होनेपर ह्रस्व स्वर से पर हो तो डबल बन जाता है।

महान् लाभः—महाँल्लाभः, विद्वान् लिखति—विद्वाँल्लिखति, कस्मिन् चित्—कस्मिँश्चित्, तस्मिन् छत्रे—तस्मिँश्छत्रे, तस्मिन् तरौ—तस्मिँस्तरौ, भगवन् अत्र भगवन्नत्र, कुर्वन् एव—कुर्वन्नेव।

(३) पदान्त मकार अपने आगे क-च-ट-त-प वर्ग रहने पर क्रम से ङ् ञ् ण् न् म् अथवा सर्वत्र अनुस्वार, आगे व्यञ्जन रहने पर अनुस्वार ही होता है।

अहम् करोमि—अहङ्करोमि, अहं करोमि, सम् चय—संचयः सञ्चयः, तम् जय—तञ्जय, तं जय, तम् पश्य—तम्पश्य तं पश्य, अयम् शेते—अयं शेते, किम् हससि—किं हससि, तम् नमामि—तन्नमामि, तं नमामि।

(४) पद के भीतर का नकार वा मकार आगे कवर्ग हो तो ङ्, चवर्ग हो तो ञ्, टवर्ग हो तो ण्, तवर्ग हो तो न्, पवर्ग हो तो म्, श ष स हों तो अनुस्वार बनता है और वर्ण हो तो कुछ नहीं होता है।

अन् क—अङ्कः, शम् का—शङ्का, पन् डित—पण्डितः, शाम् त—शान्तः रम् स्ये—रंस्ये, यशान् सि—यशांसि, मन्यते, कन्या, नम्रः, चन्द्रः इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(५) पद के भीतर का नकार, रेफ वा षकार से पर हो तो बीच में स्वर कवर्ग पवर्ग य व र न ह से व्यवधान होने पर भी ण बनता है।

चतुर् नाम्—चतुर्णाम्, हरि ना—हरिणा, रामा नाम्—रामाणाम्, पूष् न—पूष्णः इ०

(६) अ आ से भिन्न स्वर वा कवर्ग से आगे का आदेश वा प्रत्यय सम्बन्धी सकार, बीच में विसर्ग रहने पर भी ष बनता है।

हरि सु—हरिषु, रामे सु—रामेषु, वाक् सु—वाक्षु, धनुः सु—धनुःषु, वपुः सु—वपुःषु, इ०

(७) पदान्त वर्ग के प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ वर्णों से आगे का हकार, पीछे कवर्ग या चवर्ग हों तो घ्, तवर्ग हो तो ध, पवर्ग हो तो भ् बनता है।

रुग् हर—रुग्घरः, तद् हास—तद्धासः, तद् हित—तद्धितः, क्षुध् हास—क्षुद्धास इ०

(८) ह्रस्व स्वर से आगे के छकार में नित्य, दीर्घ स्वर से आगे के छकार में विकल्प से चकार जुटता है।

वृक्ष छाया—वृक्षच्छाया, तव छत्रं—तवच्छत्रम्, लता छाया—लताछा (च्छा)या। इ०

(९) चकार के साथ का शकार छ, षकार के साथ का तकार ट, बनता है।

तद् शय्या—तच्छय्या, भवत् शङ्ख—भवच्छङ्खः, पुष् त—पुष्टः, दुष् त—दुष्टः इ०

३. विसर्गसन्धि[1] और स्वादिसन्धि—

(१) पदान्त सकार वा उससे बना हुआ विसर्ग—(क) अकार से

---

(१) सू० ससजुषो रुः। अतोरोरप्लुतादप्लुते। आद्गुणः। भोभगो अघोअपूर्वस्य योऽशि। लोपःशाकल्यस्य। हशिच। हलि सर्वषाम्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आगे होने पर आगे अ हो तो आगे के अ को लेकर ओ बनता है, आगे और स्वर हों तो लुप्त होता है, फिर सन्धि भी नहीं होती है, हश् (वर्ग के तृतीय चतुर्थ पञ्चम य र ल व ह) हों तो ओ बनता है, (ख) आकार से आगे होने पर आगे स्वर वा हश् पर रहते लुप्त होता है, (ग) और स्वर से आगे होने पर तो र् बनता है।

(क) रामः अत्र—रामोत्र, कः आगत—क आगतः, देवः इह—देव इह, रामः उवाच—राम उवाच, कः एषः—कएषः, रामः गतः—रामो गतः, रामः राजा—रामो राजा इ०

(ख) जनाः अत्र—जना अत्र, देवाः आगताः—देवा आगताः, जनाः ऊचुः—जना ऊचुः, चौराः एते—चौरा एते, नम्राः वृक्षाः—नम्रा वृक्षाः, जनाः दृष्टाः—जना दृष्टाः, इ०

(ग) हरिः अद्य—हरिरद्य, गुरुः आह—गुरुराह, वधूः एषा—वधूरेषा, हरिः हरः च—हरिर्हरश्च । इ०

(२) जैसे भी हों सकार रेफ विसर्ग, (क) आगे क ख प फ श ष स होने पर विसर्ग, च छ होने पर श्, ट ठ होने पर ष्, त थ होने पर स् बनते हैं, (ख) आगे रेफ होने पर लुप्त होता है, पीछे का स्वर ह्रस्व हो तो दीर्घ भी होता है।

(क) रामः करोति, कः खनति, वृक्षः फलति, हरिः शरणम्, दासः षण्ढः, शुभः क्षणः, पुनः कुरु, रामः चकार—रामश्चकार, जनाः च-जनाश्च, तीव्रः टङ्कारः-तीव्रष्टङ्कारः, रामः तत्र-रामस्तत्र, पुनः तथा-पुनस्तथा।

(ख) पुनर् रमते-पुनारमते, हरिः रम्यः-हरी रम्यः, साधुः रमते-साधू रमते । इ०

विसर्जनीयस्य सः । कुप्वोः कः पौ च । वा शरि । स्तोः श्चुनाश्चुः । ष्टुनाष्टुः । रोरि । ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः । एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(३) सः एषः पद के अन्त्य का स् वा विसर्ग आगे हल् होने पर लुप्त होता है, स्वर होने पर तो पूर्व नियमानुसार ही होता है।

सः गतः–स गतः, एषः करोति–एष करोति, सः शिवः–स शिवः, एषः पशुपतिः–एष पशुपतिः, सः अहम्–सोऽहम्, सः आह–स आह, एषः एव–एष एव इ०

वर्णविशेष—

वर्णानां शषसादीनां बवयोर्ह्रस्वदीर्घयोः ।
लेखोच्चारणयोर्ध्येयो विशेषः शब्दतोऽर्थतः ॥६॥

वर्णों के उच्चारण में लेख में भी श ष स, ब व, ह्रस्व दीर्घ आदि का शब्द की अर्थ की भी दृष्टि से ख्याल रखना चाहिए।

(१) श ष स के विशेष

(क) श्रु, शुच्, शुध्, शम्, श्रम्, शास्, शंस, शुष, शिष, श्लिष, श्वस, शप, शी, श्रि, शिक्ष शक, शङ्क, शुभ, आदि धातुओं से बने हुये शब्दों में शकार, (ख) दुष्, पुष्, रुष्, कृष, वृष, हृष्, आदि धातुओं से बने हुये शब्दों में षकार, सृ, सृज, स्ना, स्वद, सह, साध, सेव, स्विद आदि धातुओं से बने हुये शब्दों में सकार समझना चाहिए।

(क) श्रुतः श्रवणं, शुचिः शुद्धः, शान्तः, श्रमः, शासनं, शास्त्रं, शुष्कः, शिष्टः, आश्लेषः, श्वासः, शापः, शपथं, शय्या, आश्रयः, शिक्षा, शक्तिः, शङ्का, शोभा, इ०

(ख) दोषः, पोषः, शेषः, कृषिः, वर्षाः, हर्षः, हृष्टः, दुष्टः, वृषः पुष्टः, वृष्टः, इ०।

(ग) सर्गः, अग्रेसरः, स्नानं, स्वादः, सहनं, साधनं, सेवा, स्वेदः, सिद्धः, स्नातः, स्विन्नः, इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(२) ब व के विशेष—

(क) बुध, वृह, बन्ध, ब्रू, बाध, आदि धातुओं से बने हुये शब्दों में बकार, (ख) वस्, वञ्च, वद, वृ, वम, वृध, वृत, वृष, विद, व्रज, वेष्ट, व्यथ, व्रीड, आदि धातुओं से बने हुये शब्दों में वकार समझना चाहिए।

(क) बुद्धिः, बोधः, बुद्धः, बृहत्, ब्रह्म, ब्रह्मा, ब्राह्मणः, बन्धनं, बाधा, ब्रह्मण्यः इ०

(ख) वासः, वचनं, वञ्चितः, वादः, वरः, वमनं, वृद्धिः, वर्तनं, वर्षः, वेदः, व्रजः, वेष्टितः, व्यथा, विद्या, विद्वान्, वर्तमानः, वञ्चकः इ०

(३) अर्थविशेष से श ष स का भेद—

अंशः–भाग	अंसः–कन्धा	शूरः–शूर	सूरः–सूर्य
शितः–पैना	सितः–सफेद	शकृत्–मल	सकृत्–एकवार
श्वः–कल	स्वः–स्वर्ग	शकलं–टुकड़ा	सकलं–सब
शर्वः–शिव	सर्वः–सब	शृतः–पकाहुआ	सृतः–फैलाहुआ
शङ्करः–शिव	सङ्करः–मिसना	श्रुतः–सुनाहुआ	स्रुतः–चूवाहुआ

(४) अर्थविशेष से ह्रस्व दीर्घ का भेद—

कुलं–वंश	कूलं–किनारा	सुतः–लडका	सूतः–सवार
इनः–सूर्य	ईनः–मालिक	द्विपः–हाथी	द्वीपः–टापू
शुकः–सूगा	शूकः–	दिनं–दिन	दीनः–गरीब
जातिः–जात	जाती–जाई	प्रसादः–खुशी	प्रासाद–महल

इसी तरह शब्दों के वर्णों में व्याकरण कोश व्यवहार से विशेष जानना चाहिए।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

शब्द के भेद कितने हैं, स्वर और व्यञ्जनों में कैसे कैसे भेद हैं, प भ ख ऊ व ब श स ऋ ए ट अ के स्थान व प्रयत्न क्या क्या होते हैं, भवान्

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चलति, महा ऋषि, सत् चित्, रामः आह, लक्ष्मीः इव, सः एषः, विश्व ईश्वर, वनेत अस्ति, कः गच्छति, तस्मै उक्तम्, एक एकः, तौ एव इनमें सन्धि होने पर कैसा कैसा होता है, शास्त्रार्थः, राजर्षिः, सोहम्, वधूरेषा, दुष्टा इमे, भगवन्नायाहि, नरेन्द्रः, भवांश्चतुरः, तदुक्तिः, इनमें किन पदों का सन्धि हुआ है, गद्य और पद्य में सन्धि आवश्यक है या नहीं, वर्ण, पद, वाक्यों की उत्पत्ति कैसे कैसे होती है, स्थान प्रयत्नों का मतलब क्या है, व व श ष स वर्णों के ज्ञान में क्या उपाय है, गुरु एतौ, अम् इह, त आगताः, जना इह, इन में फिर सन्धि होती है या नहीं, सन्धि कितने किसम के होते हैं, आभ्यन्तर व वाह्य प्रयत्नों का भेद क्या है, सन्धि में विसर्ग किन स्वरूपों में बदलता है, श का ष, न का ण कहाँ कहाँ होता है। स्पर्श, ऊष्म, अन्तःस्थ, कौन कौन हैं, व्यक्त, अव्यक्त शब्द कैसे होते हैं।

---

(२) पदनिरूपण

पद —

पदमेकैकखण्डार्थं सुप्तिङन्ताव्ययात्मकम्।
सुबन्तं त्रिविधं नाम सर्वनाम विशेषणम् ॥७॥

वाक्य के एक एक खण्ड अर्थ का बोधक वर्ण-समूह पद कहा जाता है, सुबन्त तिङन्त अव्यय ये तीन किसम के पद होते हैं, उनमें से सुबन्त पद नाम, सर्वनाम, विशेषण ये तीन प्रकार के होते हैं सब मिलकर पद के भेद पाँच होते हैं।

धातोस्तिङन्तं नामादेः सुबन्तं जायते पदम्।
विकारीदं द्वयं रूपैर्निर्विकारकमव्ययम् ॥८॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

धातु (क्रिया के मुख्य मूल शब्द) ओंसे तिङ् प्रत्यय होकर तिङन्त पद, नाम, सर्वनाम, विशेषण शब्दों से सुप् प्रत्यय होकर सुबन्त पद बनते हैं-इन दोनों के अर्थ के अनुसार से परिवर्तन होकर नाना रूप होने से ये विकारी हैं, अव्यय सदा एक ही स्वरूप में रहता है, इससे अविकारी है।

पदभेद—

जात्यादिबोधकं नाम, गुणयाद्यर्थं विशेषणम् ।
सर्वार्थकं सर्वनाम, तत्र नाना तदादिकम् ॥९॥
क्रियाबोधकमाख्यातं पद-वाच्यादिभेदितम् ।
बोधकं देशकालादेः शब्दयोग्यादि चाव्ययम् ॥१०॥

पदोंके भेद ऐसे होते है

(१) **नाम**—दृश्य वा अदृश्य किसी पदार्थका बोधक शब्द। मनुष्य आदमी, अश्वः-घोडा. वृक्षः-पेड. ईश्वरः-ईश्वर. धैर्यम्-धीरज. पुण्यम्-धर्म। इ०

(क) **जातिवाचक**—किसी संख्येय (गिने जानेवाली) जाति के एक अनेक सबका बोधक, नरः-आदमी, पशुः-जानवर, पुष्पम्-फूल। इ०

(ख) **व्यक्तिवाचक**—किसी एक मात्र वस्तु का बोधक, रामः-एक व्यक्ति, नेपालः—एक देश, काशी-एक शहर, गङ्गा-एक नदी। इ०

(ग) **धर्म वाचक**—किसी में रहने वाले गुण स्वभाव आकार आदि धर्म का बोधक, धैर्यम्-धीरज, वक्रता-टेढापन, विद्या-ज्ञान, रूपम्-रङ, इ०

(घ) **द्रव्यवाचक**—किसी परिमेय (नाप तौल किये जाने वाले) वस्तु के अंश अंशांश तक के बोधक, जलम्-पानी, घृतम्-घी, सुवर्णम्-सोना, इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ङ) **व्यूहवाचक** – किसी अनेक वस्तुओं के समूह का बोधक, सेना–फौज, गजता–हाथियों का झुण्ड, जनता–जनसमूह, वृन्दम्–समूह इ० ।

(२) **सर्वनाम**—सब किसम के नामके लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वः—सब, उभौ—दो, सः—वह, अयम्—यह, अहम्—मैं, त्वम्—तू, कः—कौन, इ० ।

(क) **सर्वादि**—रूप में विशेष होने वाले सर्व आदि कुछ शब्द सर्व—सब, विश्व—सब, अन्य—दूसरा, कतर—कौनसा, अन्यतर—दो में से एक, इ० ।

(ख) **तदादि**—नाम के बदले में आने वाले सर्वनाम, तद्, इदम्, एतद्, यद्, किम्, युष्मद्, अस्मद्, भवत्, स्व शब्द ।

१—**उत्तम पुरुष वाचक**—कहने वाले का बोधक, अस्मद्—अहम् आवाम् वयम् इ० ।

२—**मध्यम पुरुष वाचक**—सम्बोध्य का बोधक युष्मद्—त्वम् युवाम् यूयम् इ० ।

३—**दर्शक**—किसी को निर्देश करके बोधक, तद्—सः तौ ते, एतद्—एषः एतौ एते । इदम्—अयम् इमौ इमे । अदस्—असौ अमू अमी इ० ।

४—**योजक**—दूसरे वाक्य में लिए गए को जोड करके बोधक यद्—यः यौ ये इ० ।

५—**प्रश्नबोधक**—किसी को प्रश्न करके बोधक किम्—कः कौ के इ० ।

६—**मानबोधक**— किसी को संमान करके बोधक भवत्—भवान् भवन्तौ भवन्तः इ० ।

७—**आत्मबोधक**—अपने का बोधक स्व स्वः स्वौ स्वे इ० ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(३) विशेषण—किसी विशेष्य (परिच्छेद्य वस्तु) का गुण संख्या आदि द्वारा परिच्छेदक रक्तं वस्त्रम् – लाल कपड़ा। मेधावी छात्र—बुद्धिमान् लड़का, चत्वारः पुरुषाः —चार आदमी। सुन्दरी नारी—सुन्दर स्त्री, महत् फलम्—बडा फल इ०।

(क) गुणविशेषण—रूप रस आकार स्वभाव क्रिया आदि किसी गुण वाले का बोधक रक्तः—लाल, मधुरः—मीठा, वर्तुलः—गोल, चपलः—चञ्चल इ०।

(ख) संख्या विशेषण—किसी संख्या वाले का बोधक, एकः—एक, द्वौ—दो, त्रयः—तीन, प्रथमः—पहला, द्वितीयः—दूसरा, तृतीयः—तीसरा इ०।

(४) तिङन्त अथवा आख्यात—क्रिया का बोधक होकर वाक्य का पूरक। गच्छति—जाता है। पठति—पढता है। अकरोत्—किया। कुरु—कर इ०।

(क) कर्तृवाच्य—कर्ता के साथ विशेष सम्बन्ध रखने वाला सः गच्छति—वह जाता है। अहं पश्यामि—मैं देखता हूं। त्वम् अपठः——तुमने पढा इ०।

(ख) कर्मवाच्य—कर्म के साथ विशेष सम्बन्ध रखने वाला। काव्यं पठ्यते—काव्य पढा जाता है। त्वं दृश्यसे—तू देखा जाता है। रूप्यकमाह्रियत—रूपया चुराया गया इ०।

(ग) भाववाच्य—क्रिया को ही मुख्यतया दिखाने वाला। स्थीयते—रहा जाता है। अशय्यत—सोया गया। भेष्यते—डरा जायगा। भूयते—हुआ जाता है इ०।

(अ) अकर्मक—कर्म न होने वाला। भवति - होता है। शेते—सोता है। वर्धते—बढता है। इ०

(आ) सकर्मक—कर्म होने वाला। सः ओदनं पचति—वह

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भात पकाता है। अहं काव्यमपठम्—मैने काव्य पढ़ा। त्वं कर्म कुरु—तू काम कर। इ०

(य) परस्मैपदी—तिप् तस् झि आदि तिङ्प्रत्यय होनेवाले। गच्छति—जाता है। पश्यतः—देखते हैं। हसन्ति—हंसते हैं। अपठन्—पढ़े। इ०

(र) आत्मनेपदी—त आतां झ आदि तिङ्प्रत्यय होनेवाले। शेते—सोता है। वर्द्धते—बढ़ता है। विद्यन्ते—रहते हैं। अवर्द्धन्त—बढे। इ०

(ल) उभयपदी—तिङ् तङ् दोनों किसिमके प्रत्यय होनेवाले। पचति, पचते—पकाता है। हरति, हरते—चुराता है। अभक्षयत् अभक्षयत—खाया। इ०

(५) अव्यय—एक ही स्वरूपमें रहनेवाले अविकारी शब्द। तत्र—वहाँ। अत्र—यहाँ। अपि—भी। तथापि—तब भी। अथवा—या। इ०

(क) शब्दयोगी—किसी दूसरे शब्द के साथ ही प्रयुक्त होने वाले।

(अ) कर्मप्रवचनीय—सुवन्त के साथ आने वाले। गृहं प्रति—घरकी तरफ। तम् अनु—उसके पीछे। आ नगरम्—नगर तक। इ०

(आ) उपसर्ग—धातु के साथ आने वाले। प्रहरति—चोट करता है। प्रति गच्छति—लौटता है। अनु जगाम—पीछे गया। इ०

(ख) क्रियायोगी—देश काल प्रकार आदि दिखाकर किसी क्रिया के साथ सम्बन्ध रखने वाला। अत्र आगच्छ—यहाँ आ। परुत् अगच्छत्—परसाल गया। सम्यक् कुरु—अच्छी तरह कर। इ०

२

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ग) योजक—अनेक पद वा वाक्यों को जोड़ने वाला। रामः कृष्णः च—राम और कृष्ण। नीलं पीतम् अपि—काला पीला भी। यद्यपि स आह्वयति, तथापि अहं न गच्छामि—वह तो बुलाता है तब भी मैं नहीं जाता हूँ। इ०

(घ) भावबोधक—हर्ष शोक आदि मनोभाव का बोधक। अहो! रमणीयमिदम्—अहो! यह सुन्दर है। धिक् त्वाम्—तुम्हे धिक्कार। हन्त! महती हानिरभूत्—अफसोस! बड़ी हानि हुई। इ०

पद के विशेष भेद—

पदं रूढं यौगिकं च योगरूढमिति त्रिधा।
ख्यातार्थं भागलभ्यार्थमुभयार्थं च तत्क्रमात् ॥११॥

पद (क) कोई अवयवार्थ के विना प्रसिद्धि के अनुसार से किसी अर्थ विशेष का बोधक रूढ, (ख) कोई अवयवों के अर्थों को लेकर किसी का बोधक यौगिक, (ग) कोई अवयवों के अर्थ समुदाय का अर्थ दोनों को लेकर किसी अर्थविशेष का बोधक योगरूढ ऐसे तीन किसिम के होते हैं।

(क) गौः—गाय। अश्वः—घोड़ा। महिषः—भैंसा। भूः—जमीन। वृक्षः—पेड़। इ०

(ख) पाचकः (पच् अक)—पकानेवाला। दौहित्रः (दुहितृ अ)—लड़की का लड़का। राजपुरुषः (राज्ञः पुरुष)—सरकारी आदमी। मित्रता (मित्र तल)—मित्रपन। इ०

(ग) जलजं (जल ज)—पानी में होनेवाला कमल। सैन्धवम् (सिन्धु अ)—सिन्धु देश में होनेवाला नमक। सागरः (सगर अ) सगरों ने बनाया हुआ जलाशय—समुद्र।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सेनानीः (सेनानी) फौज को हांकनेवाला देवविशेष स्कन्द । इ०

समस्तं यौगिकं योगरूढं च स्वार्थबोधने ।
सहते वा न वा किञ्चिदंशयोः परिवर्तनम् ॥१२॥

यौगिक और योगरूढ़, समस्त (समास होकर बना हुआ) शब्द अपने अर्थ के बोधन के लिये कोई पूर्व वा उत्तर वा दोनों अंशों में पर्याय बदला जा सकता है, कोई नहीं ।

(क) नियत पूर्वपद—वडवाग्निः, वडवानलः, वडवावन्हिः वडवाग्नि । इ०

(ख) नियतोत्तरपद—सरोजं, सरसिजं, जलजम्, अब्जम्, कमल । तोयदः, नीरदः,अब्दः, वारिदः—मेघ । भूरुहः,भूमीरुहः, उर्वीरुहः–वृक्ष जलधिः,तोयधिः, नीरधिः, उदधिः, अम्भोधिः—समुद्र । भूधरः, महीधरः, पृथ्वीधरः—पर्वत । इ०

(ग) नियतोभयपद–कृष्णसर्पः–गोमन । गीर्वाणः–देवता । महारथः–वड़ा वीर । इ०

(घ) अनियतोभयपद—सुरपतिः, देवाधीशः, त्रिदशपतिः, सुरेश्वरः—इन्द्र । भूपतिः, भूपः, पृथिवीपतिः, पृथ्वीनाथः, महीशः, क्षितीश्वरः—राजा । इ०

कहां किसका परिवर्तन हो सकता है या नहीं व्यवहार से जानना चाहिए ।

सिद्ध साधित भेद—

अव्युत्पन्नोऽथ व्युत्पन्नश्चेति शब्दो द्विधा स्वतः ।
आद्यः सिद्धो मूलशब्दः, परः शब्दान्तरोद्भवः ॥१३॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कोई शब्द अव्युत्पन्न अर्थात् दूसरे शब्द से न बने हुए सिद्ध मूलशब्द होते हैं। कोई तो व्युत्पन्न अर्थात् दूसरे शब्द से बने हुए साधितशब्द होते हैं।

सिद्धान्यदृश्यभागानि सर्वनामानि धातवः।
विशेषणान्यव्ययानि नामान्यपि च कानिचित् ॥१४॥

जिन नाम, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, शब्दों में अवयवों का योग नहीं देखा जाता है, वे और मूल धातु भी सिद्ध शब्द हैं।

वृक्षः, गौः, अश्वः, यद्, तद्, युष्मद्, अस्मद्, एतद्, इदम्, अदस्, च, अपि, धिक्, वा, पुनः, भू, गम्, स्था, पठ, लिख, हस्। इत्यादि

धातोः कृदन्तं, नामादेस्तद्धितान्तं च साधितम्।
नामादियोगनिष्पन्नं समस्तमपि साधितम् ॥१५॥

(क) धातुओं से कृत्प्रत्यय होकर बने हुए कृदन्त, (ख) नाम विशेषण आदि से तद्धितप्रत्यय होकर बने हुए तद्धितान्त, (ग) नाम विशेषण आदि के परस्पर योग से बने हुए समस्त शब्द भी साधित हैं।

(क) गतं, (गम् क्त)। शयनं (शी अन)। पाकः (पच् अ)। भीतिः (भी क्तिन्)। पाठकः (पठ अक)। कृतवान् (कृ तवत्)। भुक्त्वा (भुज् क्त्वा)। भोक्तुं (भुज् तुम)। इ०

(ख) वैष्णवः (विष्णु अ)। महिमा (महत् इमन्)। धनवान् (धन वत्)। तद्वत् (तद् वत्)। इ०

(ग) कृष्णसर्पः (कृष्ण सर्प)। कृतार्थं (कृत अर्थ)। प्रतिपदम् (प्रति पद)। रामकृष्णौ (राम कृष्ण)। रक्तपुष्पम् (रक्त पुष्प)। इ०

निष्पद्यन्ते प्रकृतिषु नानाप्रत्यययोजने।
एकजातीयतो भिन्नजातीया अपि नैकशः ॥१६॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रकृति अर्थात् मूल शब्दों में नाना किसिम के प्रत्ययों के योग से एक जाति के शब्दों से भिन्न जाति के भी साधित शब्द बनते हैं ।

साधित	नाम	सर्वनाम	विशेषण	आख्यात	अव्यय
नामसे	पुत्र-पौत्रः		श्री-श्रीमान्	पुत्र-पुत्रीयति	गृह-गृहतः
सर्वनामसे	स्व-स्वत्वम्	किम्-कतरः	अस्मत्-मदीयः	युष्मद्-त्वद्यति	किम्-कदा
विशेषणसे	धीर-धैर्यम्	अन्य-अन्यतरः	रक्त-रक्ततरः	मृदु-म्रद्यति	पश्चिम-पश्चिमतः
आख्यातसे	पिबति खादति पिबत खादता		पचति-पचतिक कल्पम्	पचति पचतकि	पचति-पचति-तराम्
अव्ययसे	धिक्-धिक्कारः		सदा-सदातनः	स्वः स्वःकाम्यति	यथा-यथातथम्

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अभ्यासार्थ प्रश्न—

पद कितने किसिम के होते हैं। पदों के अवान्तर भेद कितने कितने हैं। सिद्ध और साधित शब्द कैसे कैसे होते हैं। रूढ़, यौगिक, योगरूढ़, शब्दों में क्या भेद है। किस किस जाति के शब्दों से किस किस जाति के शब्द बनते हैं। सुवन्त तिङन्त शब्द कैसे होते हैं। नाम और सर्व नाम में क्या भेद है। आख्यात में कितने भेद हैं। समस्त शब्द यौगिक रूढ़ वा योगरूढ़ है। व्युत्पन्न अव्युत्पन्न शब्द कैसे कैसे होते हैं। नीचे लिखे शब्द किस जाति के रूढ़, यौगिक, योगरूढ, सिद्ध, साधित, कैसे हैं—

गौरी, मसीपात्रं, रक्षणीयं, मुक्तामाला, काष्ठमण्डपः, सहस्रपत्रम्, जलधरः, दुर्गमः, मयूरः, खेचरः करुणा, जनककन्या, गरुडध्वजः, योगिनी, तपस्विनी, पठितः, अयोध्या, तत्रत्यः, शततमः, यथातथम्, सर्वदा, जयन्ति, ते, अस्माकम्, गृहं प्रति गच्छन्ति, जगदीश्वरः भक्तान् सदा रक्षति, हे हरे दयां कुरु।

————

(३) नाम आदि के रूपभेद

रूपभेदः सुवन्तानां लिङ्गसंख्याविभक्तिभिः।
लिङ्गं पुंस्त्वादि, वचनं संख्या,ऽन्त्या प्रथमादिका ॥१८॥

नाम, सर्वनाम, विशेषण ये सुबन्त शब्दों के लिङ्ग वचन विभक्तियों के भेद से नाना रूपके होते हैं। पुं, स्त्री, नपुंसक ये तीन लिङ्ग। एक, द्वि, बहु, ये तीन वचन। प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, संबोधन प्रथमा ये आठ विभक्तियां हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लिङ्ग—

लिङ्गं प्राकृतिकं प्रायः प्राणिवाचिषु संमतम् ।
अप्राणिवाचिषु मतं विशेषात्पारिभाषिकम् ॥१८॥

(क) संस्कृत और हिन्दी आदि भाषाओं में भी प्राणिवाचक शब्दों में प्रायः प्राकृतिक (स्वाभाविक) लिङ्ग होते हैं। (ख) अप्राणिवाचक शब्दों में तत्तद् भाषा के नियमानुसार पारिभाषिक अर्थात् कोश व्याकरण प्रयोग आदि से सिद्ध लिङ्ग होते हैं।

(क) पुं—पिता—बाप, भ्राता—भाइ, राजा—राजा, अश्वः—घोडा, हंसः—हांस, वृषः—बयल, हस्ती—हाथी, शुकः—तोता, कीटः—कीड़ा, भ्रमरः—भौंरा, मर्कट—बन्दर। इ०

स्त्री—माता—माई, भगिनी—बहन, वधूः—बहू, राज्ञी—रानी, महिषी—भैंस, अश्वा—घोड़ी, हस्तिनी—हथिनी, भ्रमरी—भौंरी, मत्सी—मछली। इ०

(ख) पुं—घटः, कलशः, मार्गः, पन्थाः, आदरः, लोभः, अग्निः, वायुः, रोगः, देशः। इ०

स्त्री—लेखनी, मञ्जूषा, खट्वा, तारा, कान्तिः, दया, इच्छा, कीर्तिः, उपानद्। इ०

नपुं—वनं, क्षेत्रं, गृहं, मुखं, नेत्रं, सरः, यशः, मनः, रूपं धनं, सुवर्णं, रजतम्। इ०

हिन्दी में पुं, स्त्री, दोही लिङ्ग होते हैं। निर्जीव बोधक विशेष शब्दों में स्त्रीलिङ्ग, और मे पुल्लिङ्ग का ही व्यवहार होता है। स्त्रीलिङ्ग होने में ये निमम हैं—

१—संस्कृत के तत्सम स्त्रीलिङ्ग शब्द स्त्रीलिङ्ग में आते हैं—दया, इच्छा, विद्या, पाठशाला, नदी, लेखनी, मसी, वासना, कामना, कल्पना, विपद्, आपद्। इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(२) ह्रस्वार्थक, भाववाचक आदि आ—ईकारान्त नाम स्त्रीलिङ्ग होते है। लोटिया, डिबिया, गगरी, इमानदारी, बेहोसी, रखवाली, लापरवाही, बीमारी, गरीबी, गरमी ,सरदी, बेइमानी। इ०

(३) विशेष शब्द स्त्रीलिङ्ग—धोती, टोपी, आग, बात, राख, राह, किताब, रात, चाँद, तबीयत, आंख, नाक, भीड़, बाँह, भुजा, टाँग, हड्डी, नशीव, जगह, राय, जीभ, खाल, महिमा, कीमत, सलाह, हवा, सजा, चिट्ठी। इ०

पुंसीमन्घञजाद्यन्तं, स्त्रियां ङ्याप्क्तिन्तलान्तकम्।
भावक्तल्युट्त्वष्यञ्यगणाञजाद्यन्तं नपुंसके ॥१९॥

संस्कृत में (क) इमनिच् घञ् अच् अप् आदि प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिङ्ग, (ख) ङीप्. ङीष् टाप् क्तिन् तल् अङ् अ आदि प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग, (ग) भावार्थक क्त ल्युट् त्व ष्यञ् यक् अण् अञ् आदि प्रत्ययान्त शब्द नपुंसक लिङ्ग होते हैं।

(क) इमन् महिमा गरिमा लघिमा नीलिमा पीतिमा, घञ्—पाठः पाकः यागः त्यागः योगः भोगः लोभः मोहः, अच्—जयः नयः लयः परिचयः, अप्—भवः स्तवः वधः जपः इत्यादि।

(ख) ङी—गौरी स्थली नदी कबरी त्रिलोकी देहली, आप्—नासिका तारका चन्द्रिका, क्तिन्—गतिः मतिः बुद्धिः हानिः कीर्तिः, तल्—जनता कविता गुरुता गजता, अङ्—जरा त्रपा कथा पूजा, अ—पिपासा बुभुक्षा दित्सा लिप्सा जिज्ञासा। इ०

(ग) क्त—हसितं शयितं गतं युद्धं क्रीडितं, ल्युट्—गमनं भोजनं शयनं दानं पानं, त्व—महत्त्व गुरुत्वं लघुत्वं, ष्यञ्—औचित्यं शौर्यं धैर्यं वीर्यं, य—सैनापत्यं पौरोहित्यं, अण्—यौवनं कौशलं चापलं सौहृदम्, अञ्—कौमारं वार्धकं कैशोरम्। इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पुंसि स्वर्गाग्निशैलाब्धितरुमेघादिवाचकम् ।
स्त्रियां नदीलतासेनापङ्क्तिरात्र्यादिवाचकम् ॥२०॥
क्लीवे मुखाद्यम्बुवनच्छिद्रधात्वादिवाचकम् ।
मिथुने मणियष्ट्यादि, दण्डकुण्डादि चास्त्रियाम् ॥२१॥

(क) प्रायः स्वर्ग, अग्नि, पर्वत, समुद्र, वृक्ष, मेघ, वायु, यज्ञ, किरण, शब्द, रोग आदि के वाचक शब्द पुलिङ्ग (ख) नदी, लता, सेना, पङ्क्ति, रात्रि, भूमि, दिशा, प्रभा, विशेषतिथि, आदि के वाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग (ग) मुख, नेत्र, जल, वन, छिद्र, धातु, पद्म, चित्त, पुष्प, पत्र आदि के वाचक शब्द नपुंसक लिङ्ग (घ) मणि, यष्टि, मुष्टि, मरीचि, रेणु, तिथि, आदि के शब्द पुं० स्त्री० उभयलिङ्ग, (ङ) दण्ड, कुण्ड, घृत, पुस्तक, कुश, आदि के शब्द पु० नपुं० उभयलिङ्ग होते हैं।

(क) स्वर्ग—स्वर्गः नाकः त्रिदिवः सुरलोकः, अग्नि—अग्निः वन्हिः पावकः अनलः, पर्वत—पर्वतः शैल महीधरः गिरिः हिमालयः विन्ध्यः, समुद्र—समुद्रः अब्धिः अर्णवः सागरः सिन्धुः, वृक्ष—वृक्षः तरुः पादपः द्रुमः वनस्पतिः, मेघ—जलदः जलधरः घनः तडित्वान्, वायु—वायुः पवनः अनिलः मारुतः वातः, यज्ञ—यज्ञः क्रतुः यागः, किरण—किरणः मयूखः अंशुः, शब्द —शब्दः ध्वनिः रवः स्वनः नादः, रोग—रोगः आमयः गदः व्याधिः । इ०

(ख) नदी--नदी निम्नगा तरङ्गिणी गङ्गा नर्मदा यमुना सरयूः, लता—लता वल्ली वीरुत् व्रततिः, सेना—सेना चमूः वाहिनी अनीकिनी, पङ्क्ति—पङ्क्तिः राजिः—जी आवलिः—ली वीथिः—थी श्रेणी, रात्रि—रात्रिः निशा रजनी शर्वरी, भूमि—भूमिः भूः वसुधा पृथिवी पृथ्वी मेदिनी मही, दिशा—दिक् आशा प्राची अवाची प्रतीची उदीची, प्रभा—प्रभा भाः दीप्तिः त्विट्, तिथि—प्रतिपद् द्वितीया तृतीया । इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ग) मुख—मुखं वदनम् आस्यम् आननम्, नेत्र—नेत्रं नयनं लोचनं चक्षुः अक्षि, जल—जलं सलिलं पानीयम् अम्बु उदकं नीरं तोयम्, वन—वनं काननम् अरण्यम्, छिद्र—छिद्रं रन्ध्रं विलं सुषिरं, धातु—सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम रजतं ताम्रं पित्तलम्, पद्म—पद्मं जलजं कमलं पङ्कजम् चित्त—चित्तं हृदयं चेतः मनः मानसं, पुष्प—पुष्पं प्रसूनं कुसुमम्, पत्र—पत्रं दलं पर्णम्। इ०

(घ) मणिः, यष्टिः, मुष्टिः, मारीचिः, मृत्युः, रेणुः, तिथि। इ०

(ङ) दण्डः—ण्डम्, कुण्डः—ण्डम्, पुस्तकः—कम्, कुशः—शम्। इ०

तटादिकं, सर्वनाम विशेषणमपि त्रिषु।
न लिङ्गं संस्कृताख्याते, सामान्यं लिङ्गमव्यये ॥२२॥

(क) तट आदि कोई नाम, प्रायः सब सर्वनाम प्रायः सब विशेषण शब्द तीनों लिङ्ग के होते हैं। (ख) युष्मद् अस्मद् ष—नकारान्त संख्या विशेषणों के तीनों लिङ्गों में रूप एक आकार के होते हैं, औरों के प्रायः भिन्न होते हैं। (ग) संस्कृत आख्यात में लिङ्ग भेद नहीं होता है। हिन्दी में लिङ्ग भेद होता है (घ) अव्ययों में लिङ्ग विशेष का बोध नहीं होता है। सब लिङ्गों में ये एक से होते हैं।

(क) तटः तटी तटम्।

(ख) सर्वः सर्वा सर्वम्, सः सा तत्, अयम् इयम् इदम्, अहम्, त्वम्, षट्, पञ्च। इ०

(ग) सः गच्छति—वह जाता है। सा गच्छति—वह जाती है। सः अगच्छत्—वह गया। सा अगच्छत्—वह गई। सः गमिष्यति-वह जायेगा। सा गमिष्यति—वह जायेगी। इ०

(घ), स्वः, उच्चैः, नीचैः, चिरम्ः, अधः,। इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वचन—

संख्यानुसारि वचनं, व्यूहार्थेष्वपि तत्तथा।
व्यक्त्यैक्येऽप्यादरेऽनैक्यं लोके तद्बहुलं मतम् ॥२३॥

(क) संस्कृत में एक दो बहुत जैसी संख्या हो उसी के अनुसार एक द्वि बहुवचन होते हैं। हिन्दी में द्विवचन नहीं होता है, उसमें बहु (अनेक) वचन का ही प्रयोग होता है। दो के बोध के लिए दो आदि विशेषण जोड़े जाते हैं, बहुत होने पर लोग शब्द भी जोड़ा जाता है, (ख) समूह वाचक शब्दों में अनेक व्यक्ति होने पर भी समूह के संख्यानुसार वचन होते हैं। (ग) कहीं मान्य को कहने में एक व्यक्ति में भी आदरार्थी बहुवचन का प्रयोग होता है। (घ) हिन्दी में तो प्रायः निर्जीव या निम्न श्रेणी के सजीव के लिए एक वचन, उत्तम श्रेणी मध्यम श्रेणी तक के लिए एक व्यक्ति में भी आदरार्थी अनेक वचन का प्रयोग किया जाता है।

(क) सः—वह, तौ—वे दोनों, ते—वे, राजा—राजा, राजानौ—दो राजा, राजानः—राजा लोग। इ०

(ख) सेना—एक पलटन, सेनो—दो पलटनें, सेनाः—बहुत पलटनें। इ०

(ग) गुरवः इत्यमाहुः—गुरु जी ऐसा कहते हैं, श्रीमत्सु निवेद्यते—श्रीमान् में निवेदन किया जाता है, भवन्तः उपविशन्तु—आप बैठें। इ०

(घ) वृक्षोस्ति—पेड़ है, वृक्षाःसन्ति—पेड़ हैं—मम मनो रोदिति-मेरा मन रोता है, हे भृत्य त्वं गच्छ—ए नोकर तू जा, हे मित्र त्वं गच्छ-ए मित्र तुम जाओ, पिता एवं वक्ति—बाप ऐसा कहते हैं, गुरुरस्ति—गुरु हैं, सः जगाम—वे गए। इ०

हिन्दी में विशेष—

संस्कृत शब्दों के व्याकरणानुसार लिङ्ग वचन विभक्तियों के भेद से

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नाना रूप होते हैं। हिन्दी के शब्दों में भी नियमानुसार नाना रूप होते हैं, उस में ऐसे सामान्य नियम होते हैं—

(क) पुंलिङ्गमें नामशब्द आकारान्त हो तो एकवचनमे विभक्ति चिन्ह रहने पर एकारान्त, अनेक वचनमें विभक्ति चिन्ह न रहनेपर एँ होता है विभक्ति चिन्ह रहने पर सब शब्दों में ओं यों वों होते हैं। दीर्घान्त दोनों ह्रस्वान्त भी बनते हैं, स्त्रीलिंग में अकारान्त शब्द भी पुलिङ्ग आकारान्त के समान और स्वरान्त शब्द पुलिङ्ग के समान, ईकार ऊकारान्त हो तो बहुबचनों में ह्रस्वान्त, प्रथमा बहुवचन में आकारान्त शब्द में इयाँ भी होता है।

पुं० एक—लड़का लड़के ने—से—को—का-की, के—में।

अनेक—लड़के लड़कों ने—से ,, ,, ,, ,,

ब्राह्मणों—मुनियों, गुरुओंने—से—को—का—की, के—में।

माली-मालियों, डाकू-डाकुओं ,, ,, ,, ,, ,,

स्त्री—

अनेक—बात बातें, बातों ने-को—से—का, की, के—में।

लड़कियाँ भाभियें बहुयें

लड़कियों, भाभियों, बहुओं ने-से-को-का, की, के-में

(ख) विशेषण शब्द में विभक्ति चिन्ह कहीं भी नहीं रहता है। केवल आकारान्त हो तो विशेष्य पुं० बहुवचन या विभक्ति चिन्ह सहित एकवचन होने पर एकारान्त, स्त्रीलिङ्ग विशेष्य हो तो ईकारान्त होता है, अन्यत्र वैसा ही रहता है। भेदक (षष्ठ्यन्त) नाम भी विशेषण के समान आ-ई-एकारान्त विभक्ति चिन्ह वाला होता है।

अच्छा लड़का, अच्छे लड़के, अच्छे लड़कों ने, अच्छी लड़की-ने, अच्छी लड़कियां इ०।

राम का लड़का, रामके लड़के, रामके लड़कों ने, राम की लड़की,-ने, राम की लड़कियां। इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ग) सर्वनाम शब्द के स्वरूप एक अनेक वचन में प्रायः भिन्न होते हैं, षष्ठी के रूप भिन्न भी होते हैं।

मैं	मैंने	मुझे	मुझसे	मुझको	मुझमें	मेरा	-मेरी—मेरे
हम	हमने	हमें	हमसे	हमको	हममें	हमारा	—री—रे
तू	तैंने	तुझे	तुझसे	तुझको	तुझमें	तेरा	—री—रे
तुम	तुमने	तुम्हें	तुमसे	तुमको	तुममें	तुम्हारा	—री—रे
वह	उसने	उसे	उससे	उसको	उसमें	उसका	—की—के
वे	उन्होंने	उन्हें	उनसे	उनको	उनमें	उनका	—की—के
यह	इसने	इसे	इससे	इसको	इसमें	इसका	—की—के
ये	इन्होंने	इन्हें	इनसे	इनको	इनमें	इनका	—की—के

तिङन्त के रूपभेद—

भिन्नान्याख्यातरूपाणि धातूनां गणभेदतः।
वाच्यैः पदाभ्यां लकारैः पुरुषैर्वचनैरपि ॥२४॥

धातुओं के भ्वादि अदादि आदि गणों के भेद से, वाच्य, पद, लकार पुरुष वचनों के भेद से भिन्न भिन्न नाना आख्यात रूप बनते हैं।

गण	विकरण[1]	धातु,	पद,	वाच्य,	लकार, पुरुष, वचन।
१. भ्वादि	शप्	भू	परस्मै	कर्ता	लट्—भवति-तः—न्ति इ०
२. अदादि	०	हन्	,,	,,	,, हन्ति-तः-घ्नन्ति इ०
३. जुहोत्यादि	०	भी	,,	,,	,, बिभेति-भीतः-भ्यति इ०

१. कर्तरि शप्। अदिप्रभृतिभ्यः शपः। जुहोत्यादिभ्यः श्लुः। दिवादिभ्यः श्यन्। स्वादिभ्यः श्नुः। तुदादिभ्यः शः। रुधादिभ्यः श्नम्। तनादि कृञ्भ्य उः। क्रयादिभ्यः श्ना। सत्याप० चुरादिभ्यो णिच्।

वास्तव में क्रिया का फल कर्ता को हो तो आत्मनेपद, दूसरे को हो तो परस्मैपद होता है। व्यवहार में इसका पालन नहीं है, धातुओं में पद नियत है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

४. दिवादि	श्यन्	विद्	आत्मने	कर्ता	लट्	विद्यते—द्येते—द्यन्ते इ०	
५. स्वादि	श्नु	वृ	उभय	,,	,,	वृणोति,	वृणुते इ०
६. तुदादि	श	प्रच्छ	परस्मै	,,	,,	पृच्छति-तः--न्ति इ०	
७. रुधादि	श्नम्	रुध्	उभय	,,	,,	रुणद्धि,	रुन्धे इ०
८. तनादि	उ	कृ	,,	,,	,,	करोति,	कुरुते इ०
९. क्रयादि	श्ना	क्री	,,	,,	,,	क्रीणाति,	क्रीणीते इ०
१०. चुरादि	णिच्	चुर	,,	,,	,,	चोरयति—	ते इ०

वाच्यं मुख्यं, तद्विशेषः पुरुषो वचनं तथा ।
पदं स्वरूपं, कालार्थबोधकास्तुलडादयः ॥२५॥

आख्यात से कर्ता कर्म या क्रिया मात्र मुख्य रूप से जो दिखाया जाता है वह वाच्य, वह वक्ता सम्बोध्य या अन्य, एक दो बहुत जैसा है वह विशेष पुरुष वचन, शब्द का तिप् आदि या त आदि प्रत्यय होने पर स्वरूप पद, क्रिया का काल अर्थ विशेष का बोधक लकार होते हैं ।

सदाऽऽत्मनेपदं भावकर्मणोः, कर्तरि द्विधा ।
भावे तिबेव, परयोः सर्वे वचनपूरुषाः ॥२६॥

भाववाच्य कर्मवाच्य में सर्वत्र आत्मनेपद ही होता है । कर्तृवाच्य में तो धातुपाठ के अनुसार से परस्मैपद आत्मनेपद या दोनों होते हैं । भाववाच्य में कर्ता जैसा भी हो प्रत्येक लकार में तिप् (प्रथमपुरुष एक वचन) का एक रूप मात्र होता है । कर्तृवाच्य कर्मवाच्य में सब पुरुष, वचन होते हैं ।

भाव—भू—भूयते बभूवे अभूयत भाविष्यते भूयताम् भूयेत अभावि

कर्म—दृश्—दृश्यते-श्येते—श्यन्ते,–श्यसे-श्येथे-श्यध्वे,--श्ये—श्यावहे —श्यामहे । इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कर्तृ—भू—भवति–तः–न्ति। वृधू—वर्धते-र्धेते-र्धन्ते। पच्—पचति—पचते। इ०

हिन्दी में विशेष—

संस्कृत में व्याकरण के नियमानुसार धातुओं के रूप जानने चाहिए। हिन्दी में क्रियापद में भी पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग का व्यवहार होता है। उनके रूपों में ऐसे सामान्य नियम हैं—

१—वर्तमान में धातु के साथ एकवचन में ता, बहुवचन में ते जोडकर एकवचन में उत्तमपुरुष में हूँ, प्रथम मध्यम पुरुषों में है, अनेक वचनों में मध्यम पुरुष में हो, प्रथम उत्तम पुरुषों में हैं प्रयोग किया जाता है। स्त्रीलिङ्ग में ता ते की जगह में ती होता है।

एक—मैं करता (ती) हूं। तू करता (ती) है। वह करता (ती) है।

अनेक—हम करते (ती) हैं। तुम करते (ती)हो। वे करते (ती)हैं।

२—भूत में सब पुरुषों में धातु के साथ एकवचन में आ(या) अनेकवचन में ए(ये) होते हैं। स्त्रीलिङ्ग में एक में ई (यी) अनेक में ईं (यीं) होते हैं। धातुका स्वरूप कहीं कुछ बदलता है। कर्ता में सकर्मक में ने रहता है, अकर्मक में नहीं।

एक—मैंने तूँने उसने किया (ई) मैं तू वह सोया (ई)

अनेक—हमने तुमने उन्होंने किए (ईं) हम तुम वे सोए (ईं)

३—भविष्यत् और सम्भावना में धातु के साथ एकवचन में उत्तम पुरुष में ऊँगा, प्रथम मध्यम पुरुष में ए(ये)गा, बहुवचन में मध्यम पुरुष में ओ(वो)गे, प्रथम मध्यम पुरुष में एँ(यें)गे, स्त्री मे गी, गीं होते हैं।

एक—मैं करूँगा (गी) तू करेगा (गी) वह करेगा (गी)

अनेक—हम करेंगे (गी) तुम करोगे (गी) वे करेंगे (गी)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

४—विधि में धातु के साथ एकवचन में उत्तमपुरुष में ऊँ, मध्यम पुरुष में धातु मात्र, प्रथमपुरुष में ए, अनेकवचन में मध्यमपुरुष में ओ, प्रथम उत्तम पुरुष में एँ होते हैं। पुं० स्त्री० दोनों में फरक नहीं होता है।

एक—मैं जाऊँ, तू जा, वह जावें, मैं करूं, तू कर, वह करें।

अनेक—हम जावें, तुम जाओ, वे जावें, हम करें, तुम करो, वे करें,

संमानमें—आप कीजिए, खाइए, जाइये, लिखिये, इत्यादि भी होता है

५—कर्मवाच्य में धातु के भूत के जैसा या आ अन्तवाले रूपके साथ जाना क्रिया जुटकर उसके रूप बनते हैं। भाववाच्य में वैसे ही एक एक रूप होते हैं।

क०—देखा जाता हूं, देखे जाते हैं, देखा गया, देखे गए। देखा जायगा। देखे जाएंगे। इ०

भा०—सोया जाता है, सोया गया, सोया जाय, हुआ जाता है, हुआ गया, हुआ जाएगा। इ०

अभ्यासार्थ प्रश्न—

सुवन्त तिङन्तों के रूप भेद किस किससे होते हैं। लिङ्ग की व्यवस्था कैसी होती है। कैसे कैसे शब्द किस किस लिङ्ग के होते हैं। हिन्दी में लिङ्ग के विषय में क्या विशेष है। विशेषणों में कैसा लिङ्ग होता है। वचन में विशेष कैसा होता है। हिन्दी के शब्दों में लिङ्ग, वचन, विभक्तियों में क्या क्या विशेष रहता है। सर्वनामों में कौन लिङ्ग होता है। वाच्य, पद, पुरुष, वचनों का क्या भेद है। किसमें कौन पद होता है। हिन्दी में आख्यात के रूपों में क्या क्या विशेष होता है। हिन्दी में कर्मवाच्य भाववाच्य कैसे बनते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

निम्नलिखित शब्दों के लिङ्ग, वचन, विभक्ति, पद, वाच्य, पुरुष, आदि का परिचय करके अनुवाद करो—

महान् राजा। ते पुरुषाः। अहं गच्छामि। नेत्रे दीर्घे। एकं सरः अस्ति। बालिका बिभेति। त्वं पृच्छसि। भृत्यः कार्यं करोति। काव्यं पठ्यते। सा पत्रं लिखति। ब्राह्मणः जपं करोति। पर्वते पुष्पाणि दृश्यन्ते। सः रूप्यकं चोरयति। भवान् करोतु। फलानि विद्यन्ते। वयं तं पश्यामः।

अच्छे लड़के। वह जाती है। हम लोग गए। लाल कपड़े। मीठी बातें। मैं काम करूंगा। वे मुझे देखते हैं। हमारी बात मीठी है। मुनियों ने हमको देखा। उसने क्या किया। सुन्दर बालक। सुशील लड़की। सुन्दर लड़कियों को देखा। क्या पढ़ा जाता है। वह देखा गया। परिश्रमी विद्यार्थी प्यारे होते हैं।

———

(४) कृदन्त वा धातुसाधित

अप्रधानक्रियाबोधी कृदन्तो धातुसाधितः।
सोऽपि त्रेधार्थतो नाम विशेषणमथाव्ययम् ॥२७॥

वाक्यमें आख्यातकी क्रिया मुख्य होती है। मूल वा साधित धातुओं से कृत्प्रत्यय होकर बने हुए कृदन्त शब्द अप्रधान (गौण) क्रिया के बोधक होते हैं। वे कोई नाम, कोई विशेषण, कोई अव्यय होते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भावार्थल्युट्क्तिन्क्तघञजाद्यन्तं[1] नाम जायते ।
धात्वर्थो बुध्यते प्रायो, विशेषार्थः क्वचित्ततः ॥२८॥

भाव (क्रिया) अर्थमें प्रायः सब धातुओंसे ल्युट् (अन), क्तिन् (ति) क्त (त) घञ् (अ) प्रत्यय और विशेष धातुओंसे अच् अप् अङ् अ (अ) आदि प्रत्यय होने पर कृदन्त भाववाचक नाम बनते हैं। कहीं विशेष अर्थका भी बोध होता है।

ल्युट्—कृ—करणं—करना, गम्—गमनं, भुज-भोजनं, दा—दानं, लिख्-लेखनं, पठ्-पठनं, कृ-णि-कारणं, पठ्णि—पाठनं, दाणि-दापनं, पच्णि-पाचनम्। इ०

क्तिन्—गम्-गतिः—चलना, मन्—मतिः, भू-भूतिः, स्था-स्थितिः, मुच्-मुक्तिः, बुध-बुद्धिः, नी-नीतिः, भी-भीतिः, कृ-कृतिः, युज्-युक्तिः, वृध्-वृद्धिः। इ०

क्त—गम्-गतं, हस्-हसितं, मन्-मतं, क्रीड्-क्रीडितं, शी-शयितम्। इ०

घञ्—पच्—पाकः—पकाना, लभ्-लाभः, त्यज्-त्यागः, स्वद्-स्वादः, रञ्ज-रागः, लुभ्—लोभः, रुज्—रोगः, मुह्-मोहः, युज्-योगः, पुष्-पोषः, स्पृश्-स्पर्शः, मुद्-मोदः। इ०

अच्—जि-जयः—जीतना, चि—चयः, लि-लयः, भी-भयम्, नी-नयः। इ०

अप्—दृ-दरः-डरना, कृ-करः, भू-भवः, स्तु-स्तवः, जप्-जपः। इ०

---

१ सू० ल्युट् च। स्त्रियां क्तिन्। नपुंसके भावेक्तः। भावे। एरच्। ऋदोरप्। व्यधजपो रनुपसर्गे। षिद्भिदादिभ्योऽङ्। चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च। अप्रत्ययात्। ण्यासश्रन्थोयुच्। सम्पदादिभ्यः क्विप्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अङ्—पूज्-पूजा—पूजना, त्रप-त्रपा, लस्ज—लज्जा, कथ्-कथा, चिन्त-चिन्ता । इ०

सन्-अ—कृ-चिकीर्षा—करनेकी चाहना, दा-दित्सा, लभ्-लिप्सा, भुज्-बुभुक्षा, पा-पिपासा, गम्—जिगमिषा, ज्ञा-जिज्ञासा, वच्-विवक्षा, पठ्—पिपठिषा । इ०

युच्—विद्-वेदना-जानना, वदि-वन्दना, यत्—यातना, चिन्त-चिन्तना । इ०

क्विप्—सम्पद्, विपद्, आपद्, भाः, धूः, क्षुध्, तृट् । इ०

ण्वुल्तृच्शतृशानच्क्तक्तवत्वादौ विशेषणम् ।
ततः प्रतीयते स्वार्थभूतं किमपि कारकम् ॥२९॥

सामान्य या विशेष कालकी क्रिया के कर्ता कर्म आदि विशेष कारक अर्थ में प्रायः सब धातुओं से ण्वुल् (अक) तृच् (तृ) शानच् (आन) क्त (त) क्तवतु (तवत्) आदि प्रत्यय होने पर अपने विशेष कारक के बोधक कृदन्त विशेषण बनते हैं। कोई विशेष धातुओं से विशेष अर्थमें विशेष प्रत्यय होने पर भी विशेषण बनते हैं।

शतृशानान्तकैः[1] कर्ता भवन्भावी च कर्तरि ।
कर्मण्यावेद्यते कर्म, क्तवतुर्भूतकर्तरि ॥३०॥

कर्तृवाच्य परस्मैपदी धातु से शतृ, आत्मनेपदी धातु से शानच् होने पर वर्तमान कर्ता, स्यके साथ होने पर भविष्यत्कर्ता, कर्मवाच्य आत्मनेपदी धातु से शानच् होने से वर्तमान कर्म, स्य के साथ होने से भविष्यत्कर्म का बोध होता है। भूतकर्ता में सब धातुओं से क्तवतु होता है।

---

१ सू० लिटः शतृशानचा व प्रथमासमानाधिकरणे ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शतृ—वर्तमान कर्ता परस्मैपदी में गम्-गच्छन्—जाता हुआ। पठ्-पठन्, श्रु-शृण्वन्, भू-भवन्, स्था-तिष्ठन्, लिख्-लिखन्, दृश्-पश्यन्। इ०

शान—,, आत्मनेपदीमें-रम्-रममाणः, शुभ्-शोभमानः, वृध्-वर्धमानः, वृत्-वर्तमानः। इ०

शान—,, उभयपदी—पच्-पचन्-पचमानः, कृ-कुर्वन् कुर्वाणः, भज्-भजन् भजमानः। इ०

स्य-शतृ—,, भविष्यत्कर्ता—गम्—गमिष्यन्—पीछे जानेवाला, पठ्-पठिष्यन्, श्रू-श्रोष्यन्।

,, **शान** ,, रम्-रंस्यमाणः, वृत-वर्तिष्यमाणः, कम्प—कम्पिष्यमाणः

,, पच्-पक्ष्यन् पक्ष्यमाणः, कृ-करिष्यन् करिष्यमाणः। इ०

य-शान वर्तमान कर्म—कृ-क्रियमाणः—किया जारहा, श्रू-श्रूयमाणः, दृश्-दृश्यमानः, पठ्-पठ्यमानः, लिख्-लिख्यमानः, दा-दीयमानः, पच्-पच्यमानः। इ०

य-स्य—शान—भविष्यत्कर्म—लिख-लेखिष्यमाणः—पीछे लिखा जाने वाला, पठ-पठिष्यमाणः, श्रू-श्रोष्यमाणः, दृश्-द्रक्ष्यमाणः, दा-दास्यमानः। इ०

णिजन्तमें—कृ-कारयन् कारयमाणः—कराता हुआ, पठ-पाठयन् पाठयमानः। इ०

सन्नन्तमें—पठ-पिपठिषन्—पढ़ना चाहता हुआ, दृश्-दिदृक्षमाणः, श्रु-शुश्रूषमाणः। इ०

क्तवतु—भूतकर्ता—भू—भूतवान्—हुवा हुआ, शी—शयितवान्, कृ-कृतवान्, दृश्-दृष्टवान्, श्रु—श्रुतवान्, पठ—पठितवान्, लिख्-लिखितवान्। इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

णिजन्त में—कृ-कारितवान्—कराया हुआ, दा-दापितवान्, पठ-पाठितवान्। इ०

अकर्मकाद्भूतकर्ता[1] भूतकर्मसकर्मकात्।
क्तान्ताद्बोध्यो वर्तमानः क्वचिद्भावेऽप्यकर्मकात् ॥३१॥

अकर्मक धातुओं से क्त होने पर भूतकर्ता का, सकर्मक धातुओं से क्त होने पर भूतकर्म का बोध होता है। गत्यर्थक आदि कुछ धातुओं से भूतकर्ता में, कहीं वर्तमान में भी क्त होता है। अकर्मक से भाववाच्य में भी होता है। वह नपुंसकलिङ्ग एकवचन मात्र होता है।

भूतकर्ता में—शी—शयितः—सोया हुआ, भी—भीतः, भू—भूतः, जन्-जातः, वस्-उषितः, वृध्—वृद्धः, रम्—रतः, शुभ्-शोभितः, वृत्—वृत्तः, स्था—स्थितः, गम्—गतः। इ०

भूतकर्म में—दृश्-दृष्टः—देखा हुआ, श्रु-श्रुतः, पच्—पक्वः, भुज्-भुक्तः, पठ—पठितः, लिख्—लिखितः, दा—दत्तः, कृ—कृतः। इ०

णिच्-कृ—कारितः—कराया हुआ, दा—दापितः, श्रु—श्रावितः, पच्—पाचितः। इ०

भाव में—तेन शयितम्, मया गतम्, त्वया हसितम्, बालकेन क्रीडितम्। इ०

वर्तमान में—मन्—मतः, बुध्-बुद्धः, पूजः—पूजितः, विद्-विदित। इ०

---

१ सू० निष्ठा। गत्यर्थाकर्मकश्लिषशीङ्स्थासवशजनरुहजीर्यतिभ्यश्च। मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च। नपुंसके भावेक्तः।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ण्वुल्तृचौ[1] कर्तरि स्तो ण्यदाद्या भावकर्मणोः ।
अन्येपि प्रत्यया धातोस्तच्छीलाद्यर्थबोधकाः ॥३२॥

प्रायः सब धातुओं से ण्वुल्, तृच्, प्रत्यय होने पर सामान्य कर्ता का, विशेष धातुओं से यत् ण्यत् आदि प्रत्यय होने पर सामान्य कर्म, कहीं भाव अर्थ का बोध होता है। विशेष धातुओं से णिनि इष्णुच् अण् आलु आदि प्रत्यय होने पर तच्छील आदि विशेष अर्थों का भी बोध होता है।

ण्वुल्--सामान्यकर्ता—पच्—पाचकः—पकाने वाला, कृ-कारकः, हृ—हारकः, दृश्—दर्शकः, पठ्—पाठकः, लिख्—लेखकः, बुध्--बोधकः, हन्—घातकः । इ०

तृच्–सामान्यकर्ता—भू—भविता—होनेवाला, दा-दाता, श्रु—श्रोता, कृ—कर्ता, हृ—हर्ता, पठ्—पठिता, लिख्—लेखिता, भुज्—भोक्ता, दृश्—द्रष्टा, नी—नेता । इ०

णिच्-दा—दापयिता—दिलानेवाला, श्रु—श्रावयिता, दृश्—दर्शयिता इ०।

यत्-सामान्य कर्म—दा—देयं—दियाजानेवाला, पा—पेयं, जि-जेयं, स्था-स्थेयं, श्रु-श्रव्यं, भू-भव्यं, लभ्—लभ्यं, नी-नेयं, शक्-शक्यं, सह—सह्यम् । इ०

---

१ सू० ण्वुल्तृचौ। अचोयत्। शकिसहोश्च। पोरदुपधात्। ऋहलोर्ण्यत्। एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्। सुप्यजातौणिनिस्ताच्छील्ये। अलंकृञ्निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मदरुच्यपत्रप वृतुवृधुसहचर इष्णुच्। कर्मण्यण्। चरेष्टः। पुरोग्रतोग्रेषुसर्तेः। शमित्यष्टाभ्योघिनुण्। स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्राश्रद्धाभ्य आलुच्। सप्तम्यां जनेर्डः। भाषायां सदवसश्रुवः। सनाशंसभिक्षउः क्विप्च। सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषुकृञः। प्रियवशेवदः खच्। इत्यादि।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ण्यत्—सामान्यकर्म—कृ-कार्यं—कियाजानेवाला, हृ—हार्यं, धृ—धार्यं, दृश्—दृश्यं, श्रु—श्राव्यं, वच्—वाच्यं, लिख्—लेख्यं, पठ्—पाठ्यं, त्यज्—त्याज्यं, भुज्—भोज्यम्। इ०

क्यप्—सामान्यकर्म—स्तु—स्तुत्यं—स्तुति कियाजानेवाला, शास्—शिष्यः, भृ—भृत्यः। इ०

णिनि—तच्छीलकर्ता—मनस्-हृ—मनोहारी—मन हरनेवाला, उष्ण-भुज्—उष्णभोजी, शीत-भुज्—शीतभोजी, दूर-दृश्—दूरदर्शी, काव्य-पठ्—काव्यपाठी, अनु-जीव्—अनुजीवी। इ०

इष्णुच्—तच्छीलकर्ता—अलं-कृ-अलङ्करिष्णुः-शोभा देनेवाला, निरा—कृ—निराकरिष्णुः, रुच्—रोचिष्णुः, सह-सहिष्णुः, उद्-पत्—उत्पतिष्णुः, वृध्—वर्धिष्णुः। इ०

अण—सामान्यकर्ता—कुम्भ-कृ—कुम्भकारः—घड़ा बनानेवाला, चर्म कृ—चर्मकारः, भाष्य—कृ—भाष्यकारः, लोह-कृ—लोहकारः, ग्रन्थ-कृ—ग्रन्थकारः। इ०

ट—सामान्यकर्ता—भू—चर्—भूचरः—जमीन में घूमनेवाला, ख-चर्-खेचरः, जल-चर्-जलचरः, पुरः-सृ—पुरःसरः, कर्म-कृ—कर्मकरः, भास्-कृ—भास्करः। इ०

घिनुण्—कर्ता—शम्-शमी, श्रम्-श्रमी, भुज्-भोगी, द्रुह-द्रोही, युज्—योगी। इ०

आलु—तच्छील—दय्-दयालुः—दया करनेवाला, निद्रा-निद्रालुः, श्रद्धा-श्रद्धालुः। इ०

ड-कर्ता-सरस्-जन्-सरोजं-(कमल), जल-जन्-जलजं, प्र-जन्-प्रजा, द्वि—जन्-द्विजः। इ०

क्वसु—भूतकर्ता—स्था-तस्थिवान्—रहा हुआ, श्रु—श्रुतवान्, निसद्—निषेदिवान्। इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उ—इच्छाकर्ता—कृ-सन्—चिकीर्षुः—करना चाहनेवाला, गम्-जिगमिषुः, पठ्—पिपठिषुः, दा—दित्सुः, लभ्—लिप्सुः, भू—बुभूषुः, हृन्—जिहीर्षुः, तृ—तितीर्षुः। इ०

क्विप्—कर्ता—पुण्य-कृ—पुण्यकृत्—पुण्य करनेवाला, मन्त्र--कृ—मन्त्रकृत्, शास्त्र-कृ—शास्त्रकृत्, सं-राज्—सम्राट्। इ०

खच्—कर्ता—प्रिय-वद्—प्रियंवदः—प्रिय बोलनेवाला, वश-वद्—वशंवदः, भय-कृ—भयङ्करः, विश्व-भृ—विश्वम्भरः, सर्व-सह—सर्वंसहः, भुज-गम्—भुजङ्गमः भुजङ्गः। इ०

ऐसे विशेषण कृदन्त प्रायः तीनों लिङ्गों में होते हैं।

क्त्वातुमुन्णमुलाद्यन्तं धातुसाधितमव्ययम्।
ततः पूर्वापरीभावप्रकारादि प्रतीयते ॥३३॥

सब धातुओं से क्त्वा तुमुन् णमुल आदि प्रत्यय होने पर पूर्व उत्तर क्रिया, क्रियाका प्रकार आदि के बोधक कृदन्त अव्यय बनते हैं।

क्त्वाऽऽद्य[1]क्रियायां कर्त्रैक्ये, ल्यप्समासे नञा विना।
फलक्रियायां तु तुमुन्, पौनःपुन्यादिके णमुल् ॥३४॥

मुख्य क्रिया के साथ एक कर्ता होने पर पूर्व क्रियाबोधक उपसर्ग रहित धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है। उसमें नञ् को छोड़कर और उपसर्ग आदि से मिलकर समास होने पर क्त्वा की जगह में ल्यप् (य) होता हैं। फलभूत उत्तर क्रियाबोधक धातु से तुमुन्प्रत्यय होता है। बारंबार आदि क्रिया के प्रकार के बोधन में धातु से णमुल् (अम्)

---

१ सू० समानकर्तृकयोः पूर्वकाले। समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वोल्यप्। तुमुन् ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्। आभीक्ष्ण्येणमुल्च।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रत्यय होता है, उसमें द्विरुक्ति भी होती है। कहीं दूसरा शब्द मिलकर भी णमुल् होता है।

क्त्वा—पूर्वक्रिया—भू-भूत्वा—होकर, गम्—गत्वा, श्रु—श्रुत्वा, दा—दत्त्वा, हा—हित्वा, पच्—पक्त्वा, दृश्—दृष्ट्वा, कृ—कृत्वा, पठ—पठित्वा, लिख्—लिखित्वा, भुज्—भुक्त्वा। इ०

णिच—क्त्वा—कृ-कारयित्वा—कराकर, दा—दापयित्वा, श्रु—श्रावयित्वा। इ०

ल्यप्—पूर्वक्रिया—अनु-भू—अनुभूय—अनुभवकर, आ-गम्—आगत्य, प्रहृ—प्रहृत्य, आदा—आदाय, प्रविश्—प्रविश्य, अनुवद्—अनूद्य, संम्—कृ—संस्कृत्य। इ०

णिच्ल्यप्—संश्रु—संश्राव्य—सुनाकर, अनुभू—अनुभाव्य, प्रविश्—प्रवेश्य। इ०

तुमुन्—फलक्रिया—गम्—गन्तुम्—जानेके लिए, हन्-हन्तुम्, दा—दातुं, भू—भवितुं, प्र-आप्—प्राप्तुम्, लभ्—लब्धुम्, सम्-कृ—संस्कर्तुं, नी—नेतुं, प्रविश्—प्रवेष्टुम्। इ०

णिच् तुम्—कृ—कारयितुम्—कराने के लिए, पठ—पाठयितुं, श्रु—श्रावयितुम्, इ०।

णमुल्—बारबार क्रिया—गम्—गामं गामम्—जा जाकर, स्मृ-स्मारं स्मारं, पठ्-पाठंपाठम्, यावत्—जीव—यावज्जीवम्—जिन्दगीभर, नाम ग्रह—नामग्राहम्—नाम लेकर। इ०

तव्यानीयणयत्क्यबादि[1] भावे कर्मणि चेष्यते।
भावे क्लीवैकत्वमेव, कर्मार्थेतु विशेषणम् ॥३४॥

---

१ सू० तव्यत्तव्यानीयरः। तयोरेवकृत्यक्तखलर्थाः।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तव्य अनीयर ण्यत् क्यप् यत् आदि कृत्यप्रत्यय भाव, कर्म दोनों में होते हैं। भाव में होने पर नपुंसकलिङ्ग एकबचन मात्र होता है, प्रायः आख्यात के समान वाक्यपूरक भी होता है। कर्म में होनेपर कर्म का विशेषण होकर विशेष्य के समान लिङ्ग वचन में प्रयुक्त होता है।

भाव—त्वया न भेतव्यम्, मया स्थेयम्, अस्माभिः स्थातव्यम्, त्वया करणीयम्। इ०

कर्म—त्वया ग्रामो गन्तव्यः, भवता इमे पाठ्याः, दर्शनीया मूर्तयः, सह्या वेदना, करणीयानि कार्याणि, अहं भवता रक्षणीयः, धनं वर्धनीयम्। इ०

कृत्यास्तव्यादयः[1] शक्तिविध्यर्हत्वादिकेष्वपि।
विधेयत्वे तादृशेषु नान्याख्यातमपेक्ष्यते ॥३६॥

तव्य अनीयर ण्यत् क्यप् यत् प्रत्यय (क) सामर्थ्य, (ख) विधान (ग) योग्यता आदि अर्थ में भी होते हैं, वे विधेय होने पर दूसरे आख्यात के बिना भी वाक्य की पूर्ति होती है, (घ) क्त क्तवतु होनेपर भी कहीं वाक्य की पूर्ति देखी जाती है।

(क) त्वया भारो वोढव्यः—तुझसे बोझ ढोया जासकता है। बालकेन बहु क्रीडितव्यम्—बालक से ज्यादा खेला जासकता है।

(ख) भवता यष्टव्यम्—आप यज्ञ करें। त्वया करणीयम्—तुझे करना चाहिए। तेन गन्तव्यम्—उसे जाना चाहिए।

(ग) त्वयेदं कर्तव्यम्—तुझे यह करना उचित है। मयेदानीं न स्थेयम्—मुझे अब न रहना उचित है।

---

१ सू० शकिलिङ् च। प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु कृत्याश्च। अर्हे कृत्यतृचश्च।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(घ) स गतः, तेन फलं भुंक्तम्, गुरुर्गृहं गतवान्, मया पत्रं लिखितम्, स कृतवान्।

कालैक्यधीर्न नियता क्रिययोर्गौणमुख्ययोः।
यथास्वं प्रत्ययास्तत्र बोध्यकालानुसारतः ॥३७॥

वाक्य में गौण मुख्य अनेक क्रिया होने पर दोनों में एक ही काल होने का नियम नहीं है, जिस जिस क्रिया में जैसा जैसा काल विवक्षित रहता है उस उस क्रिया में उस उस काल के अनुसार प्रत्यय होते हैं।

वसन्ददर्श—रहते हुए देखा, स भुञ्जानो भविष्यति—वह खा रहा होगा, शयानो गच्छति—सोता हुआ जाता है, निषेदिवानस्ति—बैठा हुआ है, ते कृतवन्तो भविष्यन्ति—वे करचुके होंगे, गतो दृश्यते—गया हुआ देखा जाता है, गत आसम्—गए हुए थे, भुक्तवानासीत्—खा चुका था, गतोस्ति—गया हुआ है, क्रियमाणमदृश्यत—किया जारहा हुआ देखागया, भविष्यन्नासीत्—पीछे होनेवाला था, पारगो भविष्यति—पार पहुँचा हुआ होगा, बालकः शयानः पयः पिवति—बालक सोता हुआ दूध पीता है।

अभ्यासार्थ प्रश्नः—

कृदन्त कितने किसिम के होते है। कृदन्त विशेषण कैसे बनते हैं। कैसे कृदन्त रहने पर आख्यात की अपेक्षा नही होती है। शतृ शानच् कहां होते है। वर्तमान, भूत, भविष्यत्, कर्ता, कर्म में कौन कौन प्रत्यय होते हैं। क्त्वा ल्यप् में क्या विशेषता है। तव्य अनीयर कौन कौन अर्थ में होते हैं। क्त प्रत्यय कहां कैसे अर्थमें होता है। निम्न लिखित वाक्यों के कृदन्तों का परिचय करके अनुवाद करो—

इति विचारयन्नेवाश्वादवातरत्। ते गिरिमारुह्य व्यश्राम्यन्। खलस्तिष्ठन्मूत्रयति। स इदानीमधीयानोस्ति। त्वयाहं परित्यक्तोस्मि। सविलासं गतं मनोहरति। दुर्जनैः सह न स्थातव्यम्। सर्वैर्मिलित्वा राजा

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विज्ञसः। दर्शं दर्शं स गतः। रामं नामग्राहमाह्वय। न शक्यास्ते दोषा निवारयितुम्। मां प्रेक्षमाणोसौ नासिकामाकुञ्च्य परावर्तत। मया यत्कर्तव्यमासीत् तत्कृतम्। त्वया न स्प्रष्टव्यम्। मुखं व्यादाय स्वपिति। मया काव्यं पठितुमिष्यते। काव्यं पठिष्यमाणः स गुरुं प्रार्थयितुमवसरं प्रतीक्षते। अहं तद्भुक्तवानासम्। सर्वं विस्मृतवानसि। प्रथमतः स्नात्वा देवं सम्पूज्य वहिर्गन्तुं स इच्छति। विष्णुं स्मारं स्मारं प्रणम। त्वया सुखेन गन्तव्यम्। लेखनीमादाय पत्रं लिखितुं स प्रवृत्तोस्ति।

वह मुझे देखकर हँसता है। वह रोताहुआ खाता है। लड़के लोग चिल्लाते हुए दौड़े। गुरुजी काव्य पढ़ाने के लिए नियत हुए। मैला कपड़ा नहीं पहनना चाहिए। खोया हुआ धन फिर नहीं मिलता है। टूटी हुई छड़ी वहाँ रखो। जाने के लिए तैयार रहो। वे हँस कर बोलते हैं। घूमना अच्छा होता है। रोने से गाना अच्छा है। सवेरा होनेपर सोना नही चाहिए। वह पुस्तक मुझसे देखागया नहीं है। पढ़ा हुआ पाठ याद करना चाहिए। खाने के लिए बैठो। इसकी लिखाई सुन्दर नहीं है। देखेगए वस्तुओं को मत भूलो। यह उसको दिखा कर आओ। वे हमको बुलाकर लेगए। पढना लिखना छोड़कर घूमने के लिए मत जाओ। पीछे आनेवाले समय का विचार करके काम करना चाहिए। मैने जाते हुए उसको देखा।

———

(५) तद्धितान्त।

नामादिभ्यो बहुविधप्रत्ययेष्वर्थभेदतः।
नामादयस्तद्धितान्ताः शब्दाः सिद्ध्यन्ति भूयशः ॥३८॥

नाम आदि शब्दों से अनेक अर्थों में तद्धित प्रत्यय होनेपर दूसरे नाम आदि तद्धितान्त शब्द बहुत से बनते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भावंकर्मापत्यसङ्घस्त्रार्थाद्यर्थविबोधने[1]।
त्वतल्ष्यञाणञिमनिजादिभिर्नाम जायते ॥३६॥

नाम आदि शब्दों से भाव (धर्म) कर्म (काम) अपत्य (सन्तान) सङ्घ (समूह) स्वार्थ (अपना ही अर्थ) इत्यादि अर्थों में त्व तल् ष्यञ् यक् अण् अञ् इमनिच् आदि प्रत्यय होने पर तद्धितान्त नाम बनते हैं।

अर्थ	त्व	तल्	अण्	इमनिच्
पृथोः भावः	पृथुत्वम्	पृथुता	पार्थवम्	प्रथिमा
गुरोः ,,	गुरुत्वम्	गुरुता	गौरवम्	गरिमा
लघोः ,,	लघुत्वम्	लघुता	लाघवम्	लघिमा
मृदोः ,,	मृदुत्वम्	मृदुता	मार्दवम्	म्रदिमा
पटोः ,,	पटुत्वम्	पटुता	पाटवम्	पटिमा
तनोः ,,	तनुत्वम्	तनुता	तानवम्	तनिमा
महतः ,,	महत्त्वम्	महत्ता		महिमा
नीलस्य ,,	नीलत्वम्	नीलता		नीलिमा
पीतस्य ,,	पीतत्वम्	पीतता		पीतिमा

भावःकर्म वा—

दृढस्य ,,	ष्यञ् —	दार्ढ्यम्	शुचेः	अण् —	शौचम्
कृशस्य ,,	,,	कार्श्यम्	मुनेः	,,	मौनम्
जडस्य ,,	,,	जाड्यम्	यूनः	,,	यौवनम्

१—तस्यभावस्त्वतलौ। पृथ्वादिभ्यइमनिज्वा। वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ्च। गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च। हायनान्तयुवादिभ्योण्। प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ्। सख्युर्यः। राजासापत्यन्तपुरोहितादिभ्योयक्। तस्यापत्यम्। अतइञ्। ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च। स्त्रीभ्योढक्। बाह्वादिभ्यश्च। तस्यसमूहः। ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्। अचित्तहास्तिधेनोष्ठक्। प्रज्ञादिभ्यश्च।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पण्डितस्य भावः	ष्यञ्	पाण्डित्यम्	कुमारस्य	अञ्	कौमारम्
मूर्खस्य ,,	,,	मौर्ख्यम्	सख्युः	य	सख्यम्
शीतस्य ,,	,,	शैत्यम्	दूतस्य	,,	दौत्यम्
शुक्लस्य ,,	,,	शौक्ल्यम्	वणिजः	,,	वाणिज्यम्
नीलस्य ,,	,,	नैल्यम्	राज्ञः	यक्	राज्यम्
मधुरस्य ,,	,,	माधुर्यम्	सेनापते	,,	सैनापत्यम्
धीरस्य ,,	,,	धैर्यम्	पुरोहितस्य	,,	पौरोहित्यम्

अपत्यम्

पुत्रस्य	अञ्	पौत्रः	गङ्गायाः	ढक्	गाङ्गेयः
दुहितुः	,,	दौहित्रः	भगिन्याः	,,	भागिनेयः
कश्यपस्य	अण्	काश्यपः	विमातुः	,,	वैमात्रेयः
पाण्डोः	,,	पाण्डवः	राधायाः	,,	राधेयः
कुरोः	,,	कौरवः	सुमित्रायाः	इञ्	सौमित्रिः
रघोः	,,	राघवः	जमदग्नेः	यञ्	जामदग्न्यः
दशरथस्य	इञ्	दाशरथिः			

समूहः—

जनानां	तल्	जनता	राज्ञां	वुञ्	राजकम्
बन्धूनां	,,	बन्धुता	राजन्यानां	,,	राजन्यकम्
पदातीनां	अण्	पादातम्	हस्तिनां	ठक्	हास्तिकम्
युवतीनां	,,	यौवतम्	धेनूनां	,,	धैनुकम्

स्वार्थ—

बन्धुः	एव	अण्	बान्धवः	करुणा	एव	ष्यञ्	कारुण्यम्
देवता	,,	,,	दैवतम्	सन्निधिः	,,	,,	सान्निध्यम्
मनः	,,	,,	मानसम्	उपमा	,,	,,	औपम्यम्
कुतुकम्	,,	,,	कौतुकम्	समीपम्	,,	,,	सामीप्यम्
रक्षः	,,	,,	राक्षसः	सुखम्	,,	,,	सौख्यम्

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

एवम्—सपत्न्याः अपत्यं-सापत्नः, गर्गस्यापत्यं-गार्ग्यः, दितेरपत्यं-दैत्यः, अदितेरपत्यमादित्यः, वसुदेवस्यापत्यं—वासुदेवः, विदुषोभावः—विद्वत्त्वं विद्वत्ता वैदुष्यम्, वृद्धस्यभावः—वृद्धत्वं वृद्धता वार्धकं वार्धक्यम्, शूरस्य-भावः-शूरत्वं शूरता शौर्यम्, यजमानस्यभावः-याजमान्यम्, कुशलस्य-भावः—कौशलम्, धृष्टस्यभावः—कर्म वा धार्ष्ट्यम्, कपोतानां समूहः-कापोतम्, देवएव-देवता, बालएव-बालकः, पितुर्भ्राता-पितृव्यः, मातुर्भ्राता-मातुलः, पितुःपिता-पितामहः, मातुःपिता-मातामहः । इ०

सम्बन्धातिशयौपम्यविकाराधिक्य पूर्तिषु ।[1]
मत्विन्नितच्तरतममयडादौ विशेषणम् ॥४०॥

नाम आदि शब्द विशेष से सम्बन्ध अतिशय (श्रेष्ठता) औपम्य (तुल्यता) विकार आधिक्य पूर्ति (पूरण) आदि अर्थ में म (व)तुप् इनि इतच् तर तम इष्ठन् ईय युन् मयट् आदि प्रत्यय होनेपर तद्धितान्त विशेषण बनते हैं ।

अस्य अस्मिन् वा अस्ति—

म(व)तुप्	इनि	मतुप्	विनि
धनम्—धनवान्,	धनी	श्रीः—श्रीमान्	मेधा—मेधावी
गुणः—गुणवान्,	गुणी	धीः—धीमान्	माया—मायावी
दोषः—दोषवान्,	दोषी	बुद्धिः—बुद्धिमान्	यशः—यशस्वी
रोगः—रोगवान्,	रोगी	कान्तिः—कान्तिमान्	तेजः—तेजस्वी

---

१. सू० तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् । अत इनि ठनौ । अस्माया मेधास्रजोविनिः । तदस्य संजातं तारकादिभ्य इतच् । अतिशायने तम-विष्ठनौ । द्विवचन विभज्योपपदे तरबीयसुनौ । अजादीगुणवचनादेव । ईषद-समाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः । प्रकारवचने जातीयर् । इवेप्रति कृतौ । शाखादिभ्यो यः । तस्य विकारः । तत्प्रकृतवचने मयट् । तस्य पूरणे डट् । द्वेस्तीयः । त्रेः संप्रसारणं च ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अस्य सञ्जातः—ता—तम्—

दुःखम्—	इतच्—	दुःखितः	मुद्रा—	इतच्—	मुद्रितः
सुखम्	,,	सुखितः	निद्रा	,,	निद्रितः
पुष्पम्	,,	पुष्पितः	क्षुधा	,,	क्षुधितः
फलम्	,,	फलितः	तृषा	,,	तृषितः
व्याधिः	,,	व्याधितः	व्यथा	,,	व्यथितः
पल्लवः	,,	पल्लवितः	बुभुक्षा	,,	बुभुक्षितः
तारकाः	,,	तारकितः	पिपासा	,,	पिपासितः

अतिशयेन--

विद्वान्—तर-तम—विद्वत्तरः—मः			रक्तः—तर-तम—रक्ततरः—मः		
चतुरः	,, ,,	चतुरतरः—मः	शीतः	,, ,,	शीततरः—मः
निपुणः	,, ,,	निपुणतरः—मः	मधुरः	,, ,,	मधुरतरः—मः
दीर्घः—तर—तम—दीर्घतरः—मः			इयसुन्—द्राघीयान्—इष्ठन्		द्राघिष्ठः
ह्रस्वः	,, ,,	ह्रस्वतरः—मः	,, ह्रसीयान्	,,	ह्रसिष्ठः
पटुः	,, ,,	पटुतरः-मः	,, पटीयान्	,,	पटिष्ठः
गुरुः	,, ,,	गुरुतरः-मः	,, गरीयान्	,,	गरिष्ठः
लघुः	,, ,,	लघुतरः-मः	,, लघीयान्	,,	लघिष्ठः
बहुः	,, ,,	बहुतरः-मः	,, भूयान्	,,	भूयिष्ठः
बहुलः	,, ,,	बहुलतरः-मः	,, बंहीयान्	,,	बंहिष्ठः
प्रियः	,, ,,	प्रियतरः-मः	,, प्रेयान्	,,	प्रेष्ठः

अमुक इव—

विद्वान् इव कल्पप्—विद्वत्कल्पः			अश्व—	इव कन्—	अश्वकः
,, ,,	देश्य	—विद्वद्देश्यः	वासुदेवः	,, ,,	वासुदेवकः
,, ,,	देशीय	—विद्वद्देशीयः	मुखम्	,, य	मुख्यः
,, ,,	जातीय	—विद्वज्जातीयः	जघनम्	,, ,,	जघन्यः
मूर्खः ,,		मूर्खकल्पः इ०	अग्रम्	,, ,,	अग्र्यः

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अमुकस्य विकारः, एभिः प्रचुरं वा—

सुवर्णस्य	मयट्—सुवर्णमयः		वाग्भिः	मयट्	—वाङ्मयम्
रजतस्य	,,	रजतमयः	जलैः	,,	जलमयम्
मृदः	,,	मृण्मयः	काष्ठैः	,,	काष्ठमयम्
लोहस्य	,,	लोहमयः	पाषाणैः	,,	पाषाणमयम्

पूरणः—

द्वयोः	तीय—द्वितीयः		पञ्चानां	डट्	पञ्चमः
त्रयाणां	,,	तृतीयः	दशानां	,,	दशमः
चतुर्णां	डट्	चतुर्थः	एकादशानां	,,	एकादशः
,,	,,	तुरीयः तुर्यः	विंशतेः	तमट्	विंशतितमः विंशः
षण्णां	,,	षष्ठः	शतानां	,,	शततमः

एवं—श्रीरस्याति-श्रीलः, शिखाः सन्त्यज्य-शिखी, प्रभातमिव-प्रभातकल्पा रात्रिः, पयोस्या अस्ति-पयस्विनी, प्रशस्ती राजस्यामस्ति-राजस्वती भूः ष्म प्रशस्तं ज्योतिरस्यामस्ति-ज्योतिष्मती रात्रिः अतिशयेन प्रशस्यः-श्रेयान् श्रेष्ठः, ज्यायान्, ज्येष्ठः, कुत्सितोश्वः, अश्वकः, ह्रस्वो वृक्षो-वृक्षकः लोमान्यस्य सन्ति-लोमशः, मांसमस्यास्ति-मांसलः, फेनोस्ति-फेनिलः पङ्कजास्यास्ति-पङ्किलः, तुन्दमस्यास्ति-तुन्दिलः, रजः अस्या अस्ति-रजस्वला, अश्मभिः, प्रचुरमश्यमयम् ।

तेन[1] प्रोक्तं, कृतं, रक्तं, तस्येदं, साऽस्यदेवता ।
तत्र जातो भवः साधुरित्याद्यर्थे ठगादयः ॥४१॥

---

१. सू० तेन प्रोक्तम् । तेन निर्वृत्तम् । तेन रक्तं रागात् । तस्येदम् । सास्यदेवता । तत्र जातः । तत्र भवः । तत्र साधुः । तस्मै हितम् । तदधीते तद्वेद । सोस्य निवासः । तदर्हति । तद्वहति रथयुगप्रासङ्गम् । हलसीराट्टक् । तेन जीवति । चरति । पथ्यर्थधर्मन्यायादनपेते ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तेन प्रोक्तं, तेन कृतं, तेन रक्तं, तस्येदं, सास्यदेवता, तत्र जातः, तत्र भवः, तत्र साधुः, तद्वेत्ति तदधीते वा, तस्मै हितं, सोस्यनिवासः इत्यादि नाना अर्थों में शब्दविशेषसे अण् छ यक् यत् ठक् ढक् ख इत्यादि प्रत्यय होनेपर भी तद्धितान्त नाम विशेषण आदि बनते हैं।

प्रोक्तम्—			कृतम्-(निर्वृत्तम्)		
मनुना—	अण्—	मानवम्	मनसा—	ठक्—	मानसिकम्
ऋषिणा	,,	आर्षम्	कायेन—	,,	कायिकम्
उशनसा	,,	औशनसम्	वाचा —	,,	वाचिकम्
पतञ्जलिना	,,	पातञ्जलम्	पुरुषेण	ढक्	पौरुषेयम्
नारदेन	छ	नारदीयम्	रक्तम्—		
पाणिनिना	,,	पाणिनीयम्	मञ्जिष्ठया	अण्	माञ्जिष्ठम्
पराशरेण	,,	पाराशरीयम्	कषायेण	,,	काषायम्
बृहस्पतिना	यक्	बार्हस्पत्यम्	हरिद्रया	अञ्—	हारिद्रम्

अमुकस्य इदम्—

पृथिव्याः	अण्	पार्थिवम्	पितुः	यत्	पित्र्यम्
शरीरस्य	,,	शारीरम्	गोः	,,	गव्यम्
तेजसः	,,	तैजसम्	रथस्य	,,	रथ्यम्
पशुपतेः	,,	पाशुपतम्	राज्ञः	छ	राजकीयम्
हिमवतः	,,	हैमवतम्	स्वस्य	,,	स्वीयम्
चन्द्रस्य	,,	चान्द्रम्	जलस्य	,,	जलीयम्
देवस्य	अञ्	दैवम्	आत्मनः	,,	आत्मीयम्
असुरस्य	,,	आसुरम्	कवेः	ष्यञ्	काव्यम्

अस्य देवता–

इन्द्रः	अण्	ऐन्द्रः	वायुः	यत्	वायव्यम्
विष्णुः	,,	वैष्णवः	पितरः	,,	पित्र्यम्

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवः	अण्	शैवः	प्रजापतिः	ण्य	प्राजापत्यम्
पशुपतिः	,,	पाशुपतः	सोमः	ट्यण्	सौम्यम्
शक्तिः	,,	शाक्तः	अग्नीसोमौ	छ	आग्नीषोमीयम्
तत्र जातः—			**तत्र भवः—**		
मथुरायां	अण्	माथुरः	दिवि	यत्	दिव्यः
मगधे	,,	मागधः	गणे	,,	गण्यः
कुले	ख	कुलीनः	मुखे	,,	मुख्यः
भारते	छ	भारतीयः	आदौ	,,	आद्यः
तत्र साधुः—			अन्ते	,,	अन्त्यः
शरणे	यत्	शरण्यः	दन्ते	,,	दन्त्यः
सभायां	य	सभ्यः	कण्ठे	,,	कण्ठ्यः
अतिथौ	ढञ्	आतिथेयः	तालुनि	,,	तालव्यः
समाजे	ठक्	सामाजिकः	मूर्धनि	,,	मूर्धन्यः
संग्रामे	,,	सांग्रामिकः	शाश्वत्	ठक्	शाश्वतिकः
वेदे	,,	वैदिकः	शरीरे	,,	शारीरिकः
तस्मै हितम्			अधुना	,,	आधुनिकः
सर्वजनेभ्यः	ख	सर्वजनीनम्	सम्प्रति	,,	साम्प्रतिकः
आत्मने	,,	आत्मजनीनः	परलोके	ढञ्	पारलौकिकः
विश्वजनेभ्यः	,,	विश्वजनीनः	इहलोके	,,	ऐहलौकिकः
यज्ञाय	घ	यज्ञियः	अध्यात्मं	,,	आध्यात्मिकः
ब्रह्मणे	,,	ब्रह्मण्यः	अधिदैवं	,,	आधिदैविकः
तत् अधीते वेत्ति वा—			अधिभूतं	,,	आधिभौतिकः
वेदम्	ठक्	वैदिकः	समये	,,	सामयिकः
न्यायम्	,,	नैयायिकः	अकाले	,,	आकालिकः
वेदान्तम्	,,	वेदान्तिकः	भूमौ	अण्	भौमः
तर्कम्	,,	तार्किकः	समुद्रे	,,	सामुद्रः

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पुराणम्	ठक्	पौराणिकः	हेमन्ते	अण्	हैमन्तः
अलङ्कारम्	,,	आलङ्कारिकः	राष्ट्रे	घ	राष्ट्रियः
			ग्रामे	य—खञ्	ग्राम्यः-मीणः

सोऽस्य निवासः— | **तेन जीवति—**

कलिङ्गः—	अण्—	कालिंगः	वेतनेन—	ठञ्—	वैतनिकः
सिंधुः	,,	सैन्धवः	जालेन	,,	जालिकः
मिथिला	,,	मैथिलः	धनुषा	,,	धानुष्कः
पञ्चालः	,,	पाञ्चालः	उपदेशेन	,,	औपदेशिकः

तत् अर्हति— | **तेन चरति—**

छेदम्	यत्—	छेद्यः	शकटेन	ठक्—	शाकटिकः
भेदम्	,,	भेद्यः	रथेन	,,	रथिकः
दण्डम्	,,	दण्ड्यः	अश्वेन	,,	अश्विकः
वधम्	,,	वध्यः	हस्तिना	,,	हस्तिकः

तत् वहति— | **तस्मात् अनपेतम्—**

हलम्	ठक्—	हालिकः	धर्मात्	यत्	धर्म्यम्
रथम्	यत्	रथ्यः	न्यायात्	,,	न्याय्यम्
धुरम्	,,	धुर्यः	पथः	,,	पथ्यम्

एवं—मीमांसामधीते वेत्ति वा-मीमांसकः, व्याकरणमधीतेवेत्तिवा वैयाकरणः, अस्तिपरलोकमतिर्यस्य—आस्तिकः, नास्ति०-नास्तिकः, मलमस्यास्ति-मलिनः—मलीमसः, संग्रामाय प्रभवति—सांग्रामिकः, पादार्थ—पाद्यम्, अर्घार्थमर्घ्यम्, अतिथ्यर्थमातिथ्यम्, जनपदात् आगतः—जानपदः, तपः शीलमस्य—तापसः, अक्षैर्दीव्यति—आक्षिकः, शकुनीन्हन्ति—शाकुनिकः, अपूपाः पण्यमस्य-आपूपिकः, धनुःप्रहरणमस्य—धानुष्कः, अन्हानिर्वृत्तम्—आन्हिकम्, धर्मंचरति—धार्मिकः, द्वारेनियुक्तः—दौवारिकः, भाण्डागारेनियुक्तः — भाण्डागारिकः,

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सर्वभूमेरीश्वरः—सार्वभौमः, मासेनलभ्यं—मासिकं, वर्षेणलभ्यं—वार्षिकम्
इत्यादि ।

देश[1]कालौदम्यवारप्रकाराद्यर्थबोधने ।
तसित्रवतिसात्कृत्वसुजाद्यैर्जायतेऽव्ययम् ॥४२॥

नाम सर्वनाम संख्यावाचक आदि शब्दोंसे देश काल सादृश्य (तुल्यता) वार प्रकार आदि अर्थ के बोधन में तसि (तस्) त्र वति (वत्) साति (सात्) कृत्व सुच् (कृत्वस्) आदि प्रत्यय होनेपर तद्धितान्त अव्यय बनते हैं ।

तसि—देश—आदितः, मध्यतः, पार्श्वतः, पृष्ठतः, अनन्तः, अभितः, परितः, सर्वतः, यतः, ततः, कुतः ।

त्र—देश-सर्वत्र, बहुत्र, कुत्र, यत्र, तत्र, अत्र, अन्यत्र ।

दा—काल—सदा, सर्वदा, यदा, तदा, अन्यदा, कदा ।

वति—सादृश्य—ब्राह्मणेनतुल्यं—ब्राह्मणवत्, राज्ञातुल्यं—राजवत्, मूर्खेणतुल्यं—मूर्खवत् ,तेनतुल्यं—तद्वत्, मयातुल्यं—मद्वत, देवस्येव-देववत् तस्येव—तद्वत् , असुरस्येव—असुरवत् इ० ।

साति—अधीनता—राज्ञःअधीन—राजसात्, ब्राह्मणस्याधीन—ब्राह्मणसात्, कृत्स्नता—सर्वभस्म—भस्मसात्, सर्वमग्नि—अग्निसात्, सर्वधूलिः—धूलिसात् ।

१—सू० किंसर्वनामबहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः । पञ्चम्यास्तसिल् । (वा) आद्यादिभ्यस्तसेरुपसंख्यानम् । पर्यभिभ्यां च । सप्तम्यास्त्रल् । सर्वैकान्यकिंयत्तदःकालेदा । तेनतुल्यंक्रियाचेद्वतिः । तत्रतस्येव । तदधीनवचने । विभाषासातिकार्त्स्न्ये । संख्यायाःक्रियाभ्यावृत्तिगणनेकृत्वसुच् । द्वित्रिचतुर्भ्यःसुच् । संख्यायाविधार्थेधा । प्रकारवचनेथाल् ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कृत्वसुच्—वार—पञ्चकृत्वः, दशकृत्वः, शतकृत्वः, सहस्रकृत्वः ।

सुच्— ,, द्विः, त्रिः, चतुः, सकृत् ।

धा—प्रकार—द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, पञ्चधा, षोढा, यथा, तथा ।

एवम्—अधुना, तदानीं, उपरि, उपरिष्टत्, उत्तरेण, अधरेण, दक्षिणेन, पुरः— पुरस्तात्, अधः अधस्तात्, कर्हि, तर्हि, कथम्, इत्थम्, क्व, इह, दक्षिणतः, उत्तरतः, वहुशः, अल्पशः इ० ।

संख्यार्थेभ्यस्तदादिभ्यः[1] प्रत्ययैस्तत्तदर्थकैः ।
नामादिनानाजातीयाः शब्दाःसिद्धन्तिभूयशः ।।४३।।

(क) एक आदि संख्यावाचक शब्दोंसे समूह भाव पूरण आदि अर्थों में क, त्व, तल्, तय, अय, तीय आदि प्रत्यय (ख) तद् आदि सर्वनाम शब्दों से भाव सन्वन्ध परिमाण निर्धारण आदि अर्थों में त्व, तल्, छ, ख, अण्, मयट् जातीयर् आदि प्रत्यय होनेपर नाम, विशेषण अव्यय, तद्धितान्त बहुत से शब्द बनते हैं ।

---

१ सू०—वृद्धाच्छः । युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च । यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् । किंयत्तदो निर्धारणे द्वयोरेकस्यडतरच् । वावहूनांजातिपरिप्रश्नेडतमच् ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

नाम		विशेषण		अव्यय	
भाव	समूह		पूरण	वार	प्रकार
(क) त्व—तल्	क	तय अय	डट्	कृत्व—सुच्	धा, धमुञ्
एक—एकत्वं—ता ऐक्यम्	एककम्		प्रथमः एकतरः—तमः ।	सकृत्	एकधा—ऐकधम्
द्वि—द्वित्वं—ता	द्विकं	द्वितयं द्वयं ।	द्वितीय—द्वैतीयीकः ।	द्विः द्विशः	द्वि-द्वे-धा, द्वैधम्
त्रि—त्रित्वं—ता	त्रिकं	त्रितयं त्रयं ।	तृतीयः—तार्तीयीकः ।	त्रिः त्रिशः	त्रि-त्रे-धा, त्रैधम्
चतुर्—चतुष्टम्	चतुष्कं	चतुष्टयं ।	चतुर्थः—तुरीयः—र्यः	चतुः	चतुर्धा
पञ्चन्—पञ्चत्वं—ता	पञ्चकं	पञ्चतयं	पञ्चमः ।	पञ्चकृत्वः	पञ्चधा
षष्—षट्त्वं	षट्कं	”	षष्ठः ।	षट् कृत्वः	षोढा, षड्धा
सप्तन्—सप्तत्वं	सप्तकं		सप्तमः ।	सप्तकृत्वः	सप्तधा
अष्टन्—अष्टत्वं	अष्टकं		अष्टमः ।	अष्टकृत्वः	अष्टधा
नवन्—नवत्वं	नवकम्		नवमः ।	नवकृत्वः	नवधा
दशन्—दशत्वं	दशकम्		दशमः ।	दशकृत्वः	दशधा
विंशति—विंशतित्वं			विंशतितमः । विंशः ।	विंशतिकृत्वः	विंशतिधा
षष्ठि—			षष्ठितमः ।	षष्ठिकृत्वा	षष्टिधा
शत—शतत्वं	शतकम्		शततमः ।	शतकृत्वः	शतधा, शतशः
सहस्र—सहस्रत्वं	सहस्रकम्, साहस्रम्		सहस्रतमः ।	सहस्रकृत्वः	सहस्रधा, सहस्रशः

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi
Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ख)	तद्	यद्	इदम्	एतद्	अदस्	किम्
नाम—	तत्त्वंतत्ता	यत्त्वंयत्ता	इदत्त्वम्	एतत्त्वम्	अदस्त्वम्	कित्त्वम्
			इदन्ता, इयत्ता	एतत्ता		किन्ता कियत्ता
विशेषण	तदीयः	यदीयः	इदमीयः	एतदीयः	अदसीयः	किमीयः
	तन्मयः	यन्मयः	इदस्मयः	एतन्मयः	अ···	किम्मयः
	तावान्	यावान्	इयान्	एतावान्		कियान्
	ततरः	यतरः				कतरः
	ततमः	यतमः				कतमः
	तत्रत्यः	यत्रत्य	अत्रत्यः			
			इहत्यः			कुत्रत्यः
अव्यय	तत्र	यत्र	अत्र			कुत्र
	तदा	यदा	अधुना			कदा
	तदानीम्		इदानीम्			
	तर्हि	यर्हि		एतर्हि		कर्हि
	तथा	यथा	इत्थम्			कथम्

	युष्मद्	अस्मद्	भवत्	स्व
विशेषण	त्वदीयः तावकः—कीनः	मदीयः मामकः—कीनः	भवदीयः	स्वीय
	युष्मदीयः यौष्माकः—कीणः	अस्मदीयः आस्माकः—कीनः	भावत्कः	स्वकीयः
	त्वन्मयः युष्मन्मयः	मन्मयः अस्मन्मयः	भवन्मयः	

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अभ्यासार्थ प्रश्न—

तद्धितान्त शब्द कितने किसिम के होते हैं। तद्धितान्त नाम विशेषण अव्यय कैसे कैसे होते हैं। भाव कर्म में कौन प्रत्यय होते हैं। अतिशयार्थक प्रत्यय होकर कैसे शब्द बनते हैं। संख्यार्थक त्यदादि शब्दों से किस जाति के शब्द बनते हैं। कृत्व सुच्, ष्यञ्, त्व इमनिच्, इतच् मयट्, मतुप्, प्रत्यय किन अर्थों से होते हैं। नीचे के वाक्योंका अनुवाद करो, तद्धितान्त शब्दको भी पहचानो—

पाणिनीये शास्त्रे सहस्रशः शब्दाः साध्यन्ते। तत्र नगरे धनिनः गुणवन्तः वैष्णवाः शैवाश्च बहवो जनाः सन्ति। युष्मदीये भवने आस्माकीनाः परिवाराः सुखेन वसन्ति। गर्गाणां कुले विद्यावन्तः श्रीमन्तश्च पुरुषा बभूवुः। सर्वजनीनेषु कर्मसु श्रद्धावन्तः पारलौकिकं हितं साधयन्ति। तदीयाः पुत्राः पौराणिकाः कियन्तः सन्ति। ग्रामीणानां मृण्मयानि भवनानि भवन्ति। राजकीयः पुरुषः साम्प्रतिकान् सभ्यान् मानयति। तुरीयश्छात्रो द्वितीयं पारितोषिकं लभते। तस्यौपम्यं कुत्रापि नास्ति। अणिमा महिमा इत्याद्याः सिद्धयो योगिनां भवन्ति। सख्ये धैर्यं गाम्भीर्यं च महत्सु दृश्यते।

आपका पोता श्रीमान् है। कुरुक्षेत्रमें कौरव पाण्डवोंका बहुत भारी युद्ध हुआ। ऋषि के कहे हुए वचनो में सत्यता रहती है। दशवां पुरुष यहां नहीं है। जितना रुपया चाहते हो उतना लेलो। इस बखत वह यहां कहां से आवेगा। गुरु दशवार भी कहते हैं, पर शिष्य तो दोवार भी नहीं सुनता है। मेरी पुस्तक तुम्हारे आसन में है। मथुरा में रहने वाले जन धनवान् होते हैं। इन दिनों का हाल सरकारी महिमा बतलाता है। हाथियोंका झुण्ड बनमें रहता है। तेज घोड़ा बहुत दौड़ता है। नामवाले बड़ोंका आदर करो। रोगी दोषी लोग चमकीले हैं। शैव और वैष्णव परस्पर क्यों झगड़ते हैं।

———

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(६) स्त्रीप्रत्ययान्त

शब्दाः स्त्रीलिङ्गकाः केचिदव्यक्ता औपदेशिकाः ।
सामान्याश्च, स्वतः केचिद्व्यक्ताः स्त्रीप्रत्ययैरपि ।।४४।।

स्त्रीलिङ्ग शब्द कोई अव्यक्त (क) उपदेश से व्यक्त होने वाले, (ख) कोई तो स्त्री पुरुष दोनों के लिए सामान्य, (ग) कोई अपने आप व्यक्त, (घ) कोई स्त्रीप्रत्यय होने से व्यक्त होते हैं ।

(क) संपत् विपत् आपत् शरत् प्रावृट् सुमनस् गति मति बुद्धि इ० ।

(ख) मक्षिका जिगामिषुः दयालुः करिष्णुः कर्मकृत् वर्षाभूः पञ्च दश इ० ।

(ग) माता दुहिता ननान्दा दाया स्वसा स्नुषा श्वश्रूः वधूः इ० ।

(घ) हंसी मृगी अश्वा वडवा हस्तिनी ब्राह्मणी इ० ।

उक्तौ संस्पुंकस्त्रीजातेः पुंयोगिन्या अपि स्त्रियः ।[1]
प्रायोङ्यन्ता स्त्रियां शब्दाः, आन्वताः क्वचिदेव ते ।।४५।।

(क) पुरुष जातिको भी कहनेवाले शब्द स्त्रीजातिको कहने में (ख) पुरुष के सम्बन्ध से स्त्री को कहने में प्रायः ङी प्रत्यय होकर ईकारान्त, कोई आव होकर आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द बनते हैं ।

(क) मयूर-मयूरी, हंस-हंसी, मृग-मृगी, व्याघ्र-व्याघ्री, ब्राह्मण-ब्राह्मणी, क्षत्रिय-क्षत्रिया-याणी, शूद्र-शूद्रा, महाशूद्रः-महाशूद्री, आर्य-आर्या-र्याणी, कोकिल-कोकिला ।

(ख) ब्राह्मणस्य स्त्री-ब्राह्मणी, शूद्रस्य-शूद्री महाशूद्रस्य महाशूद्री, अर्यस्य-अर्यी, क्षत्रियस्य-क्षत्रिया, गोपस्य-गोपी, रजकस्य-रजकी इ० ।

---

१ सू०—जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् । पुंयोगादाख्यायाम् ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ङ्यन्ताः[1] स्त्रियां मतास्तृन्ता उगिदन्ताः षितष्टितः ।
इन्नन्ताष्ठक् ठञणञाद्यन्ता गौरादिका अपि ॥४६॥

स्त्रीलिङ्ग होने पर तृ (तृच् तृन्) प्रत्ययान्त, उगित् (शतृ क्तवतु क्वसु वसु मतुप् वतुप् इयसुन्) प्रत्ययान्त, षित् (ष्वुन् ष्यञ्) प्रत्ययान्त, टित् (ल्युट् ट मयट् डट् तमट्) प्रत्ययान्त, इन् (इनि विनि ग्मिनि णिनि) प्रत्ययान्त, ठक् ठञ् अण् अञ् ढक् ढञ् कञ् तयञ् यञ् प्रत्ययान्त शब्द, और गौर आदि शब्द भी ङी (ङीप् ङीष् ङीन्) प्रत्यय होकर ईकारान्त बनते हैं ।

तृ—कर्तृ-कर्त्री, हर्तृ-हर्त्री, दातृ-दात्री, भवितृ—भवित्री, धातृ-धात्री इ० ।

उगित्—गच्छत्- गच्छन्ती, ददत्-ददती, भवत्-भवती, गतवत्—गतवती, क्षतवत्-क्षतवती, निषेदिवस्-निषेदुषी, तस्थिवस्-तस्थुषी, विद्वस्-विदुषी, श्रीमत्—श्रीमती, धीमत्-धीमती, धनवत्—धनवती, गरीयस्-गरीयसी, लघीयस्—लघीयसी इ० ।

टित्—भूचर—भूचरी, खेचर—खेचरी, तन्मय—तन्मयी, सुवर्णमय-सुवर्णमयी, विंश-विंशी, षष्ठ-षष्ठी, चतुर्थ-चतुर्थी, दशम—दशमी, शततम—शततमी इ० ।

षित्—खनक—खनकी, नर्तक—नर्तकी, औचित्य-औचिती, वैदुष्य—वैदुषी इ० ।

इन्—धनिन्—धनिनी, गुणिन्-गुणिनी, मेधाविन्—मेधाविनी, पयस्विन्—पयस्विनी, मनोहारिन्—मनोहारिणी, कार्यकारिन्—कार्यकारिणी इ० ।

---

१ सू०—उगितश्च । षिद्गौरादिभ्यश्च । ऋन्नेभ्यो ङीप् । टिड्ढाणञ्द्वय सज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ठक्—ठञ्—हालिक—हालिकी, आधुनिक—आधुनिकी, वैदिक—वैदिकी, शारीरिक—शारीरिकी इ० ।

अण—अञ्—वैष्णव—वैष्णवी, दैव—दैवी, मागध—मागधी, ऐन्द्र—ऐन्द्री, आसुर—आसुरी इ० ।

ढक्—ढञ्—भागिनेय—भागिनेयी, पारलौकिक—पारलौकिकी, सामयिक—सामयिकी इ० ।

कञ्—यादृश—यादृशी, तादृश—तादृशी, ईदृश—ईदृशी, कीदृश—कीदृशी इ० ।

तयप्—पञ्चतय-पञ्चतयी, चतुष्टय-चतुष्टयी, द्वय-द्वयी, द्वितय-द्वितयी ।
यञ्—गार्ग्य—गार्गी, वात्स्य—वात्सी, ताण्ड्य—ताण्डी इ० ।
क्वरप्—जित्वर—जित्वरी, नश्वर—नश्वरी, विसृत्वर-विसृत्वरी इ० ।
गौरादि—गौर—गौरी, मत्स्य—मत्सी, अनडुह्-अनडुही इ० ।

आबन्तास्तु स्त्रियां शेषा अकारान्ता अजादयः ।
ण्वुलानक्तयतच्छेतच्खतल्तरतमान्तकाः ॥४७॥

स्त्रीलिङ्ग होनेपर शेष अकारान्त व अजादि शब्द और ण्वुल् आन (शानच्) क्त अङ् अ यत् ण्यत् छ इतच् ख तल् तर तम आदि प्रत्ययान्त शब्द आप (टाप डाप) प्रत्यय होकर आकारान्त बनते हैं। ण्वुलका अकार प्रायः इकार भी होता है।

अजादि—अज-अजा, अश्व-अश्वा, मूषिक-मूषिका, बाल-बाला, वत्स—वत्सा, ज्येष्ठ-ज्येष्ठा, मध्यम-मध्यमा, कोकिल-कोकिला इ० ।

ण्वुल्—कारक-कारिका, हारक-हारिका, पाठक-पाठिका, तारक-तारका इ० ।

शान—कुर्वाण-कुर्वाणा, ददान-ददाना, वर्धमान-वर्धमाना इ० ।
क्त—गत-गता, स्थित-स्थिता, पठित-पठिता, पक्व-पक्वा इ० ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अङ्—अ—त्रपा जरा भिदा पूजा चिकीर्षा बुभुक्षा पिपासा दित्सा लिप्सा इ० ।

यत् ण्यत्—देय-देया, पेय-पेया, कार्य-कार्या, दृश्य-दृश्या, रथ्य-रथ्या, दिव्य-दिव्या इ० ।

छ—त्वदीय—त्वदीया, मदीय-मदीया, राजकीय—राजकीया, स्वीय-स्वीया इ० ।

इतच्—पल्लवित-पल्लविता, फलित-फलिता, लज्जित—लज्जिता इ० ।

ख—सर्वजनीन-सर्वजनीना, विश्वजनीन-विश्वजनीना इ० ।

तल्—जनता बन्धुता महत्ता गुरुता लघुता मृदुता गजता इ० ।

तर तम—गुरुतर-गुरुतरा, लघुतर-लघुतमा, गुरुतम-गुरुतमा, लघुतम-लघुतमा इ० ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

स्त्रीलिङ्ग शब्द किस किसिमके होते हैं। स्त्रीलिङ्ग में ङी टा प्रत्यय कहां कहां होते हैं। शतृ शानच् क्तवतु क्त मतुप् मयट् इनि णिनि ण्वुल् तृच् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में कैसे होते हैं। स्त्री जाति वा पुरुष के सम्बन्धको लेकर स्त्रीको कहने में कहां कैसा फरक होता है।

नीचे लिखे हुए वाक्योंका अनुवाद करो, स्त्रीलिङ्ग शब्दोंका परिचय करो—

श्रीमत्याः मनोहारिणीं सुखश्रियं प्रेक्ष्य महीयसी श्रद्धा भवति। भागिनेय्याः धात्री मेधाविनी चातुर्यवती चास्ति। पुस्तकानां चतुष्टयी अवशिष्यते। नर्तक्यो वैदुषीं दर्शयित्वा मोहिन्यो भवन्ति। त्वदीया शारी मलिना दृश्यते। विद्यया महत्तरा गुरुता लभ्यते। विदुष्याः व्याख्याने कौशलं मनो मोहयति।

स्त्रियोंकी बहुत बडी श्रद्धा करनी चाहिए। मेरी लडकी चतुर सुशील और गुणी भी है। क्षत्रिय स्त्री शूर होती है। जैसी तैसी कल्पना से

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

काव्य नहीं लिखा जाता है। विचार के योग्य बातको साधारण जनता में प्रकाश नहीं करना चाहिए। उनकी इच्छा आजकलकी जैसी नहीं है।

---

(७) समास

समासः पदयो[१]रैक्यमैच्छिको नियतः क्वचित् ।
प्रायो लोपोऽन्तर्विभक्तेस्तदर्थं ख्याति विग्रहः ॥४८॥

परस्पर[१] सम्बन्ध वाले अनेक पदोंको जोड़कर एक पद बनाना समास कहा जाता है। कोई समास ऐच्छिक अर्थात् अनित्य, कोई नियत अर्थात् नित्य होता है। समास होनेपर भीतरकी विभक्ति प्रायः लुप्त होती है। समस्त पदका अर्थ दिखानेको वाक्यविग्रह कहा जाता है। नित्य समास में अस्वपद (बाहरके पंद से) अनित्य समास में स्वपद (समास होनेवाले पदों से) विग्रह किया जाता है।

समास
- नित्य
  - अस्वपदविग्रह: क्रममनतिक्रम्य वनेचरति
  - समस्त: यथाक्रमम्. वनेचरः
- अनित्य
  - स्वपदविग्रह, राज्ञः पुरुषः कण्ठेकालोयस्यसः
  - समस्त: राजपुरुषः(लुक्) कण्ठेकालः(अलुक्)

१—सू० समर्थःपदविधिः। जिन पदोंका परस्पर सम्बन्ध है उन्हीं का समास होता है। अयमश्वो राज्ञः पुरुष एनं संस्करोति–ऐसे में समास नहीं होता है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

समासभेदाः षोढा तत्पुरुषः कर्मधारयः ।
द्विगुर्द्वन्द्वोऽव्ययीभावो बहुव्रीहिरितीरिताः ॥४६॥

समास के भेद छ हैं । तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व, अव्ययीभाव, बहुव्रीहि ।

प्रायःप्रधानं चरमः पदार्थ आदितस्त्रिषु ।
तुर्येऽखिलः, पञ्चमे तु पूर्वः, षष्ठेत्र्बहिर्भवः ॥५०॥

तत्पुरुष कर्मधारय द्विगु में प्रायः उत्तरपदका अर्थ, द्वन्द्व में प्रायः सब पदार्थ, अव्ययीभाव में प्रायः पूर्वपदका अर्थ, बहुव्रीहि में प्रायः बाह्य पदार्थ प्रधान होता है ।

उ. प. प्र.			स. प्र. प्र.	पू. प. प्र.	बा. प. प्र.
तत्पुरुष	कर्मधारय	द्विगु	द्वन्द्व	अव्ययीभाव	बहुव्रीहि
राज्ञःपुरुषः–	नीलंचतद्वस्त्रं	त्रयोलोकाः	रामश्च कृष्णश्च	क्रममनतिक्रम्य	पीतमंबरंयस्य सः
राजपुरुषः	नीलवस्त्रम्	त्रिलोकी	रामकृष्णौ	यथाक्रमम्	पीताम्बरः

तत्पुरुषः—

प्रायो भिन्नविभक्त्यर्थपदयोर्योगकल्पितः ।
उक्तस्तत्पुरुषः सोयं नवधा पूर्वगैः पदैः ॥५१॥

---

१ सू० पूर्वापराधरोत्तर मेकदेशिनैकाधिकरणे । अर्धं नपुंसकम् । द्वितीयाश्रितातीत पतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः । तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन । पूर्वसदृशसमो नार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः । अन्नेतव्यञ्जनम् । भक्ष्येण मिश्रीकरणम् । चतुर्थीतदर्थार्थवलिहितसुखरक्षितैः । पञ्चमी भयेन । षष्ठी । सप्तमी शौण्डैः । नञ् । उपपद मतिङ् । कुगतिप्रादयः ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रथमान्त पूर्वपदका पष्ठ्यन्त उत्तरपदके साथ, द्वितीया आदि विभक्त्यन्त या नञ् पूर्वपदका प्रथमान्त उत्तरपदके साथ, नाना विभक्त्यन्त उपपदके साथ कृदन्त उत्तरपदका समास तत्पुरुष है। प्रथमा और नञ् तत्पुरुष में पूर्व, और में उत्तर पदार्थ मुख्य होता है। पूर्वपदोंके अनुसार से इसके नौ भेद हैं।

प्रथमा तत्—अर्धपिप्पल्याः—अर्धपिप्पलीः, पूर्वकायः, मध्याह्नः, अर्धरूप्यकम् इ०।

द्वितीया ,, कृष्णंश्रितः—कृष्णश्रितः, दुःखप्राप्तः, शरणायन्तः, वर्षभोग्यः इ०।

तृतीया ,, नखेनभिन्नः—नखभिन्नः, पितृसमः, गुणहीनः, दध्योदनः, अर्धोनः इ०।

चतुर्थी ,, यूपाय दारु—यूपदारु, द्विजार्थः, गोहितम्, स्तम्भकाष्ठम्, ग्रहबलिः इ०।

पञ्चमी ,, व्याघ्राद्भयं—व्याघ्रभयम्, चौरभीः, दुःखमुक्तः, वामेतरः, दूरागतः, मदन्यः इ०।

षष्ठी ,, राज्ञः पुरुषः—राजपुरुषः, मत्पुत्रः, वृक्षमूलम्, देवलोकः, युष्मद्गृहम् इत्यादि।

सप्तमी ,, रणे निपुणः—रणनिपुणः, काव्यकुशलः, मासदेयम्, वाक्पटुः इत्यादि।

नञ् ,, न धर्मः—अधर्मः, अनीशः, अदृष्टः, असमर्थः, अपण्डितः, अधीरः इत्यादि।

उपपद ,, कुम्भं करोति—कुम्भकारः, गृहस्थः, मनोहारी, सत्कृत्य, कुपुरुषः इत्यादि।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कर्मधारय—

योगः प्रायः [१]समानाधिकरणप्रथमान्तयोः ।
कर्मधारय उक्तोसौ सप्तधास्वपदस्थितेः ॥५२॥

खास विशेषण किंवा उपमा आरोप के द्वारा विशेषण, अथवा इति एव के पूरण द्वारा विशेषण और उसका विशेष्य अथवा एक ही के दो विशेषण ऐसे उसी वस्तुमें गिरनेवाले दो प्रथमान्त शब्दोका समास कर्मधारय है । पूर्व उत्तरपदकी स्थितिके भेदसे उसके सात भेद हैं। इनमें विशेष्यपूर्वपद और उपमानोत्तरपदमें पूर्वपदार्थ, और में उत्तरपदार्थ प्रधान होता है ।

विशेषणपूर्वपद—नीलं च तद्वस्त्रं-नीलवस्त्रम् । पुष्पितलता । रम्य—पुष्पाणि । सद्वैद्यः इ० ।

विशेष्यपूर्वपद—ब्राह्मणश्चासौ श्रोत्रियः-ब्राह्मणश्रोत्रियः । गोवशा । गोगर्भिणी इ० ।

विशेषणोभयपद—शीतं चतदुष्णं-शीतोष्णम् । कृताकृतं । स्नानानुलिप्तः । मूकबधिरः । इ०

उपमानपूर्वपद—मेघ इव श्यामः-मेघश्यामः । चन्द्रसुन्दरम् । अञ्जननीला । विद्युच्चपलः । इ०

उपमानोत्तरपद—नृपश्चन्द्रइव-नृपचन्द्रः । राजहंसः । नृसिंहः । नरपुङ्गवः । नरेन्द्रः । इ०

आरोप्योत्तरपद—मुखमेवचन्द्रः-मुखचन्द्रः । मनोमृगः । विद्याधनम् । चरणकमलम् इ० ।

---

१. सू० तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः । विशेषणं विशेष्येण बहुलम् । उपमानानि सामान्यवचनैः । उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे । मयूरव्यंसकादयश्च ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भावनापूर्वपद—गुणइतिबुद्धिः-गुणबुद्धिः। शत्रुश्रीः। मित्रदृष्टिः। आलोकशब्दः इ०।

द्विगु द्वन्द्व—

समाहारे[1] द्विगुः संख्या विशेषणविशेष्ययोः।
व्यूढयुक्तानेकतुल्ययोगो[2] द्वन्द्व स तु द्विधा ॥५३॥

(१) संख्यावाचक विशेषण और विशेष्यका समाहार (समूह) बोधक समास द्विगु होता है। वह समूहवाचक होनेसे एकवचनान्त नपुंसकलिङ्ग, काई स्त्रीलिङ्ग भो होता है। इसमें समूहार्थ प्रधान होता है।

त्रयाणां लोकानां समाहारः-त्रिलोकं—की। पञ्चानां मूलानां समाहारः-पञ्चमूली। पञ्चपात्रम्। त्रिभुवनम्। चतुर्युगम्। त्रिफला। चतुर्दशभुवनम्। पञ्चगवम्। अष्टदलम् इ०।

अनेक वचन वाले तो कर्मधारय हैं—सप्तर्षयः। नवग्रहाः। षड्रसाः। द्वादशादित्याः। चतुर्वर्णाः इ०।

(२) समूहार्थक या परस्पर जुटे हुए भिन्नार्थक अनेक (दो या बहुत) समप्रधान प्रथमान्त शब्दोंका समास द्वन्द्व होता है। वह दो किसिम का होता है (क) अनेक वस्तु मात्रका बोधक अनेकवचन (संख्यानुसार दो या बहुत) होनेवाला इतरेतरयोगद्वन्द्व, (ख) समुदायका बोधक एकवचन मात्र होनेवाला समाहारद्वन्द्व।

(क) प्राण्यङ्गवाचक, बहुवचनान्त सेनाङ्गवाचक, वाद्याङ्गवाचक, प्राणि भिन्न द्रव्यके जातिका बोधक, भिन्न लिङ्ग नदी या देशवाचक, बहु-

---

१. सू० संख्यापूर्वोद्विगुः। द्विगुरेकवचनम्। स नपुंसकम्।

२. सू० चार्थेद्वन्द्वः। द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्। जातिरप्राणिनाम्। विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामाः क्षुद्रजन्तवः। येषां च विरोधः शाश्वतिकः। गवाश्वप्रभृतीनि च।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वचनान्त क्षुद्र (नकुल तकके छोटे) जन्तुवाचक, स्वभावसे विरुद्धके बोधक शब्दोंका, गो अश्व आदि विशेष शब्दोंका भी समाहारद्वन्द्व, (ख) और का इतरेतरद्वन्द्व होता है।

(क) पाणी च पादौ च मुखं च—पाणिपादमुखम्। रथाश्च अश्वाश्च-रथाश्वम्। मार्दङ्गिकाश्च वैणविकाश्च-मार्दङ्गिकवैणविकम्। छत्रं च उपानहौ च—छत्रोपानहम्। गङ्गा च शोणश्च-गङ्गाशोणम्। यूकाश्च लिक्षाश्च-यूकालिक्षम्। अहयश्च नकुलाश्च—अहिनकुलम्। काकाश्चोलूकाश्च-काकोलूकम्। गवाश्वम्। मांसशोणितम्। मूत्रपुरीषम्। पुत्रपौत्रम्। स्त्रीकुमारम् इ०।

(ख) रामश्च कृष्णश्च—रामकृष्णौ। हरिश्च हरश्च—हरिहरौ। सीता च रामश्च—सीतारामौ। रामौ च कृष्णश्च—रामकृष्णाः। हरिश्च हरश्च-ब्रह्मा च—हरिहरब्रह्माणः। दधि च पयश्च-दधिपयसी। पत्रं च पुष्पं च फलं च—पत्रपुष्पफलानि। ब्राह्मणौ च क्षत्रियौ च—ब्राह्मणक्षत्रियाः इ०।

एकशेष—

यत्रैकशेषो[1] न द्वन्द्वो, वचनं तु समष्टितः।
साम्ये शब्देन वार्थेन शिष्यते काममेककः॥५४॥

एक शेष होनेके स्थानोंमें द्वन्द्व नहीं होता है। एक शेषके स्थल में सबकी संख्या मिलाकर वचन होता है। (क) अर्थ भिन्न, शब्द वही, (ख) शब्द भिन्न अर्थ वही, (ग) शब्द अर्थ दोनों वही होनेपर जो कोई हो एक शेष होता है, दूसरेका लोप होता है।

(क) रामश्च (दशरथ के पुत्र) रामश्च (परशुराम) रामश्च (बलराम)-रामाः। तिर्यक् च (पशु) तिर्यक् च (पक्षी)-तिरश्चौ।

---

१. सू० सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ। वा० विरूपाणामपि समानार्थानाम्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ख) घटश्च कुम्भश्च—घटौ वा कुम्भौ। घटश्च कुम्भश्च कलशश्च—घटाः, कुम्भाः, कलशाः वा। चक्षु च नेत्रे च—चक्षूंषि, नेत्राणि वा।

(ग) ब्राह्मणश्च ब्राह्मणश्च—ब्राह्मणौ। ब्राह्मणश्च ब्राह्मणौ च–ब्राह्मणाः।

प्रायः पुमान्क्वचित्तु[1] स्त्री शिष्यते संग्रहे द्वयोः।
शिष्यते क्लीबमेवैकं क्लीबाक्लीबसमुच्चये ॥५५॥

(क) स्त्री और पुरुष जोड़ीके बोधनमे तरुण भिन्न ग्राम्य बहु पशुओंके जोड़ीके हों तो स्त्रीलिङ्ग शब्द, और हों तो पुंलिङ्ग-शब्द शेष होता है। (ख) पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्गके साथ नपुंसक लिङ्गका योग होनेपर नपुंसक लिङ्ग शब्द शेष होता है।

(क) हंसी च हंसश्च–हंसौ। ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी च–ब्राह्मणौ। पुत्रश्च पुत्री च–पुत्रौ। वत्सश्च वत्सी च–वत्सौ। गौश्च गावश्च–गाव इमाः।

(ख) शुक्लश्च शुक्ला च शुक्लं च—शुक्लानि। नीलं च नीला च नीलश्च-नीलानि। पीतं च पीतश्च—पीते। हरिता च हरितं च—हरिते।

कहीं विशेष[2]—भ्राता च स्वसा च—भ्रातरौ। पुत्रश्च दुहिता च—पुत्रौ। माता च पिता च—पितरौ, मातापितरौ। श्वश्रूश्च श्वशुरश्च—श्वशुरौ, श्वश्रूश्वशुरौ। जाया च पतिश्च—जायापती, दम्पती।

त्यदादि[3] शिष्यते, तस्याऽत्यदादेश्च समुच्चये।
त्यदादि मात्रयोगे तु शिष्यते स्वगणो परम् ॥५६॥

---

१. सू० पुमान् स्त्रिया। ग्राम्यपशुसंघेष्वतरुणेषु स्त्री। नपुंसकमनपुंसके नैकवच्चास्यान्यतरस्याम्।

२. सू० भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्। पिता मात्रा। श्वशुरः श्वस्रा।

३. सू० त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम्। वा। त्यदादीनां मिथः सहोक्तौ यत्परं तच्छिष्यते।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) त्यदादि शब्द और उससे भिन्न शब्दके योग होनेपर त्यदादि ही शेष होता है।

(ख) त्यदादि त्यदादिके योगमें तो तद् यद् एतद् इदम् अदस् एक द्वि युष्मद् अस्मद् भवत् किम् इस क्रमसे जो उत्तर है वही शेष होता है।

(क) स च रामश्च—तौ। गोपालश्च एतौ च—एते। रामश्च त्वं च—युवाम्। राधा च भवन्तौ च—भवन्तः। गोपश्च त्वं च राधा च—यूयम्। वस्त्रं च इदं च—इमे इ०।

(ख) स च त्वं च—युवाम्। ते च वयं च—वयम्। एतौ च अहं च—वयम्। एष च इयं च—इमौ। स च अहं च—आवाम्। असौ च भवांश्च—भवन्तौ।

अव्ययीभाव—

प्रायः[1] पूर्वेणाऽव्ययेन योगः शब्दान्तरस्य तु।
नित्योऽव्ययीभाव उक्तः सोऽयं द्वेधाऽव्ययस्थितेः ॥५७॥

प्राय: पूर्वपद, कहीं उत्तरपद अव्ययके साथ विभक्त्यन्त दूसरे पदका नित्य समास अव्ययीभाव होता है। वह अव्ययपूर्वपद अव्ययोत्तरपद दो किसिमका होता है। इसमें (क) पूर्व (ख) उत्तर जो हो, अव्यय पदार्थ प्रधान होता है (ग) कहीं बहुव्रीहि के समान वाह्यपदार्थ प्रधान भी होता है।

---

१. सू० अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिवृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्त वचनेषु।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) गृहे इति—अधिगृहम्। गृहे गृहे इति प्रतिगृहम्। क्रममनतिक्रम्य—यथाक्रमम्। वनस्य समीपम्—उपवनम्। मक्षिकाणामभावः-निर्मक्षिकम्। पदस्य पश्चात्—अनुपदम्। मूलमपरित्यज्य—समूलम्। दिने दिने-प्रतिदिनम्। शरदः समीपे—उपशरदम्। गङ्गायाः पारे—पारेगङ्गम्। समुद्रस्य मध्ये—मध्ये-समुद्रम्। यौवनमभिव्याप्य—आयौवनम्।

(ख) शाकस्य लेशः-शाकप्रति। एकेन विपरीतं वृत्तम्-एकपरि। शलाकया विपरीतं वृत्तं—शलाकापरि।

(ग) उन्मत्ता गङ्गा यस्मिन्देशे—उन्मत्तगङ्गम्। खले यवा यस्मिन्देशे-खलेयवम्। दक्षिणं प्रगतः—प्रदक्षिणम्।

बहुव्रीहि—

पदयोर्वा पदानां वा योगो बाह्यार्थबोधकः।
बहुव्रीहिः क्वचिदलुक्, सोयं दशविधो मतः ॥५८॥

पूर्वपद विशेषण उत्तरपद विशेषण दोनोंका, कहीं बहुत पदोंका, कहीं विशेष शब्दोंका भी बाह्यपदार्थ प्रधान होनेवाला समास बहुव्रीहि है। पूर्व उत्तर शब्दकी स्थिति और अर्थके विशेष से बहुव्रीहि दश किसिमके होते हैं।

द्विपद बहुव्रीहि—वीरः पुत्रो यस्याः सा—वीरपुत्रा नारी। पीतमम्बरं यस्य सः—पीताम्बरः हरिः। इ०

यथाऽसादृश्ये। सुप्प्रतिना मात्रार्थे। पारे मध्ये षष्ठ्या वा। अन्यपदार्थे च संज्ञायाम्।

१ सू० अनेकमन्यपदार्थे। सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ। हलदन्तात्संज्ञायाम्। वा नञोल्यर्थानां वाच्योवाचोत्तरपदलोपः। तेन सहेति-तुल्ययोगे। संख्ययाव्ययासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये। तत्र तेनेदमिति सरूपे। दिङ्नामान्यन्तराले।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बहुपद—अधिकमुज्ज्वलमङ्गं यस्य सः-अधिकोज्ज्वलाङ्गः । अत्यन्तं दुष्टः स्वभावो येषां ते-अत्यन्तदुष्टस्वभावाः । जातो महानानन्दो यस्य सः-जातमहानन्दः ।

नञ्पूर्वपद-न विद्यते पुत्रो यस्य सः—अपुत्रः । न विद्यते धनं येषां तेअधनाः । इ०

सह पूर्वपद-पुत्रेण सहितः-सपुत्रः । धनेन सहिताः—सधनाः । अर्थेन सहितः—सार्थः । इ०

संख्योत्तरपद-दशानां समीपे ये सन्ति, ते-उपदशाः (नैवएकादश वा) । विंशतेरासन्नाः—आसन्नविंशाः । शतस्य समीपे ये सन्ति ते-उपशतं (पुस्तकानि) । इ०

संख्योभयपद-एको द्वौ वा-एकद्वाः (जनाः) । द्वौ वा त्रयः—द्वित्राः । त्रयश्चतुरो वा—त्रिचतुराः । पञ्चषड्वा-पञ्चषाः । दशद्वादश वा-दशद्वादश । इ०

व्यतिहारलक्षण-परस्पर करणका बोधक—केशेषु केशेषु गृहीत्वा प्रवृत्तं—केशाकेशि युद्धम् । दण्डेन दण्डेन प्रहृत्य प्रवृत्तं—दण्डादण्डि । हस्तेन हस्तेनाहत्य प्रवृत्तं—हस्ताहस्ति । मुष्टिना मुष्टिना हत्य प्रवृत्तं-मुष्टीमुष्टि युद्धम् । इ०

दिगन्तराल (मध्यदिक्) बोधक—दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्चान्तरालं-दक्षिणपूर्वादिक् । पश्चिमाया उत्तरस्याश्चान्तरालं—पश्चिमोत्तरा दिक् ।

उपमानपूर्वपद—पुण्डरीके इव अक्षिणी यस्य सः—पुण्डरीकाक्षः । कम्बुरिव ग्रीवा यस्य सः—कम्बुग्रीवः । गृद्ध्रस्य दृष्टिरिव दृष्टिर्यस्य सः-गृद्ध्रदृष्टिः । इ०

व्यधिकरण—भिन्न विभक्तिक—चक्रे पाणौ यस्य सः—चक्रपाणिः । कण्ठे कालो यस्य सः-कण्ठेकालः । उरसि लोम यस्य सः—उरसिलोमा । इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विशेष—

व्यूहद्वन्द्वे[1] क्लीबतैक्यं, तथा स्त्रीत्वमपि द्विगौ ।
द्वन्द्वेऽन्यस्मिन्योगसंख्या, लिङ्गं तु परवन्मतम् ॥५९॥
अव्ययं ह्यव्ययीभावो, बहुव्रीहौ तु बाह्यवत् ।
परवल्लिङ्गवचने भवतः शेषयोर्द्वयोः ॥६०॥

समास होनेपर (क) समाहारद्वन्द्व नपुंसकलिङ्ग एकवचन, द्विगु भी नपुंसक लिङ्ग कहीं स्त्रीलिङ्ग और एकवचन होता है। (ख) इतरेतर योगद्वन्द्व में सबके योगके अनुसार वचन, अन्तिम पदके अनुसार लिङ्ग होता है। (ग) अव्ययीभाव अव्यय बनता है। (घ) बहुव्रीहि में बाह्य विशेष्यके अनुसार लिङ्ग वचन होते हैं। (ङ) शेष कर्मधारय और तत्पुरुष में उत्तरपदके समान लिङ्ग वचन होते हैं।

(क) गवाश्वम्। अहिनकुलम्। पाणिपादम्। त्रिलोकी। चतुर्युगम्। पञ्चनली। सप्तशती।

(ख) सीतारामौ। कुक्कुटमयूर्यौ। पत्रमसीलेखन्यः। पृथिव्यप्तेजोवायुनभांसि। रामकृष्णौ।

(ग) यथाक्रमम्। प्रतिदिशम्। निर्मक्षिकम्। उपगिरिः। अध्यात्मम्। यावच्छ्लोकम्।

(घ) कृतकृत्यो जनः। कृतानुग्रहा देवाः। कृतार्था स्त्री। प्राप्तविद्यौ पुरुषौ। रक्तपुष्पा लताः।

---

१ द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्। द्विगुरेकवचनम्। स नपुंसकम्। (अकारान्तोत्तरपदो द्विगुस्त्रियामिष्टः) अव्ययीभावश्च। परवल्लिङ्गं द्वन्द्व-तत्पुरुषयोः।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ङ) राजमहिषी । गुरुसेवकः । मत्पुत्र्यः । दशरथस्त्रियः । नीलो-त्पलम् । तरुणजनाः । धृष्टस्त्रीः ।

क्वचिद्दृश्यान्तर्विभक्तिः[1], पुंवद्भावः[2] क्वचित्स्त्रियाः ।
विशेषा अपि जायन्ते समासान्तादयः[3] क्वचित्[4] ॥६१॥

(क) कहीं अलुक्समास होनेपर समासके भीतरकी विभक्ति रहती है । (ख) कहीं विशेषण आदि स्त्रीलिङ्ग शब्द पुंलिङ्ग जैसा बनता है । (ग) कहीं समास होनेपर अन्त में समासान्त प्रत्यय होते हैं । (घ) कहीं बीचमें भी कुछ विकार होते हैं ।

(क) तस्येव । राममिव । तेनेव । (इव शब्दके साथ नित्य समास होकर अलुक् भी होता है) पारेगङ्गम् । मध्येसमुद्रम् । युधिष्ठिरः वाचस्पतिः । कण्ठेकालः । उरसिलोमा । स्तम्बेरमः । कर्णेजपः । मनसिजः । खेचरः । आत्मनेपदं । परस्मैपदं । देवानांप्रियः । पितुःस्वसा । दास्याः पुत्रः । इ०

---

१. वा० इवेनसमासोविभक्त्यलोपश्च । सू० हलदन्तात्सप्तम्याः संज्ञायाम् ।

२. सू० पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु । स्त्रियाः पुंवद्भाषित-पुंस्कादनूङ् समानाधिकरणेस्त्रियामपूरणीप्रियादिषु । कुक्कुट्यादीनामण्डादिषु ।

३. सू० ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे । राजाहः सखिभ्यष्टच् । अहः-सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्चरात्रेः । तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः । अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः । इच् कर्मव्यतिहारे । इनः स्त्रियाम् । न घृतश्च । उरः प्रभृतिभ्यः कप् । शेषाद्विभाषा ।

४. सू० आत्महतः समानाधिकरणजातीययोः । न लोपो नञः । तस्मान्नुडचि । अन्होन्हएतेभ्यः । नोप सर्जनस्य । अव्ययीभाव चा काले । ज्योतिर्जनपदरात्रिनाभिनामगोत्ररूपस्थानवर्णवयोवचनबन्धुषु ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ख) रक्ता लता—रक्तलता। नीला शाटी—नीलशाटी। विदुष्यः स्त्रियः—विद्वत्स्त्रियः। कुक्कुट्या अण्डं—कुक्कुटाण्डम्। दीर्घा नासिका यस्य—दीर्घनासिकः। रक्ता लता यस्मिन्—रक्तलतम्। स्थूला लेखनी—स्थूललेखनी। मृग्याः पदं—मृगपदम्। काक्याः शावः—काकशावः। इ०।

(ग) समास होनेपर उत्तरपद ऋच्, पुर, अप्, धुन् पथिन् शब्द, कर्मधारय तत्पुरुषका उत्तरपद राजन् अहन् सखि शब्द कहीं रात्रि अंगुलि शब्द, अव्ययीभावके अन्त में शरद् आदि कुछ शब्द भी अकारान्त व्यतिहार बहुव्रीहि इकारान्त होते हैं। बहुव्रीहि में उत्तरपद इन्नन्त ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग ई ऊकारान्त वा ऊ ष आदि शब्द होनेपर नित्य, अन्यत्र विकल्पसे आगे क जुटता है।

अर्धर्चम्। रामपुरम्। विमलापम्। राजधुरा। राजपथः। महापथः। दृष्टपथः। महाराजः। सिन्धुराजः। देवराजः। पुण्याहम्। प्रियसखः। मत्सखः। वायुसखः। पूर्वरात्रः। अहोरात्रः। द्व्यङ्गुलः। त्र्यङ्गुलम्। उपशरदम्। प्रतिराजम्। उपनदम्। अध्यात्मम्। प्रत्यक्षं। परोक्षम्। केशाकेशि। हस्ताहस्ति। मुष्टीमुष्टि। बहुधनिकापुरीः। बहुकर्तृकः। पूर्णलक्ष्मीकः। महोरस्कः। महायशस्कः। महायशाः। इ०

(घ) समासके भीतर विशेषण महत् शब्द आकारान्त, नञ् का हल् परे रहने पर न के स्थान में अ, स्वर परे होनेपर न के पीछे अ जुटना, अहन् शब्दका कहीं अन्ह होना, समान सह शब्दका कहीं स होना इत्यादि विकार होते हैं।

महापण्डितः। महादेवः। महाबुद्धिः। अकृतार्थः। अकृत्यम्। अनर्थः। अनीशः। अपुत्रः। पूर्वाह्णः। मध्याह्नः। सपुत्रः। सधनः। सतीर्थः। सगोत्रः। इ०

एवं—द्वित्राः। पञ्चषाः। उपदशाः। पुण्डरीकाक्षः। कृष्णगवी। छत्रोपानहम्। कुण्डोध्नी। कापुरुषः। क्षीरोदः। अन्धतमसम्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ब्रह्मवर्चसम् । वाङ्मनसे । द्विभूमः । निःश्रेयसम् । सुगन्धिः । सुमेधाः । दुर्मेधाः । चित्रगुः । रक्षःसभम् । प्राप्तजीविकः । एकाहः । पिबतखादता । उच्चावचम् । इ०

अद्वन्द्वे नियमः प्रायः पूर्वोत्तरप्रयोगयोः ।
द्वन्द्वेपि नियमः प्रायः क्वचिच्चानियमो मतः ॥६२॥

(क) द्वन्द्वसे भिन्न समासों में अपने अपने नामके अनुसार पूर्व उत्तरपद रखे जाते हैं। आहिताग्नि आदि कोई शब्दों में मात्र विशेष होता है। (ख) द्वन्द्वमें तो सम प्रधान होने से अजादि अकारान्त, थोड़े अक्षरके पूज्यवाचक आदि शब्द पहले रहते हैं। कहीं अनियम से आगे पीछे भी होते हैं।

(क) राजपुरुषः। कृतकार्यः। समर्थः। अपुत्रः। यथाबुद्धिः। त्रिलोकी। अर्धमासम्। रक्तपुष्पम्। इ०

(ग) हरिहरौ। हरिहरमुखः। रामकृष्णौ। रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः। शिवकेशवौ। हिमशिशिरवसन्ताः। अर्थधर्मौ। धर्मार्थौ। इ०

क्वचित्समासभेदेन विशेषार्थस्य बुध्यते ।
समस्तयोः समासेन पददैर्घ्यं च जायते ॥६३॥

(क) उन्ही पदोंका भिन्न भिन्न समास करने पर भिन्न अर्थ हो जाता है। (ख) समास करके जुटे हुए पूर्व उत्तर पदोंका फिर समास करने पर लम्बेपद भी संस्कृत भाषा में बनते हैं।

(क) पीताम्बर—पीतं च तत् अम्बरम्—कर्म—पीला कपडा। पीतमम्बरं यस्य सः—ब्रहु—पीला वस्त्रवाला। प्रियपुत्रः—प्रियस्य पुत्रः तत्—प्यारेका लडका। प्रियश्चासौ पुत्रः—कर्म—प्यारा लडका। प्रियः पुत्रो यस्य सः—ब्रहु—लडकेको प्यार करनेवाला। राजपुरुष—

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

राजा चासौ पुरुषः—कर्म—राजा जो वही पुरुष। राज्ञः पुरुषः तत्—राजाका आदमी। राजा पुरुषो यत्र—बहु—राजा ही है पुरुष जिसमें ऐसा देश। राजा च पुरुषश्च—द्वन्द्व—राजा और पुरुष दो। इ०

(ख) बहवश्च ते जनाः—बहुजनाः। बहुजनानां निवासः—बहुत लोगोंका निवास। सुवर्णस्य दण्डः—सुवर्णदण्डः। सितं च तच्छत्रं—सितच्छत्रं। सुवर्णदण्डश्च सितच्छत्रं च—सुवर्णदण्डसितच्छत्रे, धृते सुवर्णदण्डसितच्छत्रे येन सः—धृतसुवर्णदण्डसितच्छत्रः—सोनेका दण्ड और सफेद छाता लेनेवाला। राज्ञः प्रसादः—राजप्रसादः, राजप्रसादेन प्राप्ता—राजप्रसादप्राप्ता, राजप्रसादप्राप्ता जीविका येन सः—राजप्रसादप्राप्तजीविकः—राजाके प्रसादसे जीविका प्राप्त हुआ। इ०

अभ्यासार्थ प्रश्न—

समास किसको कहते हैं। समाससे क्या काम होता है। समासके भेद और उनके भी भेद कितने होते हैं। तत्पुरुष में किस पद में प्रधानता होती है। व्यतिहार लक्षण उपमानोत्तरपद समाहार विशेषणोभयपद अव्ययोत्तरपद ये किनके भेद हैं। समास होनेपर लिङ्ग वचन कहां कैसा होता है। राजन् पथिन् सखि शब्द अन्त में होनेपर क्या विकार होता है। नीचे लिखे वाक्योंके समासोंको कहो और अनुवाद भी करो।

महाराजस्य प्रासादे महारत्नानि सन्ति। भवद्दर्शनेनाहं कृतकृत्यो भवामि। धर्मार्थकाममोक्षाश्चत्वारः पुरुषार्थाः सन्ति। राजपथे गवाश्वं वर्तते। पाणिपादं चालयित्वा सर्वव्यवहारान्पूरयत। यथाशक्ति विद्याभ्यासः धनोपार्जनं च मनुष्याणामवश्यकर्तव्यम्। महावने हिंसकजन्तवो भवन्ति। अधार्मिकजना अदया भवन्ति। गोपालः स्वगृहे विद्याभ्यासं करोति। विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्। त्रिभुवनेश्वरः सर्वान् करुणादृष्ट्या पश्यति। मनोवचःशरीरैः परोपकारः पुण्यकर्म। प्रतिदिनं देवदर्शनेन

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पुण्यसञ्चयं विधेहि। विद्याधनयोः किं श्रेष्ठं जानासि। लब्धविद्या बहुधनाश्च पुरुषाः सर्वसुखानि लभन्ते। मिष्टान्नं कस्य प्रियं न भवति। ईश्वरभक्तिः सकलकल्याणाय जायते।

मेरे घरमें दो लड़के दो लडकियां हैं। शुभ कार्य में तत्पर रहो। सज्जनोंका सङ्ग बुद्धिके मालिन्यको दूर करता है। राम लक्ष्मण दोनों भारतवर्षके पूजनीय देवता हैं। काव्यके पुस्तक में सुन्दर श्लोक हैं। लालकमल तालावकी शोभा बढ़ाते हैं। आमके बगीचेसे पके हुए फलोंको ले आओ। सन्दूक में रखे हुए लाल कपडोंको बाहर निकालो। विद्याकी ज्योति हृदयके अन्धकारको हटाती है। मेरे लडकेने राजाका महल देखा। सफेद कपडावाला आदमी मैली जगह में रहना नहीं चाहता है। राजाकी लडकीका स्वयंवर हुआ।

---

(८) नाम में विशेष

क्रियायां कारकतयाऽन्यत्रान्वयितयापि वा।
विवक्षितानि नामानि प्रयुज्यन्ते यथोचितम् ॥६४॥

मुख्य या गौण क्रिया में अन्वय होनेपर कारक-स्वरूप से, और पद में अन्वय होनेपर केवल सम्बन्धी (अन्वयी) स्वरूप से, जहां जितने नामकी विवक्षा होती है वहां उतने नामका नियमानुसार लिङ्ग वचन विभक्तियों में प्रयोग होता है।

लिङ्गं वा वचनं वापि केषाञ्चिन्नियतं मतम्।
कचिद्बहुत्वेऽप्येकत्वमैक्येपि बहुना कचित् ॥६५॥

कोई शब्दके लिङ्ग और वचन नियत (न बदलनेवाले) होते हैं। कोई शब्द अनेकको कहने पर भी जातिको लेकर एक वचन में, कोई

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शब्द एकको कहने पर भी आदर सम्मान दिखाकर अनेकवचन में प्रयुक्त होता है।

पुं भूम्न्येवासुदारादि, स्त्री भूम्न्येवाप्सरो मुखम् ।
श्रीमदाद्यं भूम्नि माने व्यक्त्यैक्येपि प्रयुज्यते ॥६६॥

एक व्यक्तिको कहने पर भी (क) असु प्राण दार अक्षता लाजा आदि कुछ शब्द पुंलिङ्ग बहुवचन में मात्र, (ख) अप्सरस् सुमनस् सिकता वर्षा अप् आदि कुछ शब्द स्त्रीलिङ्ग बहुवचन में मात्र, (ग) गोत्रार्थक प्रत्यय लुप्त होकर कुल सन्ततिको कहने वाले कोई ऋषिवाचक शब्द, (घ) राजार्थक प्रत्यय लुप्त होकर राजाके बोधक, कोई कुल या देशके वाचकशब्द, (ङ) देशार्थक प्रत्यय लुप्त होनेपर कोई देशवाचक शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

(क) असवः प्राणाः अक्षताः दाराः लाजाः गृहाः । इ०

(ख) आपः अप्सरसः वर्षाः सुमनसः सिकताः समाः । इ०

(ग) गर्गाः (गर्ग के वंशज) वत्साः अत्रयः भृगवः गोतमाः वसिष्ठाः। इ०

(घ) रघवः (रघुकुल के राजे) इक्ष्वाकवः कुरवः वङ्गा (वङ्गदेशके राजे) अङ्गाः । इ०

(ङ) पञ्चालाः (पञ्चालदेश) कुरवः मत्स्याः अङ्गाः वङ्गाः मगधाः । इ०

त्वं मम प्राणाः । सीता रामस्य दाराः । मेनका नाम अप्सरसः । नद्या आपः । वर्षाः समागताः । तत्र ग्रामे वसिष्ठा वत्साश्च सन्ति । रघुर्वङ्गान्पुह्मांश्चाऽजैषीत् । रघूणां कुरूणां च महदन्तरम् । रघूणामन्वयं वक्ष्ये । अहं पञ्चालेष्ववात्सम् । स वङ्गेभ्यो मगधान्प्रत्यागतः । रामः कौशलानामधीशस्य पुत्रः ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मान्यके बोधक श्रीमत् भवत् भगवत् तत्रभवत् अत्रभवत् आदि शब्द एक व्यक्तिके लिए भी बहुवचनान्त हो सकते हैं।

श्रीमत्सु निवेदयामि। भगवद्भिरिदमुक्तम्। अत्र भवतां क निवासः। भवन्त इदानीं गच्छन्तु। गुरव इत्थं प्राहुः। श्रीमतां किं नाम। इ०

ऐक्येऽपि बह्वर्थबोधो जनलोकादिशब्दतः।
एकत्वमपि जातौ तत्प्रायो मेयगुणादिषु ॥६७॥

(क) जन लोक वर्ग आदि शब्द जोड़ने पर एकवचनसे भी अनेक का बोध होता है। (ख) यावत् जातिको कहने पर एक बहु दोनों वचन होते हैं। (ग) परिमेय वस्तु वा गुण आदि धर्मके वाचक शब्दों में प्रायः एकवचनका प्रयोग होता है। (घ) व्यक्तिभेदकी विवक्षा रहने पर द्वि बहुवचन भी हो सकते हैं।

(क) वधूजनोऽभ्यन्तरे वर्तते—जनाना लोग भीतर हैं। स्त्रीजनं तत्र प्रापय। वधूजनश्चन्द्रमधश्चकार। यत्र विद्वज्जनो नास्ति। देवलोको मनोरथं पूरयति। वणिग्वर्गः समृद्धो जायते। सर्वो लोक एवं मन्यते।

(ख) व्याघ्रो मृगं भक्षयति; व्याघ्रा मृगान्भक्षयन्ति। पर्वत उन्नतो भवति; पर्वता उन्नता भवन्ति। मनुष्यः पशोर्ज्ञानवान्दृश्यते; मनुष्याः पशोर्ज्ञानवन्तो दृश्यन्ते। क्षत्रियो रणे शौर्यं दर्शयति; क्षत्रिया रणे शौर्यं दर्शयन्ति।

(ग) घृतमानय। जलं पातुमिच्छामि। मम सकाशे सुवर्णं नास्ति। शौर्याद्धैर्यमुपयुज्यते। लाभाल्लोभः प्रवर्धते। अहो मधुरमासां दर्शनम्। पुष्पाणां सुगन्धो मनो हरति। विद्या ज्ञानस्य साधनम्।

(घ) तीर्थानां जलानि पात्रेषु स्थापय। नानाविधानि सुवर्णानि विपणौ दृश्यन्ते। न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नियमेन द्विवचनं पुष्पवद्रोदस्यादिषु ।
प्रायो द्विवचनं योग्यं नेत्रकर्णादिकेष्वपि ॥६८॥

(क) पुष्पवत् (सूर्य चन्द्र दोनों), रोदस् (आकाश पृथिवी दोनों), नासत्य अश्विन् (अश्विनीकुमार दो), दम्पति जायापति (स्त्री पुरुष दो) इत्यादि कोई शब्द द्विवचनमें ही प्रयुक्त होते हैं । (ख) नेत्र कर्ण स्तन बाहु इत्यादि जोडी के बोधक शब्द प्रायः द्विवचनान्त होना उचित है । (ग) कहीं विशेष विवक्षा होनेपर एक या बहुवचनान्त भी होते हैं ।

(क) पुष्पवन्तौ पर्यायेण गगने उदयेते—सूर्य चन्द्र पारी पारीसे आकाशमें उगते हैं । पूरयन्रोदसी ध्वानैः । नासत्यौ देवानां वैद्यौ । दम्पती प्रेमपूर्णौ ।

(ख) कर्णौ पिधेहि—दोनों कान बन्द करो । हस्तौ प्रक्षालय । नेत्रे कर्णान्तविश्रान्ते । बाहुभ्यां परिषष्वजे । पक्ष्मयां मुक्तास्तरलगतयः । संश्रिता लोचनाभ्याम् ।

(ग) नेत्रैः पपुस्तृप्तिमनाप्नुवन्त्यः—तृप्त न होकर अनेक आँखों से देखा । पादेन खञ्जः । इन्द्रः सहस्रेण चक्षुर्भिः परितः पश्यति । हस्तेनैकेन पद्मं पुस्तकं चापरेण दधाना । एकेन हस्तेन ददौ ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

वाक्यमें नामका प्रयोग किस तरह होता है ? कौन कौन शब्द किस किस लिङ्ग वचनोंमें नियत हैं ? एकवचनसे अनेकका बोध, अनेक वचनसे एकका बोध कैसे कैसे जगहोमें होता है ? परिमेय या गुण आदि धर्मके वाचक शब्दोंमें कौन वचन कैसे होते हैं ? नीचेके वाक्योंका अनुवाद करो । नाम शब्दोंमें कुछ विशेष हो तो वह भी बतलाओ—

वधूजनश्चन्द्रमधश्चकार । सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम् । स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् । धैर्यं मनुष्यस्य महान् गुणः ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रियसुहृत्सु रामशर्मसु इदं निवेद्यते। अस्माकं गुरुभिरिदमुक्तम्। वङ्गेषु कलिङ्गेषु च गर्गाः अत्रयो भृगवश्च सन्ति। जनकानां रघूणां च सम्बन्धः कस्य न प्रियः। विज्ञानानामुन्नतिः श्रूयते। आकरेभ्यः प्रभूतं सुवर्ण-मुत्पद्यते। दुष्टानां प्रलापेन कर्णौ विदीर्णौ स्तः। अक्ष्णा काणोप्यन्येन कथञ्चित् पश्यति। यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधीरपि।

कौरव पाण्डवोंका चिरकाल तक युद्ध हुआ। उसमें बहुत लोगोंका नाश हुआ। पृथिवीका भार उतर गया। मुनियोंने अनेक तीर्थोंके जल लेकर राजाका अभिषेक किया। उसने हमको लातसे मारा। उस जङ्गलमें बाघ हाथी रहते हैं। विद्याको छोड़कर ज्ञानके लिये कौन उपाय है। रम्भा अप्सराको देखकर ऋषिका भी प्राण तड़फड़ाया। आप ऐसा काम न करें। भुजाओंको फैलाकर उसने लड़केको गोदमें लिया। काम क्रोधको जीतकर आदमी सुखी होता है।

---

(९) सर्वनाममें विशेष

वाक्यान्तरे पुनर्ग्राह्यनाम्नः स्थाने तदादिकम्।
स्थाने नाम्नां सर्वनाम्नां तत्रैव स्वनिजादिकम् ॥६९॥

(क) एकवार कहे गये नामको दूसरे वाक्य में फिर कहने में उसके बदले में तदादि सर्वनामका प्रयोग होता है। (ख) उसी वाक्य में कहे गये नाम या सर्वनामको पुनः कहनेमें उसके बदलेमें स्व शब्द, उसके समान निज आत्मन् शब्दका भी प्रयोग होता है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) रामो दशरथस्य पुत्र आसीत्। स (रामः) तस्य (दशरथस्य) अतिप्रियोऽभूत्। यः (रामः) तस्य (दशरथस्य) सत्यं पालयितुं वनं ययौ, तस्य (रामस्य) त्रयो भ्रातर आसन्। तेषु (भ्रातृषु) लक्ष्मणोभूत्, यः (लक्ष्मणः) वने तं (रामं) अनुययौ। (ख) गोपालः स्वस्य (गोपालस्य) शिरस्त्रं परिवृत्ते। सः (गोपालः) निजस्य (गोपालस्य) वस्त्राणि आत्मना (गोपालेन) एव रक्षति। चैत्रः स्वेन (चैत्रेण) लिखितं पुस्तकं स्वस्य (चैत्रस्य) एव पुस्तकधान्यां स्थापयति।

तदादेर्यत्प्रातिनिध्यं तद्वल्लिङ्गादयो मताः।
विशेषणादिकस्थाने तत्तुल्यास्तद्भवा अपि ॥७०॥

(क) तदादि सर्वनाम जिस नामके बदलेमें आते हैं उनमें उसी नाममें होने योग्य लिङ्ग वचन विभक्तियां होती हैं। (ख) कहीं विशेषण आदि के प्रतिनिधि होकर उसीके समान सर्वनामसे बने शब्द प्रयुक्त होते हैं।

(क) रामः सीतया सह वनमगात्। स (रामः) तां (सीतां) तत्र (वने) हे सीते! अहं (रामः) त्वां (सीतां) वनमानीतवानस्मि, अस्मिन् (वने) भीषणाः प्राणिनः सञ्चरन्ति, येषां (प्राणिनां) दर्शने धीरा अपि स्वेषां (धीराणां) धैर्याच्च्यवन्ति इत्युवाच।

(ख) मम वस्त्रं श्वेतमस्ति। शिरस्त्रमपि तादृशं (श्वेतं) परिदधामि। यतः (स्थानात्) अहमागतः ततः (स्थानात्) एवायमप्यागतः। वस्त्रं दग्धमस्ति, ईदृशं (दग्धं) न परिधीयते।

दर्शकेष्विदमेतद्भ्यां बोध्यते सविधे स्थितम्।
अदसा दूरगं वस्तु, तदा बुद्धावुपस्थितम् ॥७१॥

दर्शक सर्वनामोंमेंसे विवक्षानुसार इदम् एतद् शब्दोंसे समीपस्थ वस्तुका, अदस् शब्दसे दूरस्थ वस्तुका, तद् शब्दसे बुद्धि में उपस्थित वस्तुका बोध होता है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अयं (पुरोवर्ती पुरुषः) सुशीलः। एषा (समीपस्था स्त्री) इमं (पुरःस्थं नरं) सेवते। असौ (दूरस्थः) लोकः पुण्यमपेक्षते। सः (बुद्धिस्थो जनः) मां स्नेहेन पश्यति। स (रघुः) राज्यं गुरुणा दत्तं प्राप।

बोध्यौ स्वौ बोध्यवक्तारावनूक्तौ युष्मदस्मदोः।
ऐक्येऽप्यनैक्यं मानादौ तथा पक्षविवक्षणे ॥७२॥

(क) अनुकरण स्वरूप वाक्यके युष्मद् अस्मद् शब्दोंसे अपने खास सम्बोध्य और वक्ताका बोध होता है। (ख) सम्बोध्य वा वक्ता एक होने पर भी संमान गर्व अथवा उसके पक्षके अनेक व्यक्तियोंके तात्पर्यसे युष्मद् अस्मद् शब्द अनेक वचनमें भी प्रयुक्त होते हैं।

(क) रामः रावणं त्वां (रावणं) क्षणेन अहं (रामः) हन्मीत्युवाच—रामने रावणको तुझे इसी क्षणमें मारता हूँ कहा। देवी, हे महिषासुर! मया (देव्या) त्वयि (महिषासुरे) हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवता इत्युवाचेति मार्कण्डेयः सुरथमब्रवीत्—देवीने हे महिषासुर मुझसे तू मारे जानेपर देवलोग खुश होंगे कहा ऐसा मार्कण्डेयने सुरथको कहा।

(ख) यूयं मां पाठयत (त्वं पाठय)—आप मुझको पढावें। युष्माकं (तव) कृपा अस्मासु (मत्पक्षीयेषु) निपततु—आपकी कृपा हमलोगोंमें पडे। इत्थमस्माभिः सन्दिष्टम्—हमने ऐसी आज्ञा दी। वयं (अस्मत्पक्षीयाः) गच्छामः—हम लोग जाते हैं।

वाक्यान्तरेऽन्यसापेक्षौ मिथो योजकदर्शकौ।
स्थितिभेदादर्थभेदात्क्वचिदन्यानपेक्षिता ॥७३॥

(क) अनेक वाक्योंमेंसे पूर्व या उत्तर एक वाक्यमें यद् शब्द रहने पर दूसरे वाक्यमें दर्शक सर्वनामकी अपेक्षा रहती है। जिस किसम का योजक है दर्शक भी उसी क़िसमका होना उचित है। (ख) नाना अङ्ग वाक्योंमें उसीके बोधक यद् शब्द रहने पर अङ्गि वाक्य में एक

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दर्शक होनेसे भी होता है। (ग) उत्तर वाक्यमें यद् शब्द रहने पर भी अध्याहारसे काम होता है, प्रकरणप्राप्त प्रसिद्ध अनुभूत आदि अर्थके बोधक दर्शकके लिये योजककी अपेक्षा नहीं रहती है।

(क) ह्यो यो गत आसीत् स (एष असौ अयं वा) सम्प्रत्येवागतः—जो कल गया था वह अभी आया। तदिदानीमेवालोचय, यत्परिणामे हितं भवेत्—उसका अभी विचार करो, जो आखिरमें हित हो। यो यदा यत्कर्तुमिच्छति स तदा तत् सम्यगालोचयेत्—जो जिस वखत जो करना चाहता है, उसको उसी वखत उसको अच्छी तरह विचार करें।

(ख) यः शास्त्रेषु पारंगतः, येन प्रतिष्ठा लब्धा, यस्य कीर्तिः प्रसरति, स एव महापुरुषः—जो शास्त्रोंमें पार गया हो, जिसने प्रतिष्ठा पाई हो, जिसकी कीर्ति फैलती है, वह महापुरुष है।

(ग) उत्तरस्यां हिमालयोऽस्ति, यः पर्वतराज उच्यते—उत्तरमें हिमालय है, जो पर्वतोंका राजा कहलाता है। सा देवी तां ततः प्राह—वह देवी उसको तब कहती है। स परमेश्वरो दयालुः—वह (प्रसिद्ध) परमेश्वर दयालु है। तां प्रियां चिन्तयामि—उस (अनुभूत) प्रियाको ख्याल करता हूँ।

पूर्वनिर्दिष्टनामादेर्ग्रहः सर्वैदमादिभिः।
प्रधानमप्रधानं वा ग्राहकं पदमिष्यते ॥७४॥

सर्व उभय द्वि आदि सर्वादि शब्द, इदम् एतद् अदस् ये दर्शक, द्वय त्रय आदि संख्यावाचक शब्दोंसे भी पहले दिखाये हुए नाम आदि-का ग्रहण होता है। ऐसे ग्राहक शब्द प्रायः विशेष्य, कहीं विशेषण भी बनते हैं।

रामः कृष्ण उभौ महापुरुषौ—राम और कृष्ण दोनों महापुरुष हैं। सः अहं त्वं च सर्वे गच्छामः—वह मैं और तुम सब जाते हैं। पत्रं मसीं लेखनीं

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

च त्रयमानय—कागज दावात कलम तीनों ले आओ। नीलं पीतं च सर्वं शोभते—नीला पीला सब सुहाता है। वज्रं च राजतेजश्च द्वयमेवातिभीषणम्—वज्र और राजाका प्रताप दोनों डरावने हैं।

किमा साकं चिच्चनादियोगे त्वनियतार्थता।
विशेषार्थास्तदादीनां मिथो योगेऽव्ययैरपि ॥७५॥

(क) किम् शब्दके रूपके साथ 'चित् चन अपि' शब्दका योग होनेपर अनिश्चित अर्थका बोध होता है। (ख) 'चित् चन' आदि का योग हो या न हो 'यत् किम्' शब्दोंका योग होनेपर भी अनिश्चयका बोध होता है। (ग) भवत् शब्दके साथ 'अत्र तत्र' के योग होनेपर संमानका, पुरुषवाचकके साथ दर्शकके योग में दृढ़ताका बोध होता है।

(क) कश्चित्पुरुषः (कोई आदमी)। केचन जनाः। केनचित्कारणेन। कस्यापि जनस्य। कस्मिंश्चिद्ग्रन्थे। कुत्रचित्काले। कुतश्चिद्धेतोः।

(ख) येन केन प्रकारेण—जिस किसी तरहसे। यतः कुतश्चिद्यत्किमपि सम्पाद्य कार्यं पूरय—जहां कहींसे जो कुछ ठीक करके काम पूरा करो। यैः कैरपि साधनैरिदं न भवति—जो कोई उपायोंसे यह नहीं होता है।

(ग) अत्रभवान्। तत्रभवान्। अयमहं ब्रवीमि–मैं ही कहता हूँ। इ०

त्यदादिकं मिथोयोगे निर्विशेषमपि क्वचित्।
क्वचिद्विशेष्यं भवति, विशेषणमपि क्वचित् ॥७६॥

(क) त्यदादि शब्द परस्पर दोनों मिलकर वही अर्थ देनेवाले भी होते हैं। (ख) कहीं मुख्य होकर विशेष्य, (ग) कहीं दूसरे पदका विशेषण भी बनते हैं।

(क) सोऽहं गच्छामि। अयमेष जनः। स त्वम्। अयमहं गच्छामि। एषोऽहमागच्छामि।

Jayatu Sanskritam; Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ख) मूर्खः स किमपि न जानाति। जडेन मया किमपि न ज्ञातम्। चपलस्त्वं भ्रस्यसि।

(ग) असौ जनस्तां नारीं प्राप। तस्य राज्ञोस्मिन्भवने निरीक्षकोहमस्मि।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

सर्वनाम कैसे स्थलमें प्रयुक्त होते हैं? त्यदादि शब्द विशेष्य वा विशेषण क्या होते हैं? त्यदादिके परस्पर योगमें क्या विशेष है? स्वशब्दका प्रयोग कैसे होता है। त्यदादिओं के अर्थमें क्या विशेष है? त्यदादिके लिङ्ग वचन विभक्तियोंमें क्या क्या विशेष है? सर्वनाम ग्राहक कैसा होता है? योजकको किसकी अपेक्षा होती है? निम्नलिखित वाक्योंका अनुवाद करो। सर्वनामोंके विशेष भी बतलाओ—

नलो दमयन्त्याः पतिरभूत्। स तया सार्द्धं नानानन्दाननन्वभवत्। कोसौ तत्रास्तीत्यहमवोचम्। धीरस्य किं दुष्करम्। नोवाच किञ्चित्प्रभुः। तस्यैवास्य नृपतेर्यशः प्रसरति। अभाग्यस्य मम महत्यस्मिन्कार्ये सुयोगो न भवति। यस्य बुद्धिस्तीक्ष्णास्ति तेनैव पदार्थान् विवेक्तुं शक्यते। अमुष्मिन् लोके शुभस्याशुभस्य च द्वयोर्भोगो भवति। एष अस्मिन्कर्मणि स्वस्य कुशलतां दर्शयति। एतेषां बालकानां पितरः स्वान्भाग्यवतो मन्यन्ते। सोहमस्मि। एवमुपदिष्टेन त्वया कार्यं न क्रियते।

जिसका विचार अच्छा है वह सफल होता है। वेही हम लोग इस मकानमें रहते हैं। राम गोविन्द गोपाल इन सबोंने काम किया। आपकी जो इच्छा हो वही कीजिए। यह देखनेमें अति सुन्दर है। तू किसके साथ जाता है। जिससे लोग डरते हैं वैसा आकार किसी को भी आनन्द नहीं देता है। हम तुम्हारे मकानमें नहीं आते हैं ऐसा रामने गोपालको कहा। ए मित्र, आपकी पुस्तक मेरी उस खटियापर है, जिसमें वस्त्र भी हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(१०) विशेषणमें विशेष

विशेष्यं जायते प्रायो जातिव्यक्त्यादिबोधकम् ।
विशेषणं तु तत्रैव विशेषस्यावबोधकम् ॥७७॥

कोई जातिविशेषकी वस्तु, कोई व्यक्तिविशेष, कोई अमूर्त धर्म आदि पदार्थका बोधक शब्द विशेष्य, उसीको गुण संख्या आदि कुछ विशेष द्वारा अलग करनेवाला शब्द विशेषण होता है।

अहं नीलं कञ्चुकं परिदधामि—मैं नीला कोट पहनता हूँ। तत्र चत्वारः पुरुषाः तिस्रः स्त्रियश्च सन्ति—वहां चार पुरुष और तीन स्त्रियां हैं। सुन्दरं रूपं मनो हरति—सुन्दर रुप मन हरता है। वृद्धो जनः स्थूलं दण्डं गृहीत्वा गच्छति—बूढ़ा आदमी मोटी लाठी लेकर चलता है। तस्मिन् महती कुशलता वर्तते—उसमें बड़ी कुशलता रहती है।

विशेषणं विशेष्यस्य विशेषपरिचायकम् ।
प्रशंसकं निन्दकं वा प्रयोज्यं, न निरर्थकम् ॥७८॥

विशेषण शब्द अपने विशेष्यका (क) विशेष परिचय करानेके लिये, (ख) प्रशंसा के लिये, (ग) वा निन्दाके लिये प्रयुक्त होता है। (घ) विना प्रयोजन वृथा प्रयोग करना न चाहिये।

(क) रक्तं वस्त्रमानय—लाल कपड़ा ले आओ। मदीयं पुस्तकं नास्ति—मेरा पुस्तक नहीं है। दश पुरुषानहमपश्यम्—दश पुरुषोंको मैने देखा।

(ख) सुशीलो विद्यार्थी। परिश्रमी छात्रः। मधुरं फलम्। उदारं हृदयम्। इ०

(ग) क्रूरो जनः। मलिनं वस्त्रम्। कठोरः स्वभावः। दुष्टा नारी। इ०

(घ) विस्तृते आकाशे वर्तुलश्चन्द्र उदेति।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

असमानाधिकरणं भेदकं, न विशेषणम् ।
रचनाया विभेदेपि द्वयोरेकार्थता तयोः ॥७९॥

प्रायः विशेष्यके समान लिङ्ग वचन विभक्तिके होकर उसी वस्तुका दूसरे प्रकारसे बोधक सम्बन्धार्थी-तद्धितान्त आदि विशेषण होते हैं। भिन्न वस्तुका बोधक षष्ठ्यन्त शब्द अपने सम्बन्धके द्वारा अपने भेद्यका परिच्छेदक (विशेष दिखानेवाले) भेदक होते हैं। भेदक भिन्न विभक्ति-में, विशेषण समान विभक्तिमें रहनेसे दोनोंकी रचना भिन्न होनेपर भी प्रयोजन एक ही होता है।

राज्ञः पुरुषः—राजकीयः पुरुषः। मम गृहं—मदीयं गृहम्। तव भगिनी—त्वदीया भगिनी। तस्य वस्त्रं—तदीयं वस्त्रम्। ग्रामस्य जनः—ग्रामीणो जनः। वनस्य फलं—वन्यं फलम्।

क्वचिद्विशेषणं[1] नाम, क्वचिन्नाम विशेषणम्।
क्वचिद्विशेषणस्यापि भवत्यन्यद्विशेषणम्[2] ॥८०॥

(क) कहीं विशेषण जातिके शब्द भी विशेष्य दूसरा न रखनेपर नाम जैसे होते हैं। (ख) कहीं नाम जातिके शब्द भी दूसरे नामसे मिलकर एक ही वस्तुके बोधक होनेपर विशेषण जैसे होते हैं। (ग) कहीं एक विशेषण में अन्वय होनेवाले दूसरे विशेषण भी होते हैं।

(क) मूर्खाः हितं न विचारयन्ति—मूर्ख लोग हितको नहीं सोचते हैं। वृद्धानां वचनं शृणुत-बूढ़े लोगोंकी बात सुनो। पण्डिताः सतां सदसि मानं लभन्ते—पण्डित लोग सज्जनोंकी सभामें संमान पाते हैं।

---

१ व्यावर्तकं विशेषणं, व्यावर्त्यं विशेष्यं, तद्विवक्षाधीनमिति न नियतं भवति। समानाधिकरणयोर्द्वयोर्व्यावर्त्यव्यावर्तकभावमनुसन्धाय विशेष्यविशेषणे परिचीयेते।

२ विशेषणान्तरेण सहान्वीय विशेष्यान्वयि विशेषणं पार्ष्णिकान्वयि-तया विशेषणविशेषणमिव भवति।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ख) पुरा मान्धाता नृपतिर्बभूव—पहिले मान्धाता नामके राजा हो गए। ग्रीष्मे ऋतौ आम्रं फलं लभ्यते—ग्रीष्म ऋतुमें आमका फल मिलता है। उदीच्यां दिशि हिमालयः पर्वतोस्ति—उत्तर दिशा में हिमालय पर्वत है।

(ग) स महान् मूर्खोस्ति—वह बड़ा मूर्ख है। मदीयेन पितृव्येण रामेण किमुक्तम्—मेरे चाचा रामने क्या कहा। कृष्णस्य प्रियः सखाऽर्जुनस्तस्माद्गीतां शुश्राव—कृष्णके प्यारे मित्र अर्जुनने उनसे गीता सुनी। दशरथस्य ज्येष्ठा महिषी कौसल्या राममजनयत्—दशरथकी जेठी रानी कौसल्याने रामको पैदा किया।

कहीं अव्यय आदि भी विशेषणके विशेषण जैसे बनते हैं। अतीव मूर्खश्छात्रः—अत्यन्त मूर्ख शिष्य। अत्यन्तं चपलो बालकः। अतिमात्रं धूर्तो जनः। बहुश उन्नतो वृक्षः। दृढं कठोरं दारु। अतितरां मन्दो वायुः।

विशेष्यनिघ्नं[1] शुक्लादि गुणबोधि विशेषणम्।
यथास्वं नियतं लिङ्गं तदेव गुणबोधकम् ॥८१॥

(क) शुक्ल नील मधुर आदि कुछ शब्द गुणवान् द्रव्यके बोधक होने पर विशेष्यनिघ्न अर्थात् विशेष्यानुसार लिङ्ग-वचनवाले विशेषण होते हैं। (ख) वे ही केवल गुणके बोधक होनेपर प्रायः पुंलिङ्ग (शीत नपुं) नाम होते हैं।

(क) नीलः पटः, नीला शाटी, नीलं वस्त्रम्। मधुरो वर्णः, मधुरा रचना, मधुरमाम्रम्। शीतो वायुः, शीता भूमिः, शीतं जलम्। इ०

(ख) अद्य शीतमस्ति। वस्त्रस्य नीलः। वर्णः शुक्लो रसस्पर्शौ जले मधुरशीतलौ।

---

१ गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति। शीतं गुणे तद्वदर्थाः सुषीमः शिशिरो जडः। (अमरः)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भिन्नार्थमपि साम्येनारोपेणापि विशेषणम् ।
यथास्वं लिङ्गवचने, विभक्तिस्तु विशेष्यवत् ॥८२॥

कहीं भिन्न भिन्न अर्थके नाम होनेपर भी तुल्यता द्वारा वा आरोप द्वारा एक नाम दूसरे नाम का विशेषण बनता है । (क) सादृश्य बोधक इवादि शब्द रहने पर उपमान-विशेषण, (ख) इवादिके विना सादृश्य द्वारा अभेदका आरोप किये जानेपर आरोप-विशेषण कहा जाता है । उपमान वा आरोप विशेषणके लिङ्ग वचन अपने अपने होते हैं । विभक्ति तो विशेष्यके समान ही होनी चाहिये । इवादि पदोंसे उपमान-विशेषण स्पष्ट होते हैं । आरोप-विशेषण तो उनके खास अर्थ दूसरे ही होने से उस समय लाक्षणिक होकर दूसरेके लिये आये हुए जाने जाते हैं ।

(क) चन्द्र इव मुखं-चन्द्रकी नाईं मुख । राक्षस इव क्रूरः पुरुषः । बृहस्पतिनेव छात्रया कथितम् । इन्द्रस्येव तस्य वीर्यम् । प्राणा इव प्रिया भार्या । त्वं मे जीवितमिव ।

(ख) सिंहो माणवकः—यह बालक बाघ है । गुरुः कोपेन वन्हिः सञ्जातः—गुरुजी क्रोधसे आग बने । विद्यासागरेण तेनेदमुक्तम्—विद्याके समुद्र उनने यह कहा । गुणानां भाजनं जनः—गुणोंका पात्र आदमी । त्वां तृणं मन्ये—तुझे तिनका समझता हूं । एवं-गुणाः पूजास्थानं भवति न च लिङ्गं न च वयः । सम्पदः पदमापदाम् । गुणानामुदधिरेषः । विदुषां शिरोमणिः स उपादिशत् । विद्या ज्ञानस्य बीजमिव । जनस्य भूषणं विनयः । नारी गृहस्यालङ्कारः । भाग्यवन्तो रत्नेनेव विद्यया हृदयं मञ्जूषामिव पूरयन्ति । गृहिणी गृहमुच्यते । पृथिव्या इन्द्रस्य तस्य बृहस्पतिरिव बुद्धिमन्तो मन्त्रिणः सन्ति ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal.

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

[१]विंशत्याद्यावनावृत्तावैक्यं संख्येयसंख्ययोः ।
त्र्याद्यास्तु भूम्नि संख्येये, द्व्येकौ तद्वचनौ मतौ ॥८३॥

(क) 'ऊनविंशति विंशति' आदि शब्द संख्यावाचक नाम, अथवा संख्येय (गिने जानेवाली वस्तु) के बोधक विशेषण भी होते हैं। दोनों अवस्थाओंमें वस्तु अनेक होनेपर भी वह संख्या एक वारकी हो तो एकवचन, दोवारकी हो तो द्विवचन, बहुत वारकी हो तो बहुवचन होता है। संख्यावाचक होनेपर संख्येय वस्तुके बोधक शब्द षष्ठी बहुवचनान्त ही होते हैं। संख्येयवाचक होनेपर ये अपने लिङ्ग वचनके विशेषण, संख्येय वस्तुको कहनेवाले विशेष्य अपने लिङ्ग बहुवचनके, दोनों समान विभक्तिवाले होते हैं।

(ख) एक शब्दसे लेकर अष्टादशन् तकके शब्द संख्येयको ही कहनेवाले विशेषण मात्र होते हैं। उनमें यथायोग्य एक शब्द एकवचन, द्विशब्द द्विवचन, त्रि आदि बहुवचन मात्र होते हैं। विशेषण विशेष्यानुसारि तीनों लिङ्गके होते हैं।

(क) जनानां	विंशतिः (२०)	त्रिंशत् (३०)
स्त्रीणां	विंशती (४०)	त्रिंशतौ (६०)
वस्तूनां वा	विंशतयः (६०इ०)	त्रिंशतः (९०इ)

सप्ततिः	शतं	लक्षं	कोटिः
सप्तती	शते	लक्षे	कोटी
सप्ततयः	शतानि	लक्षाणि	कोटयः

(ख) जनाः	विंशतिः (२०)	त्रिंशत् (३०)
स्त्रियः	विंशती (४०)	त्रिंशतौ (६०)
वस्तूनि वा	विंशतयः (६०)	त्रिंशतः (९०इ०)

---

१ विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः ।
संख्यायन्ते यदा संख्यास्तदा द्वित्वादिकं भवेत् ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सप्ततिः	शतं	लक्षं	कोटिः
सप्तती	शते	लक्षे	कोटी
सप्ततयः	शतानि	लक्षाणि	कोटयः

(ग) एकः पुरुषः, एका स्त्री, एकं वस्तु, द्वौ पुरुषौ, द्वे स्त्रियौ, द्वे वस्तुनी, त्रयः चत्वारः पुरुषाः, तिस्रः चतस्रः स्त्रियः, त्रीणि चत्वारि वस्तूनि, पंच षट् सप्त अष्टौ नव दश एकादश द्वादश त्रयोदश चतुर्दश पञ्चदश षोडश सप्तदश अष्टादश वा-पुरुषाः स्त्रियः वस्तूनि वा ।

विंशत्याद्याः स्त्रियां कोटिस्तथा, क्लीबे शतादयः ।
दशान्ताः पूरणार्थाश्च त्रिषु, व्यूहार्थका द्वयोः ॥८४॥

(क) संख्याबोधक हो अथवा संख्येयबोधक हो उसमें विशेष्य जिस लिङ्गका भी हो, ऊनविंशतिसे लेकर नवनवति तकके शब्द और कोटिशब्द स्त्रीलिङ्ग, शत सहस्र आदि परार्धान्त नपुंसक लिङ्ग ही होते हैं। (ख) एक से लेकर अष्टादशन् तकके शब्द संख्येयमात्रके बोधक विशेषण तीनों लिङ्गोंमें होते हैं। उनमें भी एक द्वि त्रि चतुर् शब्दोंके रूप लिङ्गभेदसे भिन्न, पञ्चन् आदि अष्टादशन् तकके रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं। (ग) पूरणार्थक प्रत्ययान्त संख्येयवाचक तो विशेष्यानुसारि लिङ्ग वचनोंके विशेषण मात्र होते हैं। (घ) संख्येयोंके समूहके बोधक शब्द नपुंसकलिङ्ग, कोई स्त्रीलिङ्ग भी, समूह की संख्यानुसार तीनों वचनके होते हैं। संख्येय वस्तुके वाचक नाममें षष्ठी होती है।

(क) १—पुरुषाणां स्त्रीणां वस्तूनां वा विंशतिः, त्रिंशत्, नवतिः, शतं, सहस्रम्, कोटिः, लक्षम् इ०

२—पुरुषाः स्त्रियः वस्तूनि वा विंशतिः, त्रिंशत्, नवतिः, शतं, सहस्रम्, कोटिः, लक्षम् इ०

(ख) एकः एका एकं, द्वौ द्वे द्वे, त्रयः तिस्रः त्रीणि, चत्वारः चतस्रः चत्वारि, पञ्च, षट् इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ग) प्रथमः-मौ-माः, प्रथमा-मे-माः, प्रथमम्-मे-मानि, द्वितीयः-या-यम्, तृतीयः-या-यम्, चतुर्थः-र्थी-र्थम्, तुरीयः तुर्यः-या-यम्, पञ्चमः-मी-मम्, षष्ठः-ष्ठी-ष्ठम्, सप्तमः-मी-मम्, एकादशः-शी-शम्, अष्टादशः-शी-शम्, विंशः-शी-शम्, विंशतितमः-मी-मम्, त्रिंशः-शी-शम्, त्रिंशत्तमः-मी-मम्, शततमः-मी-मम्, सहस्रतमः-मी-मम्. इ०

(घ) पुंसोः स्त्रियोर्वस्तुनोर्वा द्वयं-द्वितयं-यी, पुंसां स्त्रीणां वस्तूनां वा त्रयं-त्रितयं-यी, चतुष्टयं-यी, पञ्चतयं-यी, द्विकं, त्रिकं, चतुष्कं, पञ्चकं, षट्कं, सप्तकं, दशकं, शतकम् इ०

एवं—शतं ब्राह्मणाः सन्ति। अद्य पञ्चमी तिथिः। पुस्तकानां सप्तती अवशिष्येते। चतुर्दश सहस्राणि रक्षसां भीमकर्मणाम्। भारते लक्षं श्लोकाः। व्यासोऽष्टादश पुराणानि चक्रे। शततमेध्याये द्वे शते पञ्चाशच्च श्लोकाः। वर्णानां चतुष्टयम्। सूर्याय लक्षमर्घ्यं निर्पय। रूप्यकाणां कोटिः। चतुर्थ आश्रमे प्रविशन्ति विरक्ताः।

विधेयं साध्यमुद्देश्यं सिद्धं द्वेधा विशेषणम्।
विशेष्यात्पूर्वमुद्देश्यं, विधेयं परतो मतम् ॥८५॥

विशेषण दो किसमके होते हैं, उद्देश्य और विधेय। (क) सिद्ध अर्थात् पहलेसे ज्ञात हो के अनुवाद रूप से दिखाया गया उद्देश्य-विशेषण, वह विशेष्यसे पहले रहता है। (ख) साध्य अर्थात् पहलेसे अज्ञात हो के विशेष वक्तव्य रूपसे दिखाया गया विधेयविशेषण, वह विशेष्यके बाद प्रायः क्रियाके समीपमें क्रियामें जुटने वाला होता है। एक ही वाक्यमें उद्देश्य विधेय दो किसमके विशेषण भी रह सकते हैं।

(क) वीरः क्षत्रियः सर्वान् रिपून्हन्ति—वीर क्षत्रिय सब शत्रुओं-को मारता है। मेधाविनश्छात्रान्सर्वे प्रशंसन्ति—बुद्धिमान् छात्रोंको सब लोग सराहते हैं। मदीयं पुस्तकं महत्यां मञ्जूषायामस्ति—मेरा पुस्तक बड़ी सन्दूकमें है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ख) वस्त्राणि धावनेनोज्ज्वलानि कुरु—कपड़ेको धोनेसे चमकीले बनाओ। गोपालः सम्प्रति परिश्रमी वर्तते—गोपाल अब परिश्रमी है। सूर्यं उदिते सति प्रभा प्रसरति—सूर्य उगनेपर प्रकाश फैलता है।

कर्मणो ज्ञानकृत्यादौ, कर्तुः सत्तादिके तथा।
सप्तम्यन्तस्य सत्यर्थे विधेयं तु विशेषणम् ॥८६॥

(क) उद्देश्यविशेषण विवक्षानुसार सबके हो सकते हैं। (ख) विधेयविशेषण तो किसी किसमका ज्ञान रचना आदि कोई क्रियाके कर्ममें, प्रायः सत्ता आदि नाना क्रियाके कर्तामें, कालबोधक सत्यर्थक सप्तमीमें होते हैं।

(क) क्षुधितेभ्यो जनेभ्योन्नं, तृषितेभ्यः प्राणिभ्यो जलं देहि—भूखे लोगोंको अन्न, प्यासे प्राणियोंको जल दो। दयालुरीश्वरो भक्तानस्मान् स्निग्धया दृशा पश्यति—दयालु ईश्वर भक्त हम लोगोंको प्रेमकी नजर से देखते हैं। तीक्ष्णेन परशुना स्थूलं दारु विदार्य मदीये महानसे स्थापय—पैने फर्सेसे मोटी लकडी फाडकर मेरे चूल्हे में रखो।

(ख) जलं वस्त्रपूतं कृत्वा पिब—पानी कपडेसे छान कर पीओ। गोपालो रुदन्नगच्छत्—गोपाल रोता हुआ गया। अहं सुखी भवेयम्—मैं सुखी होऊं। वायौ वाति मशकाः पलायन्ते—हवा बहनेपर मच्छड भागते हैं। त्वां तृणं मन्ये—तुझे तिनका समझता हूं। कीटः काष्ठं जर्जरमकरोत्—कीडेने लकडी थोथली बनाई। भवन्तमासं पश्यामि—आपको ओस देखता हूं। त्वयि भुक्तवत्यहं द्रक्ष्यामि—तू खा चुकनेपर मैं देखूंगा। सूर्येऽस्तमिते तमो दृश्यते—सूर्य अस्त होनेपर अँधियारा देखा जाता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

विशेष्य विशेषण कैसे होते हैं। विशेषण किस लिये प्रयुक्त होता है। विशेषण शब्द विशेष्य, विशेष्य शब्द विशेषण कैसे स्थलोंमें होते

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हैं। संख्यावाचक शब्दोमें क्या क्या विशेष होते हैं। आरोप-विशेषण उपमान-विशेषण कैसा होता है। त्रिंशत् पञ्चन् दश शत सहस्र शब्द संख्या वा संख्येय किसको कहते हैं, उनके लिङ्ग-वचनोंमें क्या विशेष है। नीचेके वाक्योंका अनुवाद करो, विशेष्य विशेषणोंको भी पहचानो—

चतुर्भिः पुरुषैः सह अहमागच्छामि। स मां मूर्खं मन्यते। पुस्तकानां शतत्रयं तत्रास्ति। विंशतिः पणा अत्र सन्ति। प्रथमो विद्यार्थी दश रूप्यकाणि प्राप्नोति। पुष्पमिव सुकुमारं शरीरं महान्तं क्लेशं नसहते। तस्य शरीरमतीव दृढमस्ति। रावण इवासौ क्रूरः पुरुषः सर्वान् जनान्पीडयति। पुष्पितायाः लतायाः अग्रभागे चटकाः क्रीडन्ति। वृद्धानां वचनं हितं भवति। हिमालयस्य शीतो वायुः शरीरं कम्पयति। शीतोष्णं जलं सुखदं भवति। वसन्ते ऋतौ प्राप्ते पुष्पितैर्वृक्षैर्वनं रमणीयं क्रियते।

उनके तीखे वचनसे मेरा हृदय पीडित होता है। दूसरा आदमी वहां नहीं है। उनकी लम्बी आखें शरीरमें शोभा देती हैं। राम बडा धूर्त है। तीन सौ रुपये मैं चाहता हूं, वह तो दो सौ ही देता है। गरम हवा हम नहीं चाहते हैं। ईश्वर वहुत दयालु है। काला कोट लाल पगडी सफेद ओढना खरीदते हैं। वह देश का भूषण है। संमान ही मनुष्यकी उच्चता है। साठ आदमी लडते हैं। बालक बूढेको चिढाता है। वह गुणों का समुद्र है।

———

(११) आख्यातमें विशेष

वाक्यपूरकमाख्यातं तत्र प्रायः प्रयुज्यते।
सामान्यमात्रेपलभ्यमनपेक्ष्यं न कथ्यते ॥८७॥

वाक्यके पूरक आख्यात होने से वाक्यों में आख्यात होने चाहिए। (क) कहीं विशेषण भेदक आदि विधेय होनेपर वाक्यके पूरक 'अस्ति

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भवति' आदि सामान्य क्रियाके बोधक आख्यात प्रायः गुप्त किये जाते हैं। (ख) पूर्वापर से आक्षेप वा अध्याहार द्वारा लाभ होनेपर भी आख्यात दबाये जाते हैं। (ग) वाक्यके पूरक तव्य अनीयर आदि प्रत्ययान्त कृदन्त क्रिया रहनेपर अपेक्षाके विना आख्यात नहीं प्रयोग किये जाते हैं।

(क) अयं ब्राह्मणः (अस्ति)। इदं काव्यस्य पुस्तकम् (भवति)। तृष्णा न जीर्णा (अभूत्) वयमेव जीर्णाः (भवामः)। त्वमतीव कुशलः (असि)। इयं लेखनी मम (भवति)। इ०

(ख) त्वं क्व गच्छसि, अहं तु गृहम् (गच्छामि)। यूयं किं पश्यथ, वयं नृत्यं (पश्यामः)। मरणं मम रोचते, न दारिद्र्यम् (रोचते)। प्रथमः पारितोषिकं लभते, न द्वितीयोऽहम् (लभे)। एष एव मामताडयत्, नाहम् (अताडयम्)।

(ग) त्वयेदं कर्तव्यम्। विनीतेन नैवं करणीयम्। मयैतल्लिखितम्। स इदानीं गृहान्निष्क्रान्तः। गतः स समयः। क इदं भक्षितवान्। त्वया विनीतेन भवितव्यम्।

धात्वर्थो[1] भिद्यते प्राय उपसर्गस्य योगतः।
क्वचित्पदविशेषोऽपि भेदादर्थोपसर्गयोः ॥८८॥

(क) 'प्र परा' आदि उपसर्गके योगसे प्रायः धातुके अर्थ बदल जाते हैं। (ख) कोई धातुमें अर्थ व उपसर्गके भेदसे परस्मैपद आत्मनेपद, सकर्मक-अकर्मक भाव में भी परिवर्तन होता है।

---

१. का० उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत् ॥
धातोरर्थान्तरे वृत्तेर्धात्वर्थेनोपसंग्रहात्।
प्रसिद्धेरविवक्षातः कर्मणोऽकर्मिका क्रिया ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) धातुओं के नाना अर्थ :—

अय् गतौ—पलायते-भगता है। उदयते-उगता है। निलयते-छिपता है।

आप् प्राप्तौ—प्राप्नोति-पाता है। व्याप्नोति-ढकता है। समाप्नोति-खतम करता है।

इण् गतौ—उपैति-नजदीक आता है। अत्येति-नाघता है। प्रत्येति-विश्वास करता है। प्रैति-मरता है।

ईक्ष् दर्शने—प्रेक्षते, वीक्षते, अवेक्षते-देखता है। परीक्षते-जांच करता है। उपेक्षते-उपेक्षा करता है। अपेक्षते-चाहता है। उत्प्रेक्षते-अन्दाज करता है। प्रतीक्षते-प्रतीक्षा करता है। समीक्षते-विचार के साथ देखता है। इ०

कृञ् करणे—संस्करोति-सुधार करता है। परिष्करोति-बढ़ा कर सुधारता है। विकरोति-बिगाड़ता है। अधिकरोति-अधिकार करता है। अनुकरोति-नकल करता है। अपाकरोति, निराकरोति-हटाता है। अपकरोति-अपकार करता है। उपकरोति-उपकार करता है। प्रतिकरोति-सम्हालता है। व्याकरोति-टीका करता है। इ०

क्रम् पादविक्षेपे—प्रक्रमते, उपक्रमते-शुरू करता है। पराक्रमते-पराक्रम दिखाता है। अपक्रामति-हटता है। संक्रामति-सरता है। अतिक्रामति-नाघता है। निष्क्रामति-निकलता है। परिक्रामति-घूमता है। आक्रामति-हमला करता है। इ०

क्षिप् प्रेरणे—प्रक्षिपति-फेंकता है। निक्षिपति-रखता है। अधिक्षिपति, आक्षिपति-निन्दा करता है। उत्क्षिपति-ऊपर फेंकता है। अपक्षिपति-नीचे फेंकता है। संक्षिपति-संक्षेप करता है। उपक्षिपति-आरम्भ करता है। इ०

गम् गतौ—आगच्छति-आता है। अपगच्छति-हटता है। अवगच्छति-जानता है। अनुगच्छति-पीछा लगता है। निर्गच्छति-

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

निकलता है। उद्गच्छति-उठता है। अधिगच्छति-जानता, पाता है। अतिगच्छति-नाघता है। संगच्छते-मिलता है। इ०

ग्रह् उपादाने—अनुगृह्णाति-दया करता है। निगृह्णाति—सजाय करता है। प्रतिगृह्णाति--स्वीकार करता है। विगृह्णाति—झगडता है। संगृह्णाति—संग्रह करता है। इ०

चर गतौ—प्रचरति-फैलता है। आचरति-करता है। उच्चरति-उठता है। उच्चरते-नांघता है। अभिचरति-टोना करता है। संचरति-घूमता है। व्यभिचरति-नियम भंग करता है। इ०

चिञ चयने--उपचिनोति-बढ़ाता है। अपचिनोति-घटाता है। संचिनोति-जमा करता है। निश्चिनोति-पक्का करता है। परिचिनोति-चीनता है। उच्चिनोति-बटोरता है। इ०

ज्ञा अवबोधने --अपजानीते-छिपाता है। प्रतिजानीते-कबूल करता है। अवजानाति-अनादर करता है। अनुजानाति-सलाह देता है। प्रत्यभिजानाति-चीनता है।

दा दाने—आददाति-लेता है। व्याददाति—खोलता है। समाददाति—अच्छी तरह लेता है। प्रतिददाति—फिराता है।

दिश दाने—आदिशति-आज्ञा देता है। निर्दिशति-दिखाता है। सन्दिशति-समाचार देता है। उपदिशति-उपदेश देता है। उद्दिशति-नाम लेता है। अपदिशति-बहाना करता है। व्यपदिशति-व्यवहार करता है। इ०

धा धारणपोषणयोः—विदधाति-करता है। आदधाति, निदधाति-रखता है। पिदधाति—ढकता है। अभिदधाति-कहता है समादधाति-समाधान करता है। सन्दधाति-जोड़ता है। अनुसन्दधाति-विचार करता है। प्रणिदधाति-एकाग्र करता है। संनिदधाति-नजदीक में करता है। व्यवदधाति-छेकता है। परिदधाति-पहिनता है इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नम प्रह्वत्वे—अवनमति—झुकता है। उन्नमति—ऊपर उठता है। परिणमति—परिणाम होता है। उपनमति—नजदीक होता है। विपरिणमति—बदलता है।

नी प्रापणे—आनयति—ले आता है। अनुनयति—समझाता है। विनयति–तालीम करता है। अपनयति—हटाता है। अभिनयति—नकल करता है। उन्नयति—उठाता है। उपनयति—नजदीक ले आता है। परिणयति—विवाह करता है। प्रत्यानयति—फिरा ले आता है।

पद गतौ—उत्पद्यते—पैदा होता है। आपद्यते—आपड़ता है। विपद्यते, व्यापद्यते—मरता है। उपपद्यते—ठीक होता है। संपद्यते, निष्पद्यते—तैयार होता है। प्रतिपद्यते—स्वीकार करता है। व्युत्पद्यते—व्युत्पन्न होता है। विप्रतिपद्यते—सन्देह करता है।

भू सत्तायाम्—प्रभवति—समर्थ होता है। परिभवति, पराभवति—तिरस्कार करता है। अनुभवति—अनुभव करता है। संभवति—होसकता है। अन्तर्भवति—दबता है। तिरोभवति—छिपता है। आविर्भवति प्रादुर्भवति—प्रकट होता है। अभिभवति—दबाता है। उद्भवति—पैदा होता है।

युज योगे—वियुनक्ति—बिछुड़ाता है। संयुनक्ति—जोड़ता है। प्रयुङ्क्ते—प्रयोग करता है। उद्युङ्क्ते—उद्योग करता है। नियुङ्क्ते—लगाता है। उपयुङ्क्ते—काम में लगाता है।

रुध् आवरणे—विरुणद्धि-विरोध करता है। अनुरुणद्धि-अनुरोध करता है। उपरुणद्धि, निरुणद्धि, अवरुणद्धि—रोकता है।

रुह् प्रादुर्भावे—आरोहति, अधिरोहति—चढता है। अवरोहति—उतरता है। प्ररोहति—उगता है।

लप् वाचि—प्रलपति—बडबडाता है। विलपति—विलाप करता है। संलपति, आलपति—बात करता है। अपलपति—छिपाता है। विप्रलपति—विरुद्ध बात करता है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वद वाचि—अनुवदति—अनुवाद करता है। परिवदति, अपवदति—निन्दा करता है। विवदति—झगडता है। संवदति--मिलता है। विसंवदति—फरक होता है।

विष प्रवेशने—प्रविशति—भीतर जाता है। संविशति, उपविशति—बैठता है। निर्विशति—भोग करता है। अभिनिविशते—आग्रह करता है।

वृतु वर्तने—प्रवर्तते—लगता है। निर्वर्तते, व्यावर्तते—हटता है। परावर्तते, प्रत्यावर्तते, प्रतिनिवर्तते—फिरता है। आवर्तते—घूमता है। अनुवर्तते—पीछे लगता है।

शीङ् स्वप्ने—संशेते—सन्देह करता है। अनुशेते—पछताता है। अतिशेते—जीतता है।

सद्लृ गतौ—प्रसीदति—खुस होता है। निषीदति—बैठता है। विषीदति—दिक होता है। अवसीदति—गलता है। आसीदति, प्रत्यासीदति—नजदीक होता है।

सृ गतौ—प्रसरति – फैलता है। अनुसरति—पीछा करता है। निःसरति—निकलता है। अपसरति—हटता है। उपसरति—नजदीक होता है। संसरति—आवागमन करता है।

स्था गतिनिवृत्तौ—प्रतिष्ठते—चलता है। उत्तिष्ठति--उठता है। उपतिष्ठते--हाजीर होता है।

हृ हरणे—प्रहरति—चोट करता है। आहरति—ले आता है। विहरति—टहलता है। संहरति—संहार करता है। परिहरति—छोडता है। अनुहरति—नकल करता है। उद्धरति—उबारता है। उपसंहरति—खतम करता है। व्यवहरति--व्यवहार करता है। उदाहरति—उदाहरण देता है। प्रत्युदाहरति—उलटा उदाहरण देता है। अभ्यवहरति—खाता है। समुद्धरति—निकालता है। समाहरति—जमा करता है। उपहरति—चढाता है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ख) धातुओं का पद बदलना—

१ आत्मनेपदी—

[१] उपसर्ग के प्रयोग से—वि-क्री, वि-जि, परा-जि, नि-विश्, परि-क्रीड्, आ-प्रच्छ प्र-स्था, प्र-युज्, उप-युज्, उद्-युज्, नि-युज्।

क्रीणाति, क्रीणीते—विक्रीणीते। जयति-विजयते, पराजयते, विशति-निविशते। क्रीडति-परिक्रीडते, आक्रीडते। पृच्छति-आपृच्छते। तिष्ठति-प्रतिष्ठते। युनक्ति, युङ्क्ते-प्रयुङ्क्ते, उपयुङ्क्ते, उद्युङ्क्ते नियुङ्क्ते।

[२] अर्थभेदसे—आ-दा-लेना। अनु-हृ-नकल करनेका स्वभाव होना। उप-स्था-हाजीर होना, पहुँचना, उपासना करना। सं-गम्-ठीक होना। आ-ह्वा, हांक देना, उद्-नी-उठाना। उप-नी-उपनयन करना। प्र-क्रम, उप-क्रम-प्रारम्भ करना। प्रति-ज्ञा, कवूल करना। वि-वद-झगड़ना। उप-यम, विवाह करना।

ददाति, दत्ते-आदत्ते, हरति, हरते-अनुहरते, तिष्ठति-उपतिष्ठते, गच्छति-सङ्गच्छते, ह्वयति, ह्वयते-आह्वयते। नयति, नयते-उन्नयते, उपनयते। क्रमति-प्रक्रमते, उपक्रमते, जानाति, जानीते-प्रतिजानीते। वदति-विवदते। यच्छति उपयच्छते।

---

१ सू० परिव्यवेभ्यः क्रियः। विपराभ्यां जेः। नेर्विशः। क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च। वा० आङिनुप्रच्छयोः। समवप्रविभ्यः स्थः। प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु। वा० स्वराद्यन्तोपसर्गादितिवाच्यम्।

२ सू० आङोदोऽनास्यविहरणे। वा० हरतेर्गतताच्छील्ये। वा० उपाद्देवपूजासङ्गतिकरणमित्रकरणपथिष्विति वाच्यम्। अकर्मकाच्च। समोगम्पृच्छिभ्याम्। स्पर्द्धायामाङः। संमाननोत्सञ्जनाचार्यकरण ज्ञानभृतिविगणनेषु नियः। प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम्। संप्रतिभ्यामनाध्याने। भासनोपसंभाषाज्ञानयत्न विमत्युपमन्त्रणेषु वदः। उपाद्यमः स्वकरणे।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

२. परस्मैपदी[1] —

उपसर्ग के योग से—अनु-कृ, प्रति-क्षिप्, प्र-वह्, वि-रम ।

करोति कुरुते—अनुकरोति। क्षिपति, क्षिपते—प्रतिक्षिपति। वहति, वहते-प्रवहति । रमते-विरमति ।

३. उभयपदी[2] —

उप-रम्, रमते—उपरमति, उपरमते ।

साधित धातु—

गणोक्ता धातवो मुख्याः, प्रेरणार्थाणिजन्तकाः ।
इच्छार्थकास्तु सन्नन्ताः केचिद्यङि च तल्लुकि ॥८९॥

धातुपाठके भ्वादि इत्यादि दशगण के धातु मूल धातु हैं। उनसे प्रेरणा अर्थ में णिच् प्रत्यय करके प्रेरणार्थक इच्छा अर्थ में सन् प्रत्यय करके इच्छार्थक एकाच् इत्यादि धातुसे अतिशय सातत्य अर्थमें यङ्वा यङ्का लुक् करके क्रियासमभिहारार्थक धातु बनाए जाते हैं।

सकर्मकः प्रेरणार्थः प्रायेणात्र पदद्वयम् ।
सन्नन्त इच्छार्थकस्तु प्रायशो मूलधातुवत् ॥९०॥

उस क्रिया की प्रेरणा अर्थमें णिच् होकर बने हुए णिजन्त धातु सब सकर्मक, कोई द्विकर्मक भी होते हैं। उनमें प्रायः[3] दोनों पद होते हैं ।

---

१. सू० अनुपराभ्यां कृञः । अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः । प्राद्वहः । व्याङ्परिभ्यो रमः ।

२. सू० विभाषाऽकर्मकात् ।

३. सू० हेतुमति च । णिचश्च । बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः । निगरणचलनार्थेभ्यश्च । अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् । गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने । भीस्म्योर्हेतुभये । नपादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवद वसः ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पच्-पाचयति, पाचयते—पकवाता है। दृश्-दर्शयति-ते-दिखाता है। पठ-पाठयति-ते-सिखाता है। दा-दापयति-ते-दिलाता है। दुह-दोहयति-ते-दुहाता है। ग्रह-ग्राहयति-ते-पकड़वाता है। नम्-नमयति-ते-नवाता है। हृ-हारयति-ते-हरवाता है। कृ-कारयति-ते-करवाता है। छिद्-छेदयति-ते-कटवाता है। स्पृश-स्पर्शयति-ते-छुवाता है। पा-पाययति-ते-पिलाता है।

(क) बुध् युध् नश् जन् अधि इङ् द्रुस्रु अश् भुज् खाद् भक्ष् चल् कम्प धातु, चेतन कर्तृक अकर्मक शीङ आदि धातु णिच होने पर केवल परस्मैपदी, (ख) वञ्च स्मिङ् भी आ-यस् परि-मुह रुच नृत वद बस धातु णिच् होने पर केवल आत्मनेपदी होते हैं।

(क) बोधयति, योधयति, नाशयति, जनयति, अध्यापयति, द्रावयति स्रावयति, आशयति, भोजयति, खादयति, भक्षयति, चालयति कम्पयति, माता बालं शाययति। कर्मकरो भाण्डं स्थापयति। धूर्ता जनान्हासयन्ति।

(ख) वञ्चयते, विस्मापयते, भीषयते, आयासयते, परिमोहयते, रोचयते, नर्तयते, वादयते, वासयते।

णिजन्त सकर्मक होने से ही दूसरे वाच्य में कर्मवाच्य होते हैं। भाववाच्य नहीं होते हैं। पच्-पाच्यते, दृश्-दर्श्यते श्रु-श्राव्यते लिख्-लेख्यते, वृध्-वर्ध्यते, नृत्-नर्त्यते।

उस क्रियाकी इच्छा अर्थमें सन् होकर बने हुए सन्नन्त धातु मूल-[1] धातुके समान सकर्मक वा अकर्मक होते हैं। उसमें पद भी प्रायः मूलधातुके समान होते हैं।

गम्—जिगमिषति-जाना चाहता है। पठ-पिपठिषति-पढ़ना चाहता है। ग्रह-जिघृक्षति-पकड़ना चाहता है। दा-दित्सति-ते-देना चाहता है।

---

१. सू० धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छाया वा। पूर्ववत्सनः। म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च। ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लभ्-लिप्सते-पाना चाहता है। भू-बुभूषति-होना चाहता है। शी-शिशयिषते-सोना चाहता है। कृ-चिकीर्षति-ते-करना चाहता है। नी-निनीषति-ते-लेजाना चाहता है।

सन्नन्त होनेपर मृङ्धातु परस्मैपदी, ज्ञा श्रु स्मृ दृश् धातु आत्मनेपदी होते हैं। मृङ्-मुमूर्षति-मरना चाहता है। ज्ञा-जिज्ञासते-जानना चाहता है। श्रु-शुश्रूषते-सुनना चाहता है, सेवा करता है। स्मृ-सुस्मूर्षते-याद करना चाहता है। दृश्-दिदृक्षते-देखना चाहता है।

केचिद्यङन्ताः[1] सातत्येऽतिशयेऽत्रात्मनेपदम्।
क्वचिद्यङो लुगप्यत्र परस्मैपदमीर्यते ॥६१॥

(क) एकाच् हलादि धातुसे क्रियासमभिहार अर्थात् बारबार और ज्यादा क्रिया होने के अर्थ में 'लुप्' आदि कोई धातु से निन्दा अर्थ में यङ् होता है। इसमें आत्मनेपद होता है।

(ख) कहीं यङ्का लोप होकर परस्मैपद होता है। इन दोनोंका प्रयोग व्यवहारमें कम हैं।

(क) भू-बोभूयते-बारबार ज्यादा होता हैं। शुभ्-शोशुभ्यते-बारबार ज्यादा सुहाता है। नृत्-नरीनृत्यते—बारबार ज्यादा नाचता है। जप्-जञ्जप्यते-खराब जप करता है। दह-दन्दह्यते-खराब दाह करता है। इ०

(ख) भू-बोभवीति, बोभोति-बार बार ज्यादा होता है। वृत्-वर्वृतीति, वरीवृतीति वरिवृतीति. वर्वर्ति वरिवर्ति वरीवर्ति-बारबार ज्यादा रहता है।

---

१. सू० धातोरेकाचोहलादेः क्रियासमभिहारे यङ्। यङोचि च।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

[१] इच्छाचारोपमाद्यर्थे नामादेः क्यच्क्यङादिषु ।
सिद्धानां नामधातूनां नामाख्यातानि भूयशः ॥६२॥

नाम आदि शब्दोंसे उसकी इच्छा अर्थमें क्यच्, काम्यच् । प्रत्यय, आचार और तुल्यता अर्थ में क्यच् क्यङ् क्विप् प्रत्यय, कोई विशेष शब्दों से क्यङ् आदि प्रत्यय होने पर नाम धातु बनते हैं। उनके आख्यातरूप बहुत से होते हैं। क्यच् काम्यच् क्विप् प्रत्ययान्त परस्मैपदी, क्यङ् प्रत्ययान्त आत्मनेपदी होते हैं।

आत्मनः पुत्रमिच्छति-पुत्रीयति, पुत्रकाम्यति-लड़का चाहता है। पुत्रमिवाचरति-पुत्रीयति-पुत्र जैसा करता है। कुट्यामिवाचरति-कुटीयति-कुटीमें जैसा करता है। कृष्ण इवाचरति-कृष्णायते-कृष्ण जैसा होता है। कविरिवाचरति-कवयति-कवि जैसा होता है। तपश्चरति-तपस्यति-तप करता है। फेनमुद्वमति-फेनायते-फीज निकालता है। शब्दं करोति-शब्दायते-आवाज देता है। वैरं करोति-वैरायते-दुश्मनी करता है। कलहं करोति-कलहायते-झगड़ा करता है। सत्यमाचष्टे-सत्यापयति-सत्य कहता है। त्वचं गृह्णाति-त्वचयति-खाल निकालता है। नमः करोति-नमस्यति-प्रणाम करता है। मिश्रं करोति-मिश्रयति-मिलाता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

आख्यातका प्रयोग कहां नहीं होता है? हृ नी दा धा धातुओं में पदका विशेष कैसे होता है? साधित धातु कैसे होते हैं? णिजन्त सन्नन्त धातु सकर्मक अकर्मक कैसे होते हैं? उनमें कौन पद होता है, कहां विशेष भी होता है। नामधातु कैसे होते है। विजयते अनुहरतिं प्रतस्थे

---

१. सू० सुपआत्मनः क्यच् काम्यच्च । उपमानादाचारे । वा० अधिकरणच्चेतिवक्तव्यम् । कर्त्तुः क्यङ् सलोपश्च । वा० सर्वप्रातिपदिकेभ्यः क्विब्वावक्तव्यम्। कर्मणोरोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः । वाष्पोष्मभ्यामुद्वमने । वा० फेनाच्चेतिवक्तव्यम् । वा० सर्वप्रतिपादिकेभ्यः क्विब्वावक्तव्यः ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विवदते जिज्ञासते बोधयति ज्ञापयति दिदृक्षते इनमें पदकी व्यवस्था करो। अधोलिखित वाक्योंका अनुवाद करो, और आख्यातोंकी विशेषता भी बताओ—सान्त्वयितुमुपचक्रमे। ततः प्रतस्थे कौवेरीम्। विजयतां महाराजः। तपोवने मुनयस्तपस्यन्ति। गौः उच्चैः शब्दायते। बालकाः परस्परं कलहायन्ते। वर्वर्ति सर्वोपरि। स तु दन्दह्यते जनान्। आपणे वणिजः फलानि विक्रीणते। सूर्यः करै रसमादत्ते। निपुणः कविः सुन्दरान् शब्दान्प्रयुङ्क्ते। कार्यादुपरराम सः। निविशते यदि शूकशिखा पदे। मातरमनुहरन्ति गावः। कपयो वृक्षानारोहन्ति अवरोहन्ति च। तेन सहास्य रूपं संवदति। शिष्याः पाठशालायामुपातिष्ठन्त। गुरुः शिष्यानबोधयत्। वृक्षा आश्रितानां तापं छाययाऽपहरन्ति। भवन्तमहमापृच्छे। स्वामी भृत्यान्कर्मसु नियुङ्क्ते।

नौकर बोझा उठाता है। वे उनको श्लोक दिखाते हैं। राम गोपालका नकल करता है। पाठ सुनाया जाता है। वह किसको दिलाता है। हमलोग जाना चाहते हैं। वह देना चाहता है। नौकर बर्तनों को साफ करता है। पुराण सुनाया जाता है। माता बालकको दूध पिलाती है। वे पुस्तक लेना चाहते हैं। वह वानर वृक्षकी डालमें छिपता है। इसको चिठी लिखवाओ। इस मालको जांचो। हम काव्यकी टीका करते हैं।

(१२) अव्ययके विषयमें विशेष

वक्तव्यपूर्तये प्रायः, सौन्दर्याय च कुत्रचित्।
प्रयुज्यतेऽव्ययं वाक्ये यथास्थानं यथोचितम् ॥६३॥

वक्तव्यकी पूर्तिके लिए, कहीं वाक्यके सौन्दर्यके लिए भी अव्ययका प्रयोग होता है। अन्वयकी भावनासे और पद कुछ आगे पीछे भी रह सकते हैं। अव्ययोंको तो जैसा जहां उचित होता है वहां वैसा ही

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रयोग करना चाहिए। आगे पीछे होनेसे वक्तव्य फरक पड़ सकता है।

रामश्च वस्त्रं परिधत्ते—राम भी कपड़ा पहनता है। रामो वस्त्रं च परिधत्ते—राम कपड़ा भी पहनता है। स तु रूप्यकं ददाति—वह तो रुपया देता है। स रूप्यकं तु ददाति—वह रुपया तो देता है। स एव पत्रं लिखति—वही चिठी लिखता है। स पत्रमेव लिखति—वह चिठी ही लिखता है। स पत्रं लिखत्येव—वह पत्र लिखता ही है। इ०

कारकार्थान्यव्ययानि देशकालादिबोधने।
क्रियाविशेषणानीव प्रकारार्थानि कानिचित् ॥६४॥

देश कालके बोधक अव्यय अधिकरण कारकके समान और कुछ करण सम्प्रदान अपादान आदि कारकके समान क्रियाके प्रकारके बोधक क्रिया विशेषणके समान, कोई विशेषणके समान भी होते हैं।

अधि—तत्र अत्र उपरि अधः बहिः अन्तः अद्य श्वः ह्यः अधुना ऐषमः तदा इ०

करण—दिष्ट्या (भाग्येन) सहसा (बलेन) तरसा (वेगेन)
सम्प्र—यष्टुं (यागाय) भोक्तुं (भोजनाय) द्रष्टुम् (दर्शनाय) इ०
अपा—ततः (तस्माद्देशात्) कुतः (कस्मात्स्थानात्) इ०
क्रियावि—उच्चैर्वक्तिः, नीचैर्ब्रूहि। तूष्णींभव, तथा कुरु इ०
विशे—उच्चैस्तरुः नीचैःस्वरः इदं मिथ्या ईषद्द्रव्यम् किञ्चिद्वस्तु इ०

नानाविधान्यव्ययानि नानार्थानि, समानि च।
संयुक्तानि, द्विरुक्तानि, सद्वितीयानि कानिचित् ॥६५॥

अव्ययोंमें (क) कोई नानार्थक, (ख) कोई एक ही अर्थके अनेक, (ग) कोई अनेक मिलकर विशेष अर्थ देनेवाले, (घ) कोई ज्यादा अर्थ देनेके लिए आवृत्ति किए गए, (ग) कोई एक दूसरेको चाहनेवाले ऐसे बहुत प्रकारके होते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) नानार्थ—

अथ—अधिकारमें—अथ शब्दानुशासनम्, आनन्तर्यमें—अथ प्रजानामधिपः प्रभाते। आरम्भमें—अथ द्वितीयोऽध्यायः, प्रश्नमें—अथ सा किमाख्यस्य राजर्षेः पत्नी। समुच्चयमें-ऋग्वेदं सामवेदं गणितमथ कलां, पक्षान्तरमें—शब्दो नित्योऽथाऽनित्यः, यदिके अर्थमें—अथ कौतुकमावेदयामि तत्। तर्हिके अर्थमें—न चेन्मुनिकुमारोयमथ कोस्य व्यपदेशः।

अपि—संभावनामें—अपि जीवेत्स ब्राह्मणशिशुः, प्रश्नमें—अपि सन्निहितोत्र कुलपतिः, शङ्कामें—अप्याज्ञया शासितुरात्मना वा। समुच्चयमें—वस्त्रं पुस्तकमप्यानय, निन्दामें—अपि जायां त्यजसि।

अयि—पुश्नमें-अयि स्वशक्त्यातपसि प्रवर्तसे। अनुनयमें—अयि विवेकश्रान्तमुक्तम्। सम्बोधनमें—अयि प्रिय सखि।

अये—आश्चर्यमें अये भगवत्यरुन्धती। खेद में-अये देवपादोपजीविनोवस्थेयम्। क्रोधमें-अये सथेव भृकुटीधरः संवृत्तः। स्मरणमें-अये रामो दाशरथि

अलम्—पूर्णतामें तस्यालमेषा क्षुधितस्य तृप्त्यै-निषेधमें-अलं महीपाल तव श्रमेण। शक्तिमें-अलमस्ति निवारणे। भूषणमें-इदमासनमलङ्क्रियताम्

इति—समाप्तिमें-इति प्रथमः स्तवकः। कारण में-त्वं नागत इत्यहमेवागतः। प्रकारमें-रामाभिधानो हरिरित्युवाच। स्वरूपमें-नाद इत्यबोधि सः।

इव—उपमामें-गुरुरिव पण्डित। उत्प्रेक्षामें-लिम्पतीव तमोङ्गानि। अल्प अर्थमें-श्याम इवायम्। वाक्यकी शोभामें-परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्तु पुरुषः।

किल—इतिहासमें-जघान कंसं किल वासुदेवः झूठेमें-प्रसह्यसिंहः किल तां चकर्ष। कारणमें-नाहं गमिष्यामि त्वं किलैवमुक्तवान्। अरुचिमें-त्वं किल योत्स्यसे।

खलु—निषेधमें निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलूक्त्वा खलु वाचिकम्। जिज्ञासामें-कः खलु युवा धन्योऽधरं धास्यति। अनुनयमें-न खलु न खलु

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वाणः संनिपात्योयमस्मिन् । कारणमें-न विदीयें कठिनाः खलु स्त्रियः ।

नञ्—सादृश्यमें-अब्राह्मणोऽयम् । निषेधमें-न गच्छति । भिन्नतामें-अनीलं वस्त्रम् । अल्पतामें-अनुदरा कन्या । अप्राशस्त्यमें-अकार्यमिदम् । विरोधमें-अधर्मः ।

ननु—प्रश्नमें-ननु समाप्तं तत्कार्यम् । अनिश्चयमें-त्वया नियम्या ननु दिव्यचक्षुषा । अनुमतिमें-ननु गच्छतु भगवान् । सप्रेमसम्बोधनमें-ननु मानव किमत्र भवानेकाकी ?

नाम—प्रसिद्धिमें-हिमालयोनाम नगाधिराजः । स्वीकारमें-एवमस्तुनाम । क्रोधमें-ममापि नाम परैः परिभवः । सम्भावनामें-करोतु नाम नीतिज्ञो व्यवसायमितस्ततः । आश्चर्यमें-अन्धोनाम पर्वतमारोहति । झूठेमें-भीतोनामावप्लुत्य ।

बत—खेदमें-अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् । आश्चर्यमें-चित्रंचित्रं बत बत । सम्बोधनमें-बत? वितरत तोयं तोयवाहा नितान्तम् । करुणमें-क्व बतहरिणकानां जीवितं चातिलोलम् । सन्तोषमें-अनुभवति सकृत्सकलेन्द्रियाण्यभिमुखागतमिष्टजनं बत ।

सह—सादृश्यमें-दिगन्तमगमत्तस्य कीर्तिः प्रत्यर्थिभिः सह । सम्बन्धमें-त्याज्यं राज्यं खलैः सह । एक काल अर्थमें-पपात भूमौ सह सैनिकाश्रुभिः । साकल्यमें-सतृणमभ्यवहरति । विद्यमानतामें-सहैव दशभिः पुत्रैर्भारं वहति गर्दभी ।

हन्त—हर्षमें-हन्त प्रवृत्तं सङ्गीतम् । खेद में हन्त हन्त गतः कालः । वाक्य के आरम्भमें-हन्त ते कथयिष्यामि । करुणमें-हन्त हन्यतेऽयं तपस्वी दुर्वृत्तैः ।

(ख) समानार्थक—

अग्रतःके अर्थमें-पुरो याहि । अग्रतः पश्य दृश्यते पुरस्तात् ।

अति के अर्थमें-अत्यन्तं कुपितो गुरुः । बलवत् शिक्षितोयम् । अतीव रुष्टः । अतितरां दीनः ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अधः के अर्थमें-मेघस्याधः। अधस्ताद्गच्छ। नीचैर्याहि। अवाङ्मुखः।

अधुना के अर्थमें-इदानीं पाठं पठामि। सूर्यस्तपति साम्प्रतम्। सम्प्रत्यसाम्प्रतं वक्तुम्। अधुना किं कृतं तेन। एतर्हि को गच्छति।

ईषत् के अर्थमें-ईषत्कम्पयते वायुः। मनागपि न वक्ति। किञ्चिद्भीतदृशेक्षते।

ऊर्ध्व के अर्थमें-गिरेरुपरि। खट्वाया उपरिष्टात्। तत ऊर्ध्वम्। उच्चैः पदमुपागतः।

चिरं के अर्थमें-भवांश्चिराद्दृष्टः। चिरेणसमागतोयम्। श्वश्रूश्चिरं रोदिति। परिचयचिन्हं चिराय जायेत।

प्रायः के अर्थ में—प्रायो भृत्या निर्धनं सन्त्यजन्ति, प्रायेण लोको गतानुगतिकः। प्रायशो विद्वांसस्तत्र सन्ति, भूयसा धनिनोत्र वर्तन्ते।

मध्ये के अर्थ में—पुरं वनं चान्तरामार्गः। गृहस्यान्तर्वर्तते। पुस्तकस्यान्तरेऽस्ति। सङ्कटद्वयमन्तरेण प्राप्तः।

मुहुः के अर्थ में—मुहुरुवाच। पुनः पुनः पीड्यमानः। अभीक्ष्णमागच्छति। असकृद्दोष्टौ दशति। शश्वत्पाठमभ्यस्यति। भूयो विलपति।

विना के अर्थ में—त्वामन्तरेण कः शक्तः। भवन्तमृते दुःखितः। विद्यया विना मूढः। त्वत्तः पृथक्कः।

वितर्क के अर्थ में—त्वं काव्यं वा पठसि, किं वा व्याकरणं, किंस्विद्गणितम्, आहो पुराणम्, उत साहित्यम्, आहोस्विन्न्यायं, किमुत पूर्ववृत्तं, किं वेदान्तम्?

शीघ्र के अर्थ में—ब्रूहि शीघ्रम्। झटिति प्रविश गेहे। स आशु कवितां करोति। द्रागानमन्ति विद्वांसः। मङ्क्षूयाति परितः पटलैरलीनाम्।

सदा के अर्थ में—सदा वहति मारुतः। सर्वदा त्वां नमामि। सततं धीरतां धत्ते। आश्रयत्य निशमीश्वरं बुधः। नित्य विनीतो भव।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सद्यः के अर्थ में—सहसा विदधीत न क्रियाम्। सपदि प्रत्युवाच। सद्यः पश्य। अयमेक पदे तया वियोगः।

सर्वतः के अर्थ में—परिजना राजानमभितः स्थिताः। गृहं परित उद्यानम्। समन्ताद्वाति मारुतः। समन्ततोऽन्वेषय, सर्वतो हस्तौ प्रसारयति विष्वक्सेनः।

सह केअर्थ में—अनेन सार्द्धं विहर। त्वया सहाहं गच्छामि। लक्ष्मणेन समं रामः काननं गहनं ययौ। गुरूणा साकमिहागतोस्म्यहम्।

(ग) संयुक्त विशेषार्थबोधक—

रामो गतः किम्—अथ किम् (स्वीकारे)। तृणेन कार्यं भवतीश्वराणां किमङ्ग (किं वक्तव्यं) वाग्हस्तवता नरेण। इतस्ततः (परितः) भ्रमति। परेष्वपि प्रेम किं पुनः (किंवक्तव्यं) पुत्रेषु। विद्यां धनमथापि वा (किंवा)। किमिव हि न (सर्वं) दुःखं जडमतेः। कथमिव (कुतः) न जानाति कुशलः। किमिति (कुतः) स नागतः। पतितां किं नाम (किमर्थं) नालम्बसे, तथाहि (प्रदर्श्यते)। तथा च (एवं सति)। इ०

(घ) द्विरुक्त अतिशयबोधक—

न खलु न खलु वाणः सन्निपात्योयमस्मिन्। किमपि किमपि मन्दंमन्दमासक्तियोगात्। चित्रंचित्रं वतवत महच्चित्रमेतद्विचित्रम्। हन्त हन्त गतः कान्तः। उपर्युपरि पश्यति। नमो नमो भवःद्भयः ईषदीषच्चचाल। तन्न न जाने जाने।

(ग) सद्वितीय—

तपः क्व वत्से क्व च तावकं वपुः। यद्येवं तर्हि का चिन्ता। यद्यपि उत्तीर्णः, तथापि न प्रथमः। इति चेत्न्नैवम्।

पदयोर्वाक्ययोर्वापि सापेक्षनिरपेक्षयोः।
योजकं जायते स्थाने प्रयुक्तमुभयान्वयि ॥६६॥

योजक अव्यय योग्य स्थान में रहकर परस्पर में सापेक्ष (एक दूसरे को चाहने वाले) किंवा निरपेक्ष अनेक पद और वाक्यों को जोड़ते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) परस्पर निरपेक्ष पद और वाक्य दोनों को जोड़ने वाले—

समुच्चयबोधक—च, अपि। विकल्पबोधक—वा, अथवा, उत, किंवा इत्यादि।

पद—हरिं हरं च पूजय। मातरमपि पितरमपि प्रणमति। विद्या विनयोपि भूषणम्।

पद—रामो वा कृष्णो वा गच्छतु। एको देवः केशवो वा शिवो वा। तद्रक्तमुत नीलम्।

वाक्य—एष श्लोकं लिखति, पठति च। धनमपि लभ्यते, यशोप्युज्ज्वली भवति।

वाक्य – त्वं काव्यं पठसि, किंवा लिखसि, रामो गतः, उतात्रैव वर्तते

(ख) सापेक्ष (अङ्ग या अङ्गों) का योजक

पद वाक्य दोनोंका ग्राहक-इति एवम्, इत्येवम्।

पद—क्रमादमुं नारद इत्यवोधिसः। स तथेति प्रतिपेदे।

वाक्य—अहमिदानीं न गच्छामीति उवाच, एवमभिधाय निर्ययौ।

(ग) सापेक्षवाक्य मात्रके योजक—

१. क्रमबोधक-अथ, ततः, अनन्तरं, तदनु, पश्चात्, ततस्ततः। इ० प्रतापोग्रे ततः शब्दः परागस्तदनन्तरम्-ययौ पश्चाद्रथादीति। प्रथमं कलाभवदथार्धमथोः। उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलं। गुरुराजगाम। तदनु छात्रा उपतस्थिरे।

२. प्रतिपक्षबोधक—अन्यथा न चेत्, नोचेत्, नैवं चेत्।

न त्वं विचारशीलः। अन्यथा कथमेवं ब्रूयाः। शीघ्रमायाहि। न चेदन्यो लभेत। परीक्षायां प्रथमो भव। नैवं चेत् कथं पारितोषिकं लप्स्यसे। स गच्छतु। नोचेदन्यं प्रेषय।

३. वैपरीत्यबोधक--प्रत्युत।

स ममोपकारं न स्मरति प्रत्युत मह्यमेव द्रुह्यति।

४. प्रथम कारणबोधक--तत्, ततः, तत एव, अतः, अतश्च, अतएव।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रावणः सीतामहरत्, अतएव रामेण सोऽहन्यत, स यथेच्छं भक्षयति तत एव पुनः रोगैः पीड्यते। त्वमस्मै स्निह्यसि, तद्देषोपि प्रेम्णा व्यवहरति।

५. **उत्तरको कारण बोधक**—यत् यतः यत एव हि।

अहं तस्मै हितं नोपदिशामि, यत्स नैव श्रृणोति। श्यामं मम प्रियं, यतस्तदाशुमलिनं नैव भवति। स परुषमुवाच, यतो हि अस्मिन्कुपितोभूत्।

६. **अर्थापत्ति बोधक**—किमङ्ग किं पुनः किमु।

तृणेन कार्यं भवतिश्वराणां, किमङ्ग वाग्हस्तवता नरेण, एकैकमप्यनर्थाय, किमु यत्र चतुष्टयम्। स्वयं रोपितेषु तरुष्वपि स्नेहः, किम्पुनरङ्गसम्भवेषु।

७. **विशेष बोधक**--तु परम् परन्तु किन्तु

अहं भूय आह्वयामि, स तु नायाति। इच्छसि चेद्गच्छ, परं सावधानेन त्वया भवितव्यम्। इदं सुन्दरमस्ति, किन्तु महार्घम्।

८. **विवरण बोधक**--यथा यथाहि तथाहि।

वर्णाः पञ्चाशत्, यथा अ आ इत्यादि। शब्दो द्विधा, यथाहि-व्यक्तोऽव्यक्तश्च। वर्णाश्चत्वारः, तथाहि ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च।

९. **सम्वन्ध बोधक**—यत्-तत्। यथा-तथा। चेत्-तर्हि। यद्यपि-तथापि इत्यादि।

यथेच्छसि तथा कुरु। यावच्छक्नोषि, तावत्कुरु। यद्यपि मया किञ्चिन्नोक्तं, तथापि स कुपितः। त्वं गच्छसि चेत् तर्हि यथेच्छं गच्छ। इ०

शब्दयोग्युपसर्गादि पदान्तरमपेक्षते।
उद्धारबोधि वहुधा वाक्यात्पृथगिवेद्यते ॥६७॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) उपसर्ग वा कर्मप्रवचनीय शब्दयोगी अव्यय अकेले नहीं प्रयुक्त होते हैं। और पदों के साथ मिल कर ही आते हैं। (ख) उद्गारबोधक अव्यय तो बहुत प्रकार के हैं वाक्य के आदि, मध्य वा अन्त में, कहीं वाक्य से अलग भी होते हैं। जैसे—

(क) प्रक्रमते कार्यम्। शिष्यो गुरुमनुगच्छति। सगृहं प्रति गतः। इ०

(ख) सम्बोधन अङ्गीकार शोक हर्ष आदि के बोधक अव्यय।

सम्बोधनमें—समान के साथ—भोगुरो। हे प्रभो। उद्घोषण के साथ—भो भो पौर जान पदा। आश्चर्य के साथ—अहो सुहृदः। निन्दा के साथ—रे पामर। अरे दुष्ट। रे वाचाट। नाट्य की बोली में—हला शकुन्तले। प्रेम के साथ—अयि प्रियसखि।

अङ्गीकारमें—प्रभुत्व के साथ—ओमित्युवाचप्रभुः। अनुमोदन के साथ—वाढं युक्तमुक्तं त्वया। प्रशंसा के साथ—त्वमिदं कुरु, साधु सद्यः करोमि। अपेक्षा के साथ—अस्तु, शास्यसि कालेन। दृढता के साथ—देवदत्तोगतः किमु-अथकिम्। अनिच्छा के साथ—कामं नृपाः सन्तु सहस्रशोन्ये। अनुमति के साथ—एवमस्तु, कथया किमन्यया।

शोकमें—दुःख के साथ—पाषाणोपम हा कृतघ्नहृदय। पीडा के साथ—अहह दारुणो दैवनिर्घातः। विलाप के साथ—हा प्रिये हा सीते हा जानकि, करूणा के साथ—अहा महापातकिनः कथा सौ।

कहीं देवता के नाम आदि, शब्द विशेष, वाक्यविशेष भी उद्गारबोधक होते हैं। हरि हरि शरणं विधे करुणा। शिव शिव किमेवं संवृत्तम्। राम राम सहि शोक पीडितः। शान्तं पापम्। अब्रह्मण्यमब्रह्मण्यम्। साधु साधु। इ०

अभ्यासार्थ प्रश्न—

अव्यय कितने प्रकार के होते हैं? नानार्थक अव्यय कौन हैं? बिना

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वितर्क अधुना अर्थ में कौन अव्यय हैं ? सद्वितीय अव्यय कैसे होते हैं ? कौन अव्यय पदों को, कौन अव्यय वाक्योंको जोड़ते हैं ? द्विरुक्त अव्यय से क्या विशेषता समझी जाती है ? वैपरीत्य विशेष क्रम बुझानेवाले अव्यय कौन हैं ? समुच्चयबोधक विकल्पबोधक अव्यय किसको जोड़ते हैं ? अधोलिखित वाक्यों का अनुवाद करो और अव्ययों की विशेषता भी बतलाओ।

वितरति गुरुःप्राज्ञे विद्यांयथव तथा जडे। एको देवः केशवोवा शिवोवा। अग्रे कथमयमपि सोपि निर्गत। इदं महार्घमस्ति अतो नाहं क्रीणामि। सूर्योऽग्रत उदितो दृश्यते। तेन सहाहं क्रीडितु मिच्छामि। वानरो वृक्षं समूलमुत्पाटयति। को नाम दिवमुत्पतितुं शक्नोति। स एवेदं कर्तुमलम्। हन्त हन्त महतामुदारता। अयि प्रिय सुहृदः अपि नाम भवतां कुशलम्। त्वमित्थं करोषीति कथमहं जानामि। जीवितु मिच्छसि चेन्मम पादयोः पत। न केवलमयं पठति प्रत्युत क्रीडति। मयि नान्तकोपि प्रभुः प्रहर्तुं किमुतान्य हिंस्राः। बभूव योगीकिलकार्तवीर्यः। त्वं ब्राह्मण इति नाहं ताडयामि। अहो कीदृशी तव कठोरता। वैदेशिकोस्तीति पृच्छामि।

जैसा कहते हो वैसा करते हैं। उसको उपदेश देते हैं तो वह नहीं सुनता है, उलटा वह हमारे ऊपर बिगड़ता है। उसने हमको बुलाया, इसीसे जानेको तैयार हैं। उसके साथ कौन जाता है। अहो कितनी सुन्दर वस्तु मिली। नहीं नहीं ऐसा मत करो। हमारा उपदेश हृदयमें रखो, नहीं तो पछताओगे। पहले फूल खिला तब फल लगा। ऋषि लोग विचार करके हित उपदेश करते हैं, इसीसे उनके वाक्य माननीय हैं। मनुष्यका जीवन अमूल्य है इसको अच्छे काम में लगाओ। भारतवर्षके दक्षिण भाग में समुद्र है। हिमालय पर्वतके ऊपर कोई नहीं चढ़ सकता है।

———

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उत्तरार्द्ध

(१) वाक्यनिरूपण

—०*:*०—

वाक्य—

परस्परं समन्वीय पूर्णैकार्थावबोधिनी ।
पदयोर्वा पदानां वा समष्टिर्वाक्यमुच्यते ॥६८॥

परस्पर मिलकर पूर्ण एक वक्तव्यका बोधक कमसे कम दो अथवा बहुत पदों का समुदाय वाक्य कहलाता है ।

वक्तव्यतारतम्येन पदानां समुदायिनाम् ।
अल्पत्वेन बहुत्वेन वाक्यं लघु मरुन्मतम् ॥६९॥

छोटे वा लम्बे वक्तव्यके अनुसारसे एक एक मुञ्जरूपमें मिले हुए पद थोडे वा बहुत होनेसे वाक्य छोटे या बड़े होते हैं ।

सूर्य उदेति—सूर्य उगते हैं । विद्वांसः सन्ति—विद्वान् लोग हैं। शीतलो वायुर्वाति—ठन्डी हवा बहती है । वसन्ते बहूनि पुष्पाणि विकसन्ति—वसन्तमें बहुत फूल खिलते हैं । जनानां संमर्दे महान्कोलाहलः श्रूयते—लोगोंकी भीडमें बड़ा कोलाहल सुना जाता है । भारतवर्षस्योत्तरतो हिमालयः सीमाभित्तिरिव दृश्यते—भारतवर्षके उत्तरमें हिमालयपर्वत सीवानकी भीत के समान देखा जाता है । वाष्पयानानि दिवानिशं सञ्चरन्ति सहस्रशो लोकान्देशाद्देशान्तरं प्रापयन्ति—रेलगाड़ियां रात दिन चलती हुई हज़ारों लोगोंको एक देशसे दूसरे देश पहुँचाया करती हैं ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

योगौचित्य प्रकरणादिभ्योऽध्याहारसम्भवे ।
अनावश्यकहानेन पदमेकमपि क्वचित् ॥१००॥

पहले कहे हुए वाक्यके सम्बन्ध, औचित्य, प्रकरण आदिसे अन्य पदोंके अध्याहार हो सकनेसे उन अनावश्यक पदोंका त्याग करने पर कहीं एक पदका भी वाक्य दीख पड़ता है। वैसेमें अन्य पदोंके अध्याहारसे पूरण करना चाहिये।

स महाकवेः काव्यं शृणोति, (सः) प्रसीदति—वह महाकविका काव्य सुनता है, खुस होता है। (अहं) गच्छामि—जाता हूँ। (त्वं) पश्यसि ?—देखते हो ? गवाक्षाद्वायुरायाति, (त्वं) पिधेहि—खिडकीमें हवा आती है, बन्द करो। कस्येदं गृहम्, मम (इदं गृहमस्ति)।

योग्यता आकाङ्क्षा आसत्ति—

वाक्ये पदानां योगाय निर्बाधाऽन्वययोग्यता ।
अन्यसाकाङ्क्षतैकस्य युक्ताऽऽसत्तिश्च हेतवः ॥१०१॥

वाक्यमें एक पदका दूसरे पदके साथ सन्बन्ध होनेके लिये बिना बाधाकी योग्यता, एकको दूसरेकी अपेक्षा, पूर्वापर क्रमके साथ उचित सान्निध्य होनेसे पदोंका परस्पर मेल होकर एक समूह बनता है। योग्यता आकाङ्क्षा आसत्तिके बिना पदोंका एकार्थबोधक एकवाक्यता नहीं होती है।

योग्यतारहित—वन्हिना सिञ्चति। अम्बुनि मज्जन्त्यलावूनि। मृगात्सिंहः पलायते।

आकाङ्क्षारहित—गौरश्वः पुरुषो हस्ती। राजन् रूमायां लसुनस्य कोऽर्घः। अस्तिस्तः सन्ति।

आसत्तिरहित—उष्णो जलमग्निः शीतं भवति। न निर्धनो ग्रामं शक्नोत्यारूहन् गन्तुं रथम्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विशेषणे कारकेषु भेदकेऽथ तदन्विते।
देशकालप्रकारादावपि योग्यत्वमिष्यते ॥१०२॥

वाक्यमें विशेषण और विशेष्यमें, कारक और क्रियामें, भेदक और भेद्यमें, देशकाल प्रकार आदिमें भी अन्वय होनेकी योग्यता आवश्यक है।

योग्य—सूर्ये उदिते क्रमेण प्रकाशो वर्धते। विद्यायाः प्रकाशेन हृदयमुज्ज्वलं भवति।

अयोग्य—ग्रीष्मे शीतं माघे तापोभवति। आर्द्रा वन्हिर्हिमाद्रौ देहं जडी करोति।

मिथः क्रियाकारकयोर्विशेषणविशेष्ययोः।
भेद्यभेदकयोरेवमन्यत्राकाङ्क्षयाऽन्वयः ॥ १०३ ॥

वांक्यमें कारकोंका अपनी क्रियाके साथ, विशेषणोंका अपने अपने विष्योंके साथ, भेदकका अपने भेद्यके साथ, ऐसे ही गौण क्रियाका मुख्य क्रियाके साथ, क्रियाविशेषणका क्रियाके साथ अव्यय आदिका उचित पदके साथ परस्पर आकाङ्क्षासे अन्वय (सम्बन्ध) होता है।

क्रि. का.—स गच्छति। नृत्यं पश्यति। लेखन्या लिखति। तस्मै ददाति। वृक्षात्पतति। पात्रेऽस्ति। इ०

वि. वि.—नीलं वस्त्रं। चतुर्भिः पुरुषैः। तस्याः स्त्रियः। सुगन्धीनि कमलानि। महति कार्ये।

भे. भे.—तस्य पुत्रः। राज्ञां सेनाः। मातुः कञ्चुकम्। मम गृहम्। सख्युः पुस्तकानि। इ०

गौ. मु.—भुक्त्वा निर्गच्छति। विचार्य कुरु। पठितुमायाहि। स्मारं स्मारं ब्रूहि। इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

क्रि. वि.—मधुरं वक्ति। सविनयं निवेदयामि। शीघ्रमायाहि। सत्वरं गच्छ।

अव्य—अतीव क्रूरः। न पश्यति। गच्छत्येव। नीलमेव। हे राम त्वम्। मन्यते किल। इ०

वाक्ये मिथो यथाकाङ्क्षं पदान्यन्वीय खण्डशः।
आख्याते शृङ्खलीभूय भवन्त्येक कुटुम्बवत्॥ १०४॥

परस्पर आकाङ्क्षाके अनुसार एक पदका दूसरे पदके साथ खण्ड खण्ड अन्वय होते होते शृङ्खला बनकर साक्षात् या परम्परासे आखीरमें आख्यातमें मिल जानेसे एक कुटुम्बकी तरह नाना पदोंका एक वाक्य बनता है। टुकड़े टुकड़ेका खण्डान्वयके बाद जो जिसमें अन्वित है वह प्रायः उसके पीछे रहकर दण्डान्वय द्वारा सब पद वाक्यपूरक आख्यातके साथ मिल जाता है।

खण्डान्वय—गच्छति, कः गच्छति? रामः, कं गच्छति? ग्रामम्। आयाहि, कः आयाहि? त्वम्। कथमायाहि? शीघ्रम्। आगच्छन्ति, के आगच्छन्ति? शिष्याः, किं कर्तुमागच्छन्ति? पठितुम्, किं पठितुंम्? पाठम्। पश्यति, कः पश्यति? गोपालः, किं पश्यति? नृत्यम्, कीदृशं नृत्यं? मनोहरम्, कुत्र पश्यति? रङ्गभूमौ, कस्य रङ्ग भूमौ? नगरस्य, किं कृत्वा पश्यति? उपविश्य, कुत्र उपविश्य? मञ्चे, कदा पश्यति? रात्रौ, किं कर्तुं पश्यति? मोदयितुम्, किं मोदयितुं? मनः।

दण्डान्वय—रामो ग्रामं गच्छति, त्वं शीघ्रमायाहि, शिष्याः पाठं पठितुमागच्छन्ति, गोपालो नगरस्य रङ्गभूमौ मञ्चे उपविश्य मनो मोदयितुं रात्रौ मनोहरं दृश्यं पश्यति।

एवं—सुन्दरैर्वस्त्रालङ्कारैर्भूषिता वयमुद्याने विहर्तुं गच्छामः। रात्रौ गगनेत्युज्ज्वला असंख्यास्तारकाः प्रकाशन्ते। बालकः खट्वायां

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शयित्वा पादौ चालयन्मातुः स्तन्यं पिबति। राज्ञोऽश्वो महता वेगेन चत्वरे परिभ्रमति। देवानां मन्दिरेषु महत्यो घण्टा लम्बिता दृश्यन्ते।

यथा पदानां विन्यासोऽभीष्टमन्योन्य योजनम्।
चिरं न प्रतिबध्नाति तथाऽऽसत्तिरपेक्ष्यते॥ १०५॥

वाक्यमें जिस क्रमसे पद रहनेसे प्रयोक्ताका अभीष्ट, पदोंका परस्पर सम्बन्ध, देरतक नहीं रुकता है उस क्रमसे पदोंका सान्निध्य होना चाहिये।

रघुः पित्रा दत्तं राज्यं प्राप्याधिकं शुशुभे। वसन्ते नानाविधानां पुष्पाणां विकासेन सुगन्धयुद्यानं सर्वेषां मनोहरति। रात्रौ प्रदीपस्य प्रकाशः पुस्तकानामक्षराणि स्फुटीकरोति। विद्यायाः प्रकाशेनोज्ज्वले हृदये सूक्ष्मा अपि पदार्थाः स्फुटमवभासन्ते।

वाक्यमें पद क्रम—

आदौ कर्ताऽऽख्यातमन्ते करणादिकमन्तरा।
क्रियाविशेषणं कर्म विधेयं च क्रियान्तिके॥१०६॥

विशेषणं विशेष्यात्प्राग्विधेयं तु तदुत्तरम्।
भेदकं भेद्यतः पूर्वं मव्ययानि यथान्वयम्॥१०७॥
गौणक्रिया मुख्यतः प्रागग्रेऽस्याः कारकादिकम्।
आदौ सम्बोधनोद्गारौ, सामान्योयं पदक्रमः॥१०८॥

वाक्यमें पहले कर्ता, अन्तमें आख्यात, बीचमें करण सम्प्रदान आदि कारक रहते हैं। क्रियाविशेषण कर्म और विधेय क्रियासे पूर्व समीप में रहते हैं, उद्देश्यविशेषण विशेष्यसे पूर्व, विधेयविशेषण विशेष्यके बाद, भेदक भेद्यसे पहले रहते हैं। अव्यय जिसमें अन्वय होने वाले है उसीके साथ रहते हैं। गौणक्रिया मुख्यक्रियासे पूर्व, गौणक्रियाके

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कारक क्रियाविशेषण आदि उससे भी पूर्व, सम्बोधन उद्गार बोधक वाक्यमें सबसे पहले रहते हैं। साधारण पदक्रम यही है।

दयालो जगदीश ! भवान्दीनानस्मान्सदा रक्षतु—हे दयावन् ईश्वर ! आप दुःखी हमलोगोंको सदा रक्षा करें। अस्माभिर्विकसितानि पुष्पाण्यवचीयन्ते-हमसे खिलेहुये फूल चुने जाते हैं। कारुणिका आढ्याः श्रद्धया दीनेभ्यो दिनेदिने द्वारि अन्नं वितरन्ते-दयावान् धनीलोग श्रद्धासे गरीबोंको रोजरोज द्वारमें अन्न देते हैं। स सावधानः कार्यं साधु करोति-वह सावधान होकर काम अच्छी तरह करता है। ऊर्णा वस्त्रं प्रबलमपि शीतं निराकरोति-ऊनका वस्त्र जबरदस्त भी ठण्डी हटाता है। अहो महानानन्दोऽभूत्-अहो बड़ा आनन्द हुआ। स कार्यं सम्पन्नं कृत्वा बहिर्विहर्तुंगृहान्निरगात्। वह काम सिद्ध करके बाहर टहलनेके लिये मकानसे निकला।

व्युत्क्रमश्छन्दसा पद्ये, गद्येपि क्वचिदर्थतः।
तत्रापि सरलो दण्डान्वयः कल्प्योऽर्थवित्तये ॥१०६॥

(क) पद्यमें छन्दके अनुरोधसे पदोंका क्रमः प्रायः बिगड़ा होता है। (ख) गद्यमें भी कहीं जिसमें विशेष जोर दिखाना है उसको प्रायः क्रियाके साथ रखकर, कहीं कवियों की प्रौढ़दृष्टि से या तात्पर्यविशेषसे भी पद इधर-उधर रखकर क्रममें व्यत्यय किया गया होता है। वैसे में फिर सरलदण्डान्वयक्रम कल्पना करनेसे अर्थके बोधमें सरलता होती है।

(क) अलब्धमीहेद्धर्मेण, लब्धं रक्षेदवेक्षया।
रक्षितंवर्द्धयेत्पात्रे, वृद्धं तीर्थेषुनिक्षिपेत् ॥

अलब्धं धर्मेण ईहेत, लब्धमवेक्षयारक्षेत्, रक्षितं पात्रे वर्द्धयेत्, वृद्धं तीर्थेषु निक्षिपेत्।

(ख) तत्कार्यं कर्तुमहं शक्नोमि-वह काम मैं कर सकता हूँ। काश्यां नानाविद्या अध्येतुं छात्राः सर्वेभ्योदेशेभ्यः समागच्छन्ति—काशीमें

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अनेक विद्या पढ़ने के लिये छात्र लोग सब देशोंसे आते हैं। वैद्यारोगं विचार्यप्रतीकाराय प्राणैरपि यतन्ते-वैद्यलोग रोगको विचार करके उसे हटाने के लिये जीजानसे प्रयत्न करते हैं। त्वं पुस्तकधान्यांपुस्तकं (नान्यत्) स्थापय-तुम आलमारीमें पुस्तक ही रखो। पुस्तकधान्यांपुस्तकं त्वं (न्यायः) स्थापय-आलमारीमेंपुस्तक तुमही राख्खो त्वं पुस्तकं पुस्तक-धान्यां (नान्यत्र) स्थापय-तुम पुस्तक आलमारीमें ही रखो।

वाक्यकी पूर्ति—

पूर्णं प्रयुज्यते वाक्यं, तदाख्याते न पूर्यते।
भावविध्यर्थकृत्यान्तैस्तथाक्तान्तैश्चपूर्यते ॥११०॥

वाक्यपूर्णही प्रयोग किया जाता है, अपूर्ण नहीं। वाक्यकीपूर्ति आख्यातसे होती है। क्रियाके विधानमें भावार्थक तव्य अनीय यत् क्यप् ण्यत् ये कृत्यप्रत्ययान्त और विधेयभावार्थकक्तप्रत्ययान्तसे भी वाक्यकी पूर्ति होती है।

त्वयेदं कर्तव्यम्—तुमे यह करना है। एभिः काव्यं पठनीयम्-इन्हें काव्य पढ़ना चाहिये। मह्यं देयम् मुझे देना। सुवर्णधार्यम्-सोना पहनना। तेन न स्थितम् – उससे न रहा गया। बालकेनाद्यसुखंशयितम्—बालकसे आज सुखके साथ सोया गया।

तव्यानीयक्तक्तवत्वाद्यन्तेऽन्यस्मिन्विशेषणे।
भेदके च विधेये तु वृथाऽक्त्यादि न कथ्यते॥१११॥

(क) कर्मार्थक तव्य, अनीय आदि कृत्यप्रत्ययान्त, कर्तृकर्मार्थक क्त, कर्त्रर्थक क्त, कर्त्रर्थक क्तवतु प्रत्ययान्त और विशेषण भेदक विधेय होनेपर भी वाक्यपूरक अस्ति भवति आदि आख्यात प्रायः नहीं कहा जाता है, उसके विना भी वाक्य की पूर्ति होती है। (ख) विशेष काल का बोधन आदि प्रयोजन होने पर तो आख्यात कहा जाता है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) इदं पुस्तकं दर्शनीयम् (अस्ति)—यह पुस्तक देखने योग्य है। भक्तैः पुराणं श्रोतव्यम् (भवति)—भक्तोंको पुराण सुनने योग्य है। रोगिभिरौषधानि सेव्यानि (भवति)—रोगियोंको औषध सेव्य हैं। पुत्रो जातः—लड़का हुआ। स पाठशालां गतः—वह पाठशाला गया। मया काव्य मधीतम्—मुझसे काव्य पढ़ा गया। छात्रो गुरुं दृष्टवान्—छात्रने गुरुको देखा। इदं वस्त्रं सुन्दरम् (अस्ति)—यह कपड़ा सुन्दर है। छात्रेष्विमे सुशीलाः—छात्रों में से ये सुशील हैं। इदं मम गृहं (भवति)—यह मकान मेरा है। असौ राज्ञः प्रासादः (भवति)—यह राजा का दरबार है।

(ख) त्वयेदं कर्तव्यमासीत्—तुझे यह करना था। तस्य हृदय लज्जितं भविष्यति—उसका हृदय लज्जित होगा। त्वं सरलोसि—तू सीधा हैं। इदं मम भविष्यति—यह मेरा होगा। असौ तस्यासीत—यह उसका था।

वाक्यांश—

मिथोन्वितानेकपदव्यूहनेनैकपिण्डतः।
अपूर्णार्थो वाक्यखण्डो वाक्यांश इति कथ्यते ॥११२॥

अनेक पद मिलकर अपूर्ण एक अर्थ बोधक अवान्तर पदसमूह भी कहीं वाक्य के भीतर होता है, उसे वाक्यांश कहते हैं।

महतां विदुषां सविचारो लेखः गभीरो भवति—बड़े विद्वानों का विचार साथ का लेख गहरा होता है। अतीव रक्त मुज्ज्वलं वस्त्रं परिदधानां नारी महमपश्यम्—बहुत लाल उजले कपड़े पहनी हुई स्त्रीको मैंने देखा। कमल मुकुलाकार मञ्जलिं शिरसि कृत्वा सोऽभ्यभाषत—कमल की कलीके समान अञ्जलिको माथेमें करके उसने कहा।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वस्तु भाव गुण स्थान कालरीत्यादि बोधकः ।
वाक्यांश स्त्रिविधो नाम विशेषण मथाऽव्ययम् ॥११३॥

वाक्यांश किसी वस्तु भाव (क्रिया) गुण देश काल प्रकार आदिका बोधक होकर (क) कोई नाम, (ख) कोई विशेषण, (ग) कोई अव्यय स्वरूप होता है।

(क) स्वस्य ज्येष्ठा याः पितृष्वसुः कनिष्ठं पुत्र महम पश्यम्-अपनी जेठ फूवा के छोटे लड़के को मैंने देखा।

(ख) धात्रा कराभ्याः वाह्वोर्विधता बाला पादौ चालयन्ति—धायके दोनों हाथों से बाहें में पकड़े गए बालक पाँव चलाते हैं।

(ग) तांडपत्रेषु लौहसूच्या क्षराणि लिखितुं—नाहं जानामि-ताड़के पत्तोंमें लोहेको सुईसे अक्षर लिखनेको मैं नहीं जानता हूँ।

वस्तुबोधक—साधु निष्टप्तस्य सुवर्णस्य कुण्डले कर्णौ भूषयतः--अच्छी तरह तपाये गये सोने के कुण्डल कान की शोभा देते हैं।

भावबोधक—कर्तव्यस्य कर्मणो विचारः सत्फलं प्रसूते—कर्तव्य काम का विचार अच्छा फल देता है।

गुणबोधक—गोपाल ऐषम परीक्षायां प्रथमोभवत्—गोपाल इस वर्षकी परीक्षामें पहला हुआ।

स्थानबोधक—काष्ठमण्डपनगरात्पूर्वतः क्रोशमिते देव-पत्तने पशुपतेर्मन्दिरमस्ति—काठमाण्डू सहरसे कोशभर पूर्व देवपट्टनमें पशुपतिका मन्दिर है।

कालबोधक—सूर्ये हस्तमात्रमुपर्यारूढे स बहिर्गतः—सूर्ये हाथभर ऊपर उठनेपर वह बाहर गया।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रकारबोधक—उच्चैःकारमाक्रोशेनसह दूराद्धावं धावमहं श्रान्तोऽस्मि—ऊँची चिल्लाहटके साथ दूरसे दौड़ते दौड़ते मैं थक गया हूँ।

अवान्तर व्यूहगते मुख्ये नाम्नि विशेषणे।
अव्यये वाऽन्ययोगेन वाक्यांशोपि तथाविधः ॥११४॥

समूचा वाक्यांश नाम विशेषण अव्यय न होने पर भी अवान्तर पद समूहमें से मुख्य एक नाम विशेषण अव्ययमें अन्य पदोंका योग होनेसे समूचा वाक्यांश (क) नाम, (ख) विशेषण, (ग) अव्यय जैसा कहलाता है।

(क) 'मासमात्रमस्यौषधस्य नियमतः पानेन' एष रोग उपशाम्यति—महीनेभर इस औषधका नियमसे पान करनेसे यह रोग शान्त होता है।

(ख) 'विद्यां विनयं च सममात्रया दधानाः' पुरुषाः शोभन्ते—विद्या और विनय समानरूपसे धारण करने वाले पुरुष शोभा पाते हैं।

(ग) 'नगरस्यैकप्रान्तादपरप्रान्तं यावत्' महती रथ्यास्ति—शहरके एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्त तक बड़ी सड़क है।

एवं 'बहूनां दीनानां परिवाराणां स्वामिने' इदं देहि। 'एकादश्या व्रतं पूजां च कर्तुं गृहीतसङ्कल्पो' यजमानः पुरोहितमाजुहाव। 'छायाया अवयवानामितस्ततः सञ्चालनं दृष्ट्वा' बालका बिभ्यति, 'लगुडेन बलवत्पृष्ठतो मांसमाहृत्य' सपलाययौ, 'दिवाकरेण नभसो मध्यभागा दातपे प्रसार्यमाणे' गन्तुंनशक्यते। 'त्वयादत्ते औषधे सेवितेपि' मम रोगस्तथैवास्ति। 'शय्यायां तूलिकयाच्छन्नायां' मशका न बाधन्ते। 'वसन्ते प्रातः शाद्वले चत्वरे भ्रमणं' हिताय भवति।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

वाक्य किसको कहते हैं? वाक्यमें क्या क्या चाहिये? पदोंका

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

क्रम कैसा होता है? खण्डान्वय दण्डान्वय किसको कहते हैं? वाक्य-की पूर्ति किस किससे होती है? आख्यात कहां नहीं रहता है? वाक्यांश किसको कहते हैं? उसके कितने भेद हैं?

निम्नलिखित वाक्योंका खण्डान्वय करो—

वयं राज्ञः सिन्दूर यात्रायां उत्सवं द्रष्टुं गच्छामः। पृथिव्यामद्भुतानि वस्तूनि दृश्यन्ते। धर्मः सेवित आत्मानं सङ्कटाद्रक्ष्यति; वर्षासु नीला घनघटा गगनमाच्छादयति। कृषकाः शरदि सस्यैर्गृहमापूर्य सुखिनो भवन्ति। भक्त्या प्रसादिता देवा लोकानां मनोरथान्पूरयन्ति।

निम्नलिखित वाक्योंका अनुवाद करो और वाक्यांश का परिचय भी करो—

हिमगिरिरुपत्यकासु रमणीयानि राष्ट्राणि सन्ति। मात्रा स्नेहेन दत्तं स्वादु भवति। ग्रीष्मे पर्युषितस्य जलस्य नासिकयोपसि पानं प्रशंसन्ति वैद्याः। सौवर्णैस्तन्तुभिः परिष्कृतं राङ्कवं वस्त्रं महार्घं भवति। बहुभिर्मनुष्यैश्चिराय करणीयं कार्यं यन्त्रं क्षणेन निर्वर्तयति। लोके सत्यस्य प्रतिष्ठां कारयितुं पितुराज्ञां शिरसि निधाय चतुर्दशवर्षाणि वने उषित्वा रामः प्रत्याययौ। शास्त्रदृष्ट्या दूरं दूरतरमपि पश्यन्तो जना आत्मनो गुणानां गौरवेण सकले भूमण्डले महतीं ख्यातिं प्राप्नुवन्ति। पत्युर्वचनं यथातथमनुपालयन्त्यो भार्याः प्रिया भवन्ति।

राजाके दरबारमें नोकरी करके सम्मानके साथ रहना तलवारके पैने धारमें नाचनेके समान है। यह बात उनके कान में पहुँचने पर मेरा दुःख हटेगा। गन्दे कपड़े का गन्ध दूर रहने वाले को भी अच्छा नहीं लगता है। लोहेके कवच पहने हुए वीर अपनी वीरतासे किलेके द्वारको तोड़कर भीतर घुसे। इस बोझको पीठ पर लादकर कोश भर लेजाना कठिन है। सब परिवार नींदसे विचेत होने पर वृद्ध घरसे निकले। उनकी बातें सुनकर मेरा मन चञ्चल हुआ है। सरल हृदयसे दूसरेकी भलाईमें लगने वाले लोगोंकी प्रशंसा की जाती है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(२) कारक और विभक्ति

यथोचितं क्रियासिद्धौ हेतुभूतं तदन्वयि ।
कारकं कर्तृकर्मादिभेदतः षड्विधं मतम् ॥ ११५ ॥

क्रियाके निष्पादक क्रियामें अन्वय होने वाले कारक कहे जाते हैं। वे औचित्य और विवक्षाके अनुसारसे वाक्यमें रहते हैं। वे कर्ता कर्म करण सम्प्रदान अपादान अधिकरण ऐसे छ प्रकारके होते हैं।

	क्रिया (काम)	कर्ता (करनेवाला)	कर्म (कियाजाने वाला)	करण (साधन)
सकर्मक	गमन	जानेवाला	ग्रामादि	पादादि
	दान	देने ,,	गवादि	श्रद्धादि
	पाक	पकाने ,,	तण्डुलादि	काष्ठादि
अकर्मक	पतन	गिरने ,,		वेगादि
	शयन	सोने ,,		

सम्प्रदान (उद्देश्य)	अपादान (अवधि)	अधिकरण (आधार)
	गृहादि	देशकाल
ब्राह्मणादि		तीर्थादि
	वृक्षादि	भूमिआदि
		शय्यादि

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रथमा—

व्यापारस्याश्रयः[1] कर्ता तत्रोक्ते प्रथमा मता ।
निर्देशाह्वानयोश्चैषा, तृतीयानुक्तकर्तरि ॥ ११६ ॥

क्रियाके व्यापारका आश्रय अर्थात् जो करता है वह कर्ता होता है (क) कर्तृवाच्य आख्यात होनेसे उक्त कर्तामें प्रथमा और (ख) कर्म-वाच्य भाववाच्य आख्यात होनेसे अनुक्त कर्तामें तृतीया होती है (ग) इति शब्द दर्शक सर्वनाम, संख्यावाचक आदिसे अथवा उनके विना भी किसीका निर्देश करनेपर और (घ) सम्बोधनमें भी प्रथमा होती है ।

(क) रामो गच्छति—राम जाता है । अहमकरवम्—मैंने किया । सा पठति—वह पढती है । इ०

(ख) मया पठ्यते—मुझसे पढ़ा जाता है । रामेणाकारि—रामने किया । तेन शय्यते—उससे सोया जाता है । इ०

(ग) नारद इति जानाति—नारद ऐसा जानता है । रामः कृष्णः गोपालः एते गच्छन्ति—राम, कृष्ण, गोपाल ये जाते हैं ।

(घ) हे ईश्वर दयस्व—हे ईश्वर दया करो । भो राजन्—हे महाराज । हे बाल—ए बालक । इ०

द्वितीया—

क्रियाफलाश्रयः[2] कर्म, तत्रोक्ते प्रथमा मता ।
द्वितीयाऽनुक्त, आधारोधिशीङ्स्थासवसांचतत् ॥११७॥

---

१ सू० प्रतिपादिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा । स्वतन्त्रः कर्ता । कर्तृकरणयोस्तृतीया ।

२. सू० कर्तुरीप्सिततमं कर्म । अधिशीङ्स्थासां कर्म । उपान्वध्याङ्वसः । कर्मणि द्वितीया ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

क्रियाके फलका आश्रय अर्थात् जो किया जाता है वह कर्म होता है। (क) कर्तृवाच्य आख्यात होने से उक्त कर्म में प्रथमा होती है। (ख) कर्मवाच्य—आख्यात होनेसे अनुक्त कर्ममें द्वितीया होती है। (ग) अधिपूर्वक शीङ् स्था आस वस धातुकी क्रियाका आधार भी कर्म होता है। वह भी उक्त होनेपर प्रथमान्त, अनुक्त होनेपर द्वितीयान्त होता है।

(क) तेन पाठः पठ्यते—उससे पाठ पढ़ा जाता है। त्वमस्माभिरुच्यसे—तू हमसे कहे जाते हो। इ०

(ख) स पाठं पठति—वह पाठ पढ़ता है। रामो रावणमवधीत्—रामने रावणको मारा। इ०

(ग) बालः शय्यामधिशेते—बालक शय्यामें सोता है। द्विजः पीठमध्यास्ते—ब्राह्मण आसन पर बैठता है। सिंहा वनमधिवसन्ति—शेर जङ्गलमें रहते हैं। विष्णु वैकुण्ठलोकमधितिष्ठति—विष्णु वैकुण्ठ लोक में रहते हैं। कर्मवाच्य—बालकेन शय्याधिशय्यते। सिंहैर्वनमध्युष्यते। विष्णुना वैकुण्ठोऽधिष्ठीयते। एवम्—पुष्पाणि विकसन्ति। रामो गोपाल उभौ गच्छतः। गौरश्वो महिषः सर्वे पशवः। सितच्छत्रं चामरे च त्रिभिर्नृपशोभा भवति। अयि प्रिय सखि। राज्ञा पारितोषिकं दीयते। वीरेण शत्रवो जीयन्ते। राजा पर्यङ्कमधितष्ठौ। अहं नगरमधिवसामि। त्वां मूर्ख इति मन्ये। गुरुणा वयं शिक्ष्यामहे। मत्स्यास्तडागमध्यासते। प्रिय मित्र भवान्मामनुमन्यताम्।

---

१. संस्कृतमें धातु विशेष शब्द विशेषके योगसे विभक्ति विशेष होनेपर भी हिन्दीमें प्रायः सामान्य नियमानुसार विभक्ति होती है। यह पीछे भी ख्याल करना।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मता द्वितीया वीप्सायां[1], व्याप्तौ कालाध्ववाचकात् ।
योगेधिगादेः प्रत्यादेः सर्वतः प्रभृतेरपि ॥११८॥

(क) वीप्सामें (द्विरुक्ति करके प्रत्येकको कहनेमें) (ख) किसी क्रियागुणद्रव्यकी व्याप्ति (भरतक) दिखानेपर अकर्मक क्रियामें काल वा मार्गवाचक शब्दमें (ग) धिक अन्तरा अन्तरेण शब्द, (घ) लक्षण (उद्देश्य) आदि अर्थबोधक 'प्रतिपरि अनु अभि' शब्द, (ङ) सर्वतः परितः उभयतः अभितः उपर्युपरि अधोधः' शब्द इनसे मिले हुए शब्दोंमें भी द्वितीया होती है ।

(क) गृहं गृहं प्रति गच्छति-घर घर-(प्रत्येक घरमें)-जाता है । वृक्षं वृक्षं परिसिञ्चति हर एक पेड़को सींचता है । राष्ट्रं राष्ट्रं प्रति बाधते दुर्भिक्षम्-प्रत्येक देशको अकाल बाधा देता है ।

(ख) क्रोशंगिरिः-कोश भर पहाड़ है । योजनं कुटिलानदी-चार कोश तककी टेढी नदी । मास मास्ते-महिना भर रहता है । वर्षं वर्त्तते-साल भर रहता है ।

(ग) त्वां धिक्-तुझे धिक्कार । गृहं रथ्यां चान्तरा उद्यानमस्ति-घर और सड़क के बीचमें बगीचा है । राजानमन्तरेणकः शक्नोति—राजाको छोड़कर कौन शकता है ।

(घ) गृहं प्रति-घरकी ओर । राममनु-रामके पीछे । वीरः शत्रुमभि याति-वीर शत्रुकी ओर टूट पड़ता है ।

---

१ सू० लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासुप्रतिपर्यनवः । कर्मप्रवचनीययुक्तेद्वितीया । कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे । वा० उभसर्वतसोः कार्याधिगुपर्यादिषुत्रिषु । द्वितीयाम्रेडितान्तेषुततोन्यत्रापिदृश्यते । अन्तरान्तरेणयुक्ते । वा० अकर्मकधातुभिर्योगेदेशः कालोभावोगन्तव्योध्वाचकर्मसंज्ञक इति वाच्यम् ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ङ) गृहं सर्वतः-घर की सब ओर। उपवनं परितः-बगीचेकी चारों ओर। पुस्तकमुभयतः-पुस्तककी दोनों ओर। वनमभितः क्षेत्रम्-वनकी सब ओर खेत। गगनमुपर्युपरि उड्डीयते पतङ्गः-आकाशके उपरऊपर चिड़िया उड़ती हैं। भूमिमधोधः प्रस्तरः-जमीनके नीचेनजदीकमें पत्थर है।

एवं पुरुषं पुरुषं याचते। शतयोजनं विस्तीर्णं। दिनमधीते। लक्ष्मणो राममनुययौ। गृहं परितः प्रकारः। गिरिमधोधो गङ्गा प्रवहति। सर्वतो नगरंनागरिका भ्रमन्ति। धिङ्मूर्खम्। सिंहः करिणमभियाति। पुरंवनं चान्तरा मार्गोऽस्ति। सूर्यमन्तरेणको जगत् प्रकाशयति। संवत्सरं ब्रह्मचर्यं चरामि। गृहं गृहं भिक्षते।

तृतीया—

करणं[1] साधनं, तत्र तृतीयाऽङ्गे विकारिणि।
प्रकृत्यादौ सहोनालमर्थयुक्तेऽथलक्षणे ॥११६॥

क्रियाका साधन अर्थात् जिसके द्वारा क्रिया हो वह करण होता है। (क) करणमें सर्वत्र तृतीया होती है। (ख) किसी अङ्गके कभी वेसीसे शरीरका विकार दिखानेपर विकृतअङ्ग वाचक शब्दमें, (ग) 'प्रकृति प्राय गोत्र' आदि कुछ शब्दोंमें, (घ) स्पष्ट वा गुप्त सहार्थक ऊनार्थक अलमर्थक शब्दोंसे मिले हुए शब्दोंमें, (ङ) और किसीके लक्षण (ज्ञापक) चिन्हके बोधक शब्दोंमें भी तृतीया होती है।

(क) स लेखन्यालिखति-वह कलमसे लिखता है। त्वंरथेन गच्छ-तू गाड़ीसे जा, चक्षुषा पश्य—आँखसे देखो। वस्त्रेणभाण्डं पिधेहि-कपड़ेसे वर्तन ढाकदो।

---

१. सू० साधकतमंकरणम्। कर्तृकरणयोःस्तृतीया। येनाङ्गविकारः। वा० प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्। गम्यमानापिक्रियाकारकविभक्तीनां-प्रयोजिका। इत्थंभूतलक्षणे।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ख) चक्षुषा काणः—आँखका काना। कर्णेन बधिरः कानका बहरा। मुखेन त्रिलोचनः मुखकातीन आँखवाला। पादेन खञ्जः-पाँवका लंगड़ा।

(ग) प्रकृत्या सुन्दरः-स्वभावका सुन्दर। प्रायेण मूर्खः—बहुधामूर्ख। गोत्रेण गार्ग्यः-गर्गगोत्री।

(घ) तेन सह-उसके साथ। पित्रा सार्द्धम्-पिताके साथ। एकेन ऊनः एकसे कम, पादेन हीनः-एकपाव कम, अलं श्रमेण-श्रम न करो। कृतं-तपसा-तपसे बस।

(ङ) जटाभिस्तापसः-जटासे तपस्वी। पुस्तकेन छात्रः-पुस्तकसे विद्यार्थी।

एवं—हस्तेन गृहाण। मनसा विचारय। वीराः शौर्येण धनं मानं च लभन्ते। निसर्गेण दुष्टो मुद्गरेण प्रहरति। पाणिना षडङ्गुलो न शुभाय। अनेन सार्द्धमायाहि। दण्डेन ब्रह्मचारी। अलं महीपाल तव श्रमेण। त्वयासहनिवत्स्यामि। कृतमतिप्रसादेन चक्षुषान्धो न पश्यति। माठरोऽस्ति गोत्रेण। शिरसाज्ञां वहाम्यहम्। किं बहुना।

चतुर्थी—

यस्मैदानं[1], स्पृहा, श्लाघा, शापः क्रोधो रुचिः, स्थितिः।
क्रिया यदर्था, तत्संप्रदानं, तत्र चतुर्थिका ॥१२०॥

(क) जिसको कुछ दिया जाता है वह, (ख, जिसकी स्पृह धातुसे चाहता, श्लाघ धातुसे प्रशंसा, शप धातुसे शाप, उपसर्ग रहित क्रोधार्थक धातुसे क्रोध, रूच्यर्थक धातुसे प्रीति स्था धातुसे रहना, दिखायी जाती है वह, (ग) और जिसके लिए कोई क्रिया हो वह भी

---

१. सू० कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्। स्पृहेरीप्सितः। श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः। क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यंप्रतिकोपः। रुच्यर्थानां प्रीयमाणः। वा, क्रिययायमभिप्रैतिसोऽपि संप्रदानम्। चतुर्थी सम्प्रदाने।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सम्प्रदान होता है। सम्प्रदान में चतुर्थी होती है।

(क) दीनेभ्योऽन्नं देहि—गरीबोंको अन्न दो। देवाय पुष्पाण्यर्पयति—देवताको फूल चढ़ाता है। तुभ्यं रूप्यकं वितरामि—तुम्हें रुपया देता हूँ। कस्मै पुस्तकं दित्ससि—किसको पुस्तक देना चाहते हो। राज्ञे धन्यवादं समर्पयति—राजा को धन्यवाद अर्पण करता है।

(ख) पुष्पेभ्यः स्पृहयामि—फूल चाहता हूँ। भृत्याः स्वामिने श्लाघन्ते—नोकर मालिकको सराहते हैं। शत्रवे शपते—शत्रुको शाप देता है। दूर्योधनः पाण्डवेभ्योऽद्रुह्यत्। दुर्योधनने पान्डवोंको द्रोह किया। हरये रोचते भक्तिः—हरिको भक्ति रुचती हैं। गोपालाय तिष्ठते—गोपालके लिये रहता है।

(ग) द्रव्याय प्रवसति—धनके लिए प्रवास जाता है। युद्धाय सन्नह्यते—युद्धके लिए तैयार होता है। विद्यायै काशीं गच्छति—विद्याके लिये काशी जाता है।

भिक्षवे भिक्षां ददामि। अहं तुभ्यं स्पृहयामि। स तस्मै न श्लाघते। कर्मणे प्रवर्तते। रामाय मोदको रोचते। रिपवे क्रुध्यति। गुरुः शिष्येभ्यो न कुप्यति। धनाय राजानं सेवते। न रोचते वनं तेभ्यः। कृष्णः कंसायाकुप्यत्। अस्मभ्यं कार्याणि दीयन्ताम्। कर्मणे प्रभवत्येषः। रामायापूपः स्वदते।

मता[१] चतुर्थी तादर्थ्ये, तुमर्थे भाववाचके।
नमः स्वस्त्यादि योगे च तुमन्तेऽन्तर्गते तथा ॥१२१॥

(ज) तादर्थ्य अर्थात् प्रकृति विकृतिभाव होने पर विकार बोधक शब्दमें, (ख) तुमुन्का अर्थ देनेवाले भाववाचक कृदन्तमें, (ग) नमः

---

१. सू० चतुर्थीतदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः। तुमर्थाच्चभाववचनात्। नमः स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाश्च। क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्वस्ति स्वाहा स्वधा अलं समर्थ शक्त हित सुख' शब्दके साथ मिले हुए शब्दोंमें, (घ) तुमुन्नन्त क्रिया भीतर गुप्त रहने पर कर्ममें भी चतुर्थी होती है।

(क) कुण्डलाय सुवर्णं—कुण्डलके लिए सोना—खट्वायै काष्ठं—खटियाके लिए लकड़ी। गृहाय इष्टकाः—मकानके लिये ईंटे।

(ख) भोजनाय (भोक्तुं) गच्छति—खानेके लिये जाता है। अध्ययनाय (अध्येतुं) प्रवर्तते—पढनेके लिये लगता है। प्रस्थानाय (प्रस्थातुं) संनद्धः—चलनेके लिए तैयार।

(ग) हरये नमः—हरिको नमस्कार। राज्ञे स्वस्ति—राजाको कल्याण हो। इन्द्राय स्वाहा—इन्द्रको दिया जाता है। पितृभ्यः स्वधा—पितरों को दिया जाता है। दैत्येभ्यो हरिः अलं—समर्थः-शक्तः। दैत्योंके लिए समर्थ हरि। गवे हितं—गौके लिए हित। प्रजायै हितं—प्रजाके लिये हित। (घ) फलेभ्यः (फलान्यानेतुं) गच्छति—फल लानेके लिये जाता है। वस्त्राय (वस्त्रं क्रेतुं) द्रव्यं देहि—कपड़ा खरीदनेके लिए द्रव्य दो। धनाय (धनमर्जयितुं) पठति—धन कमानेके लिए पढ़ता है।

एवं—परित्राणाय साधूनाम्, दुदोह गां स यज्ञाय, मात्रेस्वधा, नमस्ते, नमःशिवाय, भाराय सन्नद्धः, युष्मभ्यंसुखं भूयात्। काव्यं यशसे भवति वनाय गां मुमोच। समिदाहरणाय वयं प्रस्थिताः, दारुभ्यो याति, स्वस्ति सर्वेभ्यः। पत्निकायै काष्ठमानय।

पञ्चमी—

यतो[1] विभागो, भी रक्षा, निवृत्तिश्च्युतिरुद्भवः।
घृणान्तर्धिरधीतिर्वाऽपादानं तत्रपञ्चमी ॥११२॥

---

१. सू० ध्रुवमपायेऽपादानम्। भीत्रार्थानांभयहेतुः। वारणार्थानामीप्सितः। आख्यातोपयोगे। भुवः प्रभवः। जनिकर्तुः प्रकृतिः। अन्तर्धौयेनादर्शनमिच्छति। अपादाने पञ्चमी। वा० जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) जिसको अवधिमान कर अलग होनेकी क्रिया हो वह, (ख) जिससे डरना बचना हटना चूकना पैदा होना शरमाना छिपना ये क्रियाएं हों वह भी अपादान होता है। अपादानमें पञ्चमी होती है।

(क) रथात्पतति-गाड़ीसे गिरता है। सोपानाद्भ्रश्यति-सिंढीसे गिरता है। ग्रामादागच्छति-गांवसे आता है। सार्थात् हीयते-साथसे छूटता है।

(ख) व्याघ्राद्बिभेति-बाघसे डरता है। विपदो रक्ष-आपतसे बचाओ, अधर्मान्निवर्तध्वम्-अधर्मसे हटो। क्षेत्राद्गांनिवारयति-खेतसे गायको हटाता है। भ्रातुरन्तर्हितः-भाइसे छिपा हुआ। तस्मात्काव्यमधीये-उनसे काव्य पढ़ेंगे। लाभाल्लोभ उद्भवति-लाभसे लोभ पैदा होता है। सज्जनः पापाज्जुगुप्सते-सज्जन पापसे घृणा करता है।

एवं-वृक्षेभ्यः पत्राणि पतन्ति। गृहान्निर्गतः, कार्याद्विरमन्ति। राजा प्रजाः कुकर्मणो निवारयति। नगरात्पलायितः। अधिकारात्त्वं न च्यवसे। घृतं भाण्डात्क्षरति। हिमवतो भागीरथी निःसरति, चौरादन्तर्धत्ते। भोगेभ्यः स्पृहयालवः। गोमयाद्वृश्चिको जायते। आत्रेयाद्वेदमधीयानः। मार्गाच्च्युतो नासौ। त्वं भार्याया अपि जिहेषि।

[1]ल्यबन्तगुप्ताववधावपेक्षायां च पञ्चमी।
युक्तेऽप्यन्यप्रभृत्यर्थदिक्छब्दाङ्बहिरादिके ॥१२३॥

(क) ल्यबन्तक्रिया दबनेपर उसके कर्म वा अधिकरणमें, (ख) अवधिमें, (ग) अपेक्षाके विषयमें, (घ) अन्यार्थक (अन्यभिन्नइतर आदि) प्रभृत्यर्थक (प्रभृतिआरभ्य आदि) दिक्छब्द, अर्थात् अब दूसरा अर्थ होने पर भी दिशाको कह सकने वाले शब्द, मर्यादाबोधक 'आङ्बहिः

१. सू० ल्यब्लोपेकर्मण्यधिकरणेच। वा० यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पञ्चमी वक्तव्या। पञ्चमीविभक्ते। अन्यारादितरर्तेदिक्छब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उत्तरम् अनन्तरम्' आदिके साथ मिलने वाले शब्दोंमें भी पञ्चमी होती है।

(क) प्राकारात् (प्राकारमारुह्य) पश्यति-दीवालपर चढ़कर देखता है। गवाक्षात् (गवाक्षेस्थित्वा) ददाति-खिड़कीमें बैठकर देता है। आसनादाह्वयति-आसनमें बैठकर बुलाता है। वधूः श्वशुरात् (श्वसुरंवीक्ष्य) लज्जते—वहू शसुरको देखकर शरमाती है।

(ख) गृहादुपवनपर्यन्तं—मकानसे बगीचेतक। नगराद्वनं यावत्-सहरसे वनतक, चैत्राद्वैशाखावधि-चैत्रसे वैशाख तक।

(ग) तस्मादहंसुन्दरः—उससे-उसकी अपेक्षासे-मैं सुन्दर हूँ। रामात्कृष्णश्चतुरः-रामसे कृष्ण चालाक है। तस्या इयं सुशीला-उससे यह सुशील है।

(घ) तस्मादन्यः-भिन्नः इतरः-उससे दूसरा। चैत्रात्प्रभृति-चैत्रसे लेकर मार्गादारभ्य-रस्तेसे लेकर। माघात्प्राक्-माघसे पहले। आवनात्-वनतक। गृहाद्वहिः-मकानसे बाहर: गतवर्षादनन्तरम्-गयेसालके बाद। रात्रेरनन्तरम्-रातके बाद।

एवं-कलिकातायाः देहलीपर्यन्तम्। कटकादटकावधि। शैशवात्प्रभृति पोषिताप्रिया। आद्वाराद्विकीर्णाः शर्कराः। ग्रामाद्बहिर्नगच्छ। प्राङ्नाभिवर्धनात्। पाणिपीडनविधेरनन्तरम्। आपरितोषाद्विदुषाम्। आमूलाच्छ्रोतुमिच्छामि। तस्मादिदंनान्यत्। त्वत्तोप्यहंधूर्तः। काव्याद्व्याकरणं कठिनम्। वानरान्मानवो धीमान्।

षष्ठी—

भेदके[1] हेतुशब्दे च षष्ठी, सा क्वापि कारके।
आशिष्यायुष्यकुशलाद्यर्थयोगे चतुर्थ्यपि ॥१२४॥

१—सू० षष्ठीशेषे। षष्ठी हेतु प्रयोगे। वा० कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्रविवक्षायांषष्ठी। अधिगर्थदयेशांकर्माणि। आशिष्यायुष्यमद्रभद्र कुशलसुखार्थहितैः।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) भेद्यके साथ अनेक किसिमके सम्बन्ध होनेपर भेदकमें षष्ठी होती है। (ख) 'हेतु' शब्द में और सामान्य सम्बन्ध मात्र दिखानेपर कारकमें भी षष्ठी होती है। (ग) आशीर्वादमें आयुष्यभद्र कुशल सुख हित अर्थके शब्दोंके योगमें षष्ठी चतुर्थी भी होती है।

(क) कार्यकारणभाव—मम पिता। हिमवतोनदी। राधाया जननी।

अवयवावयविभाव—वृक्षस्य पत्राणि। वस्त्रस्य प्रान्तः। नद्याः सलिलम्।

धर्मधर्मिभाव—वस्त्रस्य रूपं। तस्य विद्या। फलानां रसः। गुरोः पाण्डित्यम्।

स्वस्वामिभाव—राज्ञः पुरुषः। मम वस्त्रम्। तवाश्वः, रामस्य सेवकः तव पत्नी।

प्रकृतिविकृतिभाव—सुवर्णस्य कुण्डलं काष्ठस्यभाण्डः लोहस्यमुकुरः

आधाराधेयभाव—जलस्य पात्रं। पशुपतेर्मन्दिरम्। तैलस्यभाण्डः।

(ख) अन्नस्य हेतोर्वसति—अन्नके कारण रहता है। मातुः (मातरं) स्मरति—माताको याद करता है। फलानां (फलैः) तृप्तः—फलसे तृप्त।

(ग) रामस्य रामाय वाऽऽयुष्यं भूयात्। तव तुभ्यंवा आयुष्यं कुशलमारोग्यंसुखमानन्दो भद्रं कल्याणं प्रयोजनं पथ्यं हितं वा भवतु।

एवं-अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छति। लोहस्य पात्रमानय। काष्ठस्य पर्यङ्कः। अस्मार्पीज्जलनिधिमन्थनस्य शौरिः। अपांहितृप्ताय न वारिधाराः। भवद्भ्यो हितं भवतु। ईश्वरः सुखं ददातु। विद्याया हेतोः। काशीमागतोस्मि। भ्रातुः कञ्चुकं मम मञ्जूषायामस्ति, तस्याः पुत्र्यः आम्रस्य फलानि भक्षयन्ति। ममोष्णीषं काष्ठस्य मञ्चेऽस्ति।

सप्तमी—

क्रिया[1]धारोऽधिकरणं, सत्यर्थेऽत्रापि सप्तमी।
अनादरे ऽत्र निर्धारे, स्वाम्यादियुजि षष्ठ्यपि ॥ १२५ ॥

१—सू० आधारोऽधिकरणम्। सप्तम्यधिकरणे च। यस्य च

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) देशकाल वस्तु विषय आदि क्रियाका आधार अधिकरण होता है, अधिकरण में सप्तमी होती है। (ख) सत्यर्थमें अर्थात् एक क्रिया से दूसरी क्रिया के काल दिखाने में भी सप्तमी होती है। (ग) उसी सत्यर्थ में अनादर विशेष समझा जाने पर, (घ) निर्धारण में अर्थात् किसी वर्ग में से कोई गुण क्रिया जाति वाले की विशेषता दिखाने में, (ङ) 'स्वामी ईश्वर साक्षि प्रतिभू प्रसूत आयुक्त कुशल आसन्न प्रवीण पटु पण्डित तत्पर धूर्त' आदि शब्दों के योग में भी षष्ठी वा सप्तमी होती है।

(क) कटे उपविशति—चटाइ पर बैठता है। रात्रौ गतः—रात में गया। भाण्डे स्थापय-वर्तन में रखो। मोक्ष इच्छास्ति-मोक्ष के विषय में इच्छा है। उषसि पुष्पाणि विकशन्ति-सवेरे फूल खिलते हैं। (ख) सूर्ये उदिते निरगमम्—सूर्य उगने पर निकला। चन्द्रे दृश्यमाने तमोन भवति—चन्द्र दीखे जाने पर अंधियारा नहीं होता है। वायौ वाति स्वेदः शुष्यति—हवा वहने पर पसीना सूखता है। (ग) परिजने रुदति, परिजनस्य रुदतो वा प्राव्राजीत्—रोते हुए परिवार की उपेक्षा करके वह सन्यासी हो गया। जनेषु पश्यत्सु जनानां पश्यतां वा तस्करो वेगेन पलाययौ—लोग देखते रह गए वेग से चोर भागा।

(घ) नृणां नृषु वा ब्राह्मणः पूज्यः—मनुष्यों में से ब्राह्मण पूज्य हैं। वदतां वदत्सु वा मधुरभाषी प्रियः—बोलने में से मीठा बोलने वाला प्यारा होता है।

(ङ) गृहस्य गृहे वा स्वामी—घर का मालिक। तस्य तस्मिन् वा प्रतिभूः—उसकी जामीन। कर्मणः कर्मणि वानिपुणः—काम में कुशल।

एवं-सर्वद्रव्येषु विद्योत्तमा, गवां कृष्णा पयस्विनी, छात्रेषु मैत्रः पटुः, पितरि व्यतीते पुत्रः पित्र्यं पदमारोहति, वैशाखे मालती विकसति,

---

भावेनभावलक्षणम्। षष्ठीचानादरे। यतश्चनिर्धारणम्। स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च। आयुक्तकुशलाभ्यांचासेवायाम्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रात्रौ दधि न भक्ष्यम्, स्वदेशे प्रेम वर्धय, राजनीतौ ज्ञानवानयम्, एवं तयोर्विवदमानयोरहं सुप्तः, नन्दाः पशव इह हताः पश्यतो राक्षसस्य त्वमस्य विवादस्य साक्षी, कोऽस्मिन्द्रव्ये प्रतिभूः, विदग्धानामग्रणीरसौ, नाथे कुतस्त्वय्यशुभं प्रजानाम्, नगरे विद्यमाने ग्रामे रत्नपरीक्षा।

अनेक विभक्ति—

हेतौ तृतीयाऽत्र गुणे स्तोकादौ च सपञ्चमी।
विनायोगे द्वितीयापि दूराद्यर्थे ससप्तमी॥ १२६॥

(क) क्रिया भिन्न के कारण में तृतीया होती है। (ख) प्रायः स्त्री लिङ्ग भिन्न गुण स्वरूप कारण में और स्तोक अल्प कृच्छ्र' यिन कारणों में भी तृतीया और पञ्चमी होती है। (ग) विना शब्द के योग में तृतीया पञ्चमी द्वितीया भी होती है। (घ) दूरार्थक समीपार्थक शब्द में तृतीया पञ्चमी द्वितीया सप्तमी भी होती है।

(क) दण्डेन घटः—लाठी से घडा। धान्येन धनं—धान से धन। पुण्येन ब्रह्मणः—पुण्य से ब्राह्मण।

(ख) जाड्येन जाड्याद्वा बद्धः—मूर्खता से बधा हुआ। स्तोकेन स्तोकाद्वा मुक्तः—थोड़े से छुडा हुआ।

(ग) रामेण रामाद्रामं वाविना—राम के विना। विना विद्यया विद्याया विद्यां वा—विद्या के विना।

(घ) ग्रामस्य दूरेण दूरात् दूरं दूरे वा—पर्वतः—गांव से दूर पर्वत है। नगरस्य अन्तिकेन अन्तिकात् अन्तिकमन्तिके वोपवनम्—शहर के नजदीक बगीचा है।

एवं भाग्येन पण्डितः। कृच्छ्रेण नीरोगो जातः। गुणैर्महान्। धनं विना किमपि न लभ्यते। रथ्यायाः समीपेपाठशाला। धनेन कुलम्। अल्पेन विकलः, विद्यया सुन्दरः, कस्त्वां विना शक्ष्यति। विना कारणं क्रोधो न युज्यते।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

युक्ते षष्ठ्यतसर्थान्ते, दूराद्यर्थे सपञ्चमी ।
एनबन्ते सद्वितीया, सतृतीया समार्थके ॥ १२७ ॥

(क) 'अतसुच्' वा उसके अर्थके 'अस्ताति अति असि' प्रत्ययान्त के योग में षष्ठी, (ख) दूरार्थक समीपार्थक के योग में षष्ठी और पञ्चमी, (ग) एनप् प्रत्यायन्त के योग में षष्ठी और द्वितीया, (घ) तुल्यार्थक के योग में षष्ठी और तृतीया होती है।

(क) ग्रामस्य दक्षिणतः—गांव के दक्षिण। वनस्योत्तरतः—वन के उत्तर। गृहस्य उपरि उपरिष्टात्—घर के ऊपर। मञ्चस्याधः—अधस्तात्—मेज के नीचे।

(ख) ग्रामस्य ग्रामाद्वा दूरं—गांव से दूर। नगरस्य नगराद्वा समीपं—शहर के नजदीक।

(ग) दक्षिणेन ग्रामं ग्रामस्य वा—गांव से दक्षिण। अधरेण मञ्चं मञ्चस्य वा।

(घ) रामस्य रामेण वा तुल्यः—राम के तुल्य। तस्य तेन वा सदृशः—उसके समान।

एवं मञ्चस्य पुरः, गृहस्य पुरस्तात्, गतमुपरिवनानाम्। चाणक्यस्योपरि द्वेषः, धनपति गृहादुत्तरेण। दक्षिणेन तु श्वेतस्य निषधस्योत्तरेण तु, धनदेन समस्त्यागे। दक्षिणेन वृक्षवाटिकामालापः श्रूयते, यः परस्ताद्यतीनाम्। खट्वाया अधः पुस्तकम्।

चतुर्थ्यपि मता क्वापि मन्यगत्यर्थकर्मणोः ।
हेत्वर्थके सत्यदादौ प्रायः सर्वा विभक्तयः ॥ १२८ ॥

---

१. सू० हेतौ। विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्।

२. सू० षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन। दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्। एनपा द्वितीया। तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम्।

३. सू० मन्य कर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु। गत्यर्थकर्मणि

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) अनादर दिखाने पर मननक्रिया का भिन्न कर्ममें और चेष्टा रूप गमन क्रिया का 'नो' आदि शब्द विशेष से भिन्न मार्ग भिन्न कर्म में द्वितीया चतुर्थी भी होती है। (ख) त्यदादि सहित करणार्थक शब्दों में भी प्रायः सब विभक्तियां होती हैं।

(क) त्वां तृणं तृणाय वा मन्ये—तुमे तिनका समझता हूं। असौ लक्षपतिमपि क्षुद्रं क्षुद्राय वा मन्यते। ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति—गाव जाता है। वनं वनाय वा याति—वन जाता है।

(ख) किं कारणं, को हेतुः, तेन निमितेन, यस्मात्कारणात्, कस्मिन्प्रयोजने कस्मै अर्थाय।

एवं-तस्मात्कारणात्, एतस्मिन्निमित्ते, कस्माद्धेतोः, अनेन हेतुना तृणाय मन्यते सर्वान्, स कं तृणममंसत, भारमपि तूलं मन्यन्ते साहसिकाः।

विशेषणे[1] लिङ्गसंख्ये विभक्तिश्च विशेष्यवत्।
क्रियाविशेषणे[2] क्लीवद्वितीयैकत्वमुच्यते ॥ १२६ ॥

द्वितीया चतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि। सर्वनाम्नस्तृतीया च। वा० निमित्तपर्याय प्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम्।

१. विशेषण व विशेष्य एक ही वस्तु को भिन्न भिन्न प्रकार से कहते हैं इसलिये दोनों में लिङ्ग वचन विभक्तियों की समानता होती है। वेदाः प्रमाणम्, मैथिली रामदाराः, मेनका नामाप्सरसः, ऐसे विशेष स्थलों में मात्र भिन्नता होती है। हिन्दी में तो विशेषण शब्दों में तो विभक्ति चिन्ह नहीं रहते हैं। केवल आकारान्त विशेषण अपना विशेष्य प्रथमा बहुवचन वा विभक्ति प्रत्ययान्त होने पर एकवचन में भी एकारान्त; स्त्रीलिङ्ग विशेष्य हो तो ईकारान्त होता है। साधवो वालकाः—अच्छे लड़के, साधुं वालकम्-अच्छे लड़के को, साधून् वालकान्-अच्छे लड़कों को, साध्वी बालिका-अच्छी लड़की, साध्व्यो वालिकाःअच्छी लड़कियां, तेषां जनानाम्-उन पुरुषों का, सर्वेषां लोकानां-सब लोकों का।

२. क्रिया विशेषणानां क्लीवत्वं कर्मत्वमेकत्वं च।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) विशेषण शब्दों में विशेष शब्दों को छोड़कर सर्वत्र अपने विशेष्य के समान लिङ्ग वचन विभक्तियाँ होती हैं। (ख) क्रिया विशेषण बने हुए विशेषण शब्दों में तो नपुंसक लिङ्ग द्वितीया का एकवचन मात्र होता है।

(क) महान् पुरुषः-बड़ा आदमी, महती छाया-बड़ी छाह, महान्ति कुलानि-बड़े कुल, सुशीलाया नार्याः-सुशील स्त्री का, मेधाविनश्छात्रान्-बुद्धिमान् शिष्यों को, केन पुरुषेण -किस आदमी से, द्वयोर्बालकयोः-दो बालकों को। तिसृभ्यः स्त्रीभ्यः-तीन स्त्रियों को।

(ख) मधुरं कथयति-मीठास के साथ कहता है। कुटिलं निरीक्षते-टेडा करके देखता है। सहर्षमागच्छति-खुसी के साथ आता है। शोभनं कुरु-अच्छी तरह कर। बद्धाञ्जलि प्रणमति-अञ्जलि जोड़कर प्रणाम करता है। साधु तत्समपद्यत-वह अच्छी तरह हुआ।

एवं-हिमेनाच्छन्नस्य गिरेः शीतः पवनः, दयालवो गुरवः प्रियान् शिष्यान् स्निग्धया दृष्ट्या पश्यन्ति, युद्धे सन्नद्धाः सैनिकाः, नागरिकेषु पुरुषेषु सविशेषं सभ्यता दृश्यते, तेन वयस्येन सप्रेमाहमाहूतः, सूक्ष्मं विचारय, ज्वलत्यग्नौ पतङ्गवत्, एष निर्भयमुत्प्लवते, रम्येषूपवनेषु यथेच्छं विहर, महत्यामपि पीडायां महान्तो धीरमासते, मा ब्रूहि दीनं वचः, अविरतं मेघो वर्षति।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

कारक कितने हैं। तादर्थ्य में कौन विभक्ति होती है। सति सप्तमी कैसी होती है। विशेषणों में लिङ्ग वचन विभक्ति कैसी होती है। तृतीया विभक्ति कहां कहां होती है। अपादान कैसे होते हैं। क्रिया विशेषण और विशेषणों में क्या विशेष है। नाम मात्र लेने में कौन विभक्ति होती है। दूरार्थक समीपार्थक में उनके योग में भी कौन कौन विभक्तियां होती हैं। सम्प्रदान किसको कहते हैं। षष्ठी कहां होती है

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है, अपेक्षा निर्धारण अवधारण में कौन विभक्ति होती है। सह विना प्रति आ के योग में कोन विभक्ति होती हैं। नीचे के वाक्यों में विभक्तियों का उपपादन कर अनुवाद करो—

जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ। स राज्यं पुत्राय दत्वा वनं जगाम, प्राणाद्वायुरजायत। गुरोः सेवायाः प्रशस्यं किमस्ति। त्वं जीव शरदां शतम्। बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठाः। लतायां पूर्वलूनायां प्रसूनस्योदयः कुतः। कथमन्ये करिष्यन्ति पुत्रेभ्यः पुत्रिणः स्पृहाम्। अलमतिसङ्कोचेन। माता पित्रं पिता चेति स्वभावात्त्रितयं हितम्। उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये। मौनात्सत्यं विशिष्यते। स्वरेण राममनुकरोत्येषः। मरणादहं न बिभेमि। पश्यतस्सुतेष्वहं निर्गतोऽस्मि। धिङ्मां मूढम्। दुदोह गां स यज्ञाय। लोकापवादं परिहर। क्रमेण सुप्तामनु संविवेश। यमुना त्रिस्रोतसंचान्तरा। लोभेन बुद्धिश्चलति।

मोहन से रमेश चतुर है। सब देवताओं में इन्द्र तेजस्वी हैं। वन के चारों ओर खेत है। ये फूल सुन्दर हैं। बड़ी नदी में बड़े तरङ्ग होते हैं। पुण्य से स्वर्ग मिलता है। उस लड़ाई में अनेक सिपाही मारे गये। सब चिड़ियां उस पेड़ की शाखाओं से उड़ीं। राजा ने शहर के रक्षकों को बुलाया। यह उसको चाहता है। जाने के लिये मैं तैयार हूं। उसके देखते ही वह भागा। फूल खिलने पर सुगन्ध फैलता है। अपराध के विना गुरु तुझे न मारेंगे। उससे यह अच्छा है। सावधान होकर अभ्यास करो। मैं उससे नहीं डरता हूं।

———

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(३) कारक विभक्तियों में विशेष

कृदन्त कारक—

गौणी क्रिया कृदन्तेन, मुख्याऽऽख्यातेन बोध्यते ।
आख्यातवत्कृदन्तानां निर्विशेषं तु कारकम् ॥ १३० ॥

वाक्य में आख्यात की क्रिया मुख्य (प्रधान), कृदन्त की क्रिया गौण (अप्रधान) होती है। कृदन्त क्रिया के कर्ता व कर्म में होनेवाले विशेष के अलावा आख्यात के व कृदन्त के कारकों में विभक्तियां समान होती हैं।

रामो बाणेन रावणं हत्वा लोकानां दुःखं जहार–रामने बाणसे रावण को मार कर लोगों का दुःख हरण किया। प्रातःकाले उपवने भ्रमणं हितं भवति—सवेरे बगीचे में घूमना हितकर होता है। विडालाद्भीतो मूषको वेगेनोत्प्लुत्य विले विवेश—विलाव से डराहुआ मूषक वेग से उछलकर विल में घुसा। तेन दत्ता लेखन्यभज्यत-उससे दियी गई कलम टूट गई।

षष्ठी[1] निष्ठाव्ययाद्यन्यकृदन्तकर्तृकर्मणोः ।
कर्मण्येवोभयप्राप्तौ षष्ठी वा कृत्यकर्तरि ॥ १३१ ॥

(क) वर्तमानार्थक से भिन्न 'क्त' प्रत्यय, 'क्तवतु शतृशानच् उ उकञ् इष्णुच् खल् तृन् (तच्छीलार्थक)' प्रत्यय, भविष्यदर्थके 'अकणिनि' प्रत्यय, क्त्वाल्यप् तुमुन्' प्रत्यय यिनको छोड़कर और कृदन्त क्रिया के

१—सू० कर्तृकर्मणोः कृति। उभयप्राप्तौ कर्मणि। क्तस्य च वर्तमाने। न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम् । अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः। कृत्यानांकर्तरिवा। वा. उभयप्राप्तौ न।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अनुक्त कर्ता वा कर्म एक मात्र होने पर उसमें षष्ठी होती है (ख) कर्ता कर्म दोनों रहने पर तो कर्म में मात्र षष्ठी कर्ता में तृतीया होती है, कहीं प्रयोगवश कर्ता में भी षष्ठी होती है। (ग) 'तव्य अनीयर् यत् क्यप् ण्यत्' आदि कृत्यप्रत्ययान्त क्रिया के अनुक्त कर्ता में षष्ठी वा तृतीया होती है। कर्ता कर्म दोनों अनुक्त रहने पर तो षष्ठी नहीं होती है। (घ) ऊपर छोडे गये आदि और कृदन्त के कर्ता कर्म में तो आख्यात के नियमानुसार ही विभक्ति होती है।

(क) रामस्य लेखाः, जगतः कर्ता, अध्येता काव्यस्य, अध्यापकः शिष्याणाम्, कवेः कृतिः, मम भीतिः, ग्रामस्य गमनम्, तण्डुलस्य पाकः, धनस्य लोभः, गुरोर्व्याख्यानम्, शिष्याणामध्यापनम्, पुस्तकस्य दाता।

(ख) आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन, रोचते मे काव्यस्याध्ययनं तैः। साधु पयसः पानं बालेन। गुरुणा शिष्याणामध्यापनम्। इ०। क्वचित्-विचित्रा जगतः कृतिर्हरेर्हरिणा वा। शब्दानामनुशासनमाचार्येणाऽचार्यस्य वा।

(ग) मया मम वा सेव्यो हरिः, तव त्वया वा इदं कर्तव्यम्, तैस्तेषां वा पठनीयानि पुस्तकानि, भवद्भिः भवतां वा श्रोतव्या, श्रव्या श्रवणीया कथा रम्याऽस्ति, धैर्येणाऽसमाधेयं दुखं नास्ति, तव त्वया वा कार्यं करणीयं कर्तव्यम्।

(घ) क्त—विष्णुना हता दैत्याः, तेन दृष्टमेतत्, क्तवतु, दैत्यान्हतवान्विष्णुः। काव्यं पठितवान्, शतृ, सृष्टिं कुर्वन् हरिः, नाट्यं पश्यन् बालः, कार्यं करिष्यन्भृत्यः, शानच्-कार्यं कुर्वाणा जनाः, पाठमध्येष्यमाणाः शिष्याः, उ, राजानं दिदृक्षुः, जलं पिपासुः, उक-पुण्यमभिलाषुकः, काव्यं भावुकः, इष्णुच् दिवमुत्पतिष्णुः, भुवनमलङ्करिष्णुः, शङ्कां निराकरिष्णुः, खल्-सुकरः प्रपञ्चो हरिणा, त्वया दुष्करमिदम्। तृन्-कर्ता लोकान्, शिष्यानध्यापयिता, अक-सतः पालकः, णिनि, शतं दायी, व्रजं गामी, क्त्वा-कार्यं कृत्वा, जगत्सृष्ट्वा, ल्यप्-दण्डमादाय, पत्रं विलिख्य, तुमुन्-कार्यं कर्तुम्, काव्यं पठितुम्, नृत्यं दर्शयितुम् इ०।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

एवम्—लुब्धेन गृहस्य त्यागो विस्मयं करोति, तेन धृतं छत्रं रम्यमस्ति, ओदनं पचमानां मातरमाह्वयति, संसारस्य विधातारमीश्वरं स्मर, पुत्रमाह्वयन्तं तं दृष्ट्वाऽहमागतोऽस्मि, भक्तेन दीयमानां गां गृह्णामि, गुरोरुपदेशो हिताय, उपदेशोहि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये। तमाहूय प्रेषय, सभामलङ्करिष्णवः साधवः, अहं नास्य द्रष्टा, कोस्यकर्ता, हन्तुर्बधो योग्यः वानराद्भीतस्य बालकस्य पलायनं मनोहरति, कर्मणि व्यापृतानां दर्शनं हृदयं तोषयति।

द्विकर्मक

गौणं मुख्यं कर्मणी[1] द्वे नीदुहादिषु धातुषु।
गौणं विभक्त्यन्तरार्हं कर्म, मुख्यं तु नेदृशम् ॥१३२॥

(क) नी आदि—नी हृ कृष् वह् धातु, (ख) दुहादि—दुह् पच् दण्ड् रुध् प्रच्छ् चि जि मन्थ् मुष् और कथन शिक्षण याचन अर्थके धातु इनकी क्रियाओंमें मुख्य गौण दो कर्म भी होते हैं—दोनोंमें कर्तृवाच्यमें द्वितीया होती है। गौण कर्म दूसरे किसम का कारक वा भेदक भी बन सकता है। मुख्य तो कर्म ही होता है।

भाषामें मुख्य ही कर्म होता है। गौण तो अपादान आदि दूसरा कारक वा भेदक होकर उसकी विभक्ति होता है।

(क) अश्वं मन्दुरां (मन्दुरायां वा) नयति—घोड़ेको अस्तबलमें ले जाता है। पत्रं कलिकातां नयति, हरति, वहति, कर्षति-चिठी कलकत्तेमें पहुँचाता है।

(ख) गां (गोर्वा) पयो दोग्धि-गायका दूध दुहता है। तण्डुलान् (तण्डुलैस्तण्डुलानां वा) ओदनं पचति—चावलका भात पकाता है।

---

१. का० दुह्याच्पच्दण्डरुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमन्थ्मुषाम्। कर्मयुक्स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम् ॥ सू० अकथितंच।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दुष्टं (दुष्टाय वा) शतं दण्डयति-दुष्टको सौ दण्ड करता है। गां गोष्ठं (गोष्ठे वा) रुणद्धि-गायको गोठमें रोकता है। गुरुं (गुरोर्वा) पाठं पृच्छति—गुरुसे पाठ पूछता है। वृक्षं (वृक्षात् वृक्षस्य वा) फलान्यत्र चिनोति-पेड़से फल चुनता है। रामो गोपालं (गोपालाद्वा) शतं जयति—राम गोपालसे सौ जीतता हैं। देवाः क्षीरोदं (क्षरोदाद्वा) सुधां ममन्थुः—देवताओंने क्षीरसागरसे अमृत मथा। वणिजं (वणिजो वा) धनं मुष्णाति-वनियेंसे धन चुराता है। श्रोतॄन् (श्रोतृभ्यो वा) पुराणं ब्रूते-वक्ति-भाषते-अभिधत्ते-कथयति—श्रोताओंको पुराण कहता है। भक्तं (भक्ताय वा) धर्मं शास्ति उपदिशति-भक्तको धर्म बतलाता है। राजानं (राज्ञो वा) धनं याचते—भिक्षते-राजासे धन मांगता है।

एवं—महाश्वेता कादम्बरी मनामयं पप्रच्छ। भास्वन्ति रत्नानि महौष-धीश्च पृथूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्रीम्। सन्दश्य शरगं शून्यं भिक्षमाणो वनं प्रियाम्। प्राणान्दुहन्निवात्मानं शोकं चित्तमवारुधत्। यत्र तांस्तापसान्धर्मं सुतीक्ष्णः शास्ति तत्र सा। विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः। गङ्गां शरन्नयति सिन्धुपतिं प्रसन्नाम्।

प्रयोज्यकर्म—

[1]गतिबुद्धयुक्ति भक्षार्थे शब्दकर्मण्यकर्मके।
ण्यन्ते कर्ता प्रेर्यभूतः प्रायः कर्म, क्वचिद्द्विधा ॥१२३॥

नी-अनियन्तृकर्तृक वह से भिन्न गत्यर्थक, अद्-खाद्-अहिंसार्थकभक्ष-भिन्न भक्षणार्थक, सामान्यज्ञानार्थक, कथनार्थक, शब्दकर्मक ये सकर्मक

---

१. सू० गतिबुद्धिप्रत्यवसनार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्ता स णौ। वा० नीवह्योर्न। नियन्तृकर्तृकस्य बहेरनिषेधः। आदिखाद्योर्न। भक्षे-रहिंसार्थस्य न। सू० हृक्रोरन्यतरस्याम्। वा० अभिवादिदृशोरात्मने-पदे वेतिवाच्यम्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और सब अकर्मक धातु प्रेरणार्थकणिजन्त होने पर प्रेर्य-प्रयोज्यकर्ता (मूलक्रियाका कर्ता) कर्म होता है। इसलिये प्रेरणार्थक अकर्मक सकर्मक, कोई (पूर्वोक्त) सकर्मक द्विकर्मक होते हैं, अकर्मक कोई नहीं। कर्तृवाच्यमें प्रयोज्य कर्ता (क) कर्म बननेवाले द्वितीयान्त (ख) कर्म न बननेवाले तृतीयान्त होते हैं (ग) णिजन्त हृ कृ आत्मनेपदी दृश् अभि-वद धातुकी क्रियाके प्रयोज्यकर्ता तृतीयान्त द्वितीयान्त दोनों होते हैं।

हिन्दीमें तो प्रयोज्यकर्ता प्रायः कर्म होकर द्वितीयान्त होता है।

(क) सक—स ग्रामं गच्छति-पिता तं ग्रामं गमयति-बाप उसको गांव भेजता है। बालको मोदकं भुङ्क्ते—माता बालं मोदकं भोजयति—माता बालकको लड्डु खिलाती है। शिष्यः पाठं वेत्ति—गुरुः शिष्यं पाठं वेदयते–गुरु शिष्यको पाठ समझाता है। भक्तः कथां शृणोति—भक्तं कथामहं श्रावयामि—मैं भक्तको कथा सुनाता हूँ। अहं काव्यं पठामि-गुरुर्मां काव्यं पाठयति-गुरु मुझे पाठ पढ़ाते हैं। इ०

अक—बालकः शेते-माता बालकं शाययति-माता बालकको सुलाती है। कार्यं वर्धते—स्वामी कार्यं वर्धयते-मालीक काम बढ़ाता है। स बिभेति-बिडालस्तं भीषयते-बिलाव उसको डराता है। कीटो म्रियते-बालः कीटं मारयति-बालक कीडा मारता है। इ०

(ख) भृत्यः पत्रं नयति, वहति—भृत्येन पत्रं नाययति, वाहयति—नोकर द्वारा चिट्ठी पहुँचवाता है। पुत्र ओदन मत्ति, खादति, भक्षयति—माता पुत्रेणौदनमादयति, खादयति, भक्षयति—माता लड़केको भात खिलाती है। गोपाल ओदनं पचति—स्वामी गोपालेनौदनं पाचयति—मालिक गोपालसे भात पकवाता है। पूजकश्चन्दनं पिनष्टि—पूजकेन चन्दनं पेषयति—पूजक द्वारा चन्दन पिसवाता है। रामो वस्त्रं परिधत्ते-रामेण वस्त्रं परिधापयति—रामको कपड़ा पहनाता है। इ०

(ग) भृत्यो भाण्डं हरति—भाण्डं हारयति भृत्यं भृत्येन वा—भृत्यके द्वारा बरतन पहुँचवाता है। शिल्पी कटं करोति—कटं कारयति

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिल्पिनं शिल्पिना वा—कारीगर द्वारा चटाइ बनवाता है। अभिवादयति देवं पुत्रः—अभिवादयते देवं पुत्रं पुत्रेण वा—पुत्र द्वारा देवताको प्रणाम करवाता है। बालो नृत्यं पश्यति—दर्शयते नृत्यं बालं बालेन वा—बालकको नाच दिखाता है।

एवं—अध्यापयति माणवकं वेदं गुरुः। भक्षयति बलीवर्दान्सस्यम्। कर्म कारयति भृत्येन। दर्शयते राजानं पुत्रेण। ऋषिकुमारेण मां सरस्तीरमनाययत्। पायय कमलमधु कलहंसान्। आर्यो दापयतु मे गमनानुज्ञां तातेन। ततो द्रोणोऽर्जुनं भूयो रणशिक्षामशिक्षयत्। तमुपनीय त्रयीविद्यामध्यापयद्गुरुः। शत्रूनगमयत्स्वर्गम्। स्वान्वेदार्थमवेदयत्। गुणानस्मारयल्लोकम्।

वाच्य कर्म—

वाच्यं[1] दुहादिके गौणं, न्यादौ मुख्यं द्वयोः स्थितौ।
कर्म प्रयोज्यं ण्यन्तेषु, ज्ञानाद्यर्थे निजेच्छया॥ १३४॥

(क) कर्मवाच्य प्रयोग में एक मात्र कर्म रखा जाने पर वही उक्त होकर प्रथमान्त होता है। (ख) दोनों किसम के कर्म रहने पर न्यादि धातुकी क्रियामें मुख्य कर्म, दुहादि धातुकी क्रियामें गौण कर्म उक्त होकर प्रथमान्त, दूसरा द्वितीयान्त होता है। (ग) प्रेरणार्थक क्रियाओंमेंसे ज्ञानार्थक, भक्षणार्थक, शब्दकर्मक क्रियाओंमें इच्छानुसार प्रयोज्य-कर्म वा मूल-कर्म जो हो एक, औरमें प्रयोज्य कर्म ही उक्त होकर प्रथमान्त होता है।

(क) गौर्दुह्यते—गाय दुही जाती है। पयो दुह्यते—दूध दुहा जाता है। राजा याच्यते। धनं याच्यते। ओदनं पच्यते। तण्डुलाः

---

१. का० गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नीहृकृष्वहाम्। बुद्धिभक्षार्थयोः शब्दकर्मणां च निजेच्छया। प्रयोज्यकर्मण्यन्येषां ण्यन्तानां लादयोमताः॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पच्यन्ते। अजा नीयते। पुत्र उपदिश्यते। धर्म उपदिश्यते। क्षीरोदो मथ्यते। बालिका शाम्यते। पुत्राः पोष्यन्ते। वनं संवर्ध्यते। गोपालेनौदनं पाच्यते। पूजकेन चन्दनं पेष्यते।

(ख) मुख्य—अजा ग्रामं नीयते—बकरी गाँवमें पहुँचायी जाती है। पत्रं काशी नीयते। गौण-गौः पयांसि दुह्यते—गाय का दूध दुहा जाता है। तण्डुला ओदनं पच्यन्ते। श्रोतारः पुराणं भाष्यन्ते। वृक्षः फलान्यवचीयते। रामः शतं जीयते। गुरुः शङ्कां पृच्छयते। इ०

(ग) इच्छासे—शिष्याः काव्यं पाठ्यन्ते, शिष्यान् काव्यं पाठ्यते वा—शिष्योंको काव्य पढ़ाया जाता है। बालका मोदकं भोज्यन्ते, बालकान् मोदकं भोज्यते वा। माणवको धर्मान्बोध्यते, माणवकं धर्मा बोध्यन्ते वा। प्रयोज्य—बालिका शाय्यते—बालिका सुलायी जाती है। कीटा मार्यन्ते। शत्रवः स्वर्गं गम्यन्ते। गुरुणा शिष्याः प्रस्थाप्यन्ते। शिल्पी कटान् कार्यते। रामो देशान्गम्यते।

कृदन्त क्रिया होनेपर भी यही नियमानुसार कर्म-वाच्य शब्द अपने वाच्यका विशेषण बनता है। येनाऽसत्यसन्धजने सखी पदं कारिता—जिससे सखी असत्यवादीका विषय बनायी गयी। वृत्तचूडौ तौ सर्वा विद्याः पाठितौ—चूड़ा किये गये दोनों वे सब विद्या पढ़ाये गये। नन्दिन्या सुदक्षिणया गन्धमाल्ये परिग्राहिते—नन्दिनीसे सुदक्षिणाके द्वारा गन्ध माल्य लिवाये गये।

एवं—गुरुणा काव्यं कौमुदीं च पाठिताः शिष्याश्चतुरा भवन्ति। स मया शुभां वृत्तिं ग्राहितवान्। तौ दम्पती स्वां प्रति राजधानीं प्रस्थापयामास वशी वसिष्ठः। तौ दम्पती बहु विलप्य शिशोः प्रहर्त्रा शल्यं निखातमुदहारयतामुरस्तः। स ऋषिकुमारो मां कतिचित्सलिलबिन्दूनपाययत्। परीक्षितं वासुदेवो दुर्लभानसून्प्रापितवान्। भोजय मरिचाग्रपल्लवदलानि भवनहारीतान्। अवतारयेमं सलिलसमीपम्। अपि

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चन्द्रगुप्तदोषा अतिक्रान्तपार्थिवगुणान्स्मारयन्ति प्रकृतीः। विज्ञापयामि निजवृत्तं स्वामिनम्। मनीषितं द्यौरपि येन दुग्धा। यथाकथमपि मार्गेऽवतारितस्तेन स जाल्मः। कथमप्याग्रहं त्याजितः सोऽनुमेने।

नानाकारक—

नानाप्येकं कारकादि समुच्चयविकल्पतः।
यथायथं तादृशेषु समा एव विभक्तयः ॥१३५॥

एक जातिके कारक भेदक आदि (क) कहीं समुच्चयरूपसे (ख) कहीं विकल्परूपसे नाना भी होते हैं, उन सबमें अपने नियमानुसार समान विभक्तियाँ होती हैं।

(क) अहं गामश्वं च पालयामि-मैं गाय और घोड़ा भी पालता हूं। दुष्टो हस्ताभ्यां पादाभ्यां दण्डेन च पुनःपुनरताडयत्। प्रियया सीतया स्निग्धेन लक्ष्मणेन च सह रामो वनं ययौ। त्वं मातुःपितुरपि प्रियःपुत्रोसि। क्षुधितेभ्योऽन्नं शीतार्तेभ्यो वस्त्रं च दीयताम्।

(ख) त्वमन्नं वस्त्रं वा याचसे—तू अन्न या कपड़ा मागता है। राजानो रथैर्हस्तिभिरश्वैर्वा प्रयान्ति। दीयतामर्जितं वित्तं देवाय ब्राह्मणाय वा। एको देवः केशवो वा शिवो वा (भवति)। चौरादुत व्याघ्राद्बिभेपि। दिने किंवा रात्रावधीपे।

साधारण कारक—

साधारणं कारकं यत्क्रिययो गौंणमुख्ययोः[1]।
जात्या भिन्नमभिन्नं वा विभक्तिस्तत्र मुख्यतः ॥१३६॥

वाक्य में मुख्य आख्यात क्रिया एक ही होती है, गौण कृदन्त

१. का. प्रधानेतरयोर्यत्र द्रव्यस्य क्रिययोःपृथक्। शक्तिर्गुणाश्रया तत्र प्रधानमनुवर्त्तते ॥ (वाक्यपदीये)।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

क्रिया तो एक अनेक भी होती है। अनेक कृदन्तक्रियाओंमें भी कहीं अपनेमें एक प्रधान दूसरी अप्रधान हो सकती है। अनेक क्रियाओंका कोई कारक अलग अलग भी होता है, कोई अनेक क्रियाओंके प्रति साधारण (सझिया) कारक भी होता है, उसमें भी कोई अनेक क्रियाओं के प्रति समान जातिका कोई तो एक क्रियाके प्रति एक जातिका, दूसरी क्रियाके प्रति अन्यजातिका भी हो सकता है। साधारण कारक एक जातिका होनेपर भी उक्त वा अनुक्त, किंवा भिन्न जातिका हो मुख्यक्रियाके अनुसारसे ही उसमें विभक्ति होती है।

(क) गौण मुख्य कृदन्त व आख्यातका साधारण कारक—

अभिन्न—स स्नात्वा गच्छति। अहं पठितुमिच्छामि। भृत्यः काष्ठं विदार्य प्राक्षिपत्। वैद्या रोगं निर्धार्य प्रतिकुर्वन्ति। ओदनः पक्वो दृश्यते। वयमुषसि स्नात्वा पठामः। जामाता श्वशुरात् लज्जित्वा निलीयते। बालो मां-पादेनाऽऽहत्य ताडयति। अध्यक्षस्तस्मै श्लाघित्वा पारितोषिकं ददाति। कार्यं कारयितुमिष्यते। मोदको विभज्य भक्ष्यते।

भिन्न—पिता पुत्रायाहूय ददाति। मया लिखिते पुस्तकेऽयं श्लोको नास्ति। सिंहेनाधिष्ठितं वनं भीषयति। चक्षुषा दृष्टो विषयो विश्वासयति। स विषलिप्तेन बाणेन मृगान्हन्ति। भक्त्या पूजितो देवः प्रसीदति। मया दृष्टे वने महान्तो वृक्षा आसन्। विद्यामधीयानाय जनाय साहाय्यं दीयताम्। विद्याः पठितवति पुरुषे श्रद्धा जायते।

(ख) प्रधान अप्रधान कृदन्तका साधारण कारक—

अभिन्न—मया दत्तस्य पुस्तकस्य रक्षको भव। स पित्रे लिखितं पत्रं प्रेषयितुमिच्छति। अहं नवीनं गृहं निर्मायाऽधिष्ठातुमिच्छामि। स तं बलेन निपात्य निपीड्य चात्यजत्, स देवतां ध्यात्वाऽऽवाह्य पूजयितुं प्रारेभे। मुनयः सूर्यमुपस्थाय प्रणम्य चोपविशन्ति।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भिन्न—वनं गच्छन्तं राममनुगच्छँल्लक्ष्मणो भक्तिमदर्शयत्। अर्घ्य दत्वा सूर्यं प्रणम। विद्यामधीयानस्य जनस्य रक्षां कुरुत। मनसो भीपके वने रोदितुं प्रावर्त्तत। सङ्कटेभ्यो रक्षितारं गोपालं द्रष्टुमुत्सुका गोपा यशो जगुः।

(ग) प्रधान अप्रधान कृदन्त क्रिया और मुख्य आख्यातका साधारण कारक—

अभिन्न—वने प्रेषितं रामं सेवमानो लक्ष्मणोऽनुययौ। विपणौ प्रसारितानि वस्तूनि क्रीत्वा गृहं नेतुमसौ पश्यति। भीमो दुर्योधनं बाहुयुद्धे पराजित्य क्षितौ निपात्य जानुभ्यां निष्पिष्य पीडयामास। भगिन्या कर्तितां वर्तिमादाय प्रक्षेप्तुं बालोऽनयत्।

भिन्न—उद्याने विकसितानि पुष्पाणि विलोक्यावचित्य देवायार्पयितुं नीयन्ते। सेवितया सरस्वत्या सुदृष्टाय लक्ष्म्या अपि प्रसादकाय जनाय सर्वे स्पृहयन्ति। तमो नाशयित्वा सर्वलोकानामुपकारकं सूर्यमुदितं दृष्ट्वा सर्वे प्रणेमुः। परिश्रमेणार्जिता विद्या जीविकायै अजायमानापि हृदयव्यथयितुं न शक्नोति।

एवं—परमेश्वरेण लोकाः सृष्ट्वा रक्ष्यन्ते। ओदनं भुञ्जानेनानेन मक्षिका अपनीयन्ते। त्वया दृष्ट्वाऽभिनन्दितस्य नाट्यस्य प्रशंसकः को न भवति। मृतः को वा न जायते। सादिनोऽश्वं कशयाऽभिहत्य धावयन्ति। श्वेतं वसनं परिदधानाः पुरुषाः समुत्थाय वहिर्निर्गत्य क्रीडितुमारभन्त। स राज्यं गुरुणा दत्तं प्रतिपद्याधिकं बभौ। लघयन्खलु तेजसा जगन्न महानिच्छति भूतिमन्यतः। उत्तिष्ठमानस्तु परो नोपेक्ष्यः पथ्यमिच्छता।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

गौण क्रिया और मुख्य क्रिया कैसी होती है। कृदन्त क्रियाके कारकोंमें क्या विशेष है। कृदन्त व आख्यातके साधारण कारकोंमें कैसी विभक्तियां होती हैं। द्विकर्मक धातु कौन है। उनमें कर्मवाच्यमें कौन कर्म उक्त होता है। प्रेरणार्थक—क्रियाके कारकोंमें कहां कैसा

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विशेष होता है। प्रेरणार्थक कर्मवाच्यमें कौन कर्म उक्त होता है। साधारण कारक कैसे होते हैं।

निम्नलिखित वाक्योंका अनुवाद करो, कारकोंमें विशेष भी उपपादन करो—

साधुः पङ्के पतितां गां दृष्ट्वा प्राणैरपि प्रयत्योद्धरति। विप्राः पुष्यमित्रमश्वमेधेनायाजयन्। रावणस्य महता तपसा प्रसन्नः शिवो दुर्लभं वरं ददौ। सर्वैर्निन्द्यमानं जीवनं पृथिव्या भारायैव भवति। लतासु विकसितानि पुष्पाणि सुगन्धेन विज्ञाय मधुरसं पातुं भ्रमरा आपतन्ति। सुखमभिलाषुका जनाः पथ्यं धर्म्यं च मार्गं कदापि न परित्यजेयुः। निपुणस्य विदुषो व्याख्यानं सर्वेभ्यो रोचते। दुष्टोऽश्वः सादिनं भूमौ निपात्य वेगेन धावित्वाऽदृश्यो बभूव। शस्त्रेण शास्त्रेण वा विजयिनो धीराः कीर्त्या भुवमलङ्कर्तुं प्रभवन्ति। सतां द्वेष्टारो महति गर्ते आत्मानं पातयितुं प्रवर्तन्ते। तेन लिखितान्यक्षराणि सुन्दराणि दृष्ट्वा स्वयमपि तथा लिखितुमयमिच्छति। कृष्णेन रक्षितायां भुवि न किमपि दुःखं प्रसर्तुं शशाक।

मेरे मनकी बात समझना मुश्किल है। महात्मा लोग दूसरेकी भलाईके लिये तन मन वचन अर्पण करनेको तैयार रहते हैं। माता और पिताकी सेवा करने वाले पुत्रका नाम सब लोग आदरके साथ लेते हैं। देशकी सेवा करना धर्ममें श्रद्धा रखना लोगोंमें प्रेम करना ये गुण दोनों लोकमें हितके लिये होते हैं। जो दूसरोंको मीठी बात सुनाता है उसे सब चाहते हैं, यह काम तुमको करना चाहिये। उनसे लिखेगये लेख सबको आनन्द देने वाले होते हैं। तुमने मुझसे पत्र लिखवाया था। एकबार सुनाहुआ श्लोक मनमें रखकर कभी न भूलनाचाहिये। हम लोग उनसे जमीन मांगते हैं। जो दूसरेकी दिल दुखानेवाली बात बोलता है उसको बोलनेसे न बोलना ही अच्छा है। इस श्लोकको मैं कण्ठ करके आपको सुनानेकेलिये तैयार रहूँगा।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(४) वाक्य प्रयोग

प्रयोग—

वाक्यप्रयोगस्त्रिविधो भावे कर्तरि कर्मणि ।
सकर्मके नैव भावे, नैव कर्मण्यकर्मके ॥१३७॥

वाक्यके प्रयोग कर्तरि कर्मणि भावे ये तीन किसम के होते हैं। अकर्मकमें कर्ता वा भावमें होता है, कर्ममें नहीं, सकर्मकमें कर्ता वा कर्ममें होता है, भाव में नहीं।

अकर्मक		सकर्मक	
कर्तरि	भावे	कर्तरि	कर्मणि
बालकः शेते	बालकेन शय्यते	अहं त्वां पश्यामि	मया त्वं दृश्यसे
पक्षिण उड्डीयन्ते	पक्षिभिरुड्डीयते	स मामुवाच	तेनाहमूचे
वयं बिभिमः	अस्माभिर्भीयते	अग्निर्देहं दहति	अग्निना देहो दह्यते

प्रयोगे कर्तरि मतं कर्तृवाच्यक्रियापदम् ।
प्रथमा कर्तरि, तयोः समौ वचनपूरुषौ ॥१३८॥

कर्तरि प्रयोगमें क्रियापद कर्तृवाच्य, कर्ता प्रथमान्त होते हैं। प्रथमान्त कर्ता और क्रियापदके पुरुष वचन समान होते हैं। कर्म हो तो द्वितीयान्त होता है।

हिन्दीमें कर्तृवाच्यमें अकर्मकके कर्तामें ने कहीं भी नहीं रहता है, सकर्मक में भूतकालमें रहता है अन्यत्र नहीं। कर्ममें प्राणिवाचक होने पर को रहता है, निर्जीव होनेपर नहीं। अकर्मकमें सर्वत्र, सकर्मकमें भूतकाल भिन्न अन्यत्र भी, क्रियापदके पुरुष वचन और लिङ्ग भी कर्ताके समान ही होते हैं। भूतकालमें तो निर्जीव कर्ममें को न रहने पर

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कर्ता जैसा भी हो कर्मके ही समान होते हैं। प्राणी कर्ममें को रहने पर कर्ता कर्म जैसे भी हों क्रियापद सामान्यलिङ्ग प्रथमपुरुष एकवचन मात्र होता है।

अक—स लज्जते—वह शरमाता है। सा उत्थास्यति—वह उठेगी। ते अभूवन्—वे हुए। बालका अक्रीडन्—बालक खेले। पुत्री अशेत—लड़की सोयी। अहमबिभयम्—मैं डरा। त्वमसि—तू है।

सक—(क) वयं गृहं गच्छामः—हमलोग घर जाते हैं। सा कार्यं करोति—वह काम करती है। यूयं काव्यं पठत—तुमलोग काव्य पढो। ते पुत्रमाह्वास्यन्ति—वे लड़केको बुलावेंगे। अहं तं पश्येयम्-मैं उसको देखूँगा। माता पुत्रीं पश्यति—माता लड़की को देखती है।

(ख) स पत्रमलिखत्—उसने चिठी लिखी। सा काव्यान्यपठीत्-उसने काव्य पढ़े। अहं पत्राण्यलिखम्—मैंने चिट्ठियां लिखीं। ते पूरिकामभक्षयन्—उन्होंने पूरी खायी। पुत्र्य इतिहासमपठन्—लडकियों ने इतिहास पढ़ा। जनो मार्गमपश्यत्—लोकने राह देखी।

(ग) पिता पुत्रानाह्वयत्—बापने लड़केको बुलाया। वयं तमपश्याम-हम लोगोंने उसको देखा। मातरः पुत्रीरशिक्षयन्—माताओंने लडकियों को सिखलाया। त्वं तमवोचः—तैंने उसको कहा।

प्रयोगे कर्मणि मतं कर्मवाच्यक्रियापदम्।
प्रथमा कर्मणि, तयोः समौ वचनपूरुषौ ॥१३६॥

कर्मणि प्रयोगमें क्रियापद कर्मवाच्य, कर्म प्रथमान्त होते हैं। प्रथमान्त कर्म और क्रियापदके पुरुष वचन समान होते हैं। कर्ता हो तो तृतीयान्त होता है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हिन्दीमें कियाजाना लिखाजाना इत्यादि क्रियाका स्वरूप होता है। कर्मके समान ही क्रिया पदमें पुरुष वचन और लिङ्ग भी होते हैं।

मया त्वमुच्यसे—मुझसे तू कहा जाता है। देव्या असुरा अहन्यन्त—देवीसे असुर लोग मारे गये। अस्माभिर्नगरमदृश्यत—हमलोगोंसे शहर देखा गया। गुरुणा शिष्या अध्याप्यन्ते—गुरुसे छात्र पढाए जाते हैं। त्वया किमलिख्यत—तुझसे क्या लिखा गया। भवताऽऽसनमलङ्क्रियताम्—आपसे आसन शोभित किया जाय। भवता केऽदृश्यन्त—आपसे कौन देखे गये।

भावे प्रयोगे तु कर्ता तृतीयान्तोऽत्र कर्म न।
तिबन्तमेव सर्वत्र भाववाच्यक्रियापदम् ॥१४०॥

भावे प्रयोगमें कर्ता तृतीयान्त होता है। कर्म नहीं होता है। कर्ता जैसा भी हो सर्वत्र क्रियापद उस लकारका प्रथमपुरुष एकवचन मात्र होता है।

हिन्दीमें भी कर्मवाच्य जैसा प्रथमपुरुष एकवचन सामान्य लिङ्ग मात्र क्रियापद होता है।

तेन शय्यते—उससे सोया जाता है। अस्माभिरुदस्थीयत—हम लोगोंसे उठा गया। त्वया भेष्यते। तुझसे डरा जायगा। बालकैः क्रीड्यताम्—बालकों से खेला जाय। पुत्र्या लज्ज्यते—लड़की से शरमा जाता है।

स्वतन्त्रायां कर्म नैकं द्वे वेत्थं कर्तरि त्रिधा।
चतुर्धा प्रेरणायां तु द्व्येकत्वात्कर्तृकर्मणोः ॥१४१॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्वतन्त्रायां प्रेरणायां कर्मणि द्व्येककर्मकौ ।
भावेऽकर्मक एवेति प्रयोगा व्यासतो दश ॥१४२॥

स्वतन्त्र (मूल) क्रिया (क) कोई अकर्मक, (ख) कोई सकर्मक, (ग) कोई द्विकर्मक होनेसे उनके कर्तरिप्रयोग तीन किसमके होते हैं। प्रेरणा (णिजन्त) क्रिया (क) कोई एक कर्तृक, (ख) कोई द्विकर्तृक; (ग) कोई एककर्मक, (घ) कोई द्विकर्मक होनेसे उनके कर्तृप्रयोग चार किसमके होते हैं। सकर्मकका ही कर्मवाच्य होनेसे स्वतन्त्र वा प्रेरणार्थक क्रिया (क) कोई एककर्मक (ख) कोई द्विकर्मक होकर उनके कर्मणिप्रयोग दो किसमके होते हैं। भावेप्रयोग तो अकर्मक एकमात्र होता है। कुल मिलकर दश प्रयोग होते हैं।

कर्तृवाच्यमें—

स्वतन्त्र क्रिया।

(क) भवनशयनादि क्रिया अकर्मक होनेसे उनका अकर्मक प्रयोग—
अहमस्मि। स भवति। बालकाःशेरते। पुत्रा जायन्ताम्। माता भेष्यति। शिष्यो जागर्ति। इ०

(ख) गमनपठनादि क्रिया सकर्मक होनेसे उनका एककर्मक प्रयोग—
राजा प्रासादं गच्छति। वयं काव्यमपठाम। ताःपुराणानि श्रोष्यन्ति। त्वं कार्यं कुरु। इ०

(ग) नयनदोहनादि क्रिया द्विकर्मक होनेसे उनका द्विकर्मक प्रयोग—
भृत्यो भारं ग्रामं नयति। गोपालो गां पयो दुदोह। यूयं धनिनं वस्त्राणि याचध्वम्। इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रेरणा क्रिया।

(क) अकर्मकक्रिया प्रेरणार्थक होनेपर प्रयोज्यकर्ता कर्म होनेसे उनका एककर्तृक एककर्मक प्रयोग—
माता बालकं शाययति। दुहिता पुत्रानुदपादयत्। यूयं पुस्तकानि स्थापयत। इ०

(ख) गतिबुद्धिभक्षणाद्यर्थक सकर्मकक्रिया प्रेरणार्थक होनेपर प्रयोज्यकर्ता भी कर्म होनेसे उनका एककर्तृक द्विकर्मकप्रयोग—
दशरथो रामं वनमगमयत्। गुरवःशिष्यान्धर्मं बोधयन्ति। माता पुत्रं स्तन्यं पाययतु। इ०

(ग) दानग्रहणादि सकर्मकक्रिया प्रेरणार्थक होनेपर प्रयोज्यकर्ता कर्ता ही रहनेसे उनका एककर्मक द्विकर्तृक प्रयोग—
माता पुत्रेण भिक्षां दापयति। गुरुःशिष्यैःपुस्तकान्यग्राहयत्। अहं तेन वस्त्रं परिधापये। इ०

(घ) नी दुह् पचनादि द्विकर्मकक्रिया प्रेरणार्थक होनेपर प्रयोज्यकर्ता कर्ता ही रहनेसे उनका द्विकर्तृक द्विकर्मक प्रयोग—
स्वामी भृत्येन भारं ग्रामं नाययति। स्वामी गोपालेन गां-पयोऽदोहयत्। इ०

कर्मवाच्यमें—

(क) सामान्यसकर्मक स्वतन्त्रक्रिया और अकर्मकसे बने हुए वा सकर्मकसे बनने पर भी प्रयोज्य कर्ता कर्म न होने वाले प्रेरणार्थकका एककर्मक प्रयोग—

कार्यं क्रियते। श्लोका अश्रूयन्त। बालकः शाय्यते। मात्रा पुत्रेण भिक्षा दाप्यते। इ०

(ख) नीदुहादि द्विकर्मक स्वतन्त्रक्रिया और प्रयोज्य-कर्ता कर्म होने वाले गत्याद्यर्थक प्रेरणा क्रियाका द्विकर्मक प्रयोग—

पत्रं नगरं नीयते। गावः पयो दुह्यन्ते। गुरुणा शिष्या धर्म बोध्यन्ते। बालकाः काव्यमपाठ्यन्त। इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भाववाच्यमें अकर्मक प्रयोग—

तेन स्थीयते। बालकैरुदस्थीयत। आवाभ्यां भेष्यते। देवदत्तेन शब्दाय्यते। इ०

सकर्मकाकर्मकाणां[1] भावे कर्तरि कर्मणि।
कर्मकर्तरि[2] भावे च कर्मणः कर्तृकल्पने॥१४३॥

(क) अकर्मक क्रियामें भी जब भाव, काल, देश, गन्तव्यमार्ग कर्म बनाया जाता है तब वे अकर्मक सकर्मक दोनों होनेसे उनके कर्तरि कर्मणि भावे तीनों किसमके प्रयोग होते हैं। (ख) जब कर्मको भी प्रधानता देकर स्वतन्त्र कर्ता बनाया जाता है तब उनका कर्मवाच्यके समान कर्मकर्तरि प्रयोग और भावे प्रयोग दो होते हैं।

(क) कर्तरि—रामो मासमास्ते। स गोदोहं तिष्ठति। बालका रात्रिं शेरते। इ०

कर्मणि—रामेण मास आस्यते। तेन गोदोहः स्थीयते। बालकैः-रात्रिः शय्यते। इ०

भावे—रामेण मासमास्यते। तेन गोदोहं स्थीयते। बालकै रात्रिं शय्यते। इ०

(ख) कर्मकर्तरि—भिद्यते काष्ठं स्वयमेव। फलानि पच्यन्ते। भोज्यं विक्रियते। ओदनोऽपच्यत। इ०

---

१. का. कालभावाध्वदेशानामन्तर्भूतक्रियान्तरैः। सर्वैरकर्मकैर्योगे कर्मत्वमुपजायते। (वाक्यपदीये) वा. अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम्। अकर्मकाणां कालादि कर्मणां कर्मणि भावे च लकार इष्यते।

२. कौ. कर्मणस्तु कर्तृत्वविवक्षायां प्राक्सकर्मका अपि प्रायेणाऽकर्मकास्तेभ्यो भावे कर्तरि च लकाराः। सू० कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भावे—काष्ठेन स्वयं भिद्यते। फलैः पच्यते। भोज्येन विक्रियते। ओदनेनापच्यत। इ०

वाच्यपरिवर्तन—

वाच्यान्तरे परावर्त्याख्यातं वाच्यान्तरस्थितम्।
अन्यथा वाक्यरचना प्रयोगपरिवर्तनम् ॥१४४॥

एक वाच्यके आख्यातको दूसरे वाच्यमें बदलकर उसके अनुसार से वाक्यकी रचना करना प्रयोगपरिवर्तन वा वाच्यपरिवर्तन कहा जाता है। अकर्मकमें कर्तृवाच्य या भाववाच्यमें, सकर्मकमें कर्तृवाच्य या कर्मवाच्यमें परस्पर परिवर्तन होता है।

अक-कर्तरि—पर्वतास्तिष्ठन्ति। चौरो बिभेति। भावे—पर्वतैः स्थीयते। चौरैर्भीयते। इ०

सक-कर्तरि—राजानो धनं ददति। कर्मणि—राजभिर्धनं दीयते। इ०

वाच्यान्तरस्थ आख्याते स्वरूपं कर्तृकर्मणोः।
तयोर्विशेषणस्यापि भिद्यतेऽन्यद्यथातथम् ॥१४५॥

प्रयोगपरिवर्तनमें आख्यात वाच्यान्तरका होने पर उसके कर्ता कर्ममें विभक्ति बदलती है। वचन भी वाच्यमें आख्यातके साथ मिलाया जाता है। उनके विशेषण भी विशेष्यके अनुसार बदलते हैं। और पदोंमें कोई भी परिवर्तन नहीं होता है।

अकर्मक

कर्तरि {
सुशीलो जनः स्वैर्गुणैः सर्वाल्लोकानामोदयितुं प्रभवति।
सपरिश्रमं पठिता विद्या समये उपयोगाय जायते।
प्रिया बन्धवस्तेन दृष्टाः स्नेहेन वार्तां कर्तुं प्रावर्तन्त।
}

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अकर्मक

भावे
सुशीलेन जनेन स्वैर्गुणैः सर्वाल्लोकानामोदयितुं प्रभूयते ।
सपरिश्रमं पठितया विद्यया समये उपयोगाय जन्यते ।
प्रियैर्बन्धुभिस्तेन दृष्टैः स्नेहेन वार्ता कर्तुं प्रावृत्यत ।

सकर्मक ।

कर्तरि ।
वीराः क्षत्रियाः रणे महता वीर्येण सर्वान् रिपूनजयन्,
विद्वांसो जना विद्यायाः प्रकाशेन लोकान्प्रकाशयन्ति ।
निर्मलैर्वस्त्रैर्भूषिता नार्यो गृहस्य महतीं शोभामकार्षुः ।

कर्मणि ।
वीरैः क्षत्रियै रणे महता वीर्येण सर्वे रिपवोऽजीयन्त ।
विद्वद्भिर्जनैर्विद्यायाः प्रकाशेन लोकाः प्रकाश्यन्ते ।
निर्मलैर्वस्त्रैर्भूषिताभिर्नारीभिर्गृहस्य महती शोभाऽकारि ।

वाक्यपूरकयोर्भूतकृदन्ताख्यातयोरपि ।
वाच्यभेदे मिथो ज्ञेयं प्रयोगपरिवर्तनम् ॥१४६॥

वाक्यपूरक क्त क्तवत्वादि भूतकालिक कृदन्त और भूतकालके आख्यातका भी वाच्यभेद होनेपर परस्पर प्रयोगपरिवर्तन होता है ।

सोऽभवत्—तेन भूतम् । सःस्थितः-तेन तस्थे । स गीतं शुश्राव-तेन गीतं श्रुतम् ।

सोऽतिष्ठत्—तेन स्थितम् । पुत्रो जातः-पुत्रेणाऽजनि । अहं नृत्यमपश्यम्-मया नृत्यं दृष्टम् ।

बालोऽशेत—बालेन शयितम् । स गतवान्-तेनाऽगामि । मया काव्यमपाठि—अहं काव्यं पठितवान् ।

साऽलज्जत—तया लज्जितम् । त्वं शयितवान्-त्वयाऽशयि । तैर्गृहं व्यरचयत । ते गृहं विरचितवन्तः ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विपर्यासे कर्तृकर्मविशेषणकृदन्तयोः ।
भेदाद्वाच्यविशेष्यस्य वाक्यांशपरिवर्तनम् ॥१४७॥

कर्ता और कर्म अर्थके कृदन्त विशेषणोंका वाच्य विशेष्यके परिवर्तन करनेपर कृदन्त वाक्यांशमें भी वाच्यपरिवर्तन होता है।

सामान्य-	कर्ता	(ण्वुल् तृच्)	ओदनस्य पाचकः पक्ता सः।
वर्तमान-	,,	(शतृ शान)	कार्यं कुर्वन्-र्वाणः सः।
भूत-	,,	(क्तवतु)	कार्यं कृतवान् सः।
भविष्यत्-	,,	(स्य शतृ शान)	कार्यं करिष्यन्-ष्यमाणः सः।
सामान्य-	कर्म	(ण्यत् यत्)	तेन पाच्य ओदनः।
वर्तमान-	,,	(य शान)	तेन क्रियमाणं कार्यम्।
भूत-	,,	(क्त)	तेन कृतं कार्यम्।
भविष्यत्-	,,	(स्य शान)	तेन करिष्यमाणं कार्यम्।

एवं-मात्रा पयः पायितो बालः-बालं पयः पायितवती माता। वेद-मधीतवान्द्विजः-द्विजेनाधीतो वेदः।

भिक्षुभिरन्नं याचितो गृहस्थः-गृहस्थमन्नं याचितवन्तो भिक्षवः। तेन कार्ये दृष्टे-कार्यं तस्मिन्दृष्टवति।

गोपालेन गोषु दुह्यमानासु-गोपाले गा दुहाने। ग्रामं गतःसः-तेन गतो ग्रामः। शत्रुं जयन्राजा-राज्ञा जीयमानःशत्रुः। धनिभिर्देयं वस्त्रं-वस्त्रस्य दातारो धनिनः। तं द्रक्ष्यन्नहम्-मया द्रक्ष्यमाणः सः। ६०

अभ्यासार्थ प्रश्न—

प्रयोग कितने किसमके होते हैं। कर्तरि कर्मणि भावे तीनों प्रयोग किसमें होते हैं। कर्म कर्तरि प्रयोग कैसा होता है। कर्मणि भावे प्रयोगमें क्या विशेष है। कर्तृवाच्यमें संस्कृत और हिन्दीमें क्या विशेष है। स्वतन्त्र और प्रेरणा क्रियाओंमें कितने किसमके प्रयोग होते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वाच्यपरिवर्तन किसको कहते हैं। कृदन्तवाक्यांशमें वाच्यपरिवर्तन कैसे होते हैं। वाच्यपरिवर्तनमें कौन कौन अंश परिवर्तित होते हैं। कृदन्त और आख्यातमें वाच्यपरिवर्तन कहाँ होता है।

निम्नलिखित-वाक्योंका अनुवाद करो-, प्रयोगका परिचय वाक्य वाक्यांशोंमें वाच्यपरिवर्तन भी करो—श्वेतमुष्णीषं परिदधाना बहवः पुरुषाः सभां भूषयन्ति। भवद्भिर्लिखितानि पत्राणि मया समये प्राप्तानि। हितमुपदिशन्तो बन्धवः सर्वैःसमाद्रियन्ते। तेन दीयमानानि सर्वाणि वस्तूनि रम्याणि पश्यामि। तेन ह्यः प्रत्यागतम्। भक्तैरवचेष्यमाणानि पुष्पाणि बहूनि सन्ति। कुञ्जं परिभ्रमन्तो भ्रमराःशब्दायन्ते। हितमुक्तवती सा प्रत्याययौ। पुराणं श्रुतवत्यो नार्यो भक्ति वर्धयन्ति। अहं तेनाहूतः। मया गुरवे देया दक्षिणाऽर्जिता। मुनिभिराश्रितं तपोवनं रमणीयमस्ति। उत्सवं द्रक्ष्यमाणा जनाः समागताः। उपवने सुगन्धं प्रसारयति कस्य मनो नोत्कण्ठते। शत्रून्विजित्य परावृत्तैर्भटैर्महद्यशो लभ्यते। तैरहंहितमुपदिष्टः।

फल बेचनेवाले बनियोंने गाहकोंको बुलाया। गहनोंसे भूषित न्याओंने मङ्गलका गीत गाया। हमलोगोंको कल दिये हुए रुपयें थैलोंमें रखो। काली छतरी धूपके प्रकाशको रोकती है। फल खाना आरोग्य बढ़ाता है। उनसे यह काम नही किया जाता है। कामका विचार राह दिखाता है। आकाशमें तारें उगने परभी अन्धकार वैसा ही रहता है। ये बातें मुझसे नहीं सुनी जाती हैं। लाल कपड़ा पहनी हुई कन्याओंने मुझे देखकर खुशी मनायी। उनकी और मेरी दोस्ती बहुत दिनतक रहेगी। वेद शास्त्र पढ़े हुए ब्राह्मणोंको देखनेसे श्रद्धा होती है। उनसे लिखी गयी पुस्तकें बहुत सुन्दर होती हैं। फूल बेचनेवाले मालियोंने सुन्दर मालायें बनायीं। वह कुछ कहता हुआ गया।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

५ लकारार्थ

कालभेद—

क्रियाकालास्त्रयो मुख्या विस्तारे द्वादशोदिताः[१] ।
वर्तमानो द्विधा, भूतः षोढा, भावी चतुर्विधः ॥१४८॥

क्रियाके काल वर्तमान भूत भावी (भविष्यत्) ये तीन मुख्य हैं। उनके भेद बारह हैं—

वर्तमान—(१) सामान्य (विशेष विवक्षासे रहित), (२) गौण (वर्तमानवत् कहकर अतिदिष्ट वर्तमानका समीप भूत भविष्यत्)

भूत—(१) सामान्य (विशेष विवक्षासे रहित), (२[२]) गौण (भूतवत् कहकर अतिदिष्ट आशंसार्थक भविष्यत्), (३) अद्यतन (गत अर्धरात्रसे इधर आजका), (४) अनद्यतन (गत अर्धरात्रसे पहलेका), (५) परोक्ष (अनद्यतन होकर न देखा हुआ), (६) मिश्र (अद्यतन अनद्यतन दोनों मिला हुआ)।

---

१. भूतःपञ्चविधस्तत्र भविष्यच्च चतुर्विधः । वर्तमानो द्विधाऽख्यात इत्येकादशकल्पना ॥ गौणो भूतोऽपि । परोक्षस्त्वनद्यतनभूतभेदः । (माधवीयधातुवृत्तौ) ।

२. गयी हुई आधीरात और आनेवाली आधीरातके बीचका काल अद्यतन है। गयी आधीरातसे उधरका काल अनद्यतभूत, उसमें क्रिया न देखी गयी होतो परोक्ष अनद्यतनभूत है। उससे इधरका बीता हुआ काल अद्यतनभूत है। आनेवाली आधीरातके बादका काल अनद्यतन भविष्यत् है उससे इधरका आनेवाला काल अद्यतनभविष्यत् है। विकल्प वा समुच्चय करके अद्यतन अनद्यतन दोनों मिला हुआ भूत भविष्यत्काल मिश्र हैं। क्रियाके आरम्भसे समाप्तितकका काल वर्तमान है। वर्तमानवत् कह कर अतिदिष्ट वर्तमानके समीपका भूतभविष्यत्काल गौण वर्तमान है। भूतवत् कह कर अतिदिष्ट आशंसाका भविष्यत्काल गौणभूत है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भविष्यत्—(१) सामान्य (विशेष विवक्षासे रहित), (२) अद्यतन (आगामी अर्धरात्रसे इधर आजका), (३) अनद्यतन (आगामी अर्धरात्रसे उधरका), (४) मिश्र (अद्यतन अनद्यतन दोनों मिला हुआ)।

लकार—

लड्वर्तमाने[1] सामान्ये गौणेऽप्य, थ भविष्यति।
लुडनद्यतने[2] मिश्र-सामान्या-द्यतनेषु लृट् ॥१४९॥
लङनद्यतने भूते, परोक्षे[3] तत्र लिण्मता।
मिश्रा-द्यतन-सामान्य-गौण भूतेषु लुङ्मता ॥१५०॥

कालके अनुसारसे आख्यातमें ये लकार होते हैं—

वर्त० { सामान्यमें लट्—अहं गच्छामि—मैं जाता हूँ। स पश्यति—वह देखता है। इ०
गौणमें लट्—अयमागच्छामि—अभी आया हूँ। एष गच्छामि—अभी जाऊँगा। इ० }

---

१. सू० वर्तमाने लट्। वर्तमानसमीप्ये वर्तमानवद्वा। लुङ्। अनद्यतने लङ्। परोक्षे लिट्। आशंसायां भूतवच्च। लृट् शेषे च। अनद्यतने लुट्।

२. अनद्यतने इत्यत्र नञोऽत्यन्ताभावार्थकतया अनद्यतनत्वाभाववति भूते लङ् परोक्षेलिट् भविष्यतिलृट् इत्यर्थेन सामान्याद्यतनयोरविमिश्रेऽपि लङ् लिट् लुटामप्राप्त्या सामान्यशास्त्रेण भूते लुङ् भविष्यति लृट् इत्यनुसन्धेयम्। उक्तं च माधवीये अनद्यतन इति बहुव्रीहिनिर्देशान्न व्यामिश्रे लङः प्रसङ्ग इति। महाभाष्येऽपि अनद्यतन इतिबहुव्रीहिनिर्देशः अद्य सोऽभुक्ष्महीति।

३. क्रियासाधनानां परोक्षतामादाय परोक्षव्यवहारः, क्रियायास्तु नित्यापरोक्षत्वात्। उक्तं च माधवीये-धातुवाच्यायाः क्रियाया इन्द्रियेणाऽसन्निकर्षात्परोक्षत्वेसिद्धे परोक्षग्रहणं साधनपरोक्षार्थमिति।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भूत

सामान्यमें लुङ्—अहमपठिषि—मैंने पढ़ा । अयमशयिष्ट—वह सोया । इ०

गौणमें लुङ्—मेघश्चेदवर्षीद्धान्यमवाप्स्म—मेघ बरसेगा तो धान बोयेंगे इ०

अद्यतनमें लुङ्—प्रातरश्रौषम्—सवेरे सुना । सम्प्रति सोऽगच्छत्—अभी वह गया । इ०

मिश्रमें लुङ्—अद्य ह्योवाऽगमत्—आज या कल गया । अद्य ह्यश्चापश्यम् । इ०

अनद्यतनमें लङ्—ह्योऽगच्छत्—कल गया । परुत्समर्घमभवत्—परसाल सस्ता हुआ । इ०

परोक्षानद्यतनमें लिट्—ह्यो जगाम किल—कल गया रे । रूप्पकं पपात—रुपया गिरा रे । इ०

भविष्यत

सामान्यमें लृट्—अहं श्रोष्यामि—मैं सुनूंगा । वयं पठिष्यामः—हम लोग पढ़ेंगे । इ०

अद्यतनमें लृट्—सायं द्रक्ष्यामि—सांझमें देखूँगा । मुहूर्तेन आगमिष्यति—दो घड़ीमें आयेगा । इ०

मिश्रमें लृट्—अद्य श्वो वा भविष्यति—आज या कल होगा । अद्य श्वश्च गमिष्यामि । इ०

अनद्यतनमें लुट्—श्वो गन्तास्मि—कल जाऊँगा । अन्येद्युः पठितास्मः—दूसरे दिन पढ़ेंगे । इ०

एवं—ते श्वो द्रष्टारः । पूर्वरात्रे पठिष्यामः । अद्य प्रातरहमदर्शम् । अद्य परेद्युर्वा श्रोष्यसि । क्षणेन भविष्यति । अद्य श्वश्च त्वां भोजयिष्यामि । अरुणद्यवनः साकेतम् । वयं याजयामः । प्रातरेव गोपालो निरगमत् । सुप्तोऽहं किल विललाप । परुत् पुत्रो बभूव किल । परुत् परारि वा इत्थमभूत् । व्याघ्रो वने पलाययौ किल । क एवं मन्यते । अयमहं पठामि । पर-

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्वस्त्वं कुत्र मिलिष्यसि । उषसि प्राबोधि । श्वश्च सोऽचूचुरत् । गुरुश्चेदागमत् आशंसे पाठमपठिष्म । एषोऽहं पठामि । इदानीमेवाऽऽगच्छामि ।

विधि[1]-प्रश्न-प्रार्थनाज्ञाद्यर्थेष्वाशिषि लोट्लिङौ । सम्भावनेऽलंरहिते, शक्तियोग्यत्वयोश्च लिङ् ॥१५१॥

(क) क्रियाका विधान प्रश्न प्रार्थना आज्ञा आदि प्रवर्तना अर्थमें लोट् अथवा विधि-लिङ् होता है। उसमें प्रायः प्रथमपुरुषमें विधान। मध्यमपुरुषमें आज्ञा, उत्तमपुरुषमें प्रश्न और प्रार्थनाका बोध होता है। (ख) आशीर्वादमें लोट्, वा आशीर्लिङ्. होता है। (ग) 'अलं' शब्द न रहने पर क्रिया की पूरी सम्भावना अर्थमें सामर्थ्य योग्यता अर्थमें भी विधि-लिङ् होता है।

(क) अहरहः सन्ध्यामुपासीत-रोज रोज सन्ध्याका उपासना करे। त्वमेतद्गृहाण-तू यह ले। युवां श्रृणुतम्-तुमदोनों सुनो। यूयं सम्यक् पठेत-तुमलोग अच्छी तरह पढ़ो। भो गुरो अहं गच्छानि-गुरुजी ! मैं जाऊँ। भगवन् वयं सुखिनो भवाम; भवेम-हे भगवन् हमलोग सुखी होवें। भवतः कृपां लभेय-आपकी कृपा पावें। ते भारं वहन्तु-वे भार ढोवें।

(ख) तव पुत्रो भवतु भूयात्-लड़का हो। चिरंजीव, जीव्याः—बहुत काल तक जीओ। धनं धान्यं वर्धताम्-धनधान वढें। स परीक्षामुत्तरेत्-वह परीक्षा पास होवे।

(ग) स इदानीं गृहे स्यात्-वह अभी घरमें होगा। एष भारं वहेत्-यह बोझा उठा सकेगा।

---

१. सू० विधिनिमंत्रणामंत्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् । लोट् च । आशिषि लिङ्लोटौ । सम्भावनेऽलमिति चेत्सिद्धाप्रयोगे । शकि लिङ् च । अर्हे कृत्यतृचश्च ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

क इदमुत्तोलयेत्-इसको कौन उठा सकेगा। त्वं विद्वान् भवेः-तू विद्वान् होने योग्य हो।

एवं-जीव्याः सहस्रं समाः। पुत्रं लभस्वात्मगुणानुरूपम्। इयं कथा परिहासयेल्लोकान्। वज्रं पततु मस्तके। मा दिवा सुषुप्थाः। सत्यं वद, धर्मं चर। अनृतात्सत्यमुपयानि। मामुद्धर भवात्प्रभो। वानरा उपवनं नाशयेयुः। बालकः सोपानात्पतेत्। त्वं जीव शरदां शतम्। जीवेम शरदः शतम्। सर्वे भवन्तु सुखिनः। कस्त्वां विना गिरिशिखरमारोहेत्। अनुजानीहि मां गमनाय। दीर्घमायुष्यं ते भूयात्। ममेदं वचनं शृणु। शरणं करवाणि तावकौ चरणौ। को वेद गोप शिशुकः शैलमुत्पाटयेदिति।

[1]भाविन्यसिद्ध्यबोधे लिङ् हेतु-हेतुमतोर्द्वयोः।
भूते भाविनि चासिद्धिबोधने लृङ् मता तयोः॥१५२॥

(क) क्रियाकी असिद्धि विवक्षित न रहनेपर भविष्यत्कालमें अनेक वाक्योंमें रही हुई कार्यकारणक्रियाओंमें लिङ् होता है। (ख) क्रियाकी असिद्धि विवक्षित होने पर तो भूत और भविष्यत् दोनों कालमें कार्य कारण दोनों क्रियाओंमें लृङ् होता है।

(क) ईश्वरं भजेच्चेत्स्वर्गं गच्छेत्—ईश्वरको भजे तो स्वर्गजाय। परीक्षामुत्तरेश्चेत्पारितोषिकं लभेथाः—परीक्षा पास होगे तो इनाम पाओगे। त्वं गच्छेश्चेत्कार्यं भवेत्—तू जायगा तो काम होगा। स दृश्येत चेदामन्त्र्येत-वह देखा जाय तो बुलाया जायेगा।

(ख) सुवृष्टिश्चेदभविष्यत्सुभिक्षमभविष्यत्-अच्छी वर्षा होती तो सहकाल होता। दक्षिणेन चेदयास्यन्न शकटं पर्याभविष्यत्-दाहनेसे जाता तो गाड़ी न उलटती। माघे शीतं नाऽभविष्यच्चेन्महार्घं वस्त्रं कोऽक्रेष्यत्-माघमें जाड़ा न होगा तो महगा कपड़ा कौन खरीदेगा।

---

१. सू० हेतुहेतुमतोर्लिङ्। लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

एवं-किंवाभविष्यदरुणस्तमसां विभेत्ता तं चेत्सहस्रकिरणो धुरि नाकरिष्यत्। यद्यत्र तातः सन्निहितो भवेत् ततः किं भवेत्। कृत्यं घटेत सुहृदो यदि तत्कृतं स्यात्। अकरिष्यदसौ पापं नाभविष्यमहं यदि। यदि धुर्यो न युज्येत विचलेच्छकटः कथम्। दारुचेदलप्स्यत ओदनमपक्ष्यत। यदि सोऽत्रागमिष्यत्पायसमभोक्ष्यत। कृष्णमुपासीत चेत्संसारं तरेदेव। मेघश्चेद्वर्षेत्समर्थं भवेत्।

भूतानद्यतने[1] लट् स्मे, माङियुक्ते सदैव लुङ्।
लङ्लुङौ मास्मयोर्योगे, मायोगे तु यथास्थिति ॥१५३॥

(क) परोक्ष वा अपरोक्ष अनद्यतन भूतकालमें 'स्म' का योग होनेपर लङ् लिट् की जगहोंमें लट् होता है। (ख) 'माङ्' का योग होनेपर सर्वत्र लुङ् मात्र होता है। (ग) 'मास्म' दोनों का योग होनेपर लङ् वा लुङ् होता है। (घ) 'मा' के योग होनेपर तो सामान्य नियमानुसार सब लकार होते हैं।

(क) यजति स्म युधिष्ठिरः—युधिष्ठिरने यज्ञ किया[2] था। गच्छन्ति स्म—गया। पठन्ति स्म—पढ़े। इ०

(ख) मा भवान् भूत्—आप न हो। तथा मा भूत्—ऐसा न हुआ। मा कार्षीः—न करोगे। मा गमत्—न जाओ।

(ग) मास्म भवत्-भूत् वा—न हो। मास्म कार्षीः करोः वा—न करोगे। मास्म गाम्-न जावें। इ०

---

१. सू० लट् स्मे। माङि लुङ्। स्मोत्तरे लङ् च।

२. योगविशेष अर्थविशेष से संस्कृत में भिन्न कालका लकार होनेपर भी हिन्दीमें प्रायः सामान्य नियमानुसार कालका व्यवहार होता है। इससे अनुवादमें फरक पड़ता है यह सर्वत्र याद रखना चाहिये।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(घ) मा ब्रूहि दीनं वचः—दीन वचन न बोलो। मा कुरु—न करो। मा स्वपिहि—न सोओ। इ०

एवं—क्रीणन्ति स्म प्राणमूल्यैर्यशांसि। पापे रतिं मा कृथाः। मास्म प्रतीपं गमः। मा नैषीः, मा कुरु धनजनयौवनगर्वम्। इतिस्मपृच्छत्यनुवेलमादृतः। तपोवनवासिनामुपरोधो माभूत्। क्लैब्यं मास्म गमः पार्थ। तत्र वने सिंहः प्रतिवसतिस्म। मामूमुहन् खलु भवन्तमनन्यजन्मा।

भूतानद्यतने[1] लट् लिट् लङ् लुङ् चाऽस्मपुरायुजि।
भविष्यति तु लड् यावत्पुरायोगेऽवधारके ॥१५४॥

(क) 'स्म' से रहित 'पुरा' शब्दके योगमें अनद्यतन भूतकालमें लट् लिट् लङ् लुङ् चारों होते हैं (स्म होनेपर तो लट् ही होता है) (ख) भविष्यत्कालमें निश्चयार्थक 'यावत्, पुरा' शब्दके योगमें लट् ही होता है।

(क) वसन्तीह पुरा छात्राः—अवात्सुः—अवसन्-ऊपुर्वा—पहले यहाँ छात्र लोग रहते थे। दृश्यन्तेऽत्र पुरा भयानकाः प्राणिनः—अदर्शिषत, अदृश्यन्त, ददृशिरे वा—पहले यहाँ डरावने प्राणी देखे जाते थे। (यजतिस्म पुरा—पहले यज्ञ किया था)।

(ख) यावद्भुङ्क्ते पुरा भुङ्क्ते—खायगा ही। यावदाक्रमते—आक्रमण करेगा ही।

एवं—पुरा वयं पठामः। पुराऽयं रथेनागमत्। पुराऽसौ अश्वमारुह्य गच्छति स्म। यावद्गृहिणीमाहूय सङ्गीतकमनुतिष्ठामि। यावदिमां छायामाश्रित्य प्रतिपालयामि। यावत् प्रतापनिधिराक्रमते न भानुः। यावदागमयतेऽथ नरेन्द्रान्। यावत्तैलं तावद्व्याख्यानं भवति।

---

१. सू० पुरि लुङ् चास्मे। यावत्पुरानिपातयोर्लट्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भविष्यंतीप्सया[१] प्रश्ने, लिप्सया फलदर्शने।
कदायोगे च लडपि, विस्मये लृट् सदाऽयदौ ॥१५५॥

(क) पानेकी इच्छासे भविष्यत् - क्रियाके प्रश्नमें, पानेकी इच्छा उसका फल भी दिखानेमें, और 'कदा' शब्दके योगमें भी लुट् लट् ल भी होते हैं। (ख) 'यदि' शब्द न रहनेपर आश्चर्य दिखानेमें सर्वत्र लृट् ही होता है; 'यदि यत् यदा' शब्द रहनेपर तो लिङ् ही होता है।

(क) कं भोजयसि, भोजयिष्यसि, भोजयितासि वा—किसको खिलाओगे। कस्मै ददासि, दास्यसि, दातासि—किसको दोगे। यो भोजयति भोजयिष्यति, भोजयिता वा स, स्वर्गं याति, यास्यति, याता वा— जो खिलायेगा वह स्वर्ग जायेगा। कदा पठसि, पठिष्यसि, पठितासि वा— कब पढोगे। कदा पश्यामि, द्रक्ष्यामि, द्रष्टास्मि वा—कब देखूंगा।

(ख) आश्चर्यमन्धो नाम द्रक्ष्यति—अन्धेने देखा तो आश्चर्य है। चित्रं मूकः पठिष्यति—गूंगा पढ़ता है तो आश्चर्य है। अद्भुतमेतद्बधिरः श्रोष्यति—बहरा सुनेगा तो आश्चर्य है।

आश्चर्यं यदि मूकोऽधीयीत। अद्भुतमिदं पङ्गुर्गिरिं लङ्घयेत्।

एवं—चित्रमसौ परीक्षायां प्रथमो भविष्यति। आश्चर्यं यदि सोऽनुत्तीर्णो भवेत्। कः पारितोषिकं लभते। यः पुरोभविता स वर्ष्यं लब्धा। चित्रंचित्रं गर्भ एव वामदेवस्तत्वं ज्ञास्यति। अद्भुतमिदं यद्ब धिरः श्रृणुयात्। कः खलु युवा धन्योऽधरं धास्यति।

---

१. सू० किंवृत्ते लिप्सायाम्। लिप्स्यमानसिद्धौ च। विभाषा कदा कर्ह्योः। शेषे लृडयदौ। जातुयदोर्लिङ्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हशश्वद्योग[१], आसन्नप्रश्ने लङपि लिट्स्थले।
लडुत्तरे ननोर्योगे भूते, नन्वोस्तु लङ्लुङौ ॥१५६॥

(क) 'ह शश्वत्' शब्दके योगमें और अचिरकालकी क्रियाके मेें भी अनद्यतन परोक्षभूतमें लिट् लङ् दोनों होते हैं। (ख) प्रश्नके रमें भूतकालमें 'ननु' के योग होनेपर लट्, 'न' वा 'नु' के योगमें वा लुङ् होता है।

(क) इति हाऽकरोत् चकार वा—ऐसा किया था। शश्वदपठत्, प-ठ वा—बार बार पढ़ता था। एवं हाऽशृणवम्, शुश्रुव वा—ऐसा सुना। शश्वद्व्याख्यानमकरोत् चकार वा—बार बार व्याख्यान किया। गच्छत् जगाम वा किम्—गया क्या।

(ख) अकार्षीः किम्-ननु करोमि भोः—किया है। अगच्छत्किम्—नु गच्छति—गया था। अपठीः किम्—न पठामि। नापठिषि वा—हीं पढ़ा। अगमन् किम्—ते नु गच्छन्ति अगमन् वा—वे गये होंगे।

एवं—इह नु श्रमक्लान्तमात्मानं विनोदयामि। एवं होवाच-गवान्। तथा हावोचत्।

स्मृत्यर्थयोगे[२] यच्छब्दरहिते लृट् लङः स्थले।
लक्ष्यलक्षणभावे तु लृट्लङौ यदि सत्यपि ॥१५७॥

(क) स्मरणार्थक क्रियाका योग होनेपर यच्छब्द न हो तो अनद्यतन तमें लृट् होता है। यच्छब्द रहने पर तो लङ् ही होता है। (ख) सीमें एक क्रियाके साथ दूसरी क्रियाका लक्ष्यलक्षणभाव होनेपर च्छब्द रहे वा न रहे लृट् लङ् दोनों होते हैं।

---

१. सू० हशश्वतोर्लङ् च। प्रश्ने चासन्नकाले। ननौ पृष्ठ प्रति चने। नन्वोर्विभाषा।

२. सू० अभिज्ञावचने लृट्। नर्यदि। विभाषा साकाङ्क्षे।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) स्मरसि सखे काश्यां वत्स्यामः—याद है मित्र काशीमें रहते थे। अभिजायते राम सह पांशुक्रीडां करिष्यावः—ख्याल है राम के साथ धूल खेलते थे। स्मरसि राम यद्वने अभुञ्ज्महि—याद है राम जो कि वनमें खाये थे।

(ख) स्मरसि राम काश्यां वत्स्यामः, अवसाम वा—तत्र शास्त्रं पठिष्यामः, अपठाम वा—ख्याल है राम काशीमें रहे थे, वहां शास्त्र पढ़ते थे। चेतयसे सखे यद्वने विहरिष्यामः, व्यहराम वा—तत्र फलानि भक्षयिष्यामः, अभक्षयाम वा—ख्याल करते हो मित्र जो कि वनमें टहलते थे, वहाँ फल खाते थे।

एवं—हे कृष्ण भवान्रामो भूत्वा रावणं हनिष्यति स्मर्यते किमु। अभिजानीहि गोपाल काश्मीरान् गमिष्यामः अगच्छाम वा तत्र द्राक्षा भोक्ष्यामः अभुञ्ज्महि वा। चिन्तयामि यत्परुद्दुःखिता अभवाम। स बुध्यते यत्कलिकातां गमिष्यति अगच्छद्वा तत्र नृत्यं द्रक्ष्यति अपश्यद्वा।

भूते[1] भविष्यत्यासन्ने पत्ते लङ् वर्तमानवत्।
भूतवल्लुङ् लट् च पत्ते भाविन्याशंसने क्वचित् ॥१५८॥

(क) वर्तमानके नजदीक भूत भविष्यत्कालमें वर्तमानमें जैसा लट् अथवा भूत भविष्यत् के अपने अपने लकार भी होते हैं। (ख) शीघ्रता व आशंसाके वाचक शब्द न रहनेपर भविष्यत्कालकी क्रियाकी आशंसा (पानेकी इच्छा) में भूतमें जैसा लुङ् अथवा वर्तमानमें जैसा लट् और भविष्यत्के लकार भी होते हैं। (ग) शीघ्रतावाचक शब्द रहनेपर तो लट्, आशंसावाचक शब्द रहनेपर तो लिङ् ही होता है। ये ही क-ख-गौण वर्तमान गौण भूत होते हैं।

---

१. सू० वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा। आशंसायां भूतवच्च। क्षिप्रवचने लृट्। आशंसावचने लिङ्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) कदा आगतः—एष आगच्छामि—यह आता हूँ, वा आगमम्-यह आए। आगच्छन्नस्मि—आता ही हूं। आगच्छन्तमेव मां विद्धि—मुझे आता ही जानो। कदा गमिष्यसि—एष गच्छामि – यह जाता हूँ वा गमिष्यामि—जाऊँगा।

(ख) गुरुश्चेदागमत्, आगतः आगच्छति, आगमिष्यति वा—वयं पाठमपठिष्म, पठामः, पठिष्यामः वा—गुरु आयेंगे तो पाठ पढ़ेंगे। वृष्टिश्चेदभवत्, भवति, भविष्यति वा—सुभिक्षमभवत्, भवति, भविष्यति वा—वर्षा होगी तो सुभिक्ष होगा।

(ग) वृष्टिश्चेत् शीघ्रं भविष्यति धान्यं वप्स्यामः—वर्षा जल्दी होगी तो धान बोयेंगे। गुरुश्चेदागच्छेत् आशंसेऽधीयीय—गुरुजी आयेंगे तो आशा करते हैं कि पाठ पढ़ेंगे। आशु रूप्यकं चेलप्स्यते छत्रं क्रेष्यते—जल्दी रुपया मिल जायेगा तो छतरी खरीदी जाएगी।

एवम्—एष लिखामि। अयं पठामि। अयमागतः। मेघश्चेद्वर्षीद्धान्यमवाप्स्मः। शीघ्रं त्वं यास्यसि चेद्द्रव्यं प्राप्स्यसि।

कचिद्[1]भूतेऽपि भवति ज्ञानतोवर्तमानवत्।
कचिच्च वर्तमानेऽपि ज्ञानतो भूतभाविवत् ॥१५६॥

---

१. इह हि किञ्चिदिन्द्रियकर्म, किञ्चिद्बुद्धि कर्म, इन्द्रियकर्म समासादनं, बुद्धिकर्म व्यवसायः एवं हि कश्चित्पाटलिपुत्रं जिगमिषुराह योऽयमध्वा गन्तव्य आपाटलिपुत्रादेतस्मिन्कूपो भविष्यति। अनद्यतनेकूपो भवितेति। समासाद्यकूपेऽस्तीति। समासाद्यातिक्रम्य कूपोऽभूदिति। समासाद्यातिक्रम्योषित्वा कूप आसीदिति। समासाद्यातिक्रम्योषित्वा विस्मृत्य कूपो बभूवेति। महाभाष्ये सू ३. ३. १३३. तत्रैवकैयट :—इन्द्रियव्यापारकालस्य कूपसत्वंप्रति भेदकत्वेनाश्रयणात्तस्यापि तत्कालत्व मित्यर्थः तदुक्तं हरिणा-सतामिन्द्रियसम्बन्धात्सैव सत्ता विशिष्यते इत्यादि।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) कहीं क्रिया अतीत होनेपर भी ज्ञानकी वर्तमानताको लेकर वर्तमानका जैसा लकार होता है। (ख) कहीं क्रिया वर्तमान होने पर भी ज्ञानकी भूतता भविष्यत्ताको लेकर भूतके जैसे भविष्यत्के जैसे लकार होते हैं।

(क) अस्ति भागीरथीतीरे महान्पर्कटीवृक्ष:—गङ्गाके किनारेमें बड़ा पाकड़का पेड़ है। तत्र मृगकाकौ निवसत:—वहाँ मृग और कौआ रहते हैं। काको मृगमाह—कौआ मृगको कहता है। (ख) तत्र मार्गे पर्वत आसीत्—वहां रस्ते में पहाड़ था। अग्रे कूपो भविष्यति आगे कूँवा होगा।

एवं—दिनेषु गच्छत्सु प्रत्यहं पक्षिशावकान्खादति स मार्जार:—त्वं नगरं गच्छ तत्र महान्त: प्रासादा भविष्यन्ति। अहं काशीमगच्छम्—तत्र महानदी भागीरथी आसीत्। भाविभूषणसंभारां साक्षात् कुर्वे तवाकृतिम्। आसीद्गिरिवरो राजंस्त्रिकूट इति विश्रुत:।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

कालके मुख्य भेद कितने हैं। किस कालके कितने भेद होते हैं। गौण मिश्र कैसे होते हैं। अद्यतन अनद्यतनमें क्या भेद हैं। मिश्र अद्यतन भूत भविष्यत्में कौन लकार होते हैं। स्म मास्म ननु पुरा यावत् के योगमें कौन लकार होते हैं। लङ् लकार कहाँ होता है। लिङ् लोट्के विषय कितने हैं। स्मरणार्थक शब्दके योगमें कौन कौन लकार होते हैं। कार्य्य कारण दो क्रियाओंमें कौन लकार होता है। नीचे लिखे हुए वाक्योंका अनुवाद करो उनके आख्यातोंमें कालका लकारका भी उपपादन करो—

तत्र कोलाहलो बभूव। भृत्य: परश्वो गन्ता। वयं वने विहरिष्याम:। तत्र फलानि भक्षयिष्याम: स्मर्यते किम्। श्व: परश्वो वा कदा गन्तासि। यूयं मा विलम्बध्वम्। सम्प्रति परश्वश्चाहमेष्यामि। पुराऽत्र ब्राह्मणा भूयांसो वसन्ति स्म। त्वं पुस्तकमखण्डय:। परुद्-

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गच्छत् । सिंहो जगर्ज । पृच्छति स्म जनोमार्गम् । मा संशयोऽभूत् । यावद्ददाति । परीक्षामुदतरिष्यच्चेत्स राज्ञः प्रसादमलप्स्यत । यद्यहं प्रतिरोधको नाभविष्यंस्तर्हि स पापमप्यकरिष्यत् । नगच्छेश्चेत्कार्यं व्याहन्येत । पुत्रं लभस्वात्मगुणानुरूपम् । सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयात् । भो भोज्यं लभेय । लभेत सिकतास्वपि तैलम् । आधीयतां धर्मे धीः । ततः प्रविशति कञ्चुकी । स त्वां यदि पश्येत्तदा तन्मनोऽभिष्यन्देत । माभूद्वृथा धनव्ययः । पञ्चषैरहोभिरेते गन्तारः । अस्ति पाटलिपुत्रे बलभिन्नाम वणिक् ।

मैं अभी जाता हूं । रुपये मिलें तो उम्मीद करता हूँ बहुत सुखी होऊँगा । रामने गोपालको आज सबेरे पीटा । आज मैं तुम्हारे मकानमें नहीं आऊँगा । वह कल बीमार था । वह इस बखत घरमें होगा । इतना कौन खा सकेगा । मैं कहाँ जाऊँ किसको पूछूँ । आप लोग जीते रहें । रास्तेमें कंकड़ न होते तो कौन जूता पहनता । मेरे आनेसे आपके काममें विघ्न न पड़े । तुझे स्मरण है जो हम कहे थे । याद होगा परसाल आप आए थे तब बड़ा आनन्द हुआ था । वह सुखी रहे । मैं जाऊँ ? । यह आश्चर्य है कि आप भी परीक्षामें फेल हुए । उसने बार बार यही बात कही । परसाल धान बहुत फला था । फूल खिलेंगे तो सुबास चलेगा । ये लोग कल आयेंगे । आज या कल रुपयाँ अवश्य मिलेगा । आज भी कल भी उसने नहीं पढ़ा ।

———

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(६) विशेष काल अर्थ

संयुक्त काल अर्थ—

सत्ताक्रियावाच्यक विधेयात्मविशेषणैः ।
कर्तृकर्मार्थैः कृदन्तैः कालोऽर्थश्च विशेष्यते ॥१६०॥

कर्तृवाच्य सत्ता-क्रिया के साथ विधेय विशेषण बनाकर कर्तृ कर्मार्थक कृदन्त जोडने से आख्यात के काल अर्थ में विशेष प्रतीत होता है।

कर्ता—

सः—कुर्वन्, कृतवान्, करिष्यन् अस्ति—वह कररहा, करचुका, करनेवाला है
,, ,, ,, ,, आसीत् ,, ,, ,, ,, था
,, ,, ,, ,, भविष्यति,, ,, ,, ,, होगा
,, ,, ,, ,, अस्तु- ,, ,, ,, ,, होवे
,, ,, ,, ,, स्यात्—,, ,, ,, ,, होगा

कर्म—

तत्—क्रियमाणं, कृतं, करिष्यमाणम् अस्ति—वह किया जारहा, किया जाचुका, किया जानेवाला है
,, ,, ,, ,, आसीत्- ,, ,, ,, था
,, ,, ,, ,, भविष्यति ,, ,, ,, होगा
,, ,, ,, ,, अस्तु— ,, ,, ,, होवे
,, ,, ,, ,, स्यात्— ,, ,, ,, होगा

पदान्तरस्य संयोगात्कालोऽर्थो वा विशेषितः ।
संयुक्तः कथ्यते लोके सामान्यः केवलात्मकः ॥१६१॥

कृदन्त क्रिया के योग से विशेष बने हुए काल वा अर्थ लोक में संयुक्त कहे जाते हैं। केवल आख्यात से बोध्य सामान्य होते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सत्ताख्याते भवद्भूतभविष्यत्कृत्क्रियायुते ।
अपूर्तिपूर्त्यनारम्भैः कालोऽर्थश्च विशिष्यते ॥१६२॥

सत्ता क्रिया के आख्यात के साथ पूरक वनकर मिला हुआ विवक्षित क्रियाबोधक कृदन्त वर्तमानार्थक होने पर अपूर्णता, भूतार्थक होने पर पूर्णता, भविष्यदर्थक होने पर अनारम्भरूप विशेष आख्यात के काल व अर्थ में प्रतीत होते हैं ।

क्तक्तवत्वोः क्रियापूर्तिरपूर्तिः शतृशानयोः ।
अनारम्भः स्यशत्रादौ ज्ञायते कर्तृकर्मणोः ॥१६३॥

कर्ता में क्तवतु से कहीं क्त से भी, कर्ममें क्त से पूर्णता, कर्ता में शतृ शानच्से, कर्म में य-शानच्से अपूर्णता, कर्ता में स्य-शतृ शानच्से, कर्म में य-स्य-शानच्से अनारम्भ विशेष जाने जाते हैं ।

असंयुक्त कर्तरि

सामान्य वर्तमान—अहं शये । रामो गच्छति ।
,, भूत— बालोऽशेत । सोऽगमत् ।
,, भविष्यत्—स शयिष्यते । स गमिष्यति ।
,, विधि—बालः शेताम् । स गच्छतु ।
,, सम्भावना—स शयीत । स गच्छेत् ।

असंयुक्त कर्मणि

सामान्य वर्तमान—ग्रामो गम्यते । पत्रं लिख्यते ।
,, भूत— ग्रामोऽगामि । पत्रमलेखि ।
,, भविष्यत्—तद्दास्यते । पत्रं लेखिष्यते ।
,, विधि— तद्दीयताम् । पत्रं लिख्यताम् ।
,, सम्भावना—तद्दृश्येत । पत्रं लिख्येत ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

संयुक्त— कर्तरि

अपूर्ण वर्तमान—स गच्छन्नस्ति। शयानोऽस्ति।
पूर्ण ,, —स गतोऽस्ति। शयितवानस्ति।
अनारब्ध ,, —स गमिष्यन्नस्ति। शयिष्यमाणोऽस्ति।
अपूर्ण भूत —स गच्छन्नासीत्। शयान आसीत्।
पूर्ण ,, —स गत आसीत्। भुक्तवानासीत्।
अनारब्ध ,, —स दास्यन्नासीत्। द्रक्ष्यमाण आसीत्।
अपूर्ण भविष्यत्—स गच्छन्भविष्यति। शयानो भविष्यति।
पूर्ण ,, —स गतो भविष्यति। भुक्तवान्भविष्यति।
अनारब्ध ,, —स दास्यन्भविष्यति। नेष्यमाणो भविष्यति।
अपूर्ण विधि —स गच्छन्नस्तु। शयानोऽस्तु।
पूर्ण ,, —स गत आसीत्। शयितवानस्तु।
अनारब्ध,, —स गमिष्यन्नस्तु। दास्यमानोऽस्तु।
अपूर्ण संभावना—स गच्छन्स्यात्। शयानः स्यात्।
पूर्ण ,, —स गतः स्यात्। कृतवान्स्यात्।
अनारब्ध ,, —स दास्यन्स्यात्। शयिष्यमाणः स्यात्।

संयुक्त— कर्मणि

अपूर्ण वर्तमान —पत्रं लिख्यमानमस्ति।
पूर्ण ,, —पत्रं लिखितमस्ति।
अनारब्ध ,, —पत्रं लेखिष्यमाणमस्ति।
अपूर्ण भूत —पत्रं लिख्यमानमासीत्।
पूर्ण ,, —पत्रं लिखितमासीत्।
अनारब्ध ,, —पत्रं लेखिष्यमाणमासीत्।
अपूर्ण भविष्यत्—तद्दृश्यमानं भविष्यति।
पूर्ण ,, —तद्दृष्टं भविष्यति।
अनारब्ध ,, —तद्द्रक्ष्यमाणं भविष्यति।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

संयुक्त— कर्मणि
अपूर्ण विधि —तद्दीयमानमस्तु।
पूर्ण ,, —तद्दत्तमस्तु।
अनारब्ध ,, —तद्दास्यमानमस्तु।
अपूर्ण संभावना—तत्क्रियमाणं स्यात्।
पूर्ण ,, —तत्कृतं स्यात्।
अनारब्ध ,, —तत्करिष्यमाणं स्यात्।

एवं-माता ओदनं पक्ष्यमाणाऽऽसीत्। मयैतच्छ्रूयमाणमासीत्। वयं पित्रा ताडिष्यमाणाः स्मः। तेनेदं दत्तमस्ति। स पत्रं लिखन्नस्ति। मया पुराणानि श्रुतान्यासन्। अस्माभिः काव्यानि पठितानि सन्ति। सा मह्यं मिष्टान्नं दत्तवत्यासीत्। तयेदं क्रियमाणं स्यात्। कार्यं साधु करिष्यमाणमासीत्। ते भुक्तवन्तः स्युः। यज्वानो यक्ष्यमाणा भविष्यन्ति। युष्माभिः शास्त्राण्यध्येष्यमाणानि स्युः। इमानि त्वया लिखितानि स्युः। त्वं पठन्नासीः। वयं कार्याणि कुर्वाणाः स्मः। अहं तेन द्रक्ष्यमाण आसम्। यूयं दुष्टेन पीडिताः स्थ। स प्रहृष्टः स्यात्।

समेऽप्यर्थेऽस्तिभवतिक्रिययोः सूक्ष्ममन्तरम्।
व्यवहारानुसारेण क्वचित्किमपि युज्यते ॥१६४॥

'अस् भुवि, भू सत्तायाम्' कहने से 'अस् भू' दोनों धातुओंका अर्थ समान होने पर भी 'अस्' से सत्ता स्थिति विद्यमानता आदि, 'भू' से भवन उत्पत्ति प्राप्ति सम्भव आदि कुछ सूक्ष्म अर्थ व्यवहार के अनुसार प्रतीत होते हैं। सार्वधातुक (लट् लङ् लोट् विधिलिङ्) में मात्र दोनों के रूप भिन्न-भिन्न होते हैं। आर्द्धधातुक। (लिट् लुट् लृट् आशीर्लिङ् लुङ् लृङ्) में तो दोनों के रूप एक होते हैं।

(क) तत्र वस्त्रमस्ति–वहां कपडा है। पर्वता उच्चाः सन्ति–पहाड

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ऊँचे है। व्याघ्राः क्रूराः सन्ति—बाघ क्रूर हैं। अहं धार्मिकोऽस्मि—मैं धर्मात्मा हूँ। स तूष्णीमासीत्—वह चूप था।

(ख) पुत्रो भवति—लडका होता है। स तूष्णीमभूत्—वह चूप हुआ। पर्वताः उच्चाः भवन्ति—पहाड़ ऊँचे होते हैं। व्याघ्राः क्रूरा भवन्ति—बाघ क्रूर होते हैं। अहं पण्डितो भवामि—मैं पण्डित होता हूँ।

पर संयुक्त काल अर्थ में व्यवहार अनुसार वर्तमान भूत विधि सम्भावनाओं में प्रायः अस्' के भविष्यत्में दोनों के समान होने से 'भू' के आख्यात प्रयुक्त होते हैं।

वाक्यमर्यादया सत्ताख्याते मुख्ये भवत्यपि।
गौणक्रियैव संयुक्ते याति प्राधान्यमर्थतः॥१६५॥

संयुक्त क्रियामें वाक्यकी मर्यादासे सत्ता क्रियाका आख्यात ही मुख्य है। तात्पर्यकी दृष्टिसे तो सत्ता क्रिया केवल वाक्यका पूरक सहाय मात्र होता है। कृदन्त क्रिया ही मुख्य प्रतीत होती है।

आख्यात[1]गौणक्रिययोः कालभेदेऽप्युपस्थिते।
मुख्येनाख्यातकालेन गौणकालोऽनुरज्यते॥१६६॥

एक ही वाक्य में आख्यात में एक काल उसके सहयोगी कृदन्त क्रिया में प्रत्यय से उसके विपरीत दूसरा काल प्रतीत होने पर भी

---

१. धातुसम्बन्धे प्रत्ययाः। महाभाष्ये—भूतकालो भविष्यत्कालेनाभिसम्बध्यमानो भविष्यत्कालः सम्पद्यते। उपपदस्य तु कालान्यत्वम्। कौमुद्याम्—तिङ्वाच्यक्रियायाः प्राधान्यात्तदनुरोधेन गुणभूतक्रियावाचिभ्यः प्रत्ययाः वसन्ददर्श भूते लट् अतीतवासकर्तृकदर्शनमर्थः इति (३.४.१.)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तात्पर्य से आख्यात का काल मुख्य होने से कृदन्त का काल भी उसी समान बन जाता है।

वर्तमान के प्रत्यय भूतमें—

वसन्ददर्श—रहते हुए देखा। (देखना जैसा रहना भी भूतका)। लिखन्नासीत्। भुञ्जानमपश्यम्। गच्छता तेन वस्त्रमप्यनायि। स कार्यं कुर्वाणो निदद्रौ। शयानो बालःस्तन्यं पिबति। पूज्यमाना देवताः प्रसीदन्ति स्म। कार्यं क्रियमाणमदृश्यत।

वर्तमानके प्रत्यय भविष्यत्में—

उडुपेन तरन्पारं गमिष्यति—डोंगीसे तैरता हुआ पार जायगा। (जाना जैसा तैरना भी भविष्यत्का)। श्वो लिखन्भविता। सत्कुर्वन्त स्तेभ्यो वस्त्राणि दास्यन्ति। अधीयानो द्रक्ष्यते। मनोमोदयद्वृत्तं श्रोष्यते। पुराणं पठ्यमानं ज्ञास्यते।

भूतके प्रत्यय वर्तमानमें—

पुण्यकृतः पूज्यन्ते--पुण्य। कर चुके हुए पूज्य होते हैं। (पूज्य होना जैसा पुण्य करना भी वर्तमानका) शास्त्रे पारदृश्वा दृश्यते। पीठे तस्थिवांसं पश्यामि। मया स दृष्टोऽस्ति। उत्थितवान् ज्ञायते। तेनोक्तं श्रूयते। पीठमधिष्ठितः श्रूयते।

भूतके प्रत्यय भविष्यत्में—

भुक्तवान्भविष्यति—खा चुका होगा (होना जैसा खाना भी भविष्यत्का) सोमयाजी पुत्रो भविता। तं गतवन्तं द्रक्ष्यामि। तत्रोपेयुषा संमानः प्राप्स्यते। पारदृश्वा सम्पत्स्यते। सरसिजं द्रक्ष्यते। अग्निचित्पुत्रो जनिष्यते। सोमविक्रयी द्रक्ष्यते।

भविष्यत्के प्रत्यय वर्तमानमें—

गमिष्यन्नुत्तिष्ठति—जानेवाला उठता है (उठना जैसा जाना भी वर्तमानका)। प्रस्थायिनमाह्वयामि। द्रक्ष्यन्नास्ते। गुरुमनुयास्यंश्चलति। अनुभविष्यन् दृश्यते। करिष्यमाणः श्रूयते। पठिष्यमाणं ज्ञायते।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भविष्यत्के प्रत्यय भूतमें—

भाविकार्यं समपद्यत--होनेवाला काम हो गया (सम्पन्न होना जैसा होना भी भूतका)। स तदा गमिष्यन्नासीत्। भाविनी कर्मरेखा प्रबलाऽऽसीत्। अन्वेष्यमाणमपश्यम्। प्रस्थायी पुरुषो मयाऽदृश्यत।

'मतुप् इनि' आदि कोई तद्धित प्रत्यय 'अस्मिन्नस्ति अस्यास्ति' आदि वर्तमानमें होते हुए भी और कालके आख्यात रहनेपर उसी कालमें होते हैं।

त्वं धनी भविष्यसि। स बुद्धिमानासीत्। ते धनवन्तो बभूवुः। तं पुत्रवन्तं द्रक्ष्यामि। धैर्यवानदृश्यत।

वास्तवमें वाक्य प्रयोक्ताकी दृष्टिसे मुख्य क्रिया भूत भविष्यत् वर्तमान जिस कालकी है उसी कालके अनुसारसे आख्यात प्रयुक्त होते हैं। मुख्य क्रियाके समयमें गौण क्रिया हो रही हो चुकी वा होनेवाली जैसी विवक्षित है उसीके अनुसारसे गौण क्रियामें वर्तमान भूत भविष्यत्कालके प्रत्यय होते हैं।

क्रिया में अर्थ विशेष—

किलैव खलु नन्वादेरव्ययस्य सहस्थितेः।
सामान्ये वापि संयुक्ते प्रसिद्ध्याद्यपि बुध्यते ॥ १६७ ॥

सामान्य वा संयुक्त क्रियापद के साथ 'किल' रहने से प्रसिद्धि आदि 'एव' रहने से अवधारण, 'खलु' रहने से निश्चय आदि, 'न, मा; रहने से निषेध, 'नु' रहने से वितर्क आदि, 'ननु रहने से प्रश्न, 'नाम' रहने से उपेक्षा आदि विशेष अर्थ भी प्रतीत होते हैं, ये शब्द जिस अंश में विशेष दिखाते हों उसी के साथ रहते हैं।

आसीत्किल नलो राजा। स गच्छन्नेवासीत्, तत्कृतं स्यादेव। तदेव कृतं स्यात्। अहम् लिखान्येव। क्रूराः खलु हृदि स्त्रियः, न गच्छति। मा ब्रूहि दीनं वचः। नैव गच्छामि, नैव करोति, स गच्छति नु, लिखति ननु, अस्तु नाम। पठन्नासीन्नाम। स गच्छन्नेवासीन्नु इ०।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भाषायां क्रिययोर्योगाद्विशेषार्थोऽवबुध्यते ।
संस्कृते तु तथा कर्तुमन्ययाद्येव योज्यते ॥ १६८ ॥

भाषा में प्रधान क्रिया के साथ कोई सहायक क्रिया आगे जोड़ने पर 'खा चुकना, कर सकना, लिख डालना, इत्यादि विशेषार्थ-बोधक संयुक्त क्रियाएँ भी होती हैं, संस्कृत में इस तरह धातुओं का योग न होने से वैसे अर्थ विशेष अव्यय कृदन्त आदि दूसरे शब्द के योग से प्रतीत होते हैं,

पूर्णताबोधक—खा चुका--कामभक्षयत्। देख चुका हूँ—कामं दृष्टवानस्मि। वह कर चुका—स काममकरोत्।

शीघ्रता बोधक—कर डालता है—करोत्येव। मैंने देख डाला—अहमपश्यमेव। लिख डाला—अलिखदेव।

स्थिति बोधक—कर रहा है—कुर्वन्नस्ति। खा रहा था—भुञ्जान आसीत्। सुन रहा हूँ—शृण्वन्नस्मि।

सातत्य बोधक—करते जाता है—कुर्वन्नेवास्ति। होते आता था—भवन्नेवासीत्। देखते जावो—पश्यन्नेवैधि।

हठ बोधक—करछोडा—अकरोदेव। कह छोडता है—कथयत्येव।

अनास्था बोधक—कह देता हूँ—कथयामि नाम। करने दो—करोतु नाम। होने दो—अस्तु नाम।

योग्यता बोधक—करना पड़ा—कर्तव्यमभूत्। देखना पड़ता है—द्रष्टव्यमस्ति।

शक्ति बोधक—खा सकता है—अलं भक्षयति। वह कर सका—सोऽलमकरोत्।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

संयुक्त काल अर्थ किसको कहते हैं। संयुक्त काल अर्थ किस तरह होते हैं। आख्यात और कृदन्त क्रिया के काल में कौन मुख्य

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

होता है। संयुक्त में कौन क्रिया मुख्य होती है। क्रिया में अर्थ विशेष किस तरह प्रतीत होते हैं। संयुक्त क्रिया के अर्थ संस्कृत में किस तरह दिखाये जाते हैं। सामान्य और संयुक्त काल में क्या फरक होती है।

निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद करो, संयुक्त काल अर्थ का भी परिचय करो—

वयं तीर्थानि गच्छन्त एव स्मः। स मामपश्यदेव। अहं तस्मै पुस्तकं दत्तवानस्मि। तत्र पुराणं वाच्यमानं स्यात्। अहमिदं श्रावयामि नाम। रमणीयं काव्यं श्रुतमासीत्। तेऽभक्षयन्नेव। अस्माभिस्तद्द्रष्टव्यमासीत्। भवद्भिरिदं ज्ञातव्यं भविष्यति। वस्त्रं धाव्यमानमासीत्। वणिजः फलानि विक्रीणाना अदृश्यन्त। वीरा युध्यमाना आसन्। एषाऽलं पक्ष्यति। सर्वाणि वस्तूनि मनो हरन्तु नाम। ताः पश्यन्त्य एव भविष्यन्ति। अहमुपदिशन्नस्मि। तौ वस्त्रं परिदधानावास्ताम्। स गच्छतु नाम। वयं कुर्म एव। पाठः श्रूयमाणः स्यात्। स भुक्तवान् स्यात्। न स परिचितोऽस्ति। तत्कार्यं तैः कार्यमाणमासीत्। भूमिर्लिप्ताऽस्ति। गृहं निर्मितमासीत्। मयेदं नैवालोचितमासीत्।

हमलोग नीचे उतरते थे। परसाल धान बहुत हुआ था। आप क्या कर रहे हैं। मैंने पढ़ा है। वह उसको यह बात कह देता है। वह नहीं लिख सकता था। रोके जाने पर भी उन्होंने करडाला। हम कहते जाते हैं। मुझे जाना पड़ा था। यह बात आपको सुनायी गयी थी। घर में रहते हुए मैंने उसको देखा था। वह चिट्ठी लिख चुका होगा। घोड़ा दौड़ता हुआ बहुत दूर पहुँच चुका था। शिष्य लोग गुरुकी प्रशंसा कर रहे थे। जङ्गल में बाघ गरज रहे थे। यह बात सुनते ही वह खुशी से उछला। शहर के पास में ही कलकल शब्द करती हुई नदी बह रही थी। राम और श्याम झगड़ा कर रहे होंगे। तुम क्या कह रहे हो। आप किसको ढूँढ़ रहे हो। हरिद्वार में अनेक ऋषि तप कर रहे थे।

———

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

७ उद्देश्य विधेय

उद्देश्य—

उद्देश्यं च विधेयं च द्वयं वाक्येष्वपेक्ष्यते ।
उद्देश्यं प्रथमान्तं हि, विधेयं तु क्रियापदम् ॥१६९॥

वाक्यमें किसीके विषयमें कुछ कहा गया होता है । जिसके विषयमें कहा गया है वह उद्देश्य, जो कहा गया है वह विधेय होता है । ये दोनों वाक्यके आवश्यक अवयव हैं । कर्तरि प्रयोगमें कर्ता, कर्मणि प्रयोग में कर्म जो प्रथमान्त है वही उद्देश्य होता है । भावे प्रयोगमें तृतीयान्त होने पर भी कर्ता उद्देश्य होता है । सर्वत्र क्रियापद विधेय होता है ।

	उद्देश्य	विधेय		उद्देश्य	विधेय
कर्तरि	अहं	द्रक्ष्यामि	कर्मणि	त्वं	दृश्यसे
	व्याघ्रा	गर्जन्ति		रूप्यकाणि	दास्यन्ते
	चक्रम्	अभ्रमत्		ईश्वरः	स्मर्यताम्

उद्देश्यं त्रिविधं नाम सर्वनाम विशेषणम् ।
कचिन्नानापदव्यूहो वाक्यांशोऽपि तथा मतः ॥१७०॥

उद्देश्य कहीं नाम, कहीं सर्वनाम, कहीं विशेषण होता है । कहीं मुख्य प्रथमान्तके साथ और पद मिलाकर बना हुआ वाक्यांश भी उद्देश्यका बोधक होता है ।

	कर्तरि		कर्मणि	
	उद्देश्य	विधेय	उद्देश्य	विधेय
नाम—	गुरुः	पाठयति	शिष्याः	पाठ्यन्ते
सर्वनाम—	ते	अकुप्यन्त	त्वम्	अभिधीयसे
विशेषण—	मूर्खाः	नविचारयन्ति	वृद्धाः	पूज्यन्ते
वाक्यांश--	प्रत्यूषे समुत्थाय पाठस्याभ्यसनम्	युज्यते	पितुः पत्रस्यादरेणावलेकनं	क्रियते

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विधेय—

मुख्यं विधेयमाख्यातं, तत्स्थानीयं कृदन्तकम् ।
क्वचित्सामान्यक्रियायां विधेयं पूरकं मतम् ॥१७१॥

(क) मुख्य विधेय आख्यात वा वाक्यके पूरक क्तादि कृदन्त भी होते हैं। (ख) सत्ता भवनादि अकर्मक कर्तृ-भाव-वाच्य सामान्य क्रिया-में प्रथमान्त वा तृतीयान्त कर्ताका विशेषण, (ग) करण ज्ञान उसके विशेष आदि सकर्मक कर्तृ-कर्मवाच्य सामान्य क्रियामें द्वितीयान्त वा प्रथमान्त कर्मका विशेषण, (घ) कहीं नाम आदि और शब्द भी विधेय क्रियाके पूरक होकर विधेय बनते हैं।

(क) स गच्छति। गोपालोऽपश्यत्। वयं करिष्यामः। तेन कथ्यते। मयाऽकारि। तेन तस्थे। पुत्रो जातः। अहं लज्जितः। तत् दृष्टम्। कार्यं सिद्धम्। स गतवान्। ते दत्त-वन्तः। सोऽधीतवान्।

(ख) रामो विद्वानभूत्: अहं मूर्खोऽस्मि। स दुष्ट आसीत्। तेन सुशीलेनाऽभावि। पुत्रः सुशीलो जातः।

(ग) वस्त्रं रक्तं करोमि। त्वां शूरं मन्ये। भवन्तं सज्जनं जानामि। इमां साध्वीं सम्भावयामि। तद्रम्यं मन्ये। एष सुन्दरः क्रियते। शिष्याः सुशीला दृश्यन्ते। मुखमुज्ज्वलं विधीयते। तन्महार्घं मन्यते।

(घ) गोपालो नटोऽभूत्। मुखं चन्द्रं मन्ये। त्वां तृणं मन्ये। त्वं गुणैर्भरतोऽसि। पुत्रो राक्षसो दृश्यते। त्वां दयायाः समुद्रं जानामि। एष वक्रः सञ्जातः। अहं तूष्णीं भवामि। एतन्मिथ्या क्रियते।

आख्यातगर्भितं नाम, सर्वनाम, विशेषणम् ।
अव्ययं, भेदकं, क्वापि वाक्यांशोऽपि विधीयते ॥१७२॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कहीं गुप्त वा कहीं स्पष्ट भी आख्यातसे मिलकर नाम, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, भेदक कहीं नानापदोंका समुदाय रूप वाक्यांश भी विधेय होते हैं।

नाम—असौ दाने कर्णः (भवति)। मुखं साक्षाच्चन्द्रः त्वं राक्षसः (असि) अहं नटः (अस्मि)।

सर्वनाम—मयोक्तमेतत्। सोऽयमेव। गोपालोऽयम्। अहं त्वमेव। मदीया भ्रातर इमे।

विशेषण—त्वं धनी (असि)। विद्या प्रकाशिका (भवति)। वयं कुशलिनः। भवान् पूज्यः।

अव्यय—इदं मिथ्या (भवति)। तत्कथम्। (अभूत्)। पुस्तकमधः (अस्ति)। इदं तथैव। धिक्त्वाम्।

भेदक—इदं पुस्तकं मम (भवति)। इदं गृहं कस्य। सुखदः परलोकः पुण्यवताम्। अयमश्वो राज्ञः।

वाक्यांश—विद्या हृदयस्योज्ज्वलं रत्नं (भवति)। राजसेवा-असिधारायां नर्तनम्। तवोपदेशः अरण्ये रोदनमिव। इदं श्रीखण्डलेपेन पाण्डुरीकरणं विधोः।

उद्देश्यविधेयभाग—

पारम्पर्येण साक्षाद्वोद्देश्ययोगि तदन्वयि।
विधेययोगि कर्मादि पूरकादि तदन्वयि ॥१७३॥

साक्षात् हो वा परम्परा से हो उद्देश्य की तरफ मिलने वाले उद्देश्य विशेषण, उसके भेदक, उनमें अन्वय होने वाले आदि उद्देश्यान्वयी होते हैं। विधेय की तरफ मिलने वाले द्वितीया तृतीयाद्यन्त कर्मादिकारक, क्रिया के पूरक, क्रियाविशेषण, उद्देश्य के विधेयविशेषण, पूर्वापर क्रिया, उनके कारक आदि भी विधेयान्वयी होते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उद्देश्यान्वयी	उद्देश्य	विधेयान्वयी	विधेय
मम रक्तं	वासः	अतितरां मनोहरं	वर्तते
त्वया परल्लिखितं	पुस्तकं	पुस्तकधान्या निष्कास्य मह्यं	दीयताम्
विद्वांसः	जनाः	स्वगुणैः सर्वान्प्रमुदितान्	कुर्वन्ति
हिमाद्रेरतीव शीतः	पवनः	मम शिरसो वेदनां	जनयति
गुरोः प्रियः शिष्यः	सः	सततमुच्चैः स्वरेण	अधीते

पदान्तरैः स्वान्वयिभिर्मिलितं क्वापि केवलम् ।
उद्देश्यं च विधेयं च वाक्ये भागद्वयं मतम् ॥१७४॥

वाक्य में उद्देश्यान्वयी और उद्देश्य मिलकर उद्देश्यभाग, विधेयान्वयी और विधेय मिलकर विधेयभाग बनते हैं। उद्देश्यान्वयी विधेयान्वयी सर्वत्र रहने का नियम नहीं। वे न रहने पर केवल उद्देश्य विधेय ही उद्देश्यभाग विधेयभाग होते हैं।

उद्देश्यभाग		विधेयभाग	
उद्देश्यान्वयी	उद्देश्य	विधेयान्वयी	विधेय
सर्वेषु पर्वतेषु अत्युच्चो	हिमालयः	गिरिराज इति	उच्यते
	अहं	सर्वाणि शास्त्राण्यध्येतुम्	इच्छामि
ईश्वरे अनन्यभक्ताः	पुरुषाः		मुच्यन्ते
	:		प्रकाशते

द्वावुद्देश्यविधेयांशौ वाक्येऽवावश्यकौ मतौ ।
गुप्तावप्यनुसन्धेयौ, वाक्यं नैकपदं ततः ॥१७५॥

वाक्यों में उद्देश्य विधेय दोनों आवश्यक भाग हैं। कहीं कोई पूर्वापर प्रसङ्ग आदि से लाभ होने पर न दिखाया गया हो तो भी उसका अध्याहार करके ही वाक्य पूरा किया जाता है। इसी लिये कमसे कम दो पदों का वाक्य होता है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(अहम्) अतः परं नात्रस्थातुमिच्छामि। (त्वम्) किं करोषि। त्वं किं पठसि—(अहं) काव्यं (पठामि)। इदं गृहं कस्य (अस्ति)। (इदं गृहम्) मम (अस्ति)। तत्र स्थितः कः (अस्ति)।

अवान्तर उद्देश्य विधेय—

उद्देश्ये च विधेये च मुख्ये वाक्यस्य सत्यपि।
क्वचित्त्ववान्तरमपि तद्द्वयं जायतेऽर्थतः ॥१७६॥

उक्तरीति से वाक्य के मुख्य उद्देश्य विधेय होने पर भी कहीं अर्थ की दृष्टि से अवान्तर (एक टुकडे के) उद्देश्य विधेय भी होते हैं।

सदर्थबोधेनाख्याते प्रवणं कर्तृकर्मणोः।
विशेषणं पुरोवर्ति तद्विधेयमवान्तरम् ॥१७७॥

(क) तीनों वाच्यों में कर्ताको ऐसा होते हुए ऐसा होना वा करना कहा जाने पर प्रथमान्त वा तृतीयान्त कर्ताका, (ख) और कर्ता वा कर्म वाच्यमें ऐसा होते हुए को भी ऐसा करना वा किया जाना कहा जाने पर द्वितीयान्त वा प्रथमान्त कर्मका, सत् शब्द रहे वा न रहे सदर्थका वोधक विशेषण अवान्तर विधेय होता है, उसका विशेष्य उद्देश्य होता है।

(क) स विद्वानपि (सन्) दरिद्रोऽस्ति—वह विद्वान् होने पर भी गरीब है। एष भुञ्जानः (सन्) पठति-वह खाता हुआ पढता है। बालकाः शयिताः (सन्तः) क्रीडन्ति। एषा बालिका रुदती स्तन्यं पिबति। तेन ज्ञानिना (सता) प्येव मुच्यते। अनेनासमर्थेनापि (सता) भार उह्यते। मया पुत्रवतापि (सता) सुखिना न भूयते।

(ख) तं पण्डितमपि (सन्तं) कश्चिन्नाद्रियते। पण्डित होने पर भी उसका कोई भी आदर नहीं करता है। वस्त्रं बहुमूल्य मपि (सत्) एष भिक्षुरुपेक्षते। स धूर्तोपि (सन्) कुशलतया सर्वैरपेक्ष्यते। भार्या सुन्दर्यपि (सती) नानेनाद्रियते।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

एवं—दुष्यन्तो मृगमनुसरन्कण्वस्याश्रमं प्राप। वयं प्रभोः प्रतिकूलाः कथं वर्तामहे। गोपालो गुरुं कुपितमपि वचसा प्रसादयामास। यूयं सावधानाः कार्यं कुरुत। दशरथेन पुत्रं याचितेन कौशिकः कृतकृत्यो व्यधायि। स गुरुभिरुपदिष्टः साधु वर्त्म प्रपेदे। अहं कृतकार्यो गृहं प्रत्यागमम्।

भावलक्षणसप्तम्यां, षष्ठ्याश्चास्मिन्ननादरे।
अवान्तरं विधेयं तत्सदर्थकविशेषणम् ॥१७८॥

क्रियाका कालबोधक सतिसप्तमीमें उसीमें अनादर बोधक षष्ठी सप्तमीमें भी सच्छब्द रहे वा न रहे सदर्थबोधक विशेषण अवान्तर विधेय उसका विशेष्य उद्देश्य होता है। वह विधेय विशेषण कहीं पीछे रहा हो तो भी अन्वयमें विशेष्यके आगे होता है।

त्वयि दृष्टे (सति) हृदयं प्रसीदति—तुझ देखे जाने पर दिल खुश होता है। भवति वर्तमाने (सति) मम का चिन्ता—आप रहते हुए मुझे कौन फिकर। सूर्ये उदिते (सति) तमोऽपसरति। मयि जागरूके (सति) न भयम्। तस्मिन्पश्यति—तस्य पश्यतो वा चौरोऽपाहरत्—उसके देखते ही चोरने चुराया। रुदति परिजने, रुदतः परिजनस्य वा स प्राव्रजत्। शयाने परिवारे, शयानस्य परिजनस्य वा वृद्धो निर्ययौ।

एवं—भक्षितेऽपि लशुने न शान्तो व्याधिः। नाथे कुतस्त्वय्यशुभं प्रजानाम्। नन्दाः पशव इव हताः पश्यतो राक्षसस्य। पत्तने विद्यमाने ग्रामे रत्नपरीक्षा। एवं तयोर्विवदमानयो रहं प्रतिनिवृत्तः। कः पौरवे वसुमतीं शासत्ययमविनयमाचरति। क एष मयि स्थिते चन्द्रगुप्तमभिभवितुमिच्छति। पश्यत एव मे स्तेनेनापहृतः पशुः। जाते जगति वाल्मीकौ कवि रित्यभिधाऽभवत्।

गौणक्रियान्वय्यपि तत्कर्तृकर्मविशेषणम्।
क्वचिदन्यदपि ज्ञेयं दाद्विधेयमवान्तरम् ॥१७९॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गौण कृदन्त क्रियाके साथ सम्बन्ध रखने वाले उसके कर्ता कर्मके विशेषण, कहीं नाम अव्यय आदि और शब्द भी अवान्तर विधेय, उसक विशेष्य उद्देश्य भी होते हैं।

स धनी भूत्वापि किमपि कस्मैचिन्न ददाति—वह धनी होकर भी किसीको कुछ नहीं देता है। स कार्यं साधु कुर्वन्नपि यशो न प्राप्नोति—वह काम अच्छा करता हुआ भी यश नहीं पाता है। रामस्तूष्णीं भवितुं न शक्नोति—राम चूप होनेको नहीं सकता है। अहं त्वं लज्जितं कर्तुं मीहे। तेन विदुषा भूतेनापि अनुचितमुच्यते। मां दरिद्रं विधित्सुनानेन सर्वस्वमपहृतम्। सूर्यमुदितं दृष्ट्वा सर्वे नमस्यन्ति।

एवं—द्वावपि प्रयोगनिपुणौ निश्चित्य राजा सच्चकार। दुहितरं पुत्रवतीं श्रुत्वा स प्रससाद। तद्वचनं हितं विभाव्य हृदयं स्थिरं चिकीर्षुः प्रायतत। पुत्रान्सुशिक्षितान्विधाय स सुखं प्राप। मुनिं सत्कारेण प्रसन्नं ज्ञात्वा पुनर्वक्तुमारेभे। गुरुं कुपितमपि प्रसादयन्पादयोः पपात। दुष्टं तं पादयोः प्रणतमपि निराकृत्य मुनिः प्रतस्थे।

प्रायः प्रथममुद्देश्यं, विधेयं तु तदुत्तरम्।
अर्थतात्पर्यतो ज्ञेयं वैपरीत्येऽपिकुत्रचित् ॥१८०॥

सामान्यतः उद्देश्य पहले, विधेय उसके बाद रहना चाहिये। कहीं विपरीत क्रमसे रहने पर भी अर्थके तात्पर्यके विचारसे उद्देश्य विधेय पहिचाने जाते हैं।

उद्देश्येन समं योगे विधेयस्याप्रतीतितः।
समासः क्रियते नैव क्वाप्युद्देश्यविधेययोः ॥१८१॥

उद्देश्यके साथ विधेयको समास करके जोड़ देनेपर उद्देश्यके साथ होकर विधेयका बोध न होनेसे उद्देश्य विधेयपद समास होने योग्य होने पर भी समास न करके अलग अलग रखे जाते हैं।

स दृशौ प्रफुल्ले विधाय हर्षं प्रकाशयामास—न तो, प्रफुल्लदृशौ

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विधाय। वीरो रणाभिमुखः प्रतस्थे—न तो-रणाभिमुखवीरः प्रतस्थे।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

उद्देश्य विधेय किसको कहते हैं। वाक्यमें उद्देश्य विधेय कौन कौन होते हैं। उद्देश्यान्वयी विधेयान्वयी कैसे होते हैं। अवान्तर उद्देश्य विधेय कैसे होते हैं। सदर्थ विधेय कैसे होते हैं। सति सप्तमीमें उद्देश्य विधेय कौन होते हैं। उद्देश्य विधेयकी वाक्यमें आवश्यकता है या नहीं। उद्देश्य वा विधेय न देखने पर क्या करना चाहिये। उद्देश्य भाग विधेय भाग किसको कहते हैं।

नीचे लिखे हुए वाक्योंका अनुवाद करो, मुख्य उद्देश्य विधेय और अवान्तर उद्देश्य विधेय, उद्देश्य विधेय भाग भी बतलाओ—

मातापितरौ सन्ततिं दुःखितां द्रष्टुं नेच्छन्ति। सागरो महत्या वात्यया समुच्छलितो विशालानपि पोतानितस्ततः पर्यावर्तयति। सैनिकैः रणभूमौ सन्नद्धैः शत्रूणां शिरांसि शस्त्रैः फलवन्निपात्य यशः समर्ज्यते। मम कञ्चुक आजानुलम्बी वर्तते। जीवत्सु तातपादेषु नूतने दारसंग्रहे—मातृभिश्चिन्त्यमानानां ते हि नो दिवसा गताः। नागरिका बाष्परथं यानं विधाय सुदूरमगच्छन्। तेन मम प्रियवयस्येन भवितव्यम्। पुष्पेषु सर्वतो विकसितेपूद्यानं विशेषतो रमणीयं जनानां हृदयमाकर्षति। दुष्टोऽश्वो वेगेन धावन्सारथिनं यतमानमप्युपेक्ष्य कुड्ये प्रतिहतस्तस्थौ।

लड़ाईमें गये हुए सिपाही लोग शत्रुको बलवान् देखते हुए भी पीछे नहीं हटते हैं। इस पुस्तकके अक्षर सुडौल सुन्दर देखे जाते हैं। उसने सन्दूकसे रुपयाँ बहुत निकालकरके गरीबोंको बांटा। मूर्ख लोग जिद्द करते हुए किसीकी भी बात नहीं सुनते हैं। सवेरे खुली जगहमें घूमते हुए टहलना शरीरके स्वास्थ्यका मुख्य साधन है। तुम्हारे साथ हाथ जोड़कर कहना गदहेको गीत सुनाना है। वह पण्डित होकर भी कथा सुन्दर कह नहीं सकता है। उनकी और मेरी दोस्ती पक्की देखकर सब वैसा ही चाहते हैं। उनका चेहरा बहुत उजियारा है। अब छुट्टी पाकर घर जाता हूँ। ऐसी खराब बात कहना अपने को मूर्ख सिद्ध करना होता है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(८) मिश्रितोंमें विशेष

कारकोंमें—

कारकाणि सजातीनि नानाप्येकाक्रियां प्रति ।
विभक्तिरुक्तानुक्तेषु समेषूक्तेषु वा समा ॥१८२॥

एक क्रिया के प्रति एक जाति के कारक अनेक भी होते हैं। उनमें संख्यानुसार वचन भिन्न होने पर भी सब अनुक्तों में अथवा सब उक्तोंमे भी पूर्वोक्त नियम के अनुसार समान विभक्ति होती है।

अनुक्त—असावश्वेन रथेन च याति। त्वं रामं कृष्णं वा भजसि। अहं पितरौ गुरुञ्च समं मानयामि। देवेषु गोषु गुरौ च श्रद्धां कुरुत। तव मम तस्य चेदं गृहम्। त्वं मार्जाराद्व्याघ्राद्बिभेषि। मिष्टान्नाय घृताय फलेभ्यश्च विपणिमागतोऽस्मि। तेन वा भवता गन्तव्यम्।

उक्त—रामो गोपालश्च गच्छतः। त्वं को वा गच्छति। तण्डुलं शाकानि घृतं लवणं चापणादानीयन्ते। भोजनमाच्छादनं च तस्माल्लभ्यते। अन्नं रूप्यकाणि वा प्रतिमासं लभ्यन्ते।

एवं—शिशुत्वं स्त्रैणं वा भवतु। एको देवः केशवो वा शिवो वा। तृणानि भूमिरुदकं वाक्चतुर्थी च सूनृता नोच्छिद्यन्ते सतां गेहे। क्रुद्धेनानेन पुत्रः शिष्यौ भृत्याश्च ताड्यन्ते।

द्विकर्तृके प्रेरणायामन्यत्रापि द्विकर्मके।
यथानियममेकस्मिन्नेवोक्ते प्रथमा सता ॥१८३॥

(क) प्रयोज्यकर्ता भी कर्ता ही रहकर द्विकर्तृक होने वाली प्रेरणा क्रिया में कर्तृवाच्य में प्रयोज्य कर्तामात्र उक्त होने से उसमें प्रथमा अनुक्त प्रयोज्यकर्ता में तृतीया। (ख) प्रयोज्य कर्ता भी कर्म होकर द्विकर्मक होनेवाली सकर्मक प्रेरणा क्रिया में कर्मवाच्य में ज्ञानभक्षणार्थक

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शब्दकर्मक में इच्छानुसार दो में एक, और में प्रयोज्य कर्म ही उक्त होने से उसमें प्रथमा, अनुक्त दूसरे कर्म में द्वितीया। (ग) द्विकर्मक न्यादि धातु में मुख्य कर्म, दुहादि धातु में गौण कर्म ही उक्त होने से उसमें प्रथमा अनुक्त दूसरे में द्वितीया पूर्वोक्त नियमानुसार होती है।

(क) माता पुत्र्या योगिने भिक्षां दापयति। गुरुः शिष्यैः पुस्तकानि ग्राहयामास।

(ख) भवता भृत्यो विपणिमगम्यत। गुरुभिः शिष्या धर्ममबोध्यन्त गुरुभिः शिष्यान्धर्मोऽबोध्यत। मया शिष्यः काव्यमपाठ्यत, मया शिष्यं काव्यमपाठ्यत।

(ग) गौर्दुग्धं दुह्यते। स्वामी धनं याच्यते। गौर्वनं नीयते। वृषेण भार उह्यते।

प्रकृतेर्विकृतेर्भावात्तथोद्देश्यविधेययोः।
द्वैधे कर्तुः [1] कर्मणो वा वाच्यावाच्ये उभे समे ॥१८४॥
द्वयोस्तुल्येऽपि वाच्यत्वे विभक्तिः प्रथमा तयोः।
आख्यातसंख्यापुरुषौ [1] प्रकृत्युद्देश्यवन्मतौ ॥१८५॥

कहीं एक ही क्रिया के प्रकृति विकृति भाव से वा उद्देश्य विधेय भाव से दो किसम के कर्ता वा कर्म भी होते हैं। दोनों किसम के कर्ता वा कर्म आख्यात से वाच्य वा अवाच्य समान होते हैं। कर्तरि प्रयोग में कर्ता कर्मणि प्रयोग में कर्म वाच्य होने पर प्रकृति विकृति दोनों वा उद्देश्य विधेय दोनों में प्रथमा होती है। पर वचन पुरुष तो प्रकृति वा उद्देश्य के और आख्यात के समान होते हैं। विकृति वा विधेय की संख्या तो इच्छानुसार होती है।

---

१. का० गृह्णाति वाचकः संख्यां प्रकृतेर्विकृतेर्नहि।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अनुक्त—तण्डुलैरोदनेन भूयते। सुवर्णेन कुण्डलाभ्यां सम्पद्यते। त्वां तृणं मन्ये। इमं वृक्षं पञ्च काष्ठानि सम्पादयामि। तण्डुलानोदनं पचति। काष्ठानि भस्म करोति।

उक्त—(कर्तरि) असौ वृक्षः द्वौ नावौ सम्पद्यते। काष्ठानि भस्म जायन्ते। सुवर्णं कुण्डलानि सम्पद्यते। अहं त्वं भवामि। त्वमहं भवसि। तण्डुला ओदनं भवन्ति। अहं त्वमेवास्मि। अहं ब्रह्मा-ऽस्मि। त्वं तदसि।

(कर्मणि) असौ वृक्षो द्वौ नावौ क्रियते। काष्ठानि भस्म क्रियन्ते। सुवर्णं कुण्डलानि निर्मीयते। कुण्डलानि प्रत्याघातेन सुवर्णपिण्डं निर्मीयन्ते। तण्डुला ओदनं पच्यन्ते। इष्टका गृहं निर्मीयन्ते। अहं त्वमबोधिषि। अहं तृणममानिषि। अयशोयुगं केशा अमानिषत। कुटुम्बकं शत्रवो मन्यते। अहं शत्रुरज्ञायिषि। अन्धकारे कुक्कुराः शृगालाः समभाव्यन्त।

उपमा आरोपमें—

उक्त्यनुक्तयोर्विभक्त्यैक्यमुपमानोपमेययोः।
संख्यापुरुषयोः साम्यमाख्यातोक्तोपमेययोः॥ १८६॥

आख्यात से वाच्य हो वा न हो सादृश्यबोधक वा आरोपबोधक उपमान और उपमेय की विभक्ति समान होती है। वाच्य होने पर उपमेय के साथ ही आख्यात के वचन पुरुष समान होते हैं, उपमान के साथ नहीं।

अनुक्त—चन्द्रमिव मुखं पश्यामि। मुखं चन्द्रं मन्ये। त्वया रामेणेव यशोऽर्जितम्। युष्मांस्तृणमिव सम्भावयामि। मुखस्य चन्द्रस्येव शोभा दृश्यते। तवेव ममाप्यस्मिन्प्रेम। तृणेन त्वया मम किं कार्यं सिध्यति।

उक्त—अहं त्वमिव जातोऽस्मि। त्वमहमिव जातोऽसि। वयं गुरुरिव संभाव्येमहि। युवतीनां मुखानि चन्द्रो मन्यन्ते। इयम् नारी असप्सरसो

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दृश्यते। इमे स्त्री समभाव्यन्त। सिकताः पाषाण इवादृश्यन्त। पाषाणः सिकता अभानि। नटः सीतेवाभूत्।

विशेष्य-विशेषणों में—

नाना विशेषणानीव विशेष्याण्यपि कुत्रचित्।
समा विभक्तिः सर्वत्र विशेष्येऽथ विशेषणे ॥ १८७ ॥

(क) एक विशेष्य के अनेक विशेषण (ख) एक विशेषण के अनेक विशेष्य भी होते हैं। अनेक हों वा एक हो विशेषण विशेष्य दोनों में विभक्ति एक होती है, एक विशेष्य के अनेक विशेषणों में लिङ्ग वचन भी समान होते हैं।

(क) विनीतश्चतुरो भक्तश्च भृत्यः स्वामिनः प्रियो भवति। इमाः सुशीलाः सुन्दर्यश्च दृश्यन्ते। महार्घाणामपि शोभनानां वस्तूनां विक्रयो भवति। उन्नते परिष्कृते सुधालिप्ते वा महति भवने श्रीमन्तो निवसन्ति, इमानि पुष्पाणि मनोहराणि सुराऽसुराणामपि दुर्लभानि।

(ख) सुलक्षणा अश्वा गजा वृषाश्च स्वामिने शुभं दिशन्ति। अलसश्छात्रो भृत्यो वा मह्यं न रोचते। बहुमूल्यानां भवनानां भूमीनामापणानां च क्रेतारो धनिन एव भवन्ति।

विशेष्याणामनेकत्वे विकल्पे तु विशेषणम्।
प्रत्येकान्वयतः साम्ये वैषम्येऽप्यन्तिकस्थवत् ॥ १८८ ॥

एक विशेषण के नाना विशेष्य होने पर विशेष्यों में लिङ्ग वचन समान हों वा विषम हों विकल्प में वाक्य भिन्न होने से प्रत्येक में अन्वयी होकर प्रायः नजदीक के विशेष्य के समान लिङ्ग वचन विशेषण में होते हैं। और विशेष्य में अन्वय के लिये योग्य रूप की कल्पना की जाती है।

भवदपत्ययोः पुत्रः (बुद्धिमान्) पुत्री वा बुद्धिमती। परीक्षायां प्रथमो रामदेवः (सञ्जातः) सीता वा (प्रथमा) सञ्जाता। एको देवः केशवो वा

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवो वा। दीनाय ब्राह्मणाय शूद्राय वा भोज्यं दीयताम्। ज्येष्ठायाः पुत्र्याः पुत्रस्य (ज्येष्ठस्य) वा विवाहः क्रियते। भिक्षुभ्यः पर्याप्तमन्नं वस्त्राणि (पर्याप्तानि) वा दित्सामि। उन्नताया निश्रेण्याः (भग्नायाः) गवाक्षात् (उन्नतात्) वा भग्नात्पतितः।

समुच्चये विशेष्याणां समत्वे लिङ्गसंख्ययोः।
व्यष्ट्यैकैकान्वये संख्या, समष्ट्या वा सहान्वये॥ १८९॥

अनेक विशेष्यों का समुच्चय होने पर सब विशेष्यों के लिङ्ग वचन दोनों समान हों तो विकल्प के नाईं प्रत्येक में अन्वय करके एक विशेष्य के समान, अथवा एकदम सब में अन्वय करके समष्टि के अनुसार का वचन विशेषण में होता है, लिङ्ग तो समान ही है।

रक्तं पुष्पं वस्त्रं च मम प्रियं भवति—रक्ते पुष्पं वस्त्रं च मम प्रिये भवतः। सुशीला भार्या वधूः कन्या च गृहस्य श्रियं वर्धयति—सुशीलाः भार्या वधूः कन्या च गृहस्य श्रियं वर्धयन्ति। विजया जयाऽपि पार्वत्याः सखी बभूव—सख्यौ बभूवतुः। साधु शिक्षितो वानरो भल्लूकोऽपि क्रीडन्कौतुकं करोति—साधु शिक्षितौ वानरो भल्लूकोऽपि क्रीडन्तौ कौतुकं कुरुतः।

वैषम्ये तु विशेष्याणां लिङ्गस्य वचनस्य वा।
समष्ट्यैवेह वचनं, लिङ्गं त्वत्रैकशेषवत्॥१९०॥
स्त्रीपुंसयोर्विशेष्यत्वे पुंलिङ्गं तद्विशेषणम्।
क्लीबं क्लीबाक्लीबयोगे लिङ्गं ज्ञेयं समुच्चये॥१९१॥

नाना विशेष्यों के समुच्चय में लिङ्ग वचन एक वा दोनों विषम होवे पर विशेष्यों की समष्टि के अनुसार से ही विशेषण में वचन होता है। लिङ्ग तो एकशेष के न्याय से विशेष्य स्त्री पुंलिङ्ग के होने पर विशेषण पुंलिङ्ग नपुंसक और अनपुंसक (स्त्री० पुं०) लिङ्गके होने पर विशेषण नपुंसक लिङ्ग होता है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रामः सीता च प्रजानां पितरौ बभूवतुः। तदीयौ पुत्रः पुत्री च सुन्दरौ स्तः। मात्रा पक्वानि ओदनः सूपो व्यञ्जनं शष्कुली च स्वादूनि भवन्ति। पुस्तकं लेखनी च तेन दत्ते। सुशीलाभ्यां भार्यायै पुत्राय च श्लाघा क्रियते। गृहाः क्षेत्राणि च तेन विक्रीतानि। पुत्र्यौ वधूश्च मनोहारिण्यः सन्ति। उद्यानं भूमिश्च मया परिष्कृते स्तः।

एवं—यस्मिन्सत्यं च मेधा च नीतिश्च भरतर्षभे, अप्रमेयाणि दुर्धर्षे स कथं निहतो युधि। तथा नृपः सा च सुतेन मागधी ननन्दतुस्तत्सदृशेन तत्समौ। छत्रं वस्त्रं च सुन्दरम्। सममेव समाक्रान्तं राज्यं च हृदयं रिपोः। पूजनीयौ महात्मानौ रामः कृष्णश्च सर्वदा।

हिन्दी में भी विकल्प में सन्निहित के समान, समुच्चय में भी संस्कृत के समान होता है।

त्वमहं वा धूर्तः—तू वा मैं धूर्त। पुत्रः पुत्री वा प्रिया—लडका या लडकी प्यारी है। दण्डदो राजा वा देवाः—दण्ड देने वाला राजा या देवताएँ। पतिः पत्नी च सुन्दरौ—पति और पत्नी सुन्दर है। त्वमहं चात्र कुशलौ—तू और मैं इसमें कुशल हैं। रामो गोविन्दश्च शोभनः—राम भी गोविन्द भी अच्छा है।

विभिन्नानां विशेष्याणां सङ्ग्रहे दर्शकादिभिः।
सङ्ग्राहकानुसारेण विशेषणपदस्थितिः ॥१९२॥

अनेक प्रथमान्त विशेष्यों का दर्शक वा अन्य सर्वनाम समुच्चयबोधक संख्यावाचक आदि पदों से सङ्ग्रह करने पर तो सङ्ग्राहक पद के अनुसार से ही विशेषण रहता है।

अदेयमासीत्त्रयमेव भूपतेः शशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे—सफेद छतरी और दो चमर ये तीन ही राजा से नहीं दिये गये। माता मित्रं पिता चेति स्वभावात्त्रितयं हितम्—माता पिता मित्र ये तीन ही स्वभाव से हित करने वाले हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

एवं–आयुः कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च–पञ्चैतान्यपि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः। रामो वा कृष्णो वा वामनो वा सर्वेऽपि ईश्वरस्यावताराः। रामो गोविन्दश्चेमौ गतौ।

कहीं कवियों की प्रौढि से विषम समुच्चय में भी विकल्प के समान प्रयोग देखा जाता है।

तयोः कुशलवाविति नाम्नी प्रभावश्चाख्यातः।

उद्देश्य आख्यातमें—

उद्देश्याख्यातयोरैक्ये पुरुषो वचनं समे।
नानोद्देश्यकमाख्यातं विकल्पे सन्निकृष्टवत् ॥१९३॥

(क) आख्यात का उद्देश्य एक मात्र होने पर दोनों में पुरुष वचन समान होते हैं, (ख) अनेक उद्देश्य होने पर तो उद्देश्यों का पुरुष वचन समान हो वा भिन्न भिन्न हों प्रत्येक में अन्वय के तात्पर्य से नजदीक के उद्देश्य के अनुसार आख्यात में पुरुष वचन होते हैं, और उद्देश्य में अन्वयी योग्य आख्यात की कल्पना करनी चाहिये।

(क) मिष्टान्नं भुज्यते। छत्रं सुन्दरमस्ति। अहं न विषीदामि। यूयं पत्राणि लिखत।

(ख) इदं तद्वा दीयते। त्वं (गच्छसि) वाऽहं गच्छामि, अहं (गच्छामि) त्वं वा गच्छसि। भार्या पुत्रः पुत्री वा स्निह्यति। काव्यं (पठ्यते) वा व्याकरणमुत शास्त्राणि पठ्यन्ते। त्वमहं गोपालो वा गमिष्यति।

समुच्चये तूद्देश्यानां साम्ये पुरुषसंख्ययोः।
आख्याते वचनं व्यष्ट्या, समष्ट्या वा सहान्वयात् ॥१९४

समुच्चय में तो नाना उद्देश्यों के पुरुष और वचन भी समान होने पर नाना वाक्य के तात्पर्य से विकल्प में जैसा प्रत्येक में अन्वय करके

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

एक उद्देश्य के समान, किंवा एकवाक्य करके एकदम सब में अन्वय कर समष्टि के अनुसार आख्यात में वचन होता है, पुरुष तो समान ही है।

रामः (पूज्यते) कृष्णश्च पूज्यते—रामः कृष्णश्च पूज्येते। राधा कृष्णश्च वंशीं वादयति—वादयतः। तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः—अर्हति। तथा नृपः सा च मागधी ननन्दतुः। अयं स च चतुरोऽस्ति—चतुरौ स्तः।

समुच्चितोद्देश्यभेदे संख्यया पुरुषेण वा।
संख्या समष्ट्यैवाऽऽख्याते, पुरुषस्तु विशेषतः ॥१९५॥
प्रथमे मध्यमे युक्ते मध्यमः पुरुषो मतः।
उत्तमेऽनुत्तमे युक्ते तूत्तमः पुरुषो मतः ॥ १९६ ॥

समुच्चयमें नाना उद्देश्यों के संख्या पुरुष एक वा दोनों भिन्न होने पर उद्देश्यों की समष्टि के अनुसार से ही आख्यात में वचन होता है। पुरुष तो उद्देश्य प्रथम और मध्यम हों तो मध्यम, उत्तम और अनुत्तम (प्रथम मध्यम) हों तो उत्तम पुरुष आख्यात में होता है।

ब्राह्मणः क्षत्रियौ च गच्छतः। छत्रमुपानहौ च क्रेष्यन्ते। त्वमहं च गच्छावः। स त्वमहं च गच्छामः। अहं युवामिमे च सह वत्स्यामः। त्वं चाहं च संप्रयुध्यावहे। अयं ताश्च व्यसीदन्। पतिः पत्न्यौ च सह प्रातिष्ठन्त।

एवं—नान्यतः शुद्धिमर्हन्ति वन्हिस्तीर्थोदकानि च। रामलक्ष्मणौ सीता च वनं जग्मुः। कालो दिशश्च नात्मनो व्यतिरिच्यन्ते। मषी लेखनी पत्राणि चानीयन्ते। त्वं चाहं च रणे युध्वा कौशलं दर्शयावहे यूयं वयं जागृमः। कुलं रूपम् वयो विद्या धनं च मदयन्त्यमुम्।

हिन्दीमें भी विकल्पमें नजदीक के जैसा, समुच्चय में भी संस्कृत के समान आख्यात होते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu; Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

त्वमहं वा गच्छामि—तू वा मैं जाता हूँ। स्वामी अनुचरा वा बुद्धिमन्तः सन्ति—मालिक या सेवक लोग बुद्धिमान हैं। त्वमहं च न क्रुध्यावः—तू और मैं नहीं चिढ़ते हैं। सूर्यस्तारकाश्च सह न प्रकाशन्ते—सूर्य और तारे साथ प्रकाश नहीं होते हैं।

विशेषणाख्यातयोगे [1]साम्यमेकान्वये सति।
उद्देश्यानां संग्रहेतु संग्राहकसमं मतम्॥ १६७॥

आख्यातके नाना उद्देश्योंमें विशेषणका भी योग हो तो आख्यात और विशेषण दोनोंमें समष्टिकी व्यष्टिकी एक ही दृष्टि होनी चाहिये। एकमें एक दृष्टि, दूसरेमें दूसरी दृष्टि होना योग्य नहीं है।

शुशीलौ पुत्रो भार्या च भवतः (नतु सुशीलौ भवति, सुशीलः भवतः) रामः कृष्णश्च चतुरोऽस्ति (नतु चतुरावस्ति, चतुरःस्तः) तथा नृपः सा च सुतेन मागधी ननन्दतुस्तत्सदृशेन तत्समौ। बुद्धिमन्तौ पतिःपत्नी च दृश्येते।

संग्राहक सर्वनाम संख्यावाचक आदिसे उद्देश्योंका संग्रह करनेपर विशेषणके न्यायसे संग्राहकके अनुसारसे ही आख्यात होता है।

अदेयमासीत्त्रयमेव भूपतेःशशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे, आयुः कर्म च वित्तं च विद्यानिधनमेव च-पञ्चैतान्यपिसृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः॥ धनिकः श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यश्चपञ्चमः—पञ्च यत्र न विद्यन्ते तत्र वासं न कारयेत्॥ रामःकृष्णोगोपालश्च सर्वेऽगच्छन्।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

प्रकृति विकृति कर्मोंमें कौन वाच्य होता है। उद्देश्य विधेय कर्म होनेपर कर्मवाच्य प्रयोग कैसा होता है। उपमान उपमेय किसकी संख्या आख्यातके समान होती है। नाना पुरुषके उद्देश्य होनेपर आख्यात

---

१. प्रत्येकान्वये वाक्यभेदः समष्ट्यन्वये एकवाक्यमित्येकत्र एकांशे वाक्यभेदस्य अपरांशेतदैक्यस्य साधनं नोपादेयं भवतीति विशेषणाख्यातयोः समानदृष्टिरपेक्ष्यते।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कैसा होता है। नानाविशेष्यके विशेषणमें लिङ्गवचनकी व्यवस्था कैसी होती है। नाना विशेष्यका उद्देश्य होनेपर विकल्प और समुच्चयमें क्या फरक है।

निम्नलिखित वाक्योंका अनुवाद करो, कुछ विशेष है तो उसका निरूपण भी करो—

कामः क्रोधो लोभो मोहश्च पुरुषाणां शत्रवः। एषामावेशेनायं लोकः परो लोको वा सुखदो न भवति। महात्मानोऽपि कामेन क्रोधेन वाऽभिभूतास्तपो मानं यशश्च जहुः। यस्य तपो यशो मानञ्च हीयते, तस्यात्मा हृदयमिन्द्रियाणि च शिथिलीभवन्ति। मोहेन लोभ उदेति, लोभात्कामः क्रोधश्च उदितः। कामः क्रोधोऽप्यतिभीषणौ रिपू मन्येते। कामे प्रवृद्धे धनं मानो यशोऽप्यपचीयमानानि आत्मानं मलिनयन्ति। क्रोधेनाक्रान्तस्तु स्वं परञ्चाविविच्य यत्किमपिकुर्वाणो गर्ते पतति। लोभोऽन्तःकरणस्यान्धकारो मन्यते। लोभाभिभूतस्य दृशौ कर्णावपि समाच्छन्नौभवतः। यथा वदपश्यन्नश्रृण्वंश्चाकर्तव्यमपि कर्तव्यं मन्यमानोऽन्यथा प्रवर्तते।

आत्माको शुद्ध रखना आवश्यक है। जिसका आत्मा वा अन्तःकरण मलिन होता है, वह दोनों लोकोंसे गिरता है। सत् आचारसे ही आत्मा शुद्ध होता है। अच्छे आचरणोंसे आत्मामें दोष मलिनता धुले जाते हैं। जिसको सुख शान्ति सन्तोष प्यारे लगते हैं, उनको आत्माकी स्वच्छतामें ही ध्यान देना उचित है। पवित्र आत्माके प्रभावसे ही महात्मालोग पुरुषार्थ और परमार्थ दोनों सिद्ध करके दोनों लोकोंमें प्रतिष्ठा पाकर अपना जीवन सफल कर गये। अन्तःकरण शुद्ध होनेपर दर्पणके समान स्वच्छ रहता है। उसमें सब पदार्थोंका अच्छी तरह प्रकाश पड़ता है। इसीको ज्ञान कहते हैं। ज्ञानका मुख्य साधन आत्माकी पवित्रता ही है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(९) वाक्यभेद

एकानेकव्यूहरूपेणैकपूर्णार्थबोधकम् ।
पूर्णवाक्यं तु सामान्यं मिश्रं युक्तमिति त्रिधा ॥१९८॥

कोई अवान्तर (अंश-अवयव) वाक्य के विना ही पदमात्र का पुञ्ज होकर एक पूर्ण वक्तव्य बोधक वाक्य होते हैं। कोई तो अनेक अंश वाक्य मिल कर एक वाक्य बने हुए होते हैं, उनमें भी कहीं अङ्ग अङ्गि दो किसम के वाक्यों का, कहीं समान कक्षा के अनेक वाक्यों का मेलन हुआ रहता है। इसलिये सामान्य, मिश्र, संयुक्त, ये तीन किसम के वाक्य होते हैं।

सामान्य—

एकोद्देश्यविधेयत्वादंशवाक्यविवर्जितम् ।
परानपेक्षं सामान्यं विश्रान्तैकार्थबोधकम् ॥१९९॥

मुख्य उद्देश्य विधेय एक एक होने से अंश वाक्य न मिला हुआ दूसरे वाक्य की अपेक्षा के विना ही पूर्ण एक वक्तव्यका बोधक पदसमूह सामान्य वाक्य होता है।

सूर्यो लोकं प्रकाशयति—सूर्य लोक को प्रकाश करते हैं। राजा प्रजा उपादिशत्—राजाने प्रजाओं को उपदेश दिया। गुरुः शिष्यान्पाठयिष्यति—गुरु शिष्यों को पढावेंगे।

मिलित—

भिन्नोद्देश्यविधेयत्वाद्भिन्नयोरंशवाक्ययोः ।
योगेनैकत्वमापन्नं मिश्रं युक्तं च दृश्यते ॥२००॥

विधेयभेद होने पर वाक्यभेद होने से भिन्न भिन्न उद्देश्य विधेयवाले अनेक अंश वाक्यों के योग से एक मिश्र वा संयुक्त वाक्य एक पूर्ण वक्तव्य के बोधक होते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मिश्र—यदि स मामाह्वयति—तर्हि सहर्षमहं गच्छामि—अगर वह मुझे बुलाता है तो खुसी साथ मैं जाता हूं। यत्पत्रं त्वया प्रेषित-मासीत्-तन्मया प्राप्तम्—जो चिट्ठी तुमसे भेजी गयी थी वह मुझे मिली।

संयुक्त—इदं कार्यमहं करोमि—किंवा त्वं करोषि—यह काम मैं करूं अथवा तुम करते हो। वृहन्नलिकास्त्रस्य पूर्वं ज्योतिर्निःसरति—तदनु ध्वनिः प्रसरति—तोपका पहले तेज निकलता है, उसके बाद आवाज फैलता है।

मिश्र—

मिश्रमङ्गाङ्गिभावेन मिलितानेकवाक्यकम्।
तत्राविश्रान्तार्थमङ्गमन्वेत्यङ्गिन्यपेक्षिणि ॥२०१॥

एक वाक्य अङ्गी (प्रधान) दूसरा वाक्य अङ्ग (अप्रधान) होकर अनेक वाक्य मिलके एक हुआ मिश्र वाक्य होता है। उसमें अङ्ग वाक्य अपने में विश्रान्त न होकर अपने की अपेक्षा करने वाले अङ्गि-वाक्य में मिल जाता है।

(अङ्ग) यः परोपकारे तत्परो भवति-(अङ्गि) स लोकप्रियो भवति-जो दूसरे के उपकार में तैयार होता है, वह लोक का प्यारा होता है। (अङ्ग) येन कीर्त्या दिशः प्रकाश्यन्ते-(अङ्गि) तं महापुरुषं वदन्ति-जिससे कीर्तिद्वारा दिशाएं प्रकाशित होती हैं, उसको महापुरुष कहते हैं। (अङ्ग) साध्वी विद्या लभ्येत चेत्—(अङ्गि) अन्तर्निर्मलः प्रकाश उदेति—अच्छी विद्या पायी जाय तो भीतर निर्मल प्रकाश उत्पन्न होता है।

मिश्रे प्रधानमङ्ग्येकमङ्गानि तु बहून्यपि।
अङ्गं साक्षात्प्रधानाङ्गमङ्गाङ्गमपि दृश्यते ॥२०२॥

(क) मिश्र वाक्यमें मुख्य अङ्गिवाक्य एक ही होता है, उसमें मिलने वाले अङ्गवाक्य तो अनेक भी होते हैं। अङ्गवाक्य भी कोई मुख्यवाक्य के साक्षात् अङ्ग, (ख) कोई तो दूसरे अङ्गवाक्य में मिलने वाले अङ्गाङ्ग (अङ्गका भी अङ्ग) होते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(क) येन मम गृहे सन्धिच्छेदः कृतः—जिससे मेरे मकान में सेंध मारा गया।
यो मम सर्वस्वमपहृत्य पलाययौ—जो मेरा सर्वस्व चोरकर भागा,
यस्य लोप्त्रं वस्त्रं प्रमादेन मार्गे पतितम्—जिसकी सबूती कपड़ा बेहोसी से रास्ते में गिरा था।

अङ्गि—तं नागरिको गृहीत्वाऽबध्नात्—उसको पुलिस ने पकड़कर बाँधा।

(ख) अङ्गाङ्ग	अङ्ग	अङ्गि
अहं तस्य शरणं नोपैमि	इति यो हठमकरोत्	स एवाद्य मम पादयोः पतितः।
मैं उसके शरण नहीं जाता हूँ	ऐसा जिसने हठ किया	वही आज मेरे पावों में पड़ा।
असौ महान् धूर्तः	इति यं सर्वे वदन्ति	सोऽपि ममाग्रे मूको भवति।
यह बड़ा चालाक है	ऐसा जिसको सब कहते हैं	वह भी मेरे आगे गूंगा होता है।
यदा यदा धर्मस्य हानिः	तदा तदेश्वरः प्रादुर्भवति	इति गीतायामुक्तमस्ति।
जब जब धर्म की हानि होती है	तब तब ईश्वर निकलते हैं	ऐसा गीता में कहा हुआ है।

प्रधानवाक्यस्य गर्भे पूर्वं पश्चादपि स्थितम्।
अङ्गवाक्यं समन्वीय प्रधानेनैक्यमृच्छति॥ २०३॥

अङ्गवाक्य (क) कहीं प्रधान वाक्य के भीतर, (ख) कहीं उससे पहले, (ग) कहीं उसके बाद रहता हुआ प्रधानवाक्य के साथ मिलकर एक वाक्य हो जाता है।

(क) अयं 'नाहमागच्छामि' इति वक्ति—यह 'मैं नहीं आता हूँ' ऐसा कहता है। कन्दुकेन क्रीडन् गोपालः 'त्वामहमवश्यं जेष्यामि' इति

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सखायमब्रवीत्—गेद खेलते हुये गोपाल ने 'तुमको मैं अवश्य जीतूँगा' ऐसा साथी को कहा ।

(ख) 'यत्पुस्तकं त्वया दत्तं' तदिदानीं नष्टम्—'जो पुस्तक तुमसे दिया गया था' वह अब खो गया । 'यद्यपि स उच्चैः क्रन्दति' तथापि कोऽपि न श्रृणोति—'वह ऊचा कराहता है' तोभी कोई नहीं सुनता है ।

(ग) उत्तरस्याम् हिमालयोऽस्ति, 'यः पर्वतराज उच्यते'—उत्तर में हिमालय है 'जो पर्वतों का राजा कहा जाता है' । देव्युवाच 'त्वं वरम् ब्रूहीति'—देवी ने कहा कि 'तुम वर मांगो' ।

अङ्गवाक्यं समानार्थं नामाव्ययविशेषणैः ।
तत्तन्नाम्ना व्यवहृतं त्रिविधं परिकीर्त्यते ॥ २०४ ॥

अङ्गवाक्य भी अर्थ के अनुसार समूचा कर्ता कर्म करण भेदक आदि नाम, गुण संख्यादिका बोधक विशेषण, देश काल प्रकारादिका बोधक अव्यय जैसा वनकर प्रधान वाक्य में अन्वयी होने से नामवाक्य, विशेषणवाक्य' अव्ययवाक्य, ऐसे तीन किसम के होते हैं ।

नामवाक्य

कर्ता—'छात्रैः सदा खेलनीयम्' एतन्न साधु—'छात्रों को सदा खेलना' यह अच्छा नहीं है ।

कर्म—'अहं नागच्छामि' इति राम उवाच—'मैं नहीं आता हूँ' ऐसा राम ने कहा ।

करण—'त्वं सम्यङ् न पठसि' तेन गुरुः कुप्यति—'तू अच्छी तरह नहीं पढ़ता है' इस ं गुरु चिढ़ते हैं ।

भेदक—'गुरुर्हितमाह' अस्य विचारं कुरु— 'गुरु हित कहते हैं' इसका विचार करो ।

विशेषणवाक्य

गुण—'यदतीव रक्तं' तदेव वस्त्रम् दग्धम्—'जो कपड़ा खूब लाल था' वही कपड़ा जला ।

संख्या—'यः प्रथमां संख्यां प्राप' स प्रहृष्टः—'जिसने पहली संख्या पायी' वह खुस हुआ ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अव्ययवाक्य

देश—'यत्र शीतमतिशेते' तत्र बाधा भवति—'जहाँ ठंडी ज्यादा होती है' वहाँ बाधा होती है।

काल—'यदा सूर्य उदेति' तदा तमो नश्यति—'जब सूर्य उगते हैं' तब अंधकार हटता है।

प्रकार-'यथा त्वमिच्छसि' तथा कुरु—'जिस तरह तू चाहता है' उसी तरह कर।

तर्क—'त्वं सहायोऽसि चेत्' कार्यं संपत्स्यते—'तुम सहाय हो तो' काम बनेगा।

संयुक्त—

अनङ्गाङ्गितया तुल्यप्रधाननिरपेक्षयोः।
वाक्ययोर्योजकेनैक्ये संयुक्तं, तद्बहुष्वपि ॥२०५॥

अङ्ग अङ्गि न होनेसे समप्रधान परस्पर निरपेक्ष दो वा बहुत वाक्योंका योजक शब्दसे योग होकर एक बना हुआ संयुक्तवाक्य होता है।

द्वि—त्वं पाठशालां गच्छ, अहमप्यागच्छामि—तू पाठशाला जा, मैं भी आता हूँ। रामो हरधनुर्बभञ्ज, तदनु सीतामुपायँस्त—रामने शिवका धनुष तोड़ा, तब सीताको व्याहा।

बहु—वसन्ते कमलानि विकसन्ति, सर्वतः सुगन्धिः पवनोऽपि प्रसरति, भ्रमराश्च कलं गुञ्जन्ति, तत उपवनं मनो हरति-वसन्तमें कमल खिलते हैं, सब ओर सुगन्धि हवा भी फैलती है, भौंरे भी मीठा गुञ्जन करते हैं, तब बगीचा दिल हरता है।

समुच्चयविकल्पानुक्रमहेत्वादिबोधकैः।
एककैः सद्वितीयैश्च संयुक्ते योग इष्यते ॥२०६॥

संयुक्तमें समुच्चय, विकल्प, क्रम, कारण, विशेष, वैपरीत्य, आदिके बोधक योजक अव्यय कहीं अकेले कहीं दूसरेके साथ आकर अनेक वाक्यों का योग करते हैं।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

समुच्चय—स पश्यति तं पृच्छति च—वह देखता है उसको पूछता भी है। त्वमपि गच्छ सोऽपि गच्छतु।

विकल्प—इदं त्वं जानासि, किंवाऽहं जानामि-यह तू जानता है, या मैं जानता हूँ। त्वं गणितं कठिनं मन्यसे, उत न्यायं, किंवा विज्ञानम्।

क्रम—पूर्वं रामोऽगमत् तदनु गोपालो ययौ—पहले राम गया, उसके पीछे गोपाल गया।

हेतु—पुत्रो मार्गेऽपतत्, ततो माता तमुत्थापयामास—लड़का रास्तेमें गिरा, इसलिये माताने उसको उठाया।

विशेष—वयं मुहुस्तं सान्त्वयामः, परं स धैर्यं नादत्ते-हमलोग उसको बारबार समझाते हैं, पर वह धैर्य नहीं लेता है।

वैपरीत्य—स कार्ये साहाय्यं न ददाति, प्रत्युत व्याघातं करोति-वह काममें मदत नहीं देता है, उल्टा बिगाड़ करता है।

पक्षान्तर—त्वं सावधानः शृणु, अन्यथा कार्याच्च्यवेथाः—तुम सावधान होकर सुनो, नहीं तो कामसे चूकोगे। शीघ्रं पठ, अन्यथा त्वां ताडयामि।

विकल्पे यत्रकुत्रापि संश्लेषो भिन्नवाक्ययोः
विधेयभेदे, प्रत्येकोद्देश्ययोगे समुच्चये ॥२०७॥

(क) वाक्यमें किसी भी अंशमें विकल्प होने पर भिन्न-भिन्न वाक्योंका योग होता है। (ख) विधेय नाना होनेपर भी अनेक वाक्योंका योग होता है। (ग) नाना उद्देश्यक-स्थलमें प्रत्येकमें विधेयका योग होनेपर समुच्चयमें भी अनेक वाक्योंका योग होता है। (घ) समष्टिके अनुसारसे विधेय अनेकवचन होकर एक साथ अनेक उद्देश्योंमें अन्वयी होने पर तो समुच्चयमें एकही सामान्य वाक्य होता है।

(क) एको देवः केशवो वा, शिवो वा। दीयतामर्जितं वित्तं देवाय, ब्राह्मणाय वा। सूतो वा, सूतपुत्रो वा, यो वा, को वा भवाम्यहम्। रामं, कृष्णं वा भज। पादाभ्यां, हस्ताभ्यां वा प्राहरत्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ख) तद्रक्तं, नीलं वा । स गच्छति, न वा । तद्रक्त, मिदं नीलम् । स विद्वान् , सुशीलश्च । रामः पठति, पाठ्यति वा । अहं गच्छास्या, गच्छामि च ।

(ग) रामः कृष्णश्च गच्छति (रामो गच्छति, कृष्णश्च गच्छति) । मुखं हृदयं चास्य मलिनम् (अस्य मुखं मलिनं, हृदयञ्च मलिनम्) । त्वं रामो वा यास्यति (त्वं यास्यसि, रामो वा यास्यति) ।

(घ) रामः कृष्णश्च गच्छतः । मुखं हृदयं चास्य मलिने । उष्णीषं परिधेयमुत्तरीयं च रक्तानि सन्ति ।

एवं—गच्छ, त्यागच्छति, पुनः पान्थः पश्यति, पृच्छति । शिशुर्वा, शिष्या वा त्वमसि मम, तत्तिष्ठतु तथा । त्वं जीवितं, त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं, त्वं कौमुदी नयनयो, रमृतं त्वमङ्गे । यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महोदधौ । धर्मादर्थश्च, कामश्च, स किमर्थं न सेव्यते । शिशुत्वं, स्त्रैणं वा भवतु, ननु वन्द्यासि जगतो, गुणाः पूजास्थानं गुणिषु, न च लिङ्गं, न च वयः । त्वं चाहञ्चोभौ सम्प्रयुज्यावहै । तीर्थोदकं च वन्हिश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः । कामश्च जृम्भितगुणो, नवयौवनं च । कुलं, रूपं, वयो, विद्या, धनं च मदयन्त्यमुम्—मदयन्त्यमुम् । त्यज, वा स्वीकुरु प्रभो ।

मिलितमें विशेष—

वाक्ये मिश्रेऽथ संयुक्ते पूर्वापरपदान्वयात् ।
पूरणीयं त्वंशवाक्यं संक्षिप्तमपि दृश्यते ॥२०८॥

मिश्र वा संयुक्त वाक्यके अंश (अवयव) वाक्य कोई आगे पीछेसे प्रकरण आदिसे और पदोंका पूरण होनेकी जगहमें बहुत छोटे भी दीख पड़ते हैं ।

त्वं गच्छसि वा, न (गच्छसि), दीयतामर्जितं वित्तं देवाय, ब्राह्मणाय वा (दीयताम्) । यत् ह्यो मया लब्धं, तदिदम् (अस्ति) । स शास्त्रमधीते (स शास्त्रं) विचारयति च ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यत्तदाद्योः क्रमिकयोश्चेत्तर्ह्याद्योश्च योगिनोः ।
द्वयोःसहानवस्थानाद्वाक्यभेदेन योजनम् ॥२०९॥

(क) परस्पर सम्बन्ध होने वाले 'यद् तद्' वा उनसे बने शब्द । (ख) क्रम दिखाने वाले शब्द । (ग) चेत् तर्हि आदि शब्द भी एकवाक्यमें नरहनेसे उनसे युक्त वाक्य अनेक होकर एक बन जाते हैं । उनमें अंश-वाक्य भिन्न समझकर संक्षिप्त पूरणीय होनेपर पूरण करना चाहिये ।

(क) यत्तद्भवतु (यद्भवति, तद्भवतु) । यद्वा तद्वा भविष्यति (यद्भावि, तद्भविष्यति) । यथा तथा पूरय (यथा पूर्यते तथा पूरय) । यावद्ददासि तावत् (यावद्ददासि, तावद्देहि) ।

(ख) पूर्वं रामस्ततो गोपालो गतः (पूर्वं रामो गतः, ततो गोपालो गतः) अहमग्रे यामि पश्चात्त्वम् (अहमग्रे यामि, पश्चात्त्वं याहि) ।

(ग) गच्छसि चेद्गच्छ (त्वं गच्छसि चेत्, तर्हि गच्छ) । सगत-स्तर्हि साधु (सगतश्चेत्, तर्हि साधु बभूव) ।

एवं—गच्छ, गच्छसि चेत्कान्त, तत्रैव स्याज्जनिर्मम । यस्माच्च येन च यथा च यदा च यच्च यावच्च यत्र च शुभाशुभमात्मकर्म । तस्माच्च, तेन च, तथाच, तदा च, तच्च, तावच्च, तत्रच, विधातृवशादुपैति । तद्वक्त्रं यदि, मुद्रिता शशिकथा, तच्चेत्स्मितं, का सुधा । वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव, तथा जडे । प्रथमं कलाभव, दथार्ध, मथो हिमदीधितिःस्फुटमभूदुदितः ।

मिश्रयोगस्तु सापेक्षयोजकैर्यत्तदादिभिः ।
संयुक्तयोगोऽनपेक्षयोजकैश्चानुवादिभिः ॥२१०॥

(क) मिश्र वाक्यमें नाना अंशवाक्य अङ्ग अङ्गि होकर परस्पर सापेक्ष होनेसे उनका सापेक्ष योजक 'यद् तद् इदम् एतद् अदस्' वा उनसे बनेशब्द, और 'यद्यपि तथापि, चेत् तर्हि' आदि शब्दोंसे योग होकर एकवाक्यता होती है । (ख) संयुक्तवाक्यमें अनेक अंशवाक्य अङ्ग अङ्गि

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

न होकर परस्पर निरपेक्ष होनेसे उनका निरपेक्षयोजक समुच्चयबोधक 'च अपि' क्रमबोधक 'ततः तदनु अनन्तरं पश्चात् अथ' विकल्पबोधक 'वा अथवा किंवा उत' कार्यकारणबोधक 'अतः यतः ततश्च एवंच इत्थं च,' विशेष बोधक 'नु परं परन्तु' वैपरीत्य पक्षान्तरबोधक नोचेत् अन्यथा प्रत्युत' आदि शब्दोंसे योग होकर एकवाक्यता होती है। इस लिये अंशवाक्य सापेक्षयोजक से मिलने पर मिश्रवाक्य, निरपेक्षयोजकसे मिलने पर संयुक्तवाक्य होता है। अङ्गको अङ्गिकी अपेक्षा रहनेसे मिश्रमें अङ्गमात्रका प्रयोग अधूरा होता है। संयुक्तमें तो परस्पर अपेक्षा न होकर अंशवाक्य केवल योजक द्वारा मिले होनेसे योजक निकाल देने पर दोनों अलग अलग पूर्णार्थक सामान्यवाक्य बनसकते हैं। यही इन दोनों का विशेष होता है।

(क) यथा शीघ्रं भवति, तथा कुरु। सोऽयंपुरुषः, यो मया ह्यो दृष्ट आसीत्। यदा सूर्यो नभो मध्यं प्राप्नोति, तदाऽयं भुङ्क्ते। त्वमध्येतु-मिच्छसि चेत्, तर्हि पुस्तकानि दास्यामि। यद्यपीदं मनोहरं, तथापि महार्घमस्ति। यदि प्रभूता वृष्टिः, तर्हि सुभिक्षमेव।

(ख) त्वमग्रे भव, अहमप्यनुसरिष्यामि। उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्। गां, महिषीं वा क्रीणासि। गोविन्दः पाठं श्रावयामास, अतो गुरुः प्रससाद। ततो दूरमुपागतोऽस्मि, परं मनस्तत्रैव धावति। शीघ्रं पठ। नोचेत्ताडयामि। शीघ्रं वद, अन्यथाऽन्यस्मै ददामि। स हितं श्रुत्वाऽपि मनसि न गृह्णाति, प्रत्युत मयि स्नेहं शिथिलयति, रोगस्तु शान्तः, परं दुर्बलोऽस्मि।

यथा सामन्ययोर्योगे योजकैर्मिश्रयुक्तता।
तथैव मिश्रयुक्तानामप्यन्योऽन्येन योजनम् ॥२११॥

जैसे अनेक सामान्य वाक्योंका सापेक्षयोजक वा निरपेक्षयोजक द्वारा योग होने पर मिश्रवाक्य संयुक्तवाक्य बनते हैं, वैसे ही मिश्र

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

संयुक्तवाक्यों का भी योजक द्वारा योग होनेपर मिश्रसंयुक्त, संयुक्तमिश्र, मिश्रमिश्र, संयुक्तसंयुक्त भी वाक्य बनते हैं ।

(क) **मिश्रसंयुक्त**—सूर्यो यावन्नोदेति, तावदसौ शय्यां न मुञ्चति, परं पूर्वदिने यदधीतं तत्प्रत्यूष एव प्रबुध्य चिन्तयति—जब तक सूर्य नहीं उगते हैं, तब तक यह बिस्तरा नहीं छोडता है, पर पहले दिनमें जो पढा गया, वह सवेरे जागकर विचार करता है ।

(ख) **संयुक्तमिश्र**—यत्पाठेऽवधानमपि न ददासि, पश्चादपि नाभ्यस्यसि, एतन्नस्वस्य हिताय, न वा गुरोस्तोषाय भवति—जो पाठ में ध्यान भी नहीं देते हो, पीछे भी नहीं घोकते हो, यह अपने फायदे के लिये भी नहीं, गुरु के सन्तोष के लिये भी नहीं होता है।

(ग) **मिश्रमिश्र**—यथा दृष्टं तथा न कथयसि चेत्, तर्ह्यहमपि स्वमनसि यदस्ति, तन्न प्रकाशयामि—जैसा देखा गया, वैसा नहीं कहते हो तो मैं भी अपने मनमें जो है, वह प्रकाश नहीं करता हूं ।

(घ) **संयुक्तसंयुक्त**—रामोऽपि क्रीडति, गोपालोऽपि नाभ्यस्यति, तत एव परीक्षां नोत्तरिष्यतः, लब्धवृत्तेरपि विभक्तौ भविष्यतः—राम भी खेलता है, गोपाल भी नहीं घोकता है, इसीसे परीक्षा में पास न होंगे, पायी हुई वृत्ति से भी अलग होंगे ।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

वाक्य कितने किसम के होते हैं। मिश्रसंयुक्त किस तरह बनते हैं। अंशवाक्य किसको कहते हैं। अङ्ग अङ्गिवाक्य कैसे कहां होते हैं। वाक्यों का योग किनसे होता है। सापेक्षयोजक निरपेक्षयोजक कैसे होते हैं। यद् तद् शब्दों से योग होने पर कैसे वाक्य बनते हैं। अङ्गाङ्ग वाक्य कैसा होता है। मिश्रसंयुक्त में कितने अंश वाक्य होते हैं। मिश्र होने पर संयुक्त, संयुक्त होनेपर मिश्र कैसे होते हैं ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद करो, प्रत्येक वाक्य के स्वरूप का परिचय भी करो—

तस्य गृहिणी प्रियवादिनी वर्तते, पुत्रोऽपि साधु शिक्षितः। भवते नगरवासो रोचते, उत विपिने भ्रमणं भवन्तं प्रीणाति। पूर्वं ध्वनिरुदेति, ततः प्रतिध्वनिः प्रसरति। स सासूयं मामवेक्षते, अतो नाहं गन्तुमुत्सहे। बहुप्रशंसाभिर्नाहं तुष्यामि, प्रत्युत विशेषतो लज्जे। मदीयां हितोक्तिं हृदये गृहाण, अन्यथा पश्चात्तप्स्यसे। तदीयं कर्मकौशलं प्रशंसनीयमेव, परं तमालस्यं प्रतिरुणद्धि। बन्धून्प्रेमार्द्रया दृशा पश्य। प्रेम्णाऽऽहृता बन्धवोऽनुगच्छन्ति। यः पितरौ देववत्पूजयति, गुरुमपि विशेषतः संमानयति, तं सत्पुरुषं वदति लोकः, तस्यायतिरप्युज्ज्वला भवति। विद्या मनुजानां परमं भूषणं, यया समुज्ज्वलितहृदयाः पुरुषा दीना अपि महद्भिः सत्क्रियन्ते। इदमौषधं वातमनुलोमयति, कफं च क्षपयति, पित्तं चोद्रिक्तं शमयति।

सवेरेका समय विद्यार्थियोंके लिये बहुत अनुकूल है, क्योंकि उस समयमे हृदय स्थिर रहता है, जिधर लगाया जाता है उसको पकड़ लेता है। इसीलिये ईश्वरका भजन पूजन आदि इसी समयमें विशेष करके कहा गया है। ऐसे अच्छे समयको निद्राके गोदमें रखकर जो सुलाता है, वह अपने आप अपनी हानि करता है। सवेरे नींदको छोड़कर मनको शास्त्रोंके विचारमें लगानेसे कठिन विषय भी सहज ही समझमें आते हैं। जैसा सूर्य प्रकाश देते हुए आगे बढ़ते हैं, वैसा ही विचार भी हृदयमें प्रकाश देता हुआ आगे चलता है। विचारकी गति यहीं तक है ऐसा सीमित नहीं है, जितनी आगे कियी जाती है, उतनी बढ़ती रहती है। विचारके लिये इस समय अति अनुकूल है, यह समझकर इसको अच्छे काममें लगाना कल्याण साधने की राह है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(१०) सङ्कोच और विकास

सङ्कोचेन विकासेन वक्तव्यस्यावबोधनात् ।
वाक्यबन्धः सङ्कुचितो विस्तृतश्च द्विधा मतः ॥२१२॥

किसी वक्तव्यको संक्षेपसे किंवा विस्तारसे दिखानेपर वाक्यकी रचना सङ्कुचित और विस्तृत दो किसमकी होती है ।

सङ्कोच—वसन्त उद्यानं रमणीयं भवति-वसन्तमें बगीचा सुन्दर होता है। ग्रीष्मे उष्णः पवनः सर्वतः शोषयति–ग्रीष्ममें गरम हवा सब ओर सुखाता है। सङ्गीतं सर्वेषां हृदयमाकर्षति-गाना सबको हृदय खींचता है।

विकास—ऋतुराजे प्रादुर्भूते विचित्राणां सुरभिणां कुसुमानां विकासेनोपवनं हृदयमामोदयति—वसन्तऋतु प्रकट होने पर अनेक रङ्गके सुगन्धि फूल खिलनेसे बगीचा हृदयको आनन्द देता है। मधुरेण स्वरेण गीयमानंसङ्गीतं लयतालमूर्छनाभिरुपचीयमानमाबालवृद्धं जनानां मनांसि प्रमोदे मज्जयति-मीठे स्वरसे गाया हुआ सङ्गीत लय ताल और मूर्छनाओंसे बढ़कर बालकसे बूढ़े तकके लोगोंका हृदय आनन्दमें डुबाता है।

सङ्कोच—

मुख्यांशानेव सङ्कीर्त्य कर्तृकर्मक्रियादिकान् ।
न्यासे पदानामल्पानां वाक्यसङ्कोच इष्यते ॥२१३॥

कर्ता कर्म क्रिया आदि मुख्यमात्र अंशको लेकर कमसे कम पदोंका विन्यास करनेसे वाक्यका सङ्कोच होता है ।

वि०—(क) दशरथस्य पुत्रो रामः पितुराज्ञया पत्न्या सीतया भ्रात्रा लक्ष्मणेन च सह वनं जगाम—दशरथके लड़के राम पिताकी आज्ञासे पत्नी सीता, भाई लक्ष्मणको साथ लेकर वनमें गये ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ख) गृहीतपाथेयो गोपालस्तीर्थयात्राया अभिलाषेण बहूनि पुण्य-स्थलान्ययासीत्-रास्तेका खरच लेकर गोपाल तीर्थयात्राकी इच्छासे बहुत पुण्यस्थलमें गया। (ग) अतिविशाले कुरुक्षेत्रे परस्परं विजिगीषया संहतानांससाधनानां कौरवाणां पाण्डवानां च भीषणसंग्रामो बभूव—विस्तृत कुरुक्षेत्रमें परस्पर विजयकी इच्छासे जमाहुए सामान सहित कौरव पाण्डवोंका बड़ा युद्ध हुआ।

सं०—(क) दाशरथिर्वनं जगाम। (ख) गोपालस्तीर्थान्ययासीत्। (ग) कुरुक्षेत्रे कुरुपाण्डवानां महायुद्धं बभूव।

लघूकृतेन वाक्येन वाक्यांशेन पदेन च।
संक्षिप्यते बोधनीयं तदेवापि यथोत्तरम् ॥२१४॥

लम्बे वाक्य के वक्तव्य को भी छोटे वाक्य से, उससे भी वाक्यांश से, उससे भी पद से दिखा जा सकने पर सङ्कोच होते जाता है।

दीर्घवाक्य—(क) यस्याः शरीरं हिमकाले उष्णं निदाघकाले शीतलं च जायते, सर्वेऽवयवाश्च सुकुमाराः, सेयं सर्वाङ्गसुन्दरी नारी—जिसका शरीर जाडे में गरम, गर्मी में ठण्डा होता है, सब अवयव सुकुमार हैं, वही सब सुन्दर अङ्गवाली यह स्त्री है। (ख) यः शत्रून्विजेतुमिच्छति सोऽयम्—जो शत्रुओं को जीतना चाहते हैं यही हैं। (ग सत्कृत्यालङ्कृतां कन्यां वराय यो ददाति सः—सत्कार करके अलङ्कार किया हुई कन्या जो वरको देता है वह।

लघुवाक्य—(क) हिमोष्णानि घर्मशीतानि मृदुसुन्दराङ्गानि यस्याः सन्ति, सेयम्। (ख) यः शत्रून्विजिगीषत्यसौ। (ग) ससत्कारं भूषितां कन्यां वराय योऽर्पयति सः।

वाक्यांश—(क) हिमोष्णैर्घर्मशीतैर्मृदुरस्याङ्गैर्युता। (ख) शत्रून्विजिगीषुः। (ग) सादरमलङ्कृतकन्यायाः दाता।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पद—(क) वरवर्णिनी। (ख) विजिगीषुः। (ग) ककुदः।

एवं—विधिमपरित्यज्य यो यज्ञमकरोत्सः,—सविधि य इयाज सः,—विधिनेष्टवान्,—यज्वा। यः सर्वेभ्यो ददाति स्वयमपि भुङ्क्ते च सः,—सर्वेभ्यो ददानः स्वयं भुङ्क्ते च सः,-सर्वेभ्यो दाता भोक्ता च,-सुकलः। यस्य मनः सदा नानाविधैः संशयैराक्रम्यते सः,-यो मनसि संशयैराक्रम्यते सः,-सदा मनसि संशयैराक्रान्तः,-सांशयिकः। इ०

वाक्येन वा तदंशेन बोध्यस्यार्थस्य भूयसः।
सङ्कोचः क्रियते प्रायः समासेन विशेषतः ॥२१५॥

वाक्य वा वाक्यांशसे दिखाने लायक लम्बे विषयको भी उचित समास करके दिखाने पर विशेषरूपसे सङ्कोच होता है।

(१) यस्य पत्राणि बहून्यपतत् सः,—पत्राणि पातितवान्,—पतितपत्रः—पत्ता गिरा हुआ (२) यस्मिन् वानरा आरोहन्ति सः,—वानरैः कृतारोहणः,—आरूढवानरः—बन्दर चढ़ा हुआ (३) यस्य भ्राता पत्नी च सहभूतौ स्तः सः,—भ्रात्रा पत्न्या च सहितः,—सभ्रातृपत्नीकः—भाई और स्त्री से सहित। (४) यस्य कीर्तिर्दिगन्तान्व्याप्नोति सः,—दिगन्तेषु व्यापिन्या कीर्त्या युतः,—दिगन्तकीर्तिः—दिशा के अन्ततक यश पहुचा हुआ। (५) येनाहमानन्दितोऽस्मि सः,—मामानन्दयन्,—मदानन्दकः—मुझे आनन्द देने वाला। (६) बहूनि शास्त्राणि येनाध्याप्यन्ते सः,—बहूनां शास्त्राणामध्यापकः,—बहुशास्त्राध्यापकः,—बहुत शास्त्र पढ़ानेवाला। (७) यस्य नानाविधानां प्रफुल्लानां पुष्पाणां सम्पर्केण सुगन्धिः पवनः सर्वा दिश आमोदयति सः,—नानाविधानां प्रफुल्लपुष्पाणां सम्पर्कसुगन्धिना पवनेन सर्वदिशामामोदकः,—नानाविधप्रफुल्लपुष्पसम्पर्कसुगन्धिपवनामोदितसर्वदिक्कः—अनेक खिले हुए फूलों के संसर्गसे सुगन्धि हवासे सब दिशाओं को सुगन्धित बनाने वाला।

विस्तार—

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विशेषणैः कारकैर्वा मुख्यार्थस्य विकासकैः ।
भङ्ग्यादिकैश्च वक्तव्यं विस्तारमुपनीयते ॥२१६॥

मुख्य विषय को बढ़ानेवाले विशेषण कारक आदि देनेसे कहने की ढंग बदलनेसे भी वक्तव्यका विस्तार होता है ।

सूर्य उदियाय,—तेजोनिधिः सविता गगनमण्डले प्रादुर्बभूव,—सर्वा दिशः प्रकाशयन्भगवान्सहस्रकिरणः सर्वतो रश्मीन्प्रसारयन्गगनस्य पूर्वभागे स्वं मुखबिम्बं दर्शयामास—सब दिशाओं को प्रकाश करने वाले भगवान्सूर्यने चारों ओर किरण फैलाते हुए आकाश के पूर्वभाग में अपना मुखमण्डल दिखाया । पुष्पाणि विकसन्ति,—मृदुलैः पत्रैः मनोहरैर्वर्णामोदेन चेन्द्रियाणि तर्पयन्ति कुसुमानि विकसन्ति—कोमल पत्तियाँ, सुन्दर रङ्ग और सुगन्धसे इन्द्रियों को तृप्त करते हुए फूल खिलते हैं ।

वाक्यैर्विशेषणाकारैर्वाक्यांशैस्तादृशैरपि ।
विशेषणानां विस्तारस्तथा नामादिकस्य च ॥२१७॥

विशेषण जैसे वाक्य, विशेषण वाक्यांशसे भी विशेषणोंका, ऐसा ही नामवाक्य, नामवाक्यांश आदिसे नाम आदि का भी विस्तार होता है ।

गुणी,—यस्मिन्बहवो गुणाः सन्ति,—बहुभिर्गुणैर्युक्तः,—बहुत गुण वाला । मनोहरः,—यः सर्वेषां मनो हरति,—सर्वेषां मनस आकर्षकः—सबका दिल हरने वाला । दूरदर्शी,—यस्य दृष्टिर्दूरमपि प्रसरति,—दूरगां दृष्टिं दधानः—दूर तक देखने वाला । वदान्यः,—यो याचकेभ्योऽभीप्सितानर्थान्ददाति,—याचकानां मनोरथपूरकः—याचकों को खूब देने वाला । दाशरथिः,—यो दशरथाज्जन्म लेभे,—दशरथस्य पुत्रः—दशरथका लडका ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पृथक्कारे समस्तानां पदानां भूयसामपि ।
वाक्यांशैरथवा वाक्यैर्वक्तव्यस्य विकासनम् ॥२१८॥

नाना पदों को जोड़कर किये गये समासों को फोडकर वाक्यांश वा वाक्यों की रचना करने पर भी वक्तव्य का विस्तार होता है ।

(१) पीताम्बरः,—पीतमम्बरं धारयन्, – यस्याम्बरं पीतमस्ति सः- पीला कपडा वाला । (२) कृतकृत्यः, – कृत्यं कृतवान्,—येन कृत्यं समापितमस्ति सः—काम समाप्त करने वाला । (३) देवप्रसादपूर्णः,—देवानां प्रसादेन पूर्णः, —देवानां प्रसादा यस्मिन्बहवः सन्ति—देवताओं के अनुग्रह से पूर्ण ।

गौणक्रियाभिर्योग्याभिस्तदीयैः कारकादिभिः ।
देशकालप्रकारादिविशेषैरपि विस्तृतिः ॥२१९॥

मुख्य वक्तव्यके पोषक गौण क्रिया, उनके कारक आदि, और देश काल प्रकार आदि विशेष दिखानेसे भी वक्तव्यका विस्तार होता है ।

संकोच—राजा मृगयामकरोत् । सुगन्धः समायाति । एष हसति । भृत्यः पत्रमनैषीत् ।

विस्तार—अतिशूरो राजा मृगयून्सैनिकांश्चादाय गहनं वनमुपेतो व्याघ्रादीन् बहुशो निघ्नन्भीषणां मृगयामकरोत्—बड़े शूर राजाने सिकारी और सेनाके लोगोंको भी लेकर भारी जङ्गलमें जाकर बहुतसे बाघ आदिको मारते हुए भयङ्कर सिकार किया । उपवने पुष्पितानां लतानां मनोहरः सुगन्धः सर्वतः समायाति—बगीचेमें खिले हुए लताओं-का दिल हरनेवाला सुगन्ध चारों ओरसे आता है । एषोऽन्तेवासी सतीर्थ्यान् क्रीडतो दृष्ट्वा उच्चैर्हसति—यह विद्यार्थी साथियोंको खेलते हुए देखकर खूब हँसता है । मदीयो भृत्यः पित्रे लिखितं पत्रं मन्त्रि-

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

योगेन वाहकाधिकरणे दातुमनैषीत्—मेरे नौकरने बापको लिखी हुई चिट्ठी डाकखानेमें देनेके लिये ले गयी।

सामान्यवाक्यबोध्यस्य विभज्यांशान्प्रसारणे।
मिलितैर्मिश्रसंयुक्तवाक्यैर्भवति विस्तृतिः ॥२२०॥

सामान्य वाक्यसे कहने लायक बक्तव्यको टुकड़े टुकड़े करके फैलाकर मिश्र वा संयुक्त मिलित वाक्य रचना करनेसे भी विस्तार होता है।

काश्यां गतस्य मित्रस्य पत्रमागतम्—यः काश्यां गत आसीत्, तस्य मित्रस्य पत्रमागतम्—काशीमें गये हुए मित्रकी चिट्ठी आयी। विपदि धैर्यं विधेयम् -यदा विपदागच्छति, तदा धैर्यं विधेयम्—विपद् पड़नेपर धैर्य करना चाहिये। प्रोषितस्य पुत्रस्य कुशलवृत्तं व्यवसाय-वृद्धिं च श्रुत्वाऽतीवानन्दितोऽस्मि—यः पुत्रः प्रोषित आसीत्, तस्य कुशलवृत्तमहं श्रुतवान्, तस्य व्यवसायवृद्धिं च श्रुतवानस्मि, तेनाऽह-मानन्दितोऽस्मि-विदेश गये हुए लड़केका कुशल समाचार उद्योगकी वृद्धि भी सुनकर मैं आनन्दित हूँ। झटिति वस्त्रं परिधाय बहिर्गन्तुं मल्लनियुद्धं च द्रष्टुमिच्छामि-झटिति वस्त्रं परिदधामि, तदनु बहिर्गच्छामि, तत्र मल्लनियुद्धं पश्येयमित्यहमिच्छामि—जल्दी कपड़ा पहनकर बाहर जाने को वहां पहलवानोंकी कुस्ती देखनेको चाहता हूँ।

विन्यासपरिवर्तन—

पदानामिव वाक्यानामल्पतां बहुतामपि।
विपर्यस्य कृते बन्धे विन्यासपरिवर्तनम् ॥२२१॥

पदके नाईं वाक्यों का भी अल्पत्व किंवा बहुत्वको परिवर्तन करके सङ्कोच विकास की रचना करनेसे वाक्य विन्यासमें परिवर्तन होता है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सं०—भारतभूमौ विहारप्रान्तादुत्तरत उपहिमालयं नेपालदेशे वाग्वतीनद्यास्तटे श्रीपशुपतिर्विराजते। यस्य प्रसाददृष्टिः करुणारसेन सर्वांल्लोकानाप्लावयन्ती लोकान्सुखयति।

वि०—भारतस्योदीच्यां विहारप्रान्तो विद्यते। तस्योत्तरतो हिमालयस्योपकण्ठं नेपालाख्यो देशोऽस्ति, तत्र मध्यभागे वाग्वती नाम पुण्यनदी प्रवहति। उपकाष्ठमण्डपराजधान्याः क्रोशमात्रे पूर्वतो देवपत्तनाभिधेये पुण्यग्रामे तस्या एव वाग्वत्यास्तटे जगदीश्वरस्य पशुपतेरधिवासोऽस्ति, यस्य प्रसादाभिमुखा दृष्टिः करुणारसं प्रवाहयन्ती सर्वांल्लोकानाप्लावयति। तस्या महिम्ना सर्वे जनाः सुखिनः सर्वदा कल्याणान्यनुभवन्ति।

लघुबन्धक्रियाभ्यासात्सिद्धे सरलकौशले।
दीर्घदीर्घतरे बन्धे फलति क्रमशः श्रमः ॥२२२॥

पहले छोटे छोटे वाक्योंकी रचनाके अभ्याससे सामान्य कुशलता पाने पर दीर्घ अतिदीर्घ रचनामें क्रमसे श्रम करनेसे सफलता होती है।

प्रकारभेदौ निध्याय वाक्यव्यास समासयोः।
रचनोभयथाऽभ्यस्ता संवर्द्धयति कौशलम् ॥२२३॥

वाक्यके संक्षेप विस्तार की तरीकोंको विचार करके दोनों किसमकी रचनाओं के अभ्यास करते रहने से रचनाको कुशलता बढती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

वाक्यकी रचना किस किस किसमकी होती है। सङ्कोच और विस्तार किस किस ढंगसे होते हैं। रचनामें परिवर्तन कैसा होता है। वाक्योंके संक्षेप विस्तारमें किन बातोंका ख्याल रखना चाहिये। रचनाका अभ्यास कैसे करना चाहिये।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

निम्नलिखित वाक्योंका अनुवाद करो, सङ्कोच विकास करके रचना भी करो —

उपवनं महद्विनोदस्थानम् । वीथीबद्धा बालतरवः फलानां पुष्पाणां पल्लवानां च सम्भारैर्नयनं लोभयन्ति । कुसुमितानां पल्लवितानां च लतानां मकरन्दास्वादे लुब्धा भ्रमरा इतस्ततो भ्रमन्तो गुञ्जितैर्मधुरैर्विहाररसिकानां श्रवणपथानानन्दयन्ति । नानाविधानां सुमनसां सम्पर्केण सुरभिः समीरणो मन्दं मन्दं वहन्नन्तस्तापमपि शमयति । एकतः पक्षिणस्तरुषु शाखातः शाखान्तरमुत्प्लवन्तः कलरवं कुर्वन्ति । अन्यतो मधुकराः पुष्परसमास्वादयन्त उड्डीयमाना गुञ्जन्ति ! विलासिनः कुञ्जेषु प्रविश्य शीतलच्छायासुखमनुभवन्ति ।

इस तालावके चारों ओर पत्थरकी सीढियाँ वनी हुई हैं। धीरे धीरे हवा बहने पर जलकी छोटी छोटी लहरें किनारे तक पहुँचकर सीढियेंमें ठोकर खाती हुई फिर लौटती हैं। खिले हुए कमलेंकी शोभा इसको और मनोहर कर रही है। हंस चकवे पानीमें तैरते हुए इधर उधर घूमते हैं। किसम किसमकी छोटी बडी मछलियां आनन्दके साथ नीचे ऊपर जाती आती हैं। बगुले किनारें पर निश्चल रहकर मछलियेंको पकडनेकी दांव करते हैं। कमलेंका सुगन्ध और जलके कणोंको लेकर धीरे धीरे बहती हुई हवा किनारेंमें घूमते हुए लोगेंको वहुत आनन्द देती है। इस तालावसे चारें ओर वनकी शोभा दिनमें दुगुनी उजियारी रातमें चौगुनी होती है।

———

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(११) रचनासमीक्षा

समीक्षणं वर्णपदवाक्यानामुपयुज्यते ।
शुद्धा दोषनिरासेन रचना स्थैर्यमेति यत् ॥२२४॥

रचना करनेपर प्रत्येक वर्ण पद वाक्योंको विचारकी दृष्टिसे देखना चाहिये । इससे दोषोंको हटाकर शोधन होनेपर रचनामें स्थिरता होती है।

वर्णसमीक्षा

उच्चारणस्य सारूप्याल्लेखनादस्फुटादपि ।
शोध्या वर्णा विपर्यस्ताः सावधानदृशेक्षणात् ॥२२५॥

(क) ह्रस्व दीर्घ (ख) व ब (ग) श ष स इत्यादि (घ) और वर्णोंके भी उच्चारणमें कुछ समानता होनेसे लिपिकी अस्पष्टता से अवधान न रहनेसे भी बिगडे हुए वर्णोंको सावधान दृष्टिसे देखकर शोधन करना चाहिये ।

(क) दिनं-दीनः, इनः-ईनः, कुलं-कूलं, द्विपः-द्वीपः, शुकः-शूकः जातिः-जाती, सुतः-सूत इ०

(ख) बुद्धिः, बोधः, बृहत्, बालकः, ब्रह्म, ब्रह्मा, बिभर्ति, बभूव, बुभुक्षा, लब्धः, अम्बरम् इ० व्यथा, विद्वान्, विजयते, विवेकः, वार्ता, वनं, वयः, वर्णः, वंशः, वायुः, वत्सरः, वर्त्म इ०

(ग) अंशः शकृत् सकलं सर्वः सुतः सूरः सुतः सितः स्वः सङ्करः इ०
अंसः सकृत् शकलं शर्वः श्वतः शूरः श्रुतः शितः श्वः शङ्करः इ०
संशयः, विशेषः, विषयः, प्रशंसा, शंसति, विषण्णः, सर्गः, विषमः, विश्वासः, इ०

(घ) कृतः, क्रीतः ,क्रियते, कृपा, क्रिया, ह्रीतः, हृतः, प्रीतः, प्रीणाति, क्रीणाति, इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पदसमीक्षा

पदेषु नाम्नां लिङ्गानि वचनानि विभक्तयः ।
आख्यातानां पदं वाच्यं लकारपुरुषादयः ॥२२६॥
समस्तानां लिङ्गसंख्ये पौर्वापर्यं च शब्दयोः ।
सामासिकविशेषाश्च वीक्षणीया विशेषतः ॥२२७॥

पदोंमें (क) नाम शब्दोंके विशेषण सर्वनामोंके भी लिङ्ग वचन विभक्तियां (ख) आख्यात शब्दोंके पद वाच्य लकार पुरुष वचन, (ग) समस्त शब्दोंमें समास हुए शब्दोंका पौर्वापर्य, समास होनेपर लिङ्ग वचन समासान्त आदि विकार विशेष ठीक हैं या नहीं इत्यादि विचार करना चाहिये ।

(क) शत्रुः, मित्रं, कलत्रं, दाराः, नारी, अप्सरसः, सुमनसः, वर्षाः, वधूजनः ।

सः तौ ते, सा ते ताः, तत् ते तानि । अयम् इमौ इमे, इयम् इमे इमाः, इदम् इमे इमानि इ० रक्तः रक्ता रक्तम्, महान् महती महत्, गतवान् गतवती गतवत्, गरीयान् गरीयसी गरीयः इ०

(ख) गच्छति । वर्धते । पचति पचते । भूयते । गम्यते । पच्यते । वर्धयति । जिगमिषति । ईप्सति इ०

(ग) राजा-महाराजेन, राज्ञः-महाराजस्य । पत्युः-भूपतेः । पत्या-प्रजापतिना । पथि-राजपथे । अक्षि-पुण्डरीकाक्षः । सखा-प्रियसखः । ऊधः-घटोध्नी । धनुः-पुष्पधन्वा । अहः-पूर्वाह्णः । दश-उपदशाः अम्बरं-पीताम्बरः । भर्ता-योग्यभर्तृका । भार्या-प्रियभार्यः । छाया-वृक्षच्छायम् इ०

वाक्यसमीक्षा—

योगः समीक्ष्यो वाक्येषु विशेषणविशेष्ययोः ।
विधेयोद्देश्ययोर्लोके भेद्यभेदकयोरपि ॥२२८॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

क्रियासु तत्कारकाणामुपमानोपमेययोः ।
योग्या योजकयोर्नामसर्वनाम्नोरपि स्थितिः ॥२२६॥

वाक्यों मे (क) अजहल्लिङ्ग-वचन को छोडकर विशेषण विशेषण का समान-रूपसे सम्बन्ध, (ख) उद्देश्य प्रथमान्त तदनुसारी विधेय का परस्पर-सम्बन्ध, (ग) भाषा में भेद्य के अनुसार से भेदक में ओ ई आकारान्त होकर सम्बन्ध, (घ) गौण वा मुख्य क्रिया के साथ योग्य विभक्ति वाले उसके कारकों का सम्वन्ध, (ङ) उपमान वा आरोप्यका और उपमेय वा आरोपविषयका अपने लिङ्ग वचन होने पर भी समान विभक्ति होकर सम्बन्ध (च) योजक अव्यय जोडा होनेपर उनका परस्पर सम्बन्ध, (छ) सर्वनाम जिस नामका प्रतिनिधि होकर आया है उसी अनुसारके लिङ्ग वचन विभक्तियोंमें रहकर उन नामसर्वनामोंका परस्पर सम्बन्ध ठीक है वा नहीं इत्यादि विचार करना चाहिए ।

(क) पुष्पितासु लतासु भ्रमरा गुञ्जन्तो भ्रमन्ति । चतुर्थीयमवस्था तस्य दृश्यते । बालस्य वयोभिर्वर्द्धमानं निरीक्ष्य प्रमुदितौ पितरौ मिथः पश्यतः । द्विजो यवीयसीं भार्यामुद्वहेत् ।

(ख) शास्त्राणि विचार्यन्ते । भवता साधु समीक्षितम् । शास्त्रेषु पारदृश्वानां विचार उपर्यारूढो भवति । त्वमस्माभिः पुनः पुनरुपदिश्यसे । वयमतीव क्षमामहे ।

(ग) उनकी लडकी अपने पतिका प्रेम वहुत करती है । आपके शिष्योंने शास्त्रार्थ में वादियों की युक्तियों को उलट दिया । मेरा विचार उनके विचार से ऊँचा है ।

(घ) बलादापतितानि कार्याणि धैर्येणावष्टभ्य क्रमेण साधयन्ति सुधियः । शत्रवे क्रुध्यन्तं जनं निरीक्ष्य साधुरपि बिभेति । समीहितानां साधनाय यतमाना जनाः सहायानन्वेषयन्ति । नार्यो भूषणानि परिधायोत्सवं द्रष्टुं पत्युरनुज्ञां वाञ्छन्ति । इ०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

(ङ) रामस्येवास्य शान्ता वृत्तिः सर्वान्सुखयति। गुणानां सागरेणाऽनेनाऽनन्दस्य तरङ्गा उच्चाल्यन्ते। भ्रमरः पुष्परसमिव कविः काव्यरसं पिपासति। लक्ष्म्या भाजनमेषः। इ०

(च) त्वं यदि वाञ्छसि तर्ह्यविलम्बेन कुरु। यावदिच्छामि तावद्ददामि। त्वं चाहं च सह प्रवर्तामहे। यदा मनः श्राम्यति तदा मुखमपि म्लायति। गच्छसि चेत्तर्हि गच्छ। इ०

(छ) वणिजां व्यवहृतयो या दृश्यन्ते, तास्तेषां धूर्ततामवगमयन्ति। सा अहमुपस्थिताऽस्मीति निवेदयति। यस्य मनः क्रूरं भवति तस्य तत्साहसं कर्तुमपि प्रवर्तते। यासां नारीणां धर्मे श्रद्धा भवति ता एता देवोत्सवेषु सम्भारान्सम्पादयितुं भूय उत्सहन्ते।

नियमाननुसन्धाय समीक्षादृष्टिरर्पिता।
शोधयित्वोज्ज्वलयति लेखं स्वर्णमिवानलः ॥२३०॥

सब नियमों को ख्याल करके लगायी हुई समीक्षा (विचार) दृष्टि सुवर्ण को अग्नि के समान लेखको शोधन करके उज्ज्वल बनाती है।

अभ्यासार्थं प्रश्न—

रचनाकी समीक्षा किस लिये करना चाहिये। वर्णकी समीक्षामें क्या देखना चाहिए। पदसमीक्षामें किस किसमें क्या क्या देखना चाहिये। वाक्य समीक्षामें किन बातोंमें दृष्टि देनी चाहिये।

निम्नलिखित वाक्योंका अनुवाद करो, समीक्षा भी करो—

एकस्मिंस्तपोवने बहवो मुनयो वसन्ति स्म। तेषु केचन वेदानामध्ययनेऽध्यापने च प्रवृत्ता आसन्। केचन योगाभ्यासेन शरीरमन्तःकरणं च शोधयितुं प्रावर्तन्त। केषाञ्चिच्छ्रौतैः स्मार्तैश्च विधिभिर्नानाविधा यागाः प्रावर्तन्त। वेदध्वनिभिर्गगनमापूर्यमाणमासीत्। क्वचन वृक्षमूलान्यधिवसतां महात्मनामाध्यात्मिक्यः कथा। भक्तजनानां

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जिज्ञासा अपानुदन्। सायं प्रातर्हूयमानस्याग्नेः शिखाभिः पिञ्जरीक्रियमाण आलोकः स्वर्णमयमिव वनं प्रादर्शयत्। पवित्राण्याचरणानि सन्मार्गाणां प्रकाशकानि बभूवुः। यैः शोभनाः साधव आदर्शा इव धर्म्यान्व्यापारान्प्रादुश्चक्रुः। न तत्र क्वचिदपि विषादो मोहः क्रोधः पारुष्यं वाऽदृश्यत। धर्मधनानां महापुरुषाणां निवासेन दिव्यमिव तदाश्रमस्थानं शुशुभे।

मनुष्योंके लिये विद्याके समान हित दूसरा कोई पदार्थ नहीं है। इसके प्रकाशसे सबका हृदय उज्ज्वल होता है। पशुओंसे मनुष्योंमें विशेष ज्ञान ही है। उस ज्ञानका साधन विद्याको छोड़कर दूसरा और कौन हो सकता है। यह कर्तव्य है यह अकर्तव्य है इसका विचार ज्ञानके विना किससे होगा। इसके प्रभावमें दूर दूर तकके विषय भी अपना स्वरूप प्रकट करते हैं। जिससे सूर्योदयमें अन्धकारके समान भ्रम सन्देह आदि हटते हैं। विद्यासे आत्मामें बल बढ़ता है, जिसके द्वारा परलोक तक आत्माके विचारकी दौड़ पहुँचती है। दुर्बल आत्मा किसी कामका नहीं। बलवान् आत्मा कल्याणके मार्गमें आनन्दके साथ विहार करता है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

१२ निर्वचन

वाक्यं तदन्तर्वाक्यांशानुपादाय पदानि च ।
यथायथं परिचयो मतं निर्वचनं बुधैः ॥२३१॥

वाक्य और उसके भीतरके वाक्यांश और पदोंको लेकर उनका यथार्थ परिचय करना निर्वचन कहाजाता है ।

वाक्यभेदोंऽशवाक्यानां प्रभेदो मिश्रयुक्तयोः ।
साङ्गं विधेयमुद्देश्यं वर्ण्यं वाक्यविवेचने ॥२३२॥

वाक्यके विवेचनमें वाक्यका भेद, मिश्र वा युक्त हों तो उनके अंश वाक्योंका अवान्तरभेद, मुख्य उद्देश्य विधेय उनमें अन्वयीभाग इत्यादि वाक्यसम्बन्धी विशेषविषय दिखलाने चाहिये ।

(क) सामान्य—१ सूर्यं उदेति । २ परमेश्वरोऽतीव दयालुरस्ति । ३ विवेकी राजा भक्ताः प्रजा न्यायेन साधु पालयति ।

(ख) मिश्र-१ यत्र देशे बहवः सज्जना वसन्ति, २ तत्र कुमार्गगामिनो-जनाः प्रायो न दृश्यन्ते ।

(ग) संयुक्त—१ भक्त्याऽऽराधिता देवाः प्रसीदन्ति,-२ सर्वतः कल्याणानि च दिशन्ति ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

	उद्देश्य-भाग		विधेय-भाग		
	उद्देश्यान्वयी	उद्देश्य	विधेयान्वयी	पूरक	विधेय
सामान्य	१	सूर्यः			उदेति
	२	परमेश्वरः	अतीव	दयालुः	अस्ति
	३ विवेकी	राजा	भक्ताः प्रजाः न्यायेन साधु		पालयति
मिश्र	२ सु० कुमार्ग गामिनः	जनाः	तत्र प्रायः	न	दृश्यन्ते
	१ अं० बहवः	सज्जनाः	यत्र देशे		वसन्ति
संयुक्त	१ भक्त्याऽऽ-राधिताः	देवाः			प्रसीदन्ति
	२	,,	सर्वतः कल्याणानि च		दिशन्ति

पदभेदाः कारकाद्या नामाख्यातविशेषकाः ।
विशेषणादेर्विशेष्या वर्ण्याः पदविवेचने ॥२३३॥

पदोंके विवेचनमें पदोंके भेद, उनका सम्बन्ध, सुबन्तोंमें कर्ता कर्म आदि कारक लिङ्ग विभक्ति वचन, आख्यातमें वाच्य पद लकार पुरुष वचन, विशेषणोंका विशेष्य आदि ये सब दिखाने चाहिये ।

(क) १ **सूर्यः**—सामान्यनाम पुंलिङ्ग प्रथमा एकवचन कर्ता कारक । **उदेति** आख्यात अकर्मक कर्तृवाच्य परस्मैपद लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन ।

२—**परमेश्वरः**—सामान्यनाम पुंलिङ्ग प्रथमा एकवचन कर्ता कारक। **अस्ति**—आख्यात अकर्मक कर्तृवाच्य परस्मैपद लट्लकार प्रथम

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पुरुष एकवचन। **दयालुः**—गुणविशेषण पुंलिङ्ग प्रथमा एकवचन सत्ताक्रियाका पूरक विधेयविशेषण, इसका विशेष्य परमेश्वरः। **अतीव**—दयालुः में अन्वयी अव्यय।

३—**राजा**—सामान्यनाम पुंलिङ्ग प्रथमा एकवचन कर्ताकारक। **पालयति**—आख्यात सकर्मक कर्तृवाच्य परस्मैपद लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन। **प्रजाः**—सामान्यनाम स्त्रीलिङ्ग द्वितीयाबहुवचन कर्म कारक। **न्यायेन**—भाववाचक नाम पुंलिङ्ग तृतीया एकवचन करणकारक। **विवेकी**—गुणविशेषण पुंलिङ्ग प्रथमा एकवचन उद्देश्यविशेषण, इसका विशेष्य राजा। **भक्ताः**—गुणविशेषण स्त्रीलिङ्ग द्वितीया बहु-वचन उद्देश्यविशेषण, इसका विशेष्य प्रजाः। **साधु**—पालनक्रिया विशेषण।

(ख) १ **सज्जनाः**—सामान्यनाम पुंलिङ्ग प्रथमा बहुवचन कर्त्ता कारक। **वसन्ति**-आख्यात अकर्मक कर्तृवाच्य परस्मैपद लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन। **देशे**-सामान्यनाम पुंलिङ्ग सप्तमी एकवचन अधिकरणकारक। **बहवः**-संख्याविशेषण पुंलिङ्ग प्रथमा बहुवचन उद्देश्यविशेषण इसका विशेष्य सज्जनाः। **यत्र**-वाक्ययोजक अव्यय-देशेमें अन्वयी।

२. **जनाः**-सामान्यनाम पुंलिङ्गप्रथमाबहुवचन कर्मकारक। **दृश्यन्ते**-आख्यात सकर्मक कर्मवाच्य आत्मनेपद लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन। **न**-दर्शनक्रियाका पूरक अव्यय। **कुमार्गगामिनः**-गुणविशेषण पुंलिङ्ग प्रथमा बहुवचन उद्देश्यविशेषण, इसका विशेष्य जनाः। **तत्र**-अधिकरणार्थक अव्यय। **प्रायः** दर्शनक्रियान्वयी अव्यय।

(ग) १ **देवाः**-सामान्यनाम पुंलिङ्ग प्रथमा बहुवचन कर्ताकारक। **प्रसीदन्ति**-आख्यात अकर्मक कर्तृवाच्य परस्मैपद लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन। **आराधिताः**-गुणविशेषण पुंलिङ्ग प्रथमा बहुवचन उद्देश्यविशेषण,

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इसका विशेष्य देवाः। भक्त्या-सामान्यनाम स्त्रीलिङ्ग तृतीया एकवचन। आराधनक्रियाका करणकारक।

२. देवाः (गुप्त) सामान्यनाम पुंलिङ्ग प्रथमा बहुवचन कर्ताकारक। दिशन्ति-आख्यात सकर्मक कर्तृवाच्य परस्मैपद लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन। कल्याणानि-भाववाचकनाम नपुंसकलिङ्ग द्वितीया बहुवचन कर्मकारक। सर्वतः—क्रियान्वयी अव्यय। च-वाक्ययोजक अव्यय।

एवं—त्वं कार्यं कुरु। मित्रैर्हितमुपदिश्यते। येन शास्त्राण्यधीयन्ते, तस्यान्तःकरणं निर्मलं जायते। त्वं परीक्षां सम्यगुत्तरेश्चेत् पारितोषिकं लभेथाः। राजा सैनिकानादाय प्रतस्थे, तदनु सेवकाः सेवां कर्तुमनुजग्मुः। वयं तेभ्यो भिक्षुभ्योऽन्नं वस्त्राणि च सहर्षं दद्मः। तेन यदुक्तम्, तद् भविष्यत्येव।

विभज्य पदवाक्यानि निरूप्य च यथायथम्।
क्रियमाणे निर्वचने शाब्दो बोधो विवर्धते॥२३४॥

पद और वाक्यों का विभाग यथार्थ निरूपणके साथ निर्वचन करते रहने पर शब्दोंके सम्बन्धमें बोध बढ़ता जाता है।

पदैर्विविच्य विन्यस्तैश्चन्द्रिकोज्ज्वलवर्त्मना।
उद्गच्छतां सुखं लभ्या जायन्तामुन्नतिश्रियः॥२३५॥

विवेकपूर्वक पदविन्यास करके चन्द्रिकासे उज्ज्वल किये गये मार्गसे उपर जाने वालोंको उन्नतिकी श्रियां सुलभ हों।

अभ्यासार्थ प्रश्न—

निर्वचन किसको कहते हैं। पदनिर्वचन और वाक्यनिर्वचनमें क्या

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

क्या कहना चाहिये। निर्वचनसे क्या फायदा होती है। निम्नलिखित वाक्योंका अनुवाद करो, निर्वचन भी करो—

सतां सङ्गं कुरुत। असतां सङ्गो बुद्धिं मलिनां करोति। सतां सहवासस्तेषामुपदेशश्रवणं च अन्तःकरणं विमलयति। अङ्गारः स्पृश्यमानः करौ वस्त्राणि च कृष्णानि विधत्ते। पुष्पाणां सुगन्धेन पवनोऽपि सुरभिः क्रियते। सूर्येणोदितेन सर्वे लोकाः प्रकाश्यन्ते। अन्धकारः प्रसर्पन्सर्वाणि वस्तूनि मलिनानि दर्शयति। यादृशस्य सम्पर्को भवति तस्य सद्गुणो दुर्गुणो वाऽन्येषु प्रसरति। असता गुणेन दूषितमप्यन्तःकरणं सत्सङ्गो दोषं निरस्य विमलीकरोति। सन्तः सदा हितमेवोपदिशन्ति, कुमार्गान्निवारयन्ति, न्याय्ये वर्त्मनि गमयन्ति च। ये सद्भ्यो विमुखाः कुमार्गे प्रवर्तन्ते, तेषां पदे पदे दुःखं भवति। तस्मात्सत्सङ्गः सर्वेषां श्रेयः सम्पादयति।

अज्ञानके समान हानि करनेवाला दूसरा नहीं है। अज्ञान होनेपर वस्तुओंका विवेक नहीं किया जा सकता है। अविवेकसे बुद्धिको मोह ढकलेता है। मोह होने पर कौन अच्छा मार्ग है कौन खराब मार्ग है यह नहीं मालूम होता है। अच्छा बुरा नजाननेसे दिन पर दिन हानिके सिवाय लाभ नहीं होता है। ये सब दोषोंसे जो वचना चाहें वे ज्ञानके लिये यत्न करें। ज्ञान विद्याके विना नहीं मिलता है। विद्या ही ज्ञानके प्रकाशमें सब पदार्थोंको अच्छी तरह दिखलाती है। मनुष्योंका मुख्य धन विद्या ही है। इसीसे मनुष्यता प्रकाश होती है। इससे विद्या ही सब कल्याणोंका साधन है।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सूचना—

		वं. रु	मोरु
लघुचन्द्रिका	(नेपाली भाषा का लघुव्याकरण)		
मध्यचन्द्रिका	(,, मध्यम ,,)	२)	१।७९
संस्कृतचन्द्रिका	(नेपाली भाषा में संस्कृत व्याकरण)	॥=)	।६४
अनुवादचन्द्रिका—			
प्रथमप्रकाश	(नेपाली षष्ठ संस्करण)	॥)	।९०
द्वितीयप्रकाश	(,, तृतीय संस्करण)	।॥)	।७९
तृतीयप्रकाश	(हिन्दी द्वितीय संस्करण)	१।)	१।२९
चतुर्थप्रकाश	(नेपाली प्रथम संस्करण)	।॥)॥	।८०

——:o:——

पुस्तक मिलने का पता—

संस्कृत पाठशाला,
रानीपोखरी, नेपाल.

साहु मानदास चित्रधर,
असनटोल, नेपाल.

साहु महावीर चिनियामान,
मखनटोल, नेपाल.

पण्डित गौरीशङ्कर शर्मा,
भास्कर पुस्तकालय,
ठठेरी बजार,
बनारस सिटी.

साहु रामदास, तसवीर पसल
भोटाहिटी, नेपाल.

मुद्रक—श्री रामेश्वर पाठक, तारा यन्त्रालय, काशी।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal